।। गावो विश्वस्य मातरः।।

गाय धर्म और विज्ञान

पंचगव्य से गाय, गाय से किसान, किसान से गाँव
गाँव से होगा आत्मनिर्भर – हमारा प्रदेश और प्यारा भारत देश

गौ विज्ञान परीक्षा हेतु संदर्भ ग्रन्थ

कक्षा 9 से 12 एवं
महाविद्यालयीन स्तर हेतु

विदेशी रासायनिक खाद एवं कीटनाशक का करें बहिष्कार, स्वदेशी गौ आधारित कृषि से करें स्वयं और देश का विकास

स्वदेशी की शुरुआत स्वयं से, घर से, आज से... अभी से...

गौमाता का गीत

मंगलकारी माँ हमारी गौमाता।
ओंकार है माँ हमारी गौमाता।
परम ब्रह्म है माँ हमारी गौमाता।
जय हो, जय हो माँ हमारी गौमाता।। धृ।।

देवासुर संग्राम में हमने, गौमाता को पाया था।
रघुकुल में वह कामधेनु थी, कान्हा ने अपनाया था।
भक्तों की भगवान, हमारी गौमाता।
जय हो, जय हो माँ हमारी गौमाता।। १।।

गौ की रक्षा मम दीक्षा है, आओ हम संकल्प करें।
गाय की रक्षा जो करेगा, उसकी रक्षा गाय करे।
करें मंत्र उच्चार, हमारी गौमाता।
जय हो, जय हो माँ हमारी गौमाता।। २।।

ग्रामोदय से राष्ट्रोदय का, ध्येय बनी है गौमाता।
विश्व का मंगल माँ से होगा, परम शक्ति है गौमाता।
मानवता पर्याय हमारी गौमाता।
जय हो, जय हो माँ हमारी गौमाता।। ३।।

अभय धाम और अभय ग्राम से, सबको अभय बनाएँगे।
संत शक्ति संदेश बनी है, गौ साम्राज्य रचाएँगे।
स्वतंत्रता संग्राम हमारी गौमाता।
जय हो, जय हो माँ हमारी गौमाता।। ४।।

गाय धर्म और विज्ञान

(गौ विज्ञान परीक्षा हेतु संदर्भ ग्रंथ)

संकलनकर्ता-संपादक

सुबोध राठी

संपादक मंडल

श्री मति शताब्दी पाण्डेय
डॉ. गजेन्द्र चंद्राकर
श्री मनोज पाण्डेय
डॉ. अमित पाण्डेय

मार्गदर्शक

मा. श्री शंकरलाल जी (मार्गदर्शक, गौसेवा)
मा. श्री अजीत महापात्रा जी (अखिल भारतीय संयोजक, गौसेवा)
मा. श्री नवलकिशोर जी (अखिल भारतीय सह-संयोजक, गौसेवा)
मा. श्री के. ई. एन. राघवन जी (अखिल भारतीय प्रशिक्षण प्रमुख, गौसेवा)

प्रकाशक

छत्तीसगढ़ राज्य गौ संरक्षण एवं संवर्धन समिति
गुरु गोविंद सिंह नगर, पंडरी, रायपुर (छ.ग.)
ई- मेल- **gausevacg @ gmail.com.**
वेब-साइट- **www.gausevacg.org**

मुद्रक

युगबोध डिजिटल प्रिंट्स
6, समता कालोनी, रायपुर (छ.ग.)

गौ सेवा राशि
₹ 150 /

छत्तीसगढ़ राज्य गौ संरक्षण एवं संवर्धन समिति–एक परिचय एवं उद्देश्य

छत्तीसगढ़ राज्य गौ संरक्षण एवं संवर्धन समिति एक पंजीकृत अशासकीय स्वयंसेवी संस्था है, जिसका प्रधान कार्यालय गुरु गोविंद सिंह नगर, पंडरी, रायपुर में स्थित है। संस्था के माध्यम से गौवंश संरक्षण एवं संवर्धन हेतु विविध आयामों को लेकर पूरे प्रदेश में विविध कार्य संपादित किये जाते हैं।

गौ सेवा का मूल चिंतन

1. गाय हमारी संस्कृति है।

वयं अमृतस्य पुत्रः- पंचनाम् अमृतानां समाहारः पंचामृत्
पयो दधि घृतं चैव मधु च शर्करान्वितम्।
पंचामृत मयनीत स्त्रानार्थ प्रतिगृह्यताम्।।

पंच अमृत में दूध, दही, घी, गुड़ तथा मधु हैं, इसमें 3 तो गव्य हैं। गाय के दूध को अमृत माना गया है। जीवन भर हम गाय के दूध पर पलते हैं और हजारों पीढ़ियों से दूध, दही, घी का उपयोग कर रहे हैं, इसीलिए हमें अमृतपुत्र कहा जाता है।

भूमि हमारी प्रकृति है।

माता भूमिः पुत्रो अहं पृथिव्याः (अथर्ववेद)

पृथ्वी यानि मिट्टी, हवा, नदी, पहाड़, पेड़-पौधे, पशु-पक्षी, जीव-जंतु इत्यादि। हमारा शरीर इसी भूमि से उत्पन्न अन्न, जल, वायु से बना है। इसीलिए यह हमारी माँ है। भूमि का उत्तम सुपोषण गाय के गोबर से ही होता है।

2. लक्ष्य एवं उद्देश्य

घर घर में गाय गाँव में, हर घर में गाय का दूध नगरों में
गाँव में 1 गौपालक, 2 गौसेवक, 3 गौभक्त तैयार करना।
नगरों में 1 गौव्रति, 2 गौप्रेमी, 3 गौभक्त तैयार करना।

3. इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए कार्य योजना

1. गौ पालन एवं गौ संवर्धन

(1) देशी नस्ल की गाय का पालन-पोषण, रख-रखाव की उचित योजना। (2) गौशाला निर्माण। (3) देशी नंदी का पालन, संवर्धन। (4) उचित चारे पानी का प्रबंधन। (5) नंदी, बछड़ों की भी उचित देखभाल, रोगों से रोकथाम। (6) दूध, गोबर, गोमूत्र संग्रह का उचित प्रबंधन।

2. गौ चिकित्सा

(1) गौ को होने वाले रोगों की पहचान और घरेलू विधि से उपचार। (2) देशी पद्धति से सभी रोगों का रोकथाम। (3) पौधों और घरेलू मसालों से चिकित्सा। (4) होम्योपैथी दवाओं से चिकित्सा।

3. गौ आधारित कृषि

(1) गाय के गोबर से भूमि सुपोषण एवं भूमि उपचार (विविध जीवामृत, विविध प्रकार गोबर खाद, विविध घनजीवामृत आदि प्रकार)।(2) गौ मूत्र से विविध प्रकार के कीट नियंत्रक (नीम पत्ता, अर्क पत्ता, धतुरा, बेल, करंज, तुलसी के पत्ते, लहसुन, मिर्च आदि)।(3) मट्ठा-छाछ से विविध प्रकार के कीट नियंत्रक (नीम पत्ता, वनतुलसी, लहसुन, हरा मिर्च, ताँबा)।(4) पौधों को आवश्यक पोषण तत्वों की जानकारी तथा बनाने के सरल, सहज पद्धति का प्रशिक्षण।

4. छत पर बागवानी

नगरों में अपने छत पर गमलों में साग-सब्जी, फूल उत्पादन करना ताकि दूषित हवा, जहरीले रसायनयुक्त सब्जी, फल-फूल से छुटकारा।

5. गौ ऊर्जा

(1) गाय-बैल के गोबर से गोबर-गैस।(2) बैलों का खेती में उपयोग।(3) बैल चालित ट्रेक्टर के प्रयोग। (4) बैलगाड़ियों का प्रयोग, (अ) माल ढोने के लिए बैलगाड़ी, (ब) सवारी ढोने के लिए बैलगाड़ी, (स) तेल पिरोने, (द) जल निकासी या सिंचाई।

6. पंचगव्य मनुष्य चिकित्सा

जन सामान्य घरेलु औषधियों पंचगव्य (दूध, दही, घी, गोबर, गोमूत्र) मनुष्य के आंतरिक और बाह्य रोगों के लिए तक्रासव, तकारिष्ट, मालिश तेल, दर्द निवारक तेल, गोघृत बाम, गोघृत तेल, गोघृत नस्य, पाचन चूर्ण, त्रिफला चूर्ण आदि।

7. पंचगव्य उत्पाद निर्माण

(1) घरेलु उपयोगी वस्तु, गोनाईल, विविध धूपबत्ती, मच्छरबत्ती, बर्तन धोने का साबुन, मुखकान्ति पाउडर, गणेश आदि विविध मूर्तियों, दीपक आदि।

(2) मनुष्य उपयोगी वस्तु मुखकांति चूर्ण, कायाकांति चूर्ण, केशकांति मलहम, विविध साबुन, मालिश तेल, राखियाँ, मालाएँ आदि विविध वस्तुएँ।

8. विपणन (Marketing) पंचगव्य उत्पादों से रोजगार योजना

एक कार्यकर्ता यदि 500 घर-परिवार में प्रतिमाह 1000 रुपये का भी गो उत्पाद के वस्तुओं का विक्रय करें और 20% लाभ कमाए तो वह एक लाख रुपया मासिक आमदनी कर सकता है। इससे उत्पादक और उपभोक्ता को सहज जोड़ा जा सकता है।

9. गो कथा, मठ-मंदिर, गौशाला सम्पर्क

(1) गाय के अपने इतिहास, वैज्ञानिक और शास्त्रयुक्त प्रसंगों को जन-जन तक पहुँचाने हेतु गो कथाओं का आयोजन श्रद्धा भाव जागरण हो।

(2) प्रत्येक पूर्णिमा में परिवार सहित सामूहिक गो पूजन का आयोजन

(3) अपने घरों में अग्निहोत्र हवन करें।

(4) गोशालाओं में सप्ताह में एक बार जा कर सेवा करें, अपने वर्ग बैठक आदि वहीं करें। मंदिरों में, पर्व त्यौहारों में गो उत्पादों की प्रदर्शनी लगे। मंदिरों में पूजन अर्चन में गोमय वस्तुओं का उचित प्रयोग हो।

10. गो विज्ञान परीक्षा

कक्षा 6 से कॉलेज विद्यार्थियों तक गाय और गो विज्ञान की सरल और सहज जानकारियाँ ले जाना। अपने प्रांत के गाय-बैल को जानने और पंचगव्य के महत्व को समझाने का माध्यम गोविज्ञान परीक्षा है। बच्चों को अपने संस्कृति और गाय के विविध विषयों की जानकारियाँ मिले इसीलिए प्रोत्साहन के लिए पारितोषिक दिए जाते हैं।

11. स्वावलंबी सुरभि ग्राम समूह

एक गाँव के 25 परिवारों में गो पालन, कृषि और सभी प्रकार के उत्पादन हो तथा नगर के एक बस्ती में 100 परिवारों को दूध, अन्न एवं गो उत्पाद वस्तुएँ प्राप्त हो। 10 गाँवों का एक संकुल को 10 उपबस्ती के एक संकुल से जोड़कर गाँवों के संस्कृति को नगरों में और नगरों के समृद्धि को गाँवों में ले जाने का उपक्रम है।

12. गो विज्ञान अनुसंधान, प्रयोग एवं प्रशिक्षण केन्द्र

प्रत्येक प्रांत में एक से अधिक अनुसंधान केन्द्र बनाने और गाय से संबंधित सभी प्रकार के अनुसंधान तथा अनुभवी लोगों के द्वारा करने और उन उपलब्धियों को सामान्य गौपालकों तक प्रशिक्षण के द्वारा ले जाने की योजना। छत्तीसगढ़ में हमारा पहला केंद्र धमतरी जिला स्थित ग्राम तुमाबुर्जुग में माँ अंगारमोती गौधाम के नाम से संचालित है। जहाँ पंचगव्य विभिन्न कार्य किए जा रहे हैं।

13. गो रक्षा

14. गोचर भूमि संरक्षण

15. गो अभ्यारण्य

16. जेलों में गौशाला

17. प्रभावी प्रयोगशाला

18. स्वावलंबी कामधेनु नगर

19. स्वावलंबी गोकुल गुरुकुल

20. गो साहित्य और डाटा संग्रह

21. कार्यक्रमों का प्रचार प्रसार।

इसके परिणाम

1. रोग मुक्त भारत

2. कर्ज मुक्त भारत

3. प्रदूषण मुक्त भारत

4. अपराध मुक्त भारत

5. कुपोषण मुक्त भारत

6. विष मुक्त भारत

7. अन्न युक्त भारत

8. ऊर्जा युक्त भारत

9. रोजगार युक्त भारत।

स्वावलंबी, सुखी, सम्पन्न, भारत

गौ विज्ञान परीक्षा क्यों ? किसलिए ? उद्देश्य !

सर्वकामदुधे देवि सर्वतीर्थीभिषेचिनि। पावने सुरभि श्रेष्ठे देवि तुभ्यं नमोस्तुते।।
लक्ष्मीर्या लोकपालानां धेनुरूपेण संस्थिता। घृतं वहति यज्ञार्थ मम पापं व्यपोहतु।।

जिस गौमाता को हम सबसे पूजनीय मानते हैं दुर्भाग्य है कि वह आज सड़कों पर आ गयी है। कोई घर में पालना नहीं चाहता, कोई इसका दूध, दही, घी लेना नहीं चाहता। गाय के दूध के स्थान पर जर्सी और भैंस का दूध पी रहे हैं, शुद्ध घी के नाम पर बटर आयल का उपभोग कर रहे हैं। किसान इसके गोबर, गोमूत्र से कृषि करना नहीं चाहता। बैल का स्थान ट्रेक्टर ने ले लिया है, गोबर खाद का स्थान यूरिया, DAP और पोटाश ने तो गौमूत्र के स्थान पर हम रासायनिक कीटनाशकों का उपयोग कर रहे हैं। परिणाम गाय तो अनुपयोगी होकर सड़कों में आई ही है मगर हम भी समाप्ति की ओर अग्रसित हैं। जर्सी, भैंस के दूध के कारण हमारा शरीर रोगग्रस्त हो गया है। केमिकल वाला घी खाकर हर घर B.P., शुगर, कोलेस्ट्राल, हृदयरोग के मरीज बन रहे हैं। रासायनिक खेती के कारण हर चौथा आदमी कैंसर, किडनी जैसी गंभीर बीमारियों की चपेट में आ रहा है। हमारी रोग प्रतिरोधक क्षमता समाप्त होती जा रही है। उम्र कम होती जा रही है, अकाल और आकस्मिक मृत्यु दर बढ़ती जा रही है।

हमारी शस्य श्यामला भूमि बंजर होती जा रही है। भूजल समाप्त होता जा रहा है। पृथ्वी का तापमान तेजी से बढ़ रहा है। नए-नए वायरस का संक्रमण तेजी से फैल रहा है। वातावरण में प्रदूषण इस स्तर तक बढ़ गया कि अब साँस लेना भी मुश्किल होता जा रहा है। अगर ऐसा ही 40–50 वर्षों तक चलता रहा तो सृष्टि में गंभीर संकट खड़ा हो सकता है।

अगर हम इन सभी समस्याओं के समाधान पर जायें तो सिर्फ और सिर्फ गाय ही इसका प्रमुख समाधान है। आज तक कभी हमने गाय की वैज्ञानिकता की ओर ध्यान नहीं दिया। गाय ही हमारा अर्थतंत्र है। गाय का दूध, दही, घी हमारे शरीर की आवश्यकता है। गाय का गोबर ही पृथ्वी का भोजन है। आज जब इसके एक-एक गव्य पर शोध हो रहा है तो सभी वैज्ञानिक तथ्य सामने आ रहे हैं।

वर्तमान पीढ़ी को हमने सिर्फ गाय का धार्मिक पक्ष ही बताया है कभी उसका वैज्ञानिक पक्ष नहीं बताया जिसके कारण ये पीढ़ी गाय से दूर होती जा रही है। इस पीढ़ी को गाय का सम्पूर्ण विज्ञान बताकर उन्हें गोव्रति एवं गौपालक बनाना ही हमारी इस परीक्षा का प्रमुख लक्ष्य है।

जब ये पीढ़ी गाय का महात्म्य समझेगी तो गाय सड़कों पर नहीं अपितु घरों में होगी। गाँव के प्रत्येक घर में गौपालन हो और शहर के प्रत्येक घर में गाय का दूध, दही और घी का उपयोग हो। खेती गो आधारित हो और हमारे घरों में सिर्फ जैविक अनाज का ही उपयोग हो। यदि इतना संकल्प हम सब ले लेते हैं तो न सिर्फ गोरक्षा होगी अपितु हमारे परिवार की भी रक्षा होगी।

गौ विज्ञान परीक्षा में सहभागी होने के लिए धन्यवाद। इस ग्रन्थ को पूरा पढ़कर परिवारजनों, रिश्तेदारों एवं मित्रों को भी पढ़ने अवश्य कहें।

जय गौ माता की

इरन्ना सपारे
प्रांत गौ सेवा संयोजक

सुबोध राठी
प्रांत गौ विज्ञान परीक्षा प्रमुख

अनुक्रमणिका

क्र.	विवरण	पृष्ठ संख्या
1.	गौवंश उत्पत्ति की पौराणिक कथा	1-2
2.	गौमाता में समस्त देवी-देवताओं का वास	3-3
3.	‘‘गौवंश का पौराणिक महत्व’’	4-7
4.	‘‘गौ सेवा की पौराणिक कथाएँ’’	8-20
5.	‘‘भगवान श्रीराम के काल में गाय’’	21-22
6.	भगवान श्रीकृष्ण के काल में गाय	23-24
7.	‘‘भिन्न-भिन्न मत संप्रदाय में गाय का स्थान’’	25-28
8.	भारत के विभिन्न प्रांतों में पाये जाने वाले देशी गौवंश की प्रजाति	29-34
9.	छत्तीसगढ़ की कोसली गाय	35-36
10.	भारतीय एवं विदेशी नस्ल की गायों में अंतर	37-40
11.	A1 और A2 दूध–रासायनिक संरचना, स्वास्थ्य पर प्रभाव और वैश्विक शोध	41-42
12.	The Devil in the Milk	43-43
13.	‘‘गाय और भैंस के दूध में तुलनात्मक अंतर’’	44-47
14.	गाय से प्राप्त पंचगव्य का अध्ययन	48-56
	(a) दूध, (b) दही, (c) घी, (d) गोबर, (e) गोमूत्र	
15.	‘‘पंचगव्य का महत्व’’	57-58
16.	विभिन्न पंचगव्य उत्पाद और उनका महत्व	59-71
17.	शाक वाटिका (Kitchen Garden) का निर्माण	72-76
18.	गाय और स्वास्थ्य-औषधीय उपयोग	77-80
19.	पंचगव्य मनुष्य चिकित्सा	81-90
20.	भारत का गौरवशाली इतिहास	91-93
21.	रामराज्य का मूल आधार गौ और कृषि	94-96
22.	गौ आधारित कृषि और जैविक खाद्यान्न	97-100
23.	जैविक व रासायनिक खाद का तुलनात्मक अध्ययन	101-105
24.	कृषि रसायनों का विष और गिरते भूजल के लिए गौ आधारित कृषि-एक अमृत	106-109
25.	जैविक खाद, जीवामृत, घन जीवामृत, अमृत जल, समाधि खाद एवं कीट नियंत्रक का निर्माण	110-118
26.	केचुआँ (किसानों का मित्र)	119-119

27.	ट्रैक्टर : किसानों के लिए कर्ज और ज़हर दोनों	120-121
28	गौ-आधारित उद्योग और स्टार्टअप : नवाचार और उद्यमिता के अवसर	122-124
29.	ग्लोबल वार्मिंग रोकने में गाय की भूमिका	125-127
30.	भूजल स्तर गिरावट–कारण, इसे रोकने में गाय की भूमिका	128-130
31.	क्यों बन रहा है छत्तीसगढ़ कैंसर राज्य ?	131-134
32.	‘‘गौसेवा हमारा कर्तव्य’’	135-137
33.	गौ सेवा /गौ रक्षा के लिए क्या किया जा सकता है	138-139
34.	जानिये कैसे होगा पंच परिवर्तन से समाज परिवर्तन	140-141
35.	गौवंश से ही होगा पंच परिवर्तन	142-143
	अभियान गीत	144-144
	गौमाता की आरती	145-145
	गौ विज्ञान परीक्षा 2024 का प्रश्न पत्र	146-152

नोट– अध्याय क्रमांक **27, 28, 29, 30, 31** एवं **32** से हाईस्कूल परीक्षा हेतु प्रश्न नहीं पूछे जाएंगे। उपरोक्त अध्याय महाविद्यालय स्तर हेतु है। शेष सभी की तैयारी करें। महाविद्यालय स्तर हेतु पूरा पाठ्यक्रम रहेगा।

1. गौवंश उत्पत्ति की पौराणिक कथा

1. ब्रम्हा जी द्वारा सुरभि की उत्पत्ति– भगवान् ब्रह्माजी लोकपितामह हैं, अखिल सृष्टि के स्रष्टा हैं। सम्पूर्ण चराचर सृष्टि का सृजन करने के कारण उन्हें पिता से भी ऊपर 'पितामह' की उपाधि प्राप्त है।

ब्रह्माजी के ही एक पुत्र थे प्रजापति दक्ष, जिन्हें बाद में भगवान् शंकर के श्वसुर होने का गौरव प्राप्त हुआ। उन प्रजापति दक्ष को ब्रह्माजी ने आदेश दिया कि 'प्रजाओं की सृष्टि करो', परंतु प्रजापति दक्ष ने सोचा कि प्रजाओं की उत्पत्ति से पहले उनकी आजीविका का प्रबन्ध करना आवश्यक है। अतः मन-ही-मन ऐसा विचार कर उन भगवान प्रजापति ने प्रजावर्ग की आजीविका के लिये अमृत का पान किया। उस अमृत पान से पूर्ण तृप्त होने पर उनके मुख से सुरभित (मनोहर) गन्ध निकलने लगी। उस गन्ध के साथ ही उनके मुख से एक गौर प्रकट हो गयी। सुरभित गन्ध से प्रकट होने के कारण उस गौ का **'सुरभि'**-यह नाम पड़ा। चूँकि सुरभि की उत्पत्ति प्रजापति दक्ष के मुख से हुई थी, इसलिये उसे दक्ष की पुत्री माना गया। इस प्रकार पितामह ब्रह्मा के पुत्र हुए प्रजापति दक्ष और दक्ष की पुत्री हुई गोमाता सुरभि। अतः ब्रह्माजी गौमाता सुरभि के पितामह हुए। उन देवी सुरभि ने स्वर्ण के समान वर्ण वाली बहुत-सी गायों को जन्म दिया।

प्राचीनकाल में गौओं ने श्रेष्ठता प्राप्त करने के लिए एक लाख वर्षों तक कठोर तपस्या की थी, तब बह्माजी ने गौओं को ऋषियों-मुनियों और देवताओं से भी श्रेष्ठ मानते हुए सब लोकों से ऊपर गो लोक में स्थान दिया ब्रह्माजी के वरदान से जगत् में दक्षिणा देने योग्य जितनी भी वस्तुएँ हैं, उन सब में गायें सर्वोत्तम मानी जाती हैं। मनुष्य ही नहीं देवता भी पवित्रता की प्राप्ति के लिये गायें के गोमय का उपयोगकर पवित्र होते हैं।

लोक पितामह भगवान ब्रह्माजी गो-भक्ति के आदि उपदेशक हैं।

देवराज इन्द्र के पूछने पर पितामह ब्रह्माजी ने गायों को सर्वोच्च लोक गो लोक दिये जाने का कारण बताते हुए कहा कि गायों ने लोभ और कामना का त्यागकर निष्काम भाव से तप किया था, इसीलिये इन्हें तीनों लोकों से ऊपर गो लोक में निवास मिला।

2. समुद्रमंथन द्वारा कामधेनु की उत्पत्ति– जब असुरों ने स्वर्ग पर अधिकार कर लिया तो अमृत की खोज के लिए समुद्र मंथन किया गया। जिसे प्राप्त कर देवता अमर हो सके। समुद्र मंथन से चौदह रत्न निकले जिसमें **प्रथम कामधेनु की उत्पत्ति हुई**। जिसका वर्णन पुराण में किया है।

समुद्र मंथन के समय क्षीरसागर से जो मातृस्वरूपा पाँच गायें उत्पन्न हुईं। उनके नाम

थे– (1) **नंदिनी (आनंद देने वाली)**, (2) **सुभद्रा (कल्याण करने वाली)**, (3) **सुरभि (मनोकामना पूर्ण करने वाली)**, (4) **सुशीला (दिव्य शक्ति प्रदान करने वाली) (5) बहुला (कष्टों को दूर करने वाली)**।

सृष्टि के आरंभ काल में नन्दी शिवाज्ञानुसार भूतल पर मानवों को ऐसा उपदेश देने के लिए आये कि 'प्रतिदिन अभ्यंग-स्नानादिकर ईश्वरार्चन अवश्य करें और पन्द्रह दिनों में एक बार भोजन करें। किन्तु नन्दी से भूल हो गयी उन्होंने 'प्रतिदिन खाने और पंद्रह दिन में एक बार अभ्यंग करने की बात लोगों को बतायी। नन्दी ने जब लौटकर कैलाश में यह समाचार दिया, तब शिवजी ने महारुद्र होकर उन्हें फटकारा और इस अपराध के प्रायश्चित में नन्दी को आज्ञा दी कि तुमको अपनी नंदिनी गौ के साथ भूलोक में अवतार लेना होगा और गो-सन्तति बढ़ाकर खेती-बाड़ी द्वारा मानवों को खिला पिलाकर उनका संरक्षण करना होगा। उसी समय से नंदिनी अपने नन्दी के साथ भूलोकवासिनी हो गयी।

कथा का तात्पर्य स्पष्ट है **मानवों का पालनपोषण का भार गो सन्तति पर है**। यानि गौ माता का अवतार मानवों के कल्याण निमित्त हुआ है। मूल रहस्य तो यह है कि गो सन्तति विश्व के माता पिता हैं। इसमें महादेव के प्रतिनिधि नन्दी और महाविष्णु की प्रतिनिधि गौ है। इस तरह शिवऔर शक्ति ऐक्यरूप से जगत् का संचालन करते हैं।

गाय शब्द में दो अक्षर है 'ग' और 'य'। 'ग' अर्थात् गव्य यानि (प्राण शक्ति) 'य' का अर्थ है अग्नि अर्थात् आगे की ओर लेकर चलने वाली प्रवृत्ति। **गौ माता अपने अंदर अग्नि और प्राण शक्ति दोनों के सूक्ष्म तत्व को धारण करती है**। वेद-अग्नि के सूक्ष्म तत्व एवं प्राणशक्ति के सूक्ष्म तत्व के ज्ञान को वेद कहा गया है। इस पृथ्वी पर गाय ही एक मात्र प्राणी है जो अपने अन्दर अग्नि के सूक्ष्म तत्व को एवं प्राणशक्ति के सूक्ष्म तत्व को विश्व ब्रह्माण्ड की सृजन शक्ति के रूप में धारण करती है इसलिए **गाय ही प्रत्यक्ष वेदमाता विश्वमाता है**।

●●

2. गौमाता में समस्त देवी देवताओं का वास

गावो विश्वस्य मातरः अर्थात् गाय चराचर जगत की माता है यानि अखिल विश्व की आधार शक्ति गौ माता ही है। यही कारण है कि केवल गौ की पूजा एवं सेवा से सम्पूर्ण देवी-देवताओं की आराधना हो जाती है। **गौ के शरीर में समस्त देवी देवताओं का वास होता है।** गौ के पैरों में समस्त तीर्थ, गाय के गुह्य भाग में लक्ष्मीजी का वास होता है। जहाँ गायें रहती हैं उस स्थान को तीर्थभूमि कहा जाता है। गायें समस्त उत्कृष्ट अन्नों के उत्पादन की मूलभूत शक्ति है। गायें दर्शन स्पर्शादि से सभी प्राणियों को सर्वथा शुद्ध, निर्मल एवं निष्पाप बना देती है। सभी पवित्र वस्तुओं में सर्वाधिक पवित्र गाय है। गायें स्वर्ग प्राप्त करने की प्रत्यक्ष मार्गभूता सोपान है। गौयों के रजकण में निरन्तर वृद्धि होने वाली धर्मराशि एवं पुष्टि का निवास है। गौ माता में अखिल विश्व व्याप्त है। भूत व भविष्य की जननी है गोमाता। अथर्ववेद में गौ का विश्वरूप बताया गया है। गौ के विश्वरूप में प्रजापति सींग है, इन्द्र सिर है, अग्नि ललाट है और यम गले की सन्धि है। चन्द्रमा मस्तिष्क, द्युलोक ऊपर का जबड़ा और पृथ्वी नीचे का जबड़ा है। गौ के विश्वरूप में इसका लोक स्वर्ग है। अन्तरिक्ष बल और बृहस्पति कूबड़ है। मनुष्यों को स्वयं को गौमाता का अंग ही समझना चाहिए उसे यह समझना चाहिए। **गौ पूजनीय, वंदनीय, पालनीय माता है।** जहाँ इन्द्रादि देव रहते हैं वह ही स्वर्ग है गोमाता के देह में इन्द्रादि देव हैं इसलिए गोमाता ही स्वर्ग लोक है। ऐसा मानने वाले लोगों में कभी भी गोवध और गोमांस भक्षण की कल्पना ही नहीं आयेगी।

गौ के ललाट में देवी पार्वती और नाक के मध्य में कार्तिकेय का निवास है।

सुरभी गाय के दाहिनी आँख में सूर्य और बायीं आँख में चन्द्रमा का निवास है।

भविष्य पुराण के अनुसार गोमूत्र में साक्षात् गंगा और गोमय में यमुना स्थित है।

●●

3. ''गौवंश का पौराणिक महत्व''

भारतीय संस्कृति में गौ की महत्ता व विशिष्ट स्थान का उल्लेख हमारे वेदों, पुराणों तथा धर्मशास्त्रों में स्थान-स्थान पर देखने को मिलता है। ऋग्वेद 8·35·18 में कहा गया है। ''**धेनुः जिन्वत उत जिन्वत विशः हतं रक्षासि से धंत अभीदाः** अर्थात् हे अश्विनीनीकुमारों, गायों को बलवती करो, जनता को बलवती करो। हानियों को नष्ट करो, रोगों को बाहर करो।'' अथर्ववेद में कहा है–'**धेनुः सवनं रयीणसाम्**' अर्थात् गाय संपत्ति का भण्डार है। यजुर्वेद में कहा गया है–गौ अनुपनेय है।गौ माता धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष प्रदान करने में प्रातः स्मरणीय एवं वन्दनीय है। पुराणों के अनुसार, इस विश्व में सर्वप्रथम वेद, अग्नि और गाय का अवतरण हुआ।गाय के विश्व रूप का वर्णन अथर्ववेद, यजुर्वेद, ब्रह्माण्डपुराण, स्कन्दपुराण, भविष्य पुराण, अग्नि पुराण, स्मृतियों में, महाभारत, रामायण तथा गीता में देखने को मिलता है। वेदों में लिखा है ''एतद् वैविश्व रूपम् सर्वरूपम् गौ रूपम्।''

भारतीय संस्कृति का आधार ही गौ है।एक समय था जब भारत देश सोने की चिड़िया कहलाता था। यहाँ घी, दूध की नदियाँ बहती थीं। ऋग्वेद के 58वें मण्डल के चौथे सूक्त में **ऋषि वामदेव गौतम** कहते हैं कि जो वस्तुएँ देवता समान पूज्यनीय है उनमें अग्नि, सूर्य, जल और गाय है।

स्कन्द पुराण ब्रह्म धर्मारण्य 1018 के अनुसार, ''**गौमाता समस्त देवों की जननी है**। गौमाता यज्ञ की कारण रूपा है, सभी तीर्थों की महातीर्थ है जिन्हें सदैव नमस्कार है।'' स्कन्द पुराण में एक प्रसंग में ऋषि आपस्तम्ब ने राजा नाभाग को गाय को अमूल्यरत्न का रूप देते हुए बताया है कि ''**गौ सदैव सबके लिए वन्दनीय है।**'' स्वयं ब्रह्माजी ने इनको दिव्य गुणों से सुशोभित किया है।**इनके गोबर से देवताओं के मंदिर व मनुष्यों के गृह शुद्ध होते हैं।** गौ दुग्ध, घी, दही, गोबर व गौ मूत्र पवित्र होता है तथा समस्त जगत को पवित्र करती है। समस्त जगत के लिए गाय पूज्यनीय है तथा सदैव विष्णु पद में स्थित रहती है।

प्राचीन काल में गौ ही प्रधान धन समझी जाती थी। उस गौ की रक्षा के लिए पहले-पहल गोत्र, गौशाला की सृष्टि हुई।जैसा कि ऋग्वेद में आता है- ''त्वां गोत्रमऽगिं रोम्यः अवृणोंः'' गोत्रपति के नाम से ही गोत्र चलता था।इसलिए वशिष्ठ-भारद्धाज, कश्यप आदि गोत्रों की सृष्टि हुई जो अब वंश परिचय का प्रधान निशान है।

गाय रूद्रों की माता, वसुओं की पुत्री अदिति पुत्रों की बहन और कृत रूप अमृत का खजाना है। **अपने माता-पिता की भाँति श्रद्धापूर्वक गायों का पालन करना चाहिए।** दुर्दिन और विप्लव के समय पर गायों को घास और शीतल जल मिलता रहे इस बात का प्रबन्ध करते रहना चाहिए। (ब्रह्मपुराण)

पदमपुराण (सृष्टि 48/145-146) के अनुसार गायों की एक मात्र परिक्रमा करने से मनुष्य सारे पापों से छूटकर अक्षय स्वर्ग को प्राप्त करता है। विष्णु धर्मोत्तर पुराण के अनुसार, आत्मा से भी अधिक गाय की रक्षा का ध्यान रखना चाहिए।

विष्णु स्मृति में कहा गया है–

गावः पवित्रं मांगलयं गोषु लोका प्रतिष्ठिताः।
गावों वितन्वते यज्ञ गावः पर्वाधसूदना।।

अर्थात् **गाय पवित्र मंगलकारक होती है,** इनमें समस्त लोक प्रतिष्ठित है। गाय यज्ञ का विस्तार करती है व समस्त पापों का विनाश करती है। विष्णु पुराण के तृतीय खण्ड में कहा गया है–

गोमये तु सदा लक्ष्मीः स्वयमेव व्यवस्थिता,
गो मूत्रे च तथा गंगा दधि क्षीर धृतेषु च
सदा व्यवस्थित सोम रोचनायाम् सरस्वती।।

अर्थात् **गौमाता के गोबर में साक्षात लक्ष्मी, गौ मूत्र में गंगाजी, दूध, दही और घी में सोम तथा गोरोचन में भगवती सरस्वती विराजमान है।**

पुण्य एवं स्व-कल्याण चाहने वाले गृहस्थों को गौ सेवा करनी चाहिए क्योंकि गौ सेवा में लगे हुए पुरुषों की शीघ्र ही सम्पत्ति वृद्धि होती है। गौ सेवा से धन, सम्पत्ति, आरोग्य आदि मनुष्य जीवन को सुखकर बनाने वाले सम्पूर्ण साधन सहज ही प्राप्त हो जाते हैं। जिस घर में गौ पाली जाती है। उस घर में अनेक प्रकार के स्वाभाविक ही लाभ होते रहते हैं।

गाय मनुष्यों की बंधु है और जिस घर में गाय नहीं वह घर बंधु शून्य है।

–(पदम पुराण सृष्टि 50/165-166)

जो प्रतिदिन गौ का स्पर्श करता है वह प्रतिदिन तीर्थजल में स्नान करने का फल पाता है। **–अग्निपुराण**

''महाभारत काल में गाय का स्थान''–

पाण्डु पुत्रों में **सहदेव गौ वैज्ञानिक थे** जो इन्द्रप्रस्थ की चालीस कोस की परिधि में पलने वाली गायों के बारे में बता देते थे कि किस गाय का दूध पीने से लाभ होगा और किसका गौमूत्र सूँघने से बन्ध्या स्त्री गर्भवती होगी (महाभारत)। महाभारत युद्ध में 18 अक्षोहिणी सेना अर्थात् 53,18,840 योद्धा काम आये। उनकी विधवाओं, अनाथ बच्चों तथा अशक्त माता-पिता का सहारा गौधन बना।

महाभारत के अनुच्छेद 8 में कहा गया है–
पुत्रार्थी लेभते पुत्रं, कन्यार्थी तामवाप्नुयात्
धनार्थी लभते वितं, धमार्थी धर्ममानुयात्।
विद्यार्थी चाप्यादू विद्यां, सुखार्थी प्राप्नुयात सुखम्
न किंचित दुर्लभं चैत्र गवां भक्तस्य भारत।।

अर्थात् पुत्रार्थी को पुत्र मिलता है। महाराज दिलीप को रघु और महाराज ऋतंभर को सत्यवान जैसे श्रेष्ठ पुत्र गौ सेवा से ही मिले। गौ सेवा से कन्यार्थी को कन्या, धनार्थी को धन, धर्मार्थी को धर्म, विद्यार्थी को विद्या और सुखार्थी को सुख मिलता है। गौ भक्त के लिए संसार में कोई भी वस्तु दुर्लभ नहीं है।

भारतीय संस्कृति के चार स्तंभ हैं। पहला स्तंभ गाय को बताया गया है। गाय के मूत्र में दूसरा स्तंभ गंगा का निवास है। तीसरा स्तंभ गायत्री है। महाभारत में यज्ञों का फल गौमाता ही बताई गई है।

गायों का विकास व्रज में हुआ। व्रज का विस्तार गायों ने किया। जहाँ 10 हजार गाय हुई उसे ब्रज की संज्ञा मिली। पोलासपुर के शकडाल के पास एक व्रज, वाणिज्य ग्राम के आनन्द के पास चार ब्रज, श्रावस्ती के सालिहिपिता के पास चार व्रज थे। चम्पानगरी का कामदेव, वाराणसी का सुरादेव, अमालिका का चुललशतक, कपिलकपुर का कुण्डकोशिक छः-छः ब्रजों का स्वामी था। काशी वासी महाशतक ने 8 व्रज खड़े किये थे। महाभारत काल में महाराज नृग ने 1 करोड़ गाय दान में दी। राजा विराट के पास उत्तम जाति की 1 लाख गाय तथा महाराज नन्द के पास 9 लाख गाय थी।

गौ को अध्न्या कहा गया है क्योंकि यह प्रजाओं को भाग्यवान व धनवान बनाती है। महाभारत में कहा गया है कि गायों के दूध से बढ़कर कोई पदार्थ नहीं। योगीश्वर भगवान कृष्ण ने 13 हजार 84 गाय प्रतिदिन दान करने का नियम बना लिया था।

युधिष्ठिर के पास गाय के 10 हजार वर्ग थे तथा प्रत्येक वर्ग में 8-8 लाख गाय थी। लाख-दो-लाख गाय के और भी वर्ग थे। कृष्ण ने गाण्डीवधारी अर्जुन को महाभारत के अनुशासन पर्व में कहा कि निर्भय होकर गौ जिस भूमि पर श्वांस लेती है, वह परम शोभामयी है वहाँ से पाप पलायित हो जाता है।

ऋग्वेद में कहा गया कि **जिस स्थान पर गाय सुखपूर्वक रह सके वहाँ की रजत पवित्र हो जाती है। वह स्थान तीर्थ बन जाता है।** अग्निपुराण में कहा है गौ पवित्र और मंगल दायिनी है। महाभारत में 18 लाख अक्षोहिणी सेना के विनाश का पाप नष्ट करने के लिए भगवान श्री कृष्ण ने महाराज युधिष्ठिर को **गोवत्स द्वादशी व्रत** रखने की सलाह दी थी। वैदिक काल में गाय दिन में तीन बार दुही जाती थी।

भगवान श्री कृष्ण ने भी गीता में कृषि के साथ गौ सेवा जारी रखी है 'कृषि गो रक्ष्य वाणिज्यम्।'

प्राचीन युग में गाय का महत्व

सायणाचार्य ने ऋग्वेद की व्याख्या की है। अपने भाष्य में उन्होंने वर्णन करते हुए कहा है कि सृष्टि के आदि में मनुष्य और गाय दोनों आये थे। दोनों मौन थे। पहले गाय ने बोलना शुरू किया तथा उसके सहारे से मनुष्य ने मुँह खोला अतः गायों से मनुष्य को बोली मिली।

राजा विराट के पास उत्तम जाति की एक लाख गाय थी। **महाराज नन्द के पास नौ लाख गाय थी।** महाराज नृग द्वारा एक करोड़ गाय ब्राह्मणों को दान में दी गई थी।

महर्षि वशिष्ठ की शबला नामक कामधेनु की महत्ता सभी को मालूम है। एक दिन महाराज विश्वामित्र अपनी विशाल सेना के साथ महर्षि वशिष्ठ के आश्रम पर ठहरे। शबला की कृपा से तथा उसके दूध से सारी सेना ने संतुष्ट होकर भोजन किया। गाय की महिमा से प्रसन्न होकर विश्वामित्रजी ने शबला की माँग ऋषि से कर डाली तब वशिष्ठ जी द्वारा अस्वीकार करने पर युद्ध हुआ। गौ की कृपा से वशिष्ठ ऋषि ने महाराज विश्वामित्र को परास्त कर दिया। महाराज जनक ने एक हजार गायों का दान याज्ञवल्क्य को पुरोहित बनाकर किया था। इक्ष्वाकु के पौत्र ने बैल के कुकुद पर चढ़कर युद्ध किया इसलिए रामजी के वंश का नाम काकुत्स्थ पड़ा। धन की देवी लक्ष्मी पहले पहल पृथ्वी पर गायों के रूप में आयी, उन्होंने जो गोबर त्यागा, उससे बिल्व वृक्ष की उत्पत्ति हुई।

शोणितपुर (वर्तमान में नेपाल) के राजा बाणासुर शंकर जी के महान भक्त थे। एक बार महादेव जी ने प्रसन्न होकर उन्हें अपने गोकुल में से वशिष्ठ जाति की 12 गाय ऐसी दी जिनको पाकर बाणासुर अत्यंत प्रतापी और शक्तिशाली हुए।

हिन्दुओं का विश्वास है कि गौ लोक सभी लोकों के ऊपर, सबसे पवित्र और सर्वोत्तम है।

●●

4. ''गौ सेवा की पौराणिक कथाएँ''

1. जबालापुत्र सत्यकाम को गोसेवा से ब्रह्मज्ञान

एक सदाचारिणी ब्राह्मणी थी, उसका नाम जबाला था। उसका एक पुत्र था **सत्यकाम**। जब वह विद्याध्ययन करने योग्य हुआ, तब एक दिन अपनी माता से कहने लगा- माँ ! मैं गुरूकुल में निवास करना चाहता हूँ, गुरूजी जब मुझे नाम और गोत्र पूछेंगे तो मैं अपना कौन-सा गोत्र बतलाऊँगा? इस पर उसने कहा कि पुत्र' ! मुझे तेरे पिता से गोत्र पूछने का अवसर नहीं प्राप्त हुआ, क्योंकि उन दिनों मैं सदा अतिथियों की सेवा में ही व्यस्त रहती थी। अतएव जब आचार्य तुमसे गोत्रादि पूछें, तब तुम इतना ही कह देना कि मैं, 'जबाला' का पुत्र 'सत्यकाम' हूँ। माता की आज्ञा लेकर सत्यकाम **हरिद्रुमत गौतमऋषि** के यहाँ गया और बोला- 'मैं श्रीमान के यहाँ ब्रह्मचर्यपूर्वक सेवा करने आया हूँ।' आचार्य ने पूछा 'वत्स ! तुम्हारा गोत्र क्या है?'

सत्यकाम ने कहा– 'भगवन् ! मेरा गोत्र क्या है, इसे मैं नहीं जानता। मैं 'सत्यकाम जाबाल' हूँ, बस इतना ही इस संबंध में जानता हूँ।' इस पर गौतम ने कहा– 'वत्स ! ब्राह्मण को छोड़कर दूसरा कोई भी इस प्रकार सरल भाव से सच्ची बात नहीं कह सकता। जा, थोड़ी समिधा ले आ। मैं तेरा उपनयन-संस्कार करूँगा।

सत्यकाम का उपनयन करके चार सौ दुर्बल गायों को उसके सामने लाकर गौतम ऋषि ने कहा– 'तू इन्हें वन में चराने ले जा। जब तक इनकी संख्या एक हजार न हो जाय, इन्हें वापस न लाना।' उसने कहा– 'भगवन्! इनकी संख्या एक हजार हुए बिना मैं न लौटूँगा।'

सत्यकाम गायों को लेकर वन में गया। वहाँ वह कुटिया बनाकर रहने लगा और तन-मन से गौओं की सेवा करने लगा। धीरे-धीरे गायों की संख्या पूरी एक हजार हो गयी। तब एक दिन एक वृषभ (साँड़) ने सत्यकाम के पास आकर कहा– 'वत्स ! हमारी संख्या एक हजार हो गयी है, अब तू हमें आचार्य कुल में पहुँचा दे। साथ ही ब्रह्मतत्व के संबंध में तुझे एक चरण का मैं उपदेश देता हूँ। वह ब्रह्म 'प्रकाशस्वरूप' है, इसका दूसरा चरण तुझे अग्नि बतलायेंगे।

सत्यकाम गौओं को हाँककर आगे चला। संध्या होने पर उसने गायों को रोक दिया और उन्हें जल पिलाकर वहीं रात्रि निवास की व्यवस्था की। तत्पश्चात् काष्ठ लाकर उसने अग्नि जलाई। अग्नि ने कहा–''सत्यकाम ! मैं तुझे ब्रह्मा का द्वितीय पाद बतलाता हूँ वह 'अनन्त' लक्षणात्मक है, अगला उपदेश तुझे हंस करेगा।''

अगले दिन सायंकाल सत्यकाम पुनः किसी सुंदर जलाशय के किनारे ठहर गया और उसने गौओं के रात्रि निवास की व्यवस्था की। इतने में ही एक हंस ऊपर से उड़ता हुआ आया और सत्यकाम के पास बैठकर बोला– 'सत्यकाम !' सत्यकाम ने कहा–'भगवन् ! क्या आज्ञा है ?' हंस ने कहा–''मैं तुझे ब्रह्म के तृतीय पाद का उपदेश कर रहा हूँ, वह 'ज्योतिष्मान्' है, चतुर्थ पाद का उपदेश तुझे मुद्ग (जलकुक्कुट) करेगा।''

अगले दिन सायंकाल सत्यकाम ने एक वट वृक्ष के नीचे गौओं के रात्रि निवास की व्यवस्था की। अग्नि जलाकर वह बैठ ही रहा था कि एक जलमुर्ग ने आकर पुकारा और कहा ''वत्स ! मैं तुझे ब्रह्म के चतुर्थ पाद का उपदेश करता हूँ, वह 'आयतन स्वरूप' है।''

इस प्रकार उन-उन देवताओं से सच्चिदानन्द घन लक्षण परमात्मा का बोध प्राप्त कर एक सहस्त्र गौओं को लेकर सत्यकाम आचार्य गौतम ऋषि के यहाँ पहुँचा। आचार्य ने उसकी चिन्ता रहित, तेजपूर्ण दिव्य मुख कान्ति को देखकर कहा–''वत्स ! तू ब्रह्मज्ञानी के सदृश दिखलायी पड़ता है।'' सत्यकाम ने कहा– ''भगवन् ! मुझे मनुष्यतरों से विद्या मिली है। मैंने सुना है कि आपके सदृश आचार्य के द्वारा प्राप्त हुई विद्या ही श्रेष्ठ होती है, अतएव मुझे आप ही पूर्ण रूप से उपदेश कीजिए।'' आचार्य बड़े प्रसन्न हुए और बोले–''वत्स ! तूने जो प्राप्त किया है, वही ब्रह्मतत्व है।'' तदनन्तर आचार्य ने उस सम्पूर्ण तत्व का पुनः ठीक उसी प्रकार उपदेश किया। (छान्दोग्य 4.4-9)

2. गौ संरक्षक सम्राट दिलीप का गौ प्रेम

महाराज दिलीप और देवराज इन्द्र में मित्रता थी। देवराज के बुलाने पर दिलीप एक बार स्वर्ग गये। वहाँ से लौटते समय मार्ग में **कामधेनु** मिली किन्तु दिलीप ने पृथ्वी पर आने की आतुरता के कारण उसे देखा नहीं। **कामधेनु** को उन्होंने प्रणाम नहीं किया। इस अपमान से रुष्ट होकर कामधेनु ने श्राप दिया– ''मेरी संतान यदि कृपा न करे तो यह पुत्रहीन ही रहेगा।''

महाराज दिलीप को शाप का कुछ पता नहीं था किन्तु उनके कोई पुत्र न होने से वे स्वयं, महारानी तथा प्रजा के लोग भी चिन्तित एवं दुःखी रहते थे। पुत्र-प्राप्ति की इच्छा से महाराज रानी के साथ **कुलगुरु महर्षि वशिष्ठ** के आश्रम पर पहुँचे। महर्षि ने उनकी प्रार्थना सुनकर आदेश दिया–''**कुछ काल आश्रम में रहो और मेरी कामधेनु नन्दिनी की सेवा करो।**''

महाराज ने गुरु की आज्ञा स्वीकार कर ली। महारानी सुदक्षिणा प्रातःकाल उस गौ की भली-भाँति पूजा करती थीं। आरती उतारकर नन्दिनी को पति के संरक्षण में वन में चरने के लिए बिदा करती। सम्राट दिन भर छाया की भाँति उसका अनुगमन करते, उसके ठहरने पर ठहरते, चलने पर चलते, बैठने पर बैठते और जल पीने पर जल पीते। संध्या काल में जब सम्राट के आगे-आगे सद्यः

प्रसूता, बालवत्सा (छोटे दुध मुँहे बछड़े वाली) नन्दिनी आश्रम को लौटती तो सम्राज्ञी देवी सुदक्षिणा हाथ में अक्षत-पात्र लेकर उसकी प्रदक्षिणा करके उसे प्रणाम करती और अक्षतादि से पुत्र प्राप्ति रूप अभीष्ट-सिद्धि देने वाली उस नन्दिनी का विधिवत् पूजन करती। बछड़े को यथेश्च पयः पान परिचर्या करते, अपने हाथों से कोमल हरित शष्प-कवल खिलाकर उसकी परितृप्ति करते और उसके विश्राम करने पर शयन करते। इस तरह उसकी परिचर्या करते इक्कीस दिन बीत गये।

एक दिन वन में नन्दिनी का अनुगमन करते महाराज दिलीप की दृष्टि क्षणभर अरण्य की प्राकृतिक सुषमा में अटक गयी कि तभी उन्हें नन्दिनी का आर्तनाद सुनायी दिया। वह एक भयानक सिंह के पंजों में फँसी छटपटा रही थी। उन्होंने आक्रामक सिंह को मारने के लिए अपने तरकश से तीर निकालना चाहा, किन्तु उनका हाथ जड़वत् निश्चेष्ट होकर वहीं अटक गया, वे खड़े रह गये, भीतर-ही-भीतर छटपटाने लगे।

किन्तु परदुःखकातर दिलीप भय और व्यथा से छटपटाती, नेत्रों से अविरल अश्रुधारा बहाती नंदिनी को देखकर और उस संध्याकाल में अपनी माँ की उत्कण्ठा से प्रतीक्षा करने वाले उसके दुध मुँहे बछड़े का स्मरण कर करुणा-विगलित हो उठे। नंदिनी का मातृत्व उन्हें अपने जीवनसे कहीं अधिक मूल्यवान जान पड़ा और उन्होंने सिंह से प्रार्थना की कि वह उनके शरीर को खाकर अपनी भूख मिटा ले और बालवत नंदिनी को छोड़ दे–

सिंह ने राजा के इस अद्भुत प्रस्ताव का उपहास करते हुए कहा–'राजन् ! तुम चक्रवर्ती सम्राट हो। गुरु के नंदिनी के बदले करोड़ों दुधार गौएँ देकर प्रसन्न कर सकते हो। इस तुच्छ प्राणी के लिए अपने स्वस्थ-सुंदर शरीर और यौवन की अवहेलना कर जान की बाजी लगाने वाले सम्राट ! लगता है तुम अपना विवेक खो बैठे हो'–

भगवान् शंकर के अनुचर सिंह की बात सुनकर अत्यंत दयालु महाराज दिलीप ने उसके द्वारा आक्रान्त नंदिनी को देखा जो अश्रुपूरित कातर नेत्रों से उनकी ओर देखती हुई प्राण रक्षा की याचना कर रही थी।

राजा ने क्षत्रियत्व के महत्व को प्रतिपादित करते हुए उत्तर दिया–''नहीं सिंह ! नहीं, मैं इसे तुम्हारा भक्ष्य बनाकर नहीं लौट सकता। मैं अपने क्षत्रियत्व को क्यों कलंकित करूँ?'' क्षत्रिय संसार में इसलिए प्रसिद्ध हैं कि वे 'क्षत'–विनाश या विपत्ति से औरों की रक्षा करते हैं। राज्य का भोग उनका लक्ष्य नहीं। उनका लक्ष्य तो है लोक रक्षा से कीर्ति अर्जित करना। निन्दा से मलिन प्राणों और राज्य को तो वे तुच्छ वस्तुओं की तरह त्याग देते हैं,

इसलिए तुम मेरे यशः शरीर पर दयालु होओ। मेरे भौतिक शरीर को खाकर उसकी रक्षा करो, क्योंकि यह शरीर तो नश्वर है।

सिंह के स्वीकृति दे देने पर राजर्षि दिलीप ने शस्त्रों को फेंक दिया और उसके आगे अपना शरीर मांस पिण्ड की तरह खाने के लिए डाल दिया और वे उसके आक्रमण की प्रतीक्षा करने लगे, तभी आकाश से विद्याधर उन पर पुष्प वृष्टि करने लगे। नन्दिनी ने कहा–'हे पुत्र ! उठो !' यह मधुर दिव्य वाणी सुनकर राजा को महान् आश्चर्य हुआ और उन्होंने **वात्सल्यमयी जननी** की तरह अपने स्तनों से दूध बहाती हुई नंदिनी गौ को देखा, किन्तु सिंह दिखलायी नहीं दिया। आश्चर्यचकित दिलीप से नंदिनी ने कहा–''हे सत्पुरुष ! तुम्हारी परीक्षा लेने के लिए मैंने ही माया से सिंह की सृष्टि की थी। महर्षि वशिष्ठ के प्रभाव से यमराज भी मुझ पर प्रहार नहीं कर सकता तो अन्य हिंसक सिंहादि की क्या शक्ति है। मैं तुम्हारी गुरु भक्ति से और मेरे प्रति प्रदर्शित दयाभाव से अत्यंत प्रसन्न हूँ। वर माँगो ! तुम मुझे दूध देने वाली मामूली गाय मत समझो, अपितु सम्पूर्ण कामनाएँ पूरी करने वाली कामधेनु जानो।'' राजा ने दोनों हाथ जोड़कर वंश चलाने वाले अनन्त कीर्ति पुत्र की याचना की।

नन्दिनीने 'तथास्तु' कहकर उन्हें पत्ते के दोने में अपना दूध दुहकर पी लेने की आज्ञा दी।

राजा ने निवेदन किया–''माँ ! बछड़े के पीने तथा होमादि अनुष्ठान के बाद बचे हुए ही तुम्हारे दूध को मैं पी सकता हूँ।''

राजा के धैर्य ने नंदिनी के हृदय को जीत लिया। वह प्रसन्नमना धेनु राजा के आगे-आगे आश्रम को लौट आयी। राजा ने बछड़े के पीने तथा अग्निहोत्र से बचे दूध का महर्षि की आज्ञा पाकर पान किया, फलतः वे रघु जैसे महान् यशस्वी पुत्र से पुत्रवान् हुए और उनकी **गोभक्ति तथा गोसेवा** सभी के लिए एक महानतम आदर्श बन गयी। इसलिए आज भी गोभक्तों की परिगणना में महाराज दिलीप का नाम बड़े ही श्रद्धा भाव एवं आदर से सर्वप्रथम लिया जाता है।

●

3. राजा विराट की गो सम्पदा और पाण्डु पुत्र सहदेव की गो-चर्या

गौ भारत की राष्ट्रीय समृद्धि और सम्पदा की विशिष्ट प्रतीक रही है। तपोवन-संस्कृति की यह महत्वपूर्ण अङ्ग थी। गृहस्थों की ही नहीं आश्रम में रहने वाले ऋषियों की समृद्धि का परिचय भी उनके यहाँ रहने वाली गौओं की संख्या से मिलता है। उपनिषदों में ऐसी अनेक कथाएँ हैं, जिनमें राजा शास्त्रार्थ में विजयी ऋषियों को अनेक सोने से मढ़ी सींगों वाली गाय देने की घोषणा करते थे। महाभारत

में मत्स्य देश के राजा विराट के गोहरण की कथा में इसका ऐतिहासिक प्रमाण मिलता है कि गो सम्पदा को कितना महत्व दिया जाता था तथा राजाओं के यहाँ उनके रक्षण की व्यवस्था क्या थी।

राजा विराट का मत्स्यदेश अपनी विशाल गोसम्पदा के लिए प्रसिद्ध था। यह सम्पदा इतनी विशाल थी कि दूसरे राष्ट्रों की आँख इस पर लगी रहती थी। द्रोपदी सहित पाँचों पाण्डव अपने वनवास के 13वें वर्ष में छद्म-वेष में राजा विराट के यहाँ रह रहे थे। इधर दुर्योधन अपने गुप्तचरों द्वारा चारों ओर उनकी खोज करवा रहा था। इसी क्रम में दुर्योधन ने राजा विराट के यहाँ भी गुप्तचरों को भेजा और राजा विराट के गोधन का अपहरण करने की योजना बनायी। दुर्योधन को यह संभावना थी कि यदि पाण्डव वहाँ छिपे होंगे तो निश्चय ही वे अपने मित्र विराट के गोधन की रक्षा के लिए बाहर आयेंगे। यदि उनका पता नहीं भी लगेगा तो गायों की विशाल सम्पदा हमारे हाथ लगेगी ही। अतः उन्होंने मत्स्य देश पर चढ़ाई कर दी और विशाल गो सम्पदा का अपहरण कर लिया, परन्तु पाण्डवों के सहयोग से राजा विराट ने पुनः उसे प्राप्त कर लिया।

सहदेव ग्वालों का परम उत्तम रूप बनाकर विराट की सभा में गये। वहाँ उन्होंने पाण्डवों की **गो समृद्धि** और उसकी व्यवस्था का राजा विराट को जो परिचय दिया है उससे यह स्पष्ट ज्ञात होता है कि राजाओं के यहाँ गायों के संरक्षण और उनके पालन की विशेष व्यवस्था थी और उसके लिए पृथक् विभाग हुआ करता था। **महाभारत** के उल्लेख से ज्ञात होता है कि विराट के यहाँ गौओं के रहने का स्थान राजभवन के निकट ही था–

गोष्ठमासाद्य तिष्ठन्तं भवनस्य समीपतः।

विराट के समक्ष सहदेव ने अपना परिचय दिया कि वे पाण्डवों के यहाँ गो संरक्षक थे। उनका काम गौओं की गणना और उनकी देखभाल करना था। पाण्डवों की गौओं की विशाल संख्या, उनका वर्गीकरण, गणना और देखभाल की व्यवस्था का परिचय उन्होंने राजा विराट के समक्ष इस रूप में दिया–युधिष्ठिर के पास गौओं के आठ लाख वर्ग थे और प्रत्येक वर्ग में सौ-सौ गायें थीं। इनसे भिन्न प्रकार की गायों के एक लाख वर्ग तथा तीसरे प्रकार की गायों के इनसे दूने अर्थात् दो लाख वर्ग थे। पाण्डवों की इतनी गायों का मैं गणक तथा निरीक्षक था। वे लोग मुझे 'तन्तिपाल' कहा करते थे। गायों की मुझे इतनी सूक्ष्म पहचान है कि चारों ओर दस योजन की दूरी में जितनी गायें हों उनकी भूत, वर्तमान, भविष्य में जितनी संख्या थी, है, और होगी, उसे बतला सकता हूँ। गौओं के संबंध में तीनों कालों में होने वाली कोई ऐसी बात नहीं है जो मुझे ज्ञात न हो। महाराज युधिष्ठिर मेरे

इन गुणों से भलीभाँति परिचित थे, इसलिए वे मुझ पर सदा संतुष्ट रहते थे। जिन-जिन उपायों से गौओं की संख्या शीघ्र बढ़ जाती है और उनमें कोई रोग नहीं होता, वह सब मुझे ज्ञात है। इसके अतिरिक्त उत्तम लक्षण वाले उन बैलों की भी मुझे पहचान है, जिनके मूत्र को सूँघ लेने मात्र से वंध्या स्त्री भी गर्भ धारण करने योग्य हो जाता है—

ऋषभांश्चापि जानामि राजन् पूजित-लक्षणान्।

येषां मूत्रमुपाघ्राय अपि वन्ध्या प्रसूयते।।

सहदेव द्वारा कहे विवरण से ज्ञात होता है कि उस युग का गो लक्षण और संरक्षण-विज्ञान अत्यंत विकसित था और बड़े राजाओं के यहाँ इसकी विशेष व्यवस्था थी। राजा विराट के राज्य में भी एक लाख गायें थीं। इनमें कुछ तो एक ही रंग की थीं और कुछ मिश्रित रंग की। ये सभी भिन्न-भिन्न गुणों से युक्त थीं। विराट ने अपनी सम्पत्ति का परिचय इन शब्दों में दिया है—

शतं सहस्राणि समाहितानि

सवर्णवर्णस्य विमिश्रितान् गुणैः।

विराट ने सहदेव को गौपालकों के साथ इन गोओं के संरक्षण का भार सौंपा। गोपाल गौपालन में ही नहीं, युद्ध कला में भी निपुण होते थे। जब कौरवों के मित्र त्रिगर्तों की सेना ने गौओं की बस्ती पर आक्रमण किया और गौओं को हरकर ले जाने लगे तब गोपालों ने अस्त्र-शस्त्रों से वीरतापूर्वक युद्ध किया। युद्ध में उन्होंने परशु, मुसल, भिन्दिपाल, मुद्गर तथा कर्षण नामक विचित्र अस्त्रों का प्रयोग किया। पहली बार तो वे अश्व सैनिकों को मार भगाने में सफल हुए, किन्तु सैनिकों की शरवर्षा के आगे वे टिक नहीं सके। त्रिगर्तराज गौओं का अपहरण करके ले जाते हैं। विराट उन्हें छुड़ाने के लिए जाते हैं, किन्तु बंदी बना लिए जाते हैं। विराट के युद्ध के लिए जाते ही कौरव उत्तर दिशा से मत्स्य देश पर आक्रमण कर देते हैं और वहाँ की साठ हजार गौओं का अपहरण कर लेते हैं। अर्जुन भीषण युद्ध द्वारा कौरवों की विराट सेना पर विजय प्राप्त करके गौओं को मुक्त करते हैं। यहीं पाण्डवों का अज्ञातवास समाप्त होता है और वे अपना छद्मवेष त्यागकर अपने असली रूप में प्रकट होते हैं।

महाभारत का यह गोहरण-आख्यान महाभारत कालीन गो सम्पदा के महत्व तथा गो रक्षण-व्यवस्था का ऐतिहासिक प्रमाण है। गौ राष्ट्र की महत्वपूर्ण सम्पत्ति समझी जाती थी तथा इसकी अस्मिता और गरिमा का प्रश्न इससे जुड़ा हुआ था।

●

4. 'च्यवन ऋषि की गौभक्ति''

पुराणों में गौ की अनन्त महिमा गाई गई है। महाभारत में आख्यान है कि एक बार च्यवन ऋषि गंगा गर्भ में बैठकर तपस्या कर

रहे थे। मछली पकड़ने वालों के जाल में मुनि जी भी आ गये। वे मछलियों के साथ बिकते हुए 'नहुष' के दरबार में पहुँचे। राजा मुनि जी के बदले एक थैली सोना देने लगा, किन्तु मुनि ने कहा यह अन्याय है मछुआरे के साथ। राजा ने और भी बहुत सा सोना लगा दिया और अन्त में अपना समूचा राज्य तक देना चाहा। परन्तु मुनि जी ने कहा—आप उसे एक गौ दे दीजिए, बस यही बदला ठीक हो जायेगा। गौ की इतनी महिमा है।

●

5. गो-सेवा-व्रत से पुत्र प्राप्ति और रामनाम-स्मरण से गोहत्या-पाप का नाश

ऋतम्भर नाम के एक राजा थे। उनकी कई स्त्रियाँ थीं, पर उनकी कोई सन्तान नहीं थी। एक दिन अकस्मात् जाबालि मुनि आ पहुँचे। राजा ने स्वागत-सत्कार के बाद संतान के लिए उपाय पूछा।

पुत्रकामी धर्मात्मा राजा ऋतम्भर ने मुनि के आज्ञानुसार गो-सेवा-व्रत ग्रहण कर दिया। एक दिन वन में राजा प्रकृति की शोभा देख रहे थे कि इसी बीच में दूसरे वन से आकर एक सिंह ने गौ को मार डाला। उस समय गौ ने बड़े कातर-स्वर से ऊँची आवाज की। राजा ने दौड़कर देखा और अपनी गो-माता को सिंह के द्वारा निहत जानकर वे विकल होकर रोने लगे। तदनन्तर धैर्य धारण करके वे जाबालि मुनि के पास आये और सारी घटना सुनाकर उनसे इस पाप से छूटने का और पुत्र व्रत की पूर्ति का उपाय पूछा। मुनि ने कहा—'पापों के नाश करने के लिए शास्त्रों ने भाँति-भाँति के प्रायश्चित बतलाये हैं। नियमानुसार उनका अनुष्ठान करने से पाप नष्ट हो जाते हैं। परन्तु—अज्ञान से किये हुए गो-वध का प्रायश्चित है। तुम राजा ऋतु पर्ण के पास जाओ, वे तुम्हें उचित परामर्श देंगे।'

जाबालि मुनि के आज्ञानुसार राजा ऋतम्भर समदृष्टि-सम्पन्न श्रीराम-भक्त राजा ऋतु पर्ण के पास गये और सभी कथा सुनाकर उन्होंने उपाय पूछा। प्रतापवान् धर्मविद् बुद्धि ऋतुपर्ण ने हँसते हुए कहा—'महाराज! कहाँ शास्त्रवेता मुनि और कहाँ मैं। आप उन्हें छोड़कर मुझ पण्डिताभिमानी मूर्ख के पास क्यों आये ? परन्तु यदि मेरे ही प्रति आपकी श्रद्धा है तो मैं निवेदन करता हूँ, आप आदरपूर्वक सुनिये—

भज श्रीरघुनाथं त्वं कर्मणा मनसा गिरा।
नैष्कापट्येन लोकेशं तोपयस्व महामते।।
सन्तुष्टो दास्यते सर्वं तव हृत्स्थं मनोरथम्।
अज्ञानकृतगोहत्सापापनाशं करिष्यति।।

'महामते ! अब आप कपट छोड़कर तन, मन, वचन से सर्वलोकेश्वर भगवान् श्रीराम का भजन कीजिये और उनको सन्तुष्ट करने में लगिये। वे सन्तुष्ट होकर आपके हृदय की समस्त कामनाओं को पूर्ण कर देंगे और आपके इस अज्ञानकृत गो-हत्या-पाप को भी नष्ट कर देंगे।'

महाराज ऋतु पर्ण से आदेश प्राप्त करके गो-सेवाव्रती राजा ऋतम्भर भगवान् श्रीराम के भजन-स्मरण से पवित्रात्मा होकर पुनः व्रत पालन में लग गये। वे प्राणि मात्र के हित साधन में लगकर निरन्तर भगवान् श्रीरामचन्द्र के नाम का स्मरण करते हुए गो-सेवा के लिये महान् वन में चले गये। कुछ दिनों के बाद उनकी सेवा से सन्तुष्ट होकर कृपामयी देवी कामधेनु ने प्रकट होकर उन्हें अभीष्ट वर दिया और फिर वे अन्तर्धान हो गयीं। उसी वर के फलस्वरूप नरेन्द्र ऋतम्भर के घर परम भक्त सत्यवान् नामक पुत्र उत्पन्न हुआ।

●

6. चरती गाय को रोकने से नरक-दर्शन

प्राचीन काल की बात है। **राजा जनक** ने ज्यों ही योग बल से शरीर का त्याग किया, त्यों ही एक सुन्दर सजा हुआ विमान आ गया और राजा दिव्य-देहधारी सेवकों के साथ उस पर चढ़कर चले। विमान यमराज की संयमनीपुरी के निकटवर्ती मार्ग से जा रहा था। ज्यों ही विमान वहाँ से आगे बढ़ने लगा, त्यों ही बड़े ऊँचे स्वर से राजा को हजारों मुखों से निकली हुई करुण-ध्वनि सुनायी पड़ी—'पुण्यात्मा राजन् ! आप यहाँ से जाइये नहीं; आपके शरीर को छूकर आने वाली वायु का स्पर्श पाकर हम यातनाओं से पीड़ित नरक के प्राणियों को बड़ा ही सुख मिल रहा है।' धार्मिक और दयालु राजा ने दुखी जीवों की करुण पुकार सुनकर दयार्द्र होकर निश्चय किया कि 'जब मेरे यहाँ रहने से इन्हें सुख मिलता है, तो बस, मैं यहीं रहूँगा। मेरे लिये यही सुन्दर स्वर्ग है।' राजा वहीं ठहर गये। तब यमराज ने उनसे कहा—'यह स्थान तो दुष्ट, हत्यारे पापियों के लिये है। हिंसक, दूसरों पर कलंक लगाने वाले, लुटेरे, पति परायणा पत्नी का त्याग करने वाले, मित्रों को धोखा देने वाले, दम्भी, द्वेषी और उपहास करने वाले मन-वाणी-शरीर से कभी भगवान् का स्मरण न करने वाले जीव यहाँ आते हैं और उन्हें नरकों में डालकर मैं भयंकर यातना दिया करता हूँ। तुम तो पुण्यात्मा हो, यहाँ से अपने प्राप्त दिव्यलोक में जाओ।' जनक ने कहा—'मेरे शरीर से स्पर्श की हुई वायु इन्हें सुख पहुँचा रही है, तब मैं कैसे जाऊँ ? आप इन्हें इस दुःख से मुक्त कर दें, तो मैं भी सुख पूर्वक स्वर्ग चला जाऊँगा।'

यमराज ने पापियों की ओर इशारा करते हुए कहा—'ये कैसे मुक्त हो सकते हैं ?' इन्होंने बड़े-बड़े पाप किये हैं। इस पापी ने अपने पर विश्वास करने वाली मित्र की पत्नी का बलात्कार किया था, इसलिए इसको मैंने लोहशंकु नामक नरक में डालकर दस हजार वर्षों तक पकाया है। अब इसे पहले सूअर की और फिर मनुष्य की योनि प्राप्त होगी और वहाँ यह नपुंसक होगा। यह दूसरा बलपूर्वक व्यभिचार में प्रवृत्त था। सौ वर्षों तक रौरव

नरक में पीड़ा भोगेगा। इस तीसरे ने पराया धन चुराकर भोगा था, इसलिए दोनों हाथ काटकर इसे पूय-शोणित नामक नरक में डाला जायेगा। इस प्रकार ये सभी नरक के अधिकारी हैं। तुम यदि इन्हें छुड़ाना चाहते हो तो अपना पुण्य अर्पण करो। एक दिन प्रातः काल शुद्ध मन से तुम ने **मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीरघुनाथ जी का ध्यान किया था** और अकस्मात् राम-नाम का उच्चारण किया था, बस, वही पुण्य इन्हें दे दो। उससे इनका उद्धार हो जायेगा।'

राजा ने तुरन्त अपने जीवन भर का पुण्य दे दिया और इसके प्रभाव से नरक के सारे प्राणी नरक-यंत्रणा से तत्काल छूट गये तथा दया के समुद्र महाराज जनक का गुण गाते हुए दिव्य लोक को चले गये।

तब राजा ने धर्म राज से पूछा कि 'जब धार्मिक पुरुषों का यहाँ आना ही नहीं होता, तब फिर मुझे यहाँ क्यों लाया गया ?' इस पर धर्म राज ने कहा, 'राजन् ! तुम्हारा जीवन तो पुण्यों से भरा है। पर एक दिन तुमने छोटा-सा पाप किया था।'

एकदा तु चरन्तीं गां वारयामास वै भवान्।
तेन पापविपाकेन निरयद्वारदर्शनम्।।

तुम ने चरती हुई गाय को रोक दिया था। उसी पाप के कारण तुम्हें नरक का दरवाजा देखना पड़ा। अब तुम उस पाप से मुक्त हो गये और इस पुण्यदान से तुम्हारा पुण्य और भी बढ़ गया। तुम यदि इस मार्ग से न आते तो इन बेचारों का यंत्रणामय नरक से कैसे उद्धार होता ? तुम-जैसे दूसरों के दुःख से दुखी होने वाले दयाधाम महात्मा दुखी प्राणियों का दुःख हरने में ही लगे रहते हैं। भगवान् कृपासागर हैं। पाप का फल भुगताने के बहाने इन दुखी जीवों का दुःख दूर करने के लिए ही इस संयमनी के मार्ग से उन्होंने तुमको यहाँ भेज दिया है।' तदनन्तर राजा धर्मराज को प्रणाम करके परम धाम को चले गये।

●

7. गोबर में लक्ष्मी जी का निवास

एक बार मनोहर रूपधारिणी लक्ष्मी जी ने गौवंशों के समूह में प्रवेश किया। उनके सौन्दर्य को देखकर गायों को बड़ा आश्चर्य हुआ और उन्होंने उनका परिचय पूछा, लक्ष्मीजी ने कहा–गायों ! तुम्हारा कल्याण हो। इस जगत में सब लोग मुझे लक्ष्मी कहते हैं। सारा जगत मुझे चाहता है। मैंने दैत्यों को छोड़ दिया, इससे वे नष्ट हो गये। इन्द्र आदि देवताओं को आश्रय दिया, तो वे सुख भोग रहे हैं। देवताओं और ऋषियों को मेरी ही शरण में आने से सिद्धी मिलती है। जिसके शरीर में मैं प्रवेश नहीं करती उसका नाश हो जाता है। धर्म, अर्थ और काम ये मेरे ही सहयोग से सुख देने वाले हो सकते हैं। मेरा ऐसा प्रभाव है। अब मैं तुम्हारे शरीर में सदा निवास करना चाहती हूँ इसके लिये स्वयं तुम्हारे पास आकर प्रार्थना

करती हूँ। तुम लोग मेरा आश्रय ग्रहण करो और श्री लक्ष्मी सम्पन्न हो जाओ। गायों ने कहा - हे देवी ! बात तो ठीक है, पर तुम बड़ी चंचला हो। कहीं भी जमकर नहीं रहती। फिर तुम्हारा संबंध भी बहुतों के साथ है। इसलिये हमको तुम्हारी इच्छा नहीं है। तुम्हारा कल्याण हो। हमारा शरीर तो सुन्दर है। हमें तुमसे कोई काम नहीं है। तुम इच्छा हो, जा सकती हो। तुमने हमसे बातचीत की, इसी से हम अपने को कृतार्थ मानते हैं। लक्ष्मी जी ने कहा- गायों ! तुम यह क्या कर रही हो ? मैं बड़ी दुर्लभ हूँ और परम सती हूँ, पर तुम मुझे स्वीकार नहीं करती ! आज मुझे यह पता लगा कि 'बिना बुलाये किसी के पास जाने से अनादर होता है यह कहावत सत्य है। **उत्तम व्रतचारिणी धेनुओं** ! देवता, दानव, गन्धर्व, पिशाच, नाग, मनुष्य और राक्षस बड़ी उग्र तपस्या करने पर कहीं मेरी सेवा का सौभाग्य प्राप्त करते हैं, तुम मेरे इस प्रभाव पर ध्यान दो और मुझे स्वीकार करो। देखों इस चराचर जगत में मेरा अपमान कोई भी नहीं करता। गायों ने कहा-देवी ! हम तुम्हारा अपमान नहीं करते। हम तो केवल त्याग कर रहे हैं, वो भी इसलिये कि तुम्हारा चित्त चंचल है। तुम कहीं स्थिर होकर नहीं रहती, फिर भी हम लोगों का शरीर तो स्वभाव से सुंदर है अतएव तुम जहाँ जाना चाहो चली जाओ ! लक्ष्मीजी ने कहा- गायों ! तुम दूसरों को आदर देने वाली हो। मुझको यूँ त्याग दोगी, तो फिर संसार में सर्वत्र मेरा अनादर होने लगेगा। मैं तुम्हारी शरण में आयी हूँ, निर्दोष हूँ और तुम्हारी सेविका हूँ यह जानकर मेरी रक्षा करो। मुझे अपनाओ ! तुम महान् सौभाग्यशालिनी, सदा सबका कल्याण करने वाली, सबको शरण देने वाली पुण्यमयी पवित्र और सौभाग्यशाली हो। मुझे बतलाओ मैं तुम्हारे शरीर के किस भाग में रहूँ। गायों ने कहा- यशस्विनी ! हमें तुम्हारा सम्मान अवश्य करना चाहिये। अच्छा, तुम हमारे गोबर में निवास करो। जो बहुत पवित्र है। लक्ष्मी जी ने कहा- सुखदायिनी गायों ! तुम लोगों ने मुझ पर बड़ा उपकार किया मेरा मान रख लिया, तुम्हारा कल्याण हो। मैं ऐसा ही करूँगी। गायों के साथ इस प्रकार प्रतिज्ञा करके देखते ही देखते लक्ष्मी जी वहाँ से अन्तर्ध्यान हो गयी। **तब से गोबर में लक्ष्मी जी का स्थायी निवास हो गया।**

●

8. महारानी अहिल्याबाई की गो भक्ति

एक बार मध्यप्रदेश के इन्दौर नगर में एक रास्ते से महारानी देवी अहिल्याबाई होल्कर के पुत्र मालोजीराव का रथ निकला तो उनके रास्ते में हाल ही में जनी गाय का एक बछड़ा सामने आ गया। गाय अपने बछड़े को बचाने दौड़ी तब तक मालोरावजी का रथ गाय के बछड़े को कुचलता हुआ आगे बढ़

गया। किसी ने उस बछड़े की परवाह नहीं की। गाय बछड़े के निधन से स्तब्ध व आहत होकर बछड़े के पास ही सड़क पर बैठ गई। थोड़ी देर बाद अहिल्याबाई वहाँ से गुजरी। अहिल्याबाई ने गाय को और उसके पास पड़े मृत बछड़े को देखकर घटनाक्रम के बारे में पता किया।

सारा घटनाक्रम जानने पर अहिल्याबाई ने दरबार में मालोजी की पत्नी मेनाबाई से पूछा–

''यदि कोई व्यक्ति किसी माँ के सामने ही उसके बेटे की हत्याकर दे, तो उसे क्या दण्ड मिलना चाहिए ?''

मालोजी की पत्नी ने जवाब दिया–

''उसे प्राण दण्ड मिलना चाहिए।''

देवी अहिल्याबाई ने मालोराव को हाथ-पैर बाँधकर मार्ग पर डालने के लिए कहा और फिर उन्होंने आदेश दिया मालोजी को मृत्यु दण्ड रथ से टकराकर दिया जाए। यह कार्य कोई भी सारथी करने को तैयार न था।

देवी अहिल्याबाई न्यायप्रिय थी। अतः वे स्वयं ही माँ होते हुए भी इस कार्य को करने के लिए रथ पर सवार हो गईं। वे रथ को लेकर आगे बढ़ी ही थीं कि तभी एक अप्रत्याशित घटना घटी। वहीं गाय फिर रथ के सामने आकर खड़ी हो गई। उसे जितनी बार हटाया जाता उतनी बार पुनः अहिल्याबाई के रथ के सामने आकर खड़ी हो जाती।

यह दृश्य देखकर मंत्री परिषद् ने देवी अहिल्याबाई से मालोजी को क्षमा करने की प्रार्थना की, जिसका आधार उस गाय का व्यवहार बना।

इस तरह गाय ने स्वयं पीड़ित होते हुए भी मालोजी को द्रौपदी की तरह क्षमा करके उनके जीवन की रक्षा की।

इन्दौर में जिस जगह यह घटना घटी थी वह स्थान आज भी गाय के आड़ा होने के कारण 'आड़ा बाजार' के नाम से जाना जाता है। उसी स्थान पर गाय ने अड़कर दूसरे की रक्षा की थी।

गौ-भक्ति के अन्य उल्लेख

प्रजापति ने महादेव जी को कई गौएँ और एक वृषभ दिया। **शिव जी ने प्रसन्न होकर वृषभ को अपना वाहन बनाया।** शिवजी ने अपनी ध्वजा को वृषभ के चित्र से सुशोभित किया इसलिए वे वृषभ ध्वज कहलाये।

शास्त्रों से हमें ज्ञात हुआ है कि देवताओं ने महादेव जी को पशुओं का स्वामी अर्थात् पशुपति नाथ बना दिया।

पुराणों में धर्म को वृषभ रूप माना गया है। मध्य पर्व में कहा गया है कि सभी गाँवों में गोचर भूमि होनी चाहिए जो कम से कम एक हजार हाथ के परिणाम में हो।

भगवान आदिशंकराचार्य ब्रम्ह साक्षात्कार को सर्वोपरि उपलब्धि मानने वाले ब्रह्ममोपलब्धि में सर्वोपरि साधना गो सेवा करने वाले आचार्य हैं।

सन्त नामदेव जब मंडली लेकर दिल्ली आ गए बादशाह ने उन्हें मुसलमान धर्म स्वीकार करने कहा और उनकी परीक्षा ली कसाई से गाय का सिर कटवाकर कहा कि तुम सच्चे सन्त हो तो इस गाय को जीवित करो अन्यथा तुम्हारा सिर कलम कर दिया जाएगा।

नामदेव जी ने उत्तर दिया मुझ में कोई शक्ति नहीं जो प्रभु करता है वही होता है।

जब नामदेव जी को हाथी के पैरों तले कुचलवाने का आदेश बादशाह ने दिया तब भगवान विट्ठल की कृपा से सन्त नामदेव बच गए। भगवान विट्ठल बैकुण्ठ से गरुड़ पर चढ़कर वहाँ आये और उन्होंने मृत गाय को जीवित कर दिया।

भक्त वत्सल भगवान ने नामदेव जी से कहा नामदेव। तुम धन्य हो। **धर्म और गाय की रक्षा हेतु अपने प्राणों को न्योछावर करने वाले नामदेव धन्य हो।**

बादशाह शर्म से पानी-पानी हो गया, नामदेवजी के चरणों में झुककर क्षमा माँगने लगा। इस घटना का वर्णन 'गुरुग्रन्थ साहिब' में वर्णित है।

एक दिन कसाई बाजार से एक गाय को डण्डे से मारता-मारता जबरन लिये जा रहा था, दुकानों में बैठे हिन्दू व्यापारी मस्तक झुकाये यह सब देख रहे थे किसी में इतनी हिम्मत नहीं थी कि वो कसाई को कुछ कह सके **बालक शिवाजी ने** तुरन्त अपनी तलवार निकाली कूदकर कसाई के पास गये एक वार से रस्सी काटी तो गाय भाग गई और दूसरे बार से कसाई का सिर कटकर भूमि पर लुढ़कने लगा। इसलिए शिवाजी के राजा बनने पर उनके नाम में जोड़ा गया गौ ब्राह्मण प्रतिपालक।

महामहिमामयी गौ हमारी माता है। उसकी बड़ी ही अद्भुत महिमा है। वह सभी प्रकार से पूज्य है। समस्त वेद शास्त्र, पुराण, रामायण, महाभारत भागवत आदि ग्रन्थ गोमाता की महिमा से भरे पड़े हैं। गौमाता की सेवा से बढ़कर कोई दूसरा महान पुण्य नहीं है। विभिन्न आचार्यों द्वारा की गई गौ महिमा राष्ट्र की सांस्कृतिक एवं आर्थिक दृष्टि से उपयोगिता पर महत्वपूर्ण है।

ब्रह्मलीन योगिराज श्री देवरहा बाबा ने भारतीय संस्कृति की दृष्टि से गौ का महत्व गायत्री और गंगा से बढ़कर बताया है।

देवरहा बाबा के अनुसार यदि गायत्री वाक है गंगा प्राण है तो गौ मन है।

देवरहा बाबा कहते हैं कि मनुष्य की सम्पूर्ण क्रियाओं का मूल मन है तो फिर गौ मन की शुद्धि का मूल हेतु है।

बाबा के कहे अनुसार गो महिमा का सबसे अधिक वर्णन महाभारत के अनुशासन पर्व में है।

जिस राज्य में गोवध होता है वह आध्यामिकता से दूर हो जाता है। **जो राष्ट्र गौरक्षा में प्रमाद करता है वह इस संसार में यश और श्री से हीन हो जाता है।**

गौ हमें देवताओं को अर्पण करने योग्य हृवि देने वाली है। इसलिए गौ को हृविदुर्घा कहा गया है।

यज्ञ अनुष्ठान के पूर्व प्रत्येक यजमान को देहशुद्धि के लिए पंचगव्य प्राशन करने का विधान है। अध्न्या अर्थात् अवध्या (जिसका वध न हो) वेदों में अध्न्या पद का सवा सौ से अधिक बार प्रयोग हुआ है।

गौदेवी सम्पदा की प्रथम निधि है। वह व्यक्ति को स्वावलम्बन प्रदान करती है। व्यक्ति के पास प्रकृति प्रदत्त शरीर तो है ही और वह भूमि पर रहता है अतः व्यक्ति अपने शरीर तथा थोड़ी सी भूमि के साथ बस देव विग्रह-स्वरूप एक गौ रख ले तो फिर उसे अपने सार्थक जीवन यापन हेतु किसी अन्य सहारे की आवश्यकता नहीं है। वह अपना सम्पूर्ण जीवन आराम से परधर्म परोपकार करते हुए भवबन्धन से मुक्त रहकर पूर्णत्व प्राप्त कर सकता है। गाय धरती के लिए वरदान, गाय भारतीय संस्कृति का मेरुदण्ड ईश्वर का प्रत्यक्ष स्वरूप गोमाता सर्वहितकारी धन है।

सुरभि देवी का षडक्षर मंत्र है ॐ सुरभ्यै नमः। एक लाख जप करने पर यह मंत्र सिद्ध होकर कल्पवृक्ष का फल देता है।

सुरभी देवी की पूजा भक्तिपूर्वक दीपावली के दूसरे दिन पूर्वान्हकाल में करनी चाहिए।

सिद्धि प्रद सुरभि स्त्रोत में महादेवी सुरभी की स्तुति इन्द्र द्वारा की गई है।

यह सुरभी स्त्रोत देवी भागवत में है। प्राचीन काल में गौओं की अग्रपूजा करके उनका सम्मान किया जाता था।

गौमाता की पूँछ में वायु के देवता पवन देव निवास करते हैं। और पवन पुत्र हनुमान जी हैं। इसलिए गाय की पूछँ में हनुमान जी का वास होता है। गौमाता की पूँछ पकड़कर सभी संकटों का निवारण किया जाता है। इसलिए हनुमान जी का एक नाम संकटमोचन है।

●●

5. ''भगवान श्रीराम के काल में गाय''

भगवान श्रीराम के लीला प्रसंगों का अनुशीलन करने पर उनके उपकरणों में गौ की विशेषता के दर्शन होते हैं।

महाराज दशरथ ने पुत्र कामेष्ठी यज्ञ के समय दस लाख गौएं दान की थी।

वर्णन मिलता है कि राजा दशरथ के यज्ञ में अग्निदेव स्वर्णपात्र में खीर लेकर प्रकट हुए थे। उस खीर को राजा दशरथ की तीनों रानियों को खिलाया गया। परिणामस्वरूप भगवान राम भाइयों सहित अवतरित हुए। यह भी हमने शास्त्रों से जाना है कि जब शिशु **श्रीराम की माताओं** को बालकों को नजर लग जाने की शंका होती थी तो उसके निवारण के लिए श्रीराम को गाय के घी से तोलकर घी का तुलादान किया करती थीं।

मानस की चौपाई में वर्णन मिलता है– ''**भाजि चले किलकत मुख दधि ओदन लपटाई**''। इसका भावार्थ है श्रीराम भोजन करते करते अवसर पाकर मुख में दही-भात लपेटे भाग जाते थे।

भगवान श्रीराम के विवाह के अवसर पर राजा जनक ने महाराज दशरथ से अनुरोध किया था कि राजन, श्रीराम-लक्ष्मण से पहले **गौदान** करवाइये, बाद में विवाह कार्य सम्पन्न होंगे।

राजा जनक के अनुरोध पर महाराज दशरथ ने श्रीराम लक्ष्मण के हाथों स्वर्ण मंडित सींगों वाली चार लाख गायें कांसे के दोहन पात्र के साथ ब्राह्मणों को दान करवाई।

विश्वामित्र जी ने श्रीराम को भयंकर यक्षी ताड़का का वध करने के लिए कहा था। रावण का गौओं के प्रति शत्रुभाव था, रावण के अनुचर जिस नगर गाँव और पुर में गौ-ब्रह्मणों को देखते वहाँ आग लगा देते थे।

मानस के अनुसार श्री राम ने विप्र, धेनु, सुर, सन्त हितार्थ अवतार लिया था। लंका में युद्ध करने का श्रीराम का एक और हेतु था। गौघाती आतताई असुरों का विनाश करना। रामराज्य में गौंए पूज्या थीं। उनकी सेवा राजधर्म था। श्रीराम सोकर उठते ही माता पिता के साथ कामधेनु का स्मरण करते थे।

सीता जी नित्य ही **कामधेनु** की पूजा करती थी उसे पकवान खिलाती थी।

भगवान श्रीराम का अवतार यज्ञ की रक्षा के लिए हुआ था। रावण के द्वारा यज्ञ पर आक्रमण किया जाता था। भगवान राम का जन्म पुत्रेष्ठ यज्ञ के द्वारा यज्ञों की रक्षा के लिए सूर्यवंशी कुल में हुआ। अग्नि देव उनके कुल देवता थे अतः वे अग्नि के उपासक थे।

गोस्वामी तुलसीदास जी ने बताया है कि गौद्विज हितकारी प्रभु मर्यादा पुरूषोत्तम के रूप में प्रकट होने के प्रमुख कारणों में एक गौ हित भी था। आध्यात्म रामायण के अनुसार श्री राम का बाल्य जीवन गौ और गौ वत्सों के संसर्ग में बीता। भगवान राम ने दस सहस्त्र करोड़ों गायों का दान दिया था। वाल्मिकी रामायण के अनुसार मर्यादा पुरूषोत्तम श्री राम ने वन जाने के पूर्व एक ब्राह्मण को एक गौशाला ही दान कर दी थी।

भगवान श्रीराम के वनवास के समय चौदह वर्ष तक भरत जी अन्न के साथ गौ मूत्र का सेवन करते रहे जिससे वे स्वस्थ रहकर आध्यात्मिक उन्नति करते रहे।

●●

6. भगवान श्रीकृष्ण के काल में गाय

भगवान कृष्ण ने यदुकुल में जन्म लिया क्योंकि गायों की रक्षा करनी थी। गौ माता उनकी कुलदेवता थी। कंस गायों की हत्या करवाता था। कंस यमुना जी के जल में कालिया नाग के द्वारा जहर घोलकर गायों को मरवाता था। इसलिए भगवान श्री कृष्ण ने कंस का वध करके गायों की रक्षा की। गोवर्धन पर्वत को अपनी अंगुली पर धारण कर गौमाता को पुनः धर्म से प्रतिष्ठित किया।

भगवान श्रीकृष्ण ने कंस के अत्याचार से ब्रजवासियों को मुक्ति दलाने के लिए गोकुल के ग्वालबाल जो र्निलोभी निर्भय और निष्कपट थे उनका संगठन तैयार किया। उन्हें खेल-खेल में कंस के विरुद्ध संघर्ष करने के लिए शिक्षित, प्रशिक्षित एवं प्रेरित किया।

गोपियों की मटकी फोड़ना एवं माखनचोरी लीला के द्वारा समस्त गोकुल वासियों को कंस के विरुद्ध संघर्ष करने के लिए मजबूर किया।

इस तरह भगवान श्रीकृष्ण के द्वारा गौचारण लीला ग्वाल-बाल को मेधावी-बलवान और स्वावलंबी एवं संघर्षशील बनाने का एक सशक्त आन्दोलन था।

माता यशोदा बालकृष्ण के भाल पर गोरोचन का तिलक लगाती थी।

बालकृष्ण बछड़े की पूँछ पकड़ साथ-साथ दौड़ते थे। श्यामसुन्दर बालकृष्ण चुपचाप जाते और एक-एक कर सभी बछड़ों को खोल देते और प्रसन्न होते थे क्योंकि बछड़ों को अपनी-अपनी माँ के थनों से दूध पीने मिलता था।

''**बाबा मोहि दूहन सिखावो**'' इस पंक्ति में श्यामसुन्दर नंदबाबा से कह रहे हैं मुझे गाय दुहना सिखाओ।

यशोदा नंदन गो दोहन कला में अत्यन्त कुशल हो गए व्रजवनिताएँ गौ दुहाने के लिए उन्हें घर लेकर जाती थी क्योंकि न दुहाने वाली गाय भी यशोदानंदन के दूहने पर दूध दे देती थी।

''**मैया मैं गाय चरावन जैहों**'' में नंदनंदन अपनी माँ से गाय चराने जाने की जिद करते हैं।

कृष्ण गौओं के पालक थे, इसलिए गोपाल कहलाये।

माखनचोरी अर्थात् गौ गरीब और नारी के प्रति समाज में ममत्व का भाव पैदा करना। गौ सेवा से आम लोगों का लगाव पैदा करना। गाय का दूध, दही, घी सेवन करने के लिए समाज को प्रेरित करना। समाज को सात्विक गुणों से युक्त शक्तिशाली और बलवान बनाना। गौ और धर्म रक्षा के लिए लोगों को प्रेरित करना मुख्य उद्देश्य था। भगवान श्री कृष्ण के द्वारा गाय और गोवर्धन की पूजा की और समाज को प्रेरित किया गया जिनकी कृपा से समस्त गोकुलवासी सुखी और समृद्ध हुए थे।

उपनिषद् रूपी गायों का दोहन कर गीतामृत पान कराने वाले गोपाल कृष्ण ने हलधर (बलदेव) की अगुवाई में बिना कृषि-गौपालन किए मौज-मस्ती करने वालों का शासन पलटा। भगवान कृष्ण के समय जिन्होंने गौपालन में कीर्तिमान स्थापित किया उनमें उपनन्द, नन्द, वृषभानु, वृषभानुज और नन्दराज थे। उपनन्द के पास पाँच लाख, नन्द के पास नौ लाख, वृषभानु के पास दस लाख, वृषभानुज के पास पचास लाख तथा नन्द राज के पास एक करोड़ गाय थी।

भक्त कवि छीतस्वामी की रचना में उन्होंने भगवान श्रीकृष्ण और गाय पर प्रकाश डाला है–

आगे गाय पाछें गाय इत गाय उत गाय,
गोविंद को गायन में बसबोइ भावे।
गायन के संग धावें, गायन में सचु पावें,
गायन की खुर रज अंग लपटावे।।
गायन सो ब्रज छायो, बैकुंठ बिसरायो,
गायन के हेत गिरि कर ले उठावे।
'छीतस्वामी' गिरिधारी, विट्ठलेश वपुधारी,
ग्वारिया को भेष धरें गायन में आवे।।

●●

7. ''भिन्न-भिन्न मत संप्रदाय में गाय का स्थान''

स्वर्ण युग में गाय–चन्द्रगुप्त का पौत्र सम्राट अशोक अहिंसावादी बौद्ध था। उसने अपने शासन काल में प्राणी हत्या बंद कर दी थी। बैलों के बधिया करने की प्रथा भी बंद कर दी थी। गौशालाएँ खुलवाई। उनके समय दक्षिण भारत में शातवाहनों का राज्य था। इनके शासन काल में यज्ञों के समय गौओं के दान करने का उल्लेख महाराष्ट्र के अंतर्गत नाणे घाट में मिले शिलालेखों में मिलता है। महाराष्ट्र और गुजरात के प्रसिद्ध राजा नहपान के जामाता उषवदात द्वारा लाखों गौओं का दान करने का उल्लेख शिलालेखों में आया है। अशोक के शासन पश्चात् द्वितीय चन्द्रगुप्त के शासन काल में चीन देश का यात्री फाह्यांन भारत आया था। उसने लिखा है कि उस समय किसी के द्वारा प्राणी हिंसा नहीं होती थी। गाय-बैल को बेचा नहीं जाता था। किसी बाजार में कसाई की कोई दुकान नहीं थी। हर्ष के शासन काल में ह्वेनसांग यात्री आया था। उस समय गौ हत्या निषेध तो थी ही अपितु अन्य पशुओं का मांस भी वर्जित था।

इस्लाम में गाय–

गाय की कुर्बानी करना इस्लाम का धर्म नहीं है। (फतवे हुमायूंनी भाग 1 पृ. 360)। न तो कुरान और न अरब की प्रथा ही गाय की कुर्बानी का समर्थन करती है। (हकीम अजमल खां) मुसलमान गाय नहीं मारे क्योंकि गौ वध हदीस के खिलाफ काम है। (मौलाना हयात साहब) मुल्लाओं की राय लेकर अफगानिस्तान के अमीर ने गौ वध बंदी का कानून बनाया था और उसी के आधार पर एक फरमान जारी करके हैदराबाद के निजाम ने अपने राज्य में गौ वध बन्द करवा दिया था।

मुसलमानी शासनकाल के अंत में उस मत के नेताओं द्वारा समय-समय पर जारी फतवे जारी किए गए–

(1) गौ भक्त मुसलमान फक्रीर गौप्याराशाह लिखते हैं ''गौ मेरी माता है अगर दिल से गाय की मोहब्बत की जाये तो हम दुनिया भर के ऐशो आराम से भर जायेंगे।''

(2) बैंगलोर के बैरिस्टर-एट-ला अब्दुल हमीर ने कहा कि कुरान शरीफ में गौ वध का आदेश नहीं है।

(3) 1915 में कुस्तुनतुनीय के सुल्तान ने बकरीद के समय गाय की कुर्बानी करने से हिन्दुस्तानी मुसलमानों को मना किया था।

(4) मंगरोल निवासी पीर मिया साहब अपनी गद्दी छोड़कर जीवन भर गौ रक्षा का काम करते रहे।

(6) ब्रिटिश शासन काल में नवाब रावलपुर, नवाब मंगरौल, नवाब दुजाना (करनाल),

नवाब गुड़गाँव, नवाब मुर्शिदाबाद ने अपनी रियासतों में गौ हत्या बन्द करवाई।

(7) लखनऊ के छः उलमाए सुन्नत ने गो हत्या बंदी का फतवा दिया।

(8) स्वतंत्रता सेनानी हकीम अजमलखान का कहना था कि न तो कुरान और न ही अरब की प्रथा ही गाय की कुर्बानी की इजाजत देती है।

''मैं तो लोगों को कहता हूँ कि गाय बैल दोनों के कितने उपकार है कुरान शरीफ तो पूछता है 'हल् जजाउल् इहसानि इल्लल् इहसानु' अर्थात् एहसान का बदला एहसान के सिवाय और क्या हो सकता है।'' (झमरोली के हकीम इस्माइल भाई)

रूस्तम खान पठान थे। वे भगवान कृष्ण के भक्त होकर रसखान बन गये। रसखान मुसलमान होकर भी गौ भक्त हो गये। कश्मीर जैसे मुस्लिम प्रधान प्रदेश में गौ वंश की हत्या पूर्ण रूप से बंद है। शेख खुधीन शाह ने कहा था ''मैं हिन्दू और मुसलमान से इस्तदुआ करता हूँ कि यह सबका फर्ज है कि हमारी माँ गाय की हिफाजत करें। खुदा बरकत करेगा।

कुरान और अरब की प्रथा दोनों ही गौ कुर्बानी की इजाजत नहीं देती है। (हकीम अजमल खाँ)

गाय की कुर्बानी इस्लाम का नियम नहीं है। (फतवे हुमायुनी)

अफगानिस्तान जैसे मुस्लिम राष्ट्र में गौ वध बंदी है।

जैन व बौद्ध मत में गाय–

जैन मत में अहिंसा का प्रतिपादन किया गया है। जैन तीर्थंकरों के प्रयत्नों से मुसलमान बादशाहों ने तीर्थ स्थानों पर प्राणी हत्या न होने देने के आदेश जारी करवाये थे। इन प्रयत्न करने वालों में हीर विजय सूरी का नाम विख्यात है। विजय सेन ने गौ, बैल और भैंस की हत्या के विरूद्ध अकबर से आदेश जारी कराये थे। बुद्ध ने जनता को गौ की, और गौ वंश की उपयोगिता बताकर गौ वध न करने की शिक्षा दी थी। बर्मा के अंतर्गत विजयपुर में सन् 1350 के लगभग सीहसूर नामक राजा के प्रधानमंत्री मदा चतुरंग बल द्वारा लिखित 'लोकनीति' नामक ग्रंथ में गौ-बैल को माता-पिता के समान पूज्य मानने का उपदेश है। जैन-श्रावक सामान्यतः खेती करते थे। खेती की दृष्टि से बैल उपयोगी थे। जैन आगमों में कामधेनु का भी उल्लेख मिलता है। पहले जैन लोग अपनी सम्पत्ति की गणना गौओं की संख्या से करते थे। ब्रज और गोकुल उनके माप थे। प्रथम जैन तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव ने कृषि का उत्थान जन-जन में किया। इसलिए उनका चिन्ह बैल है। भगवान महावीर के समय 'द्वादशांक' सूत्र में बारह श्रावकों का वर्णन है। एक-एक श्रावक हजारों की संख्या में गौ पालता था।

पारसी व जरथ्रष्ट मत में गाय–मुसलमानों के आगमन के पूर्व भारत में पारसी लोग आ चुके थे। वे गाय का आदर करते थे। गाय के गोबर और मूत्र में पवित्रता प्राप्त होने में

विश्वास रखते थे। पारसियों के धर्म गुरू 'जरथ्रष्ट' कहते हैं कि ईश्वर मनुष्य जाति के लिए अभ्युदय तथा गौओं का हित करने के लिए आवश्यक बुद्धि, सदाचार तथा दृढ़ता प्रदान करें। जरथ्रष्ट मत में महोत्सवों में दूध व घी का होना आवश्यक है। जरथ्रष्टी का एक अत्यंत महान और पवित्र उत्सव निरंगदीन है उसमें बैल के मूत्र को इकट्ठा किया जाता है। इसका पान भी किया जाता है तथा शरीर पर मला जाता है। पारसी मत में गुरुओं द्वारा ईरानी पद्धति के अनुसार, धन की वृद्धि की बजाय ''गाय की वृद्धि का आशीर्वाद लिया जाता है।'' 'अर्दा विराफ नामा' नामक पुस्तक में गाय के प्रति मनुष्य की दयालुता के पुण्य के विषय में प्रसंग है। जरथ्रष्टी धर्मशास्त्र (बंदीदार-अध्याय 3) में वर्णन आता है कि जहाँ गाय चरती है और जहाँ वे सुरक्षित रूप से रखी जाती है वहाँ की पृथ्वी, प्रसन्न होती है। पृथ्वी की आत्मा उन लोगों को श्राप देती है जो गोचर भूमि और खेतों को कब्रिस्तान बना देते हैं। यूनानी मूर्तियों और प्राचीन ईरानी सिक्कों पर चित्र नामक देवता को भी बैल के साथ दिखाया गया है।

यहूदी व ईसाई मत में गाय–ईसा मसीह का जन्म एक गौशाला में हुआ था। इसलिए ईसाई गायों के प्रति आदर भावना रखते हैं। बाइबल में वृषभ को देवता माना है। फिलीस्तीन की खुदाई में मिट्टी के गौ की आकार की मूर्तियाँ मिली है। यहूदियों का दुग्ध से प्रेम था। 'ओल्डटेस्टामेण्ट' में गौ और गौ दुग्ध के संबंध में कम-से-कम पचास उल्लेख हैं। यहूदी बहुत निपुण गौ पालक थे। ईसाई मतावलम्बियों एवं विद्वानों द्वारा गौ के प्रति उच्च कोटी के विचार समय-समय पर दुनियाँ को दिये हैं जो मुख्यतः इस प्रकार है–

गाय से बढ़कर अन्य कोई भी चौपाया मनुष्य का मित्र नहीं है, और न गाय जैसा कोई मधुर स्वभाव वाला है। उसमें शत्-प्रतिशत् मातृत्व है और उसका मनुष्य जाति से माता का संबंध है।

–वाल्टर ए. डामर अमेरिका

अंग्रेजी शासन में सबसे घटिया काम यदि कोई हुआ है तो वह है भारत के समुन्नत गौ वंश का पतन। इस कलंक को मिटाने के लिए उसने हर गाँव में एक बढ़िया सांड उपलब्ध कराने की आवश्यकता महसूस की।

– वाइसराय लार्ड लिनलिथगो-ब्रिटिश

''यदि गौ हत्या बंदी देश का आम कल्याण करने में सहभागी होती है तथा भारत की बहुसंख्यक जनता को गाय के प्रति जो आदर भावना है, उसका सम्मान करने में सहायक होती है तो क्रिश्चियन चर्च को भारत में गौ हत्या बंदी करने में कोई एतराज नहीं है।''

–बिशप अल्लेधी

अपनी संतान का हार्दिक कल्याण चाहने वाले माता-पिता को अपनी संतान को कभी भी भैंस का दूध नहीं पिलाना चाहिए। भैंस का दूध मनुष्यों के लिए उपयोगी पेय नहीं है।

–ईसा ट्वीट

सिक्ख पंथ में गाय–

सिक्ख पंथ के दशमेश गुरू गोविन्द सिंह ने कहा था कि ''यह खालसा पंथ धर्म, गौ-साधु, गरीब तथा दीन-दुखियों की रक्षा के लिए है।'' उन्होंने काशी के पण्डित केशवदत्त पुरोहित की देखरेख में महाचण्डी यज्ञ करवाया था। यह यज्ञ कोटनयना देवी के पर्वत पर सवत् 1756 में करवाया तथा यज्ञ के बाद खालसा पंथ का सृजन किया था। इसी श्रृंखला में सन् 1871 ईस्वी में नामधारी वीरों ने पंजाब में अनेक स्थानों पर अंग्रेजों की राह पर स्थापित बूचड़खानों तो तोड़कर गौ हत्यारों को मार डाला था। इस मामले में अंग्रेजों ने पैंसठ नामधारी वीरों को तोपों से उड़वा दिया था। सरदार इन्द्रसिंह ने अमृतसर में घोषणा की थी कि गौ रक्षा आन्दोलन में हिन्दुओं को जरा भी खतरा महसूस हुआ तो दस लाख सिक्ख अपनी कुर्बानी देने को तैयार रहेंगे। गुरू तेगबहादुर, गुरु अर्जुनदेव आदि सिक्ख गुरुओं के बलिदान, गौ माता की रक्षा के लिए हुए थे। महाराजा रणजीतसिंह ने शासन की बागडोर संभालते ही राज्य में गौ हत्या पर प्रतिबंध लगाने का पहला कार्य किया।

●●

8. भारत के विभिन्न प्रांतों में पाये जाने वाले देशी गौवंश की प्रजाति

भारत में साहीवाल, गिर, थारपारकर और लाल सिंधी समेत कई अन्य देसी नस्ल हैं जिनको भारतीय पशु आनुवंशिक संस्थान ब्यूरो में रजिस्टर्ड किया गया है।

भारतीय पशु आनुवंशिक संस्थान ब्यूरो के मुताबिक अपने देश में 43 प्रकार की देसी नस्ल की गायें हैं। आइये आपको इन सभी देसी नस्ल की गायों के बारे में पूरी जानकारी बताते हैं-

अमृतमहल (कर्नाटक)–इस प्रजाति के गोवंश कर्नाटक राज्य के मैसूर जिले में पाये जाते हैं। इस नस्ल का रंग खाकी, मस्तक तथा गला काले रंग का, सिर और लम्बा, मुँह व नथुने कम चौड़े होते हैं। इस नस्ल के बैल मध्यम कद के और फुर्तीले होते हैं। गायें कम दूध देती हैं।

बचौर (बिहार)–इस नस्ल के गोवंश बिहार प्रांत के तहत सीतामढ़ी जिले के बचौर एवं कोईलपुर परगनां में पाये जाते हैं। इस जाति के बैलों का प्रयोग खेतों में किया जाता है। इनका रंग खाकी, ललाट चौड़ा, आँखें बड़ी-बड़ी और कान लटकते हुए होते हैं।

बरगुर (तमिलनाडु)–बरगुर प्रजाति के गोवंश तमिलनाडु के बरगुर नामक पहाड़ी क्षेत्र में पाये गये थे। इस जाति की गायों का सिर लम्बा, पूँछ छोटी व मस्तक उभरा हुआ होता है। बैल काफी तेज चलते हैं। गायों की दूध देने की मात्रा कम होती है।

डांगी (महाराष्ट्र और मध्यप्रदेश)–इस प्रजाति के गोवंश अहमद नगर, नासिक और अंग्स क्षेत्र में पाये जाते हैं। गायों का रंग लाल, काला व सफेद होता है। गायें कम दूध देती हैं।

गिर (गुजरात)–गिर गाय को भारत की सबसे ज्यादा दुधारू गाय माना जाता है। यह गाय एक दिन में 10 से 40 लीटर तक दूध देती है। इस गाय के थन बड़े होते हैं। इस गाय का मूल स्थान काठियावाड़ (गुजरात) के दक्षिण में गिर जंगल है, जिसकी वजह से इनका नाम गिर गाय पड़ गया। भारत के अलावा इस गाय की विदेशों में भी काफी माँग है। इजराइल और ब्राजील में भी मुख्य रूप से इन्हीं गायों को पाला जाता है।

हल्लीकर (कर्नाटक)–हल्लीकर के गोवंश मैसूर (कर्नाटक) में सर्वाधिक पाये जाते हैं। इस नस्ल की गायों की दूध देने की क्षमता काफी अच्छी होती है।

हरियाणा (हरियाणा, उत्तरप्रदेश और राजस्थान)–इस नस्ल की गाय सफेद रंग की होती है। इनसे दूध उत्पादन भी अच्छा होता है। इस नस्ल के बैल खेती में अच्छा कार्य करते हैं इसलिए हरियाणवी नस्ल की गायें सर्वांगी कहलाती हैं।

कंगायम (तमिलनाडु)–इस प्रजाति के गोवंश काफी फुर्तीले होते हैं। इस जाति के

गोवंश कोयम्बटूर के दक्षिणी इलाकों में पाये जाते हैं। दूध कम देने के बावजूद भी यह गाय 10-12 सालों तक दूध देती है।

कांकरेज (गुजरात और राजस्थान)– कांकरेज गाय गुजरात के कच्छ एवं राजस्थान के दक्षिण-पश्चिमी भागों में पाई जाती है, जिनमें बाड़मेर, सिरोही तथा जालौर जिले मुख्य हैं। इस नस्ल की गाय प्रतिदिन 10 से 20 लीटर तक दूध देती है। कांकरेज प्रजाति के गोवंश का मुँह छोटा और चौड़ा होता है। इसके सींग अत्यधिक लंबे होते हैं। इस नस्ल के बैल भी अच्छे भार वाहक होते हैं। अतः इसी कारण इस नस्ल के गोवंश को 'द्वि-परियोजनीय नस्ल' कहा जाता है।

केनकथा (उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश)– केनकथा गाय का मूल स्थान उत्तर प्रदेश और मध्यप्रदेश है। इस नस्ल को केनवारिया के नाम से भी जाना जाता है। इनका शरीर का आकार छोटा होता है और इनका सिर छोटा और चौड़ा, कमर सीधी और और कान लटके हुए होते हैं। इस नस्ल की पूँछ की लंबाई मध्यम होती है। इस नस्ल की औसतन लंबाई 103 से.मी. होती है। इस नस्ल के नर का औसतन भार 350 किलो और मादा का औसतन भार 300 किलो होता है।

गओलाओ (महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश)– गओलाओ नस्ल नागपुर, छिंदवाड़ा और वर्धा में पायी जाती है। इनके शरीर मध्यम आकार का और रंग सफेद से सलेटी होता है। इसका सिंर लंबा, मध्यम आकार के कान और छोटे सींग होते हैं। यह गाय प्रति ब्यांत में औसतन 470-725 लीटर दूध देती है। दूध में 4·32 प्रतिशत वसा की मात्रा होती है।

खेरिगढ़ (उत्तरप्रदेश)– इस प्रजाति के गोवंश खेरीगढ़ क्षेत्र में पाये जाते हैं। गायों के शरीर का रंग सफेद होता है। इनकी सींग बड़ी होती है। इस नस्ल के बैल फुर्तीले होते हैं और मैदानों में स्वच्छन्द रूप से चरने से स्वस्थ एवं प्रसन्न रहते हैं। इस नस्ल की गायें कम दूध देती हैं।

खिलारी (महाराष्ट्र और कर्नाटक)– इस नस्ल का मूल स्थान महाराष्ट्र और कर्नाटक हैं। यह पश्चिमी महाराष्ट्र में भी पाई जाती है। इस प्रजाति के गोवंश का रंग खाकी, सिर बड़ा, सींग लम्बी और पूँछ छोटी होती है। इनका गलकंबल काफी बड़ा होता है। खिल्लारी प्रजाति के बैल काफी शक्तिशाली होते हैं। इस नस्ल के नर का औसतन भार 450 किलो और गाय का औसतन भार 360 किलो होता है। इसके दूध की वसा लगभग 4·2 प्रतिशत होती है। यह एक ब्यांत में औसतन 240-515 किलो दूध देती है।

कृष्णा वैली (कर्नाटक)– कृष्णा वैली उत्तरी कर्नाटक की देसी नस्ल है। यह सफेद रंग की होती है। इस नस्ल के सींग छोटे, शरीर छोटा, टांगें छोटी और मोटी होती है। यह एक ब्यांत में औसतन 900 किलो दूध देती है।

मालवी (मध्य प्रदेश)– मालवी प्रजाति के बैलों का उपयोग खेती तथा सड़कों पर हल्की गाड़ी खींचने के लिए किया जाता है। इनका

रंग लाल, खाकी तथा गर्दन काले रंग की होती है। इस नस्ल की गायें दूध कम देती हैं। मध्यप्रदेश के ग्वालियर क्षेत्र में यह नस्ल पायी जाती है।

मेवाती (राजस्थान, हरियाणा और उत्तर प्रदेश)—मेवाती प्रजाति के गोवंश सीधे-साधे तथा कृषि कार्य हेतु उपयोगी होते हैं। इस नस्ल की गायें काफी दुधारू होती हैं। इनमें गिर जाति के लक्षण पाये जाते हैं तथा पैर कुछ ऊँचे होते हैं। यह नस्ल राजस्थान के भरतपुर और अलवर जिले, हरियाणा के फरीदाबाद और गुड़गाँव जिले और उत्तरप्रदेश के मथुरा जिले तक फैली हुई है। इसका रंग मुख्य तौर पर सफेद होता है। यह नस्ल एक ब्यांत में औसतन 958 किलो दूध देती है।

नागोरी (राजस्थान)—इस नस्ल की गाय राजस्थान के नागौर जिले में पाई जाती है। इस नस्ल के बैल भारवाहक क्षमता के विशेष गुण के कारण अत्यधिक प्रसिद्ध हैं।

निमरी (मध्य प्रदेश)—निमरी का मूल स्थान मध्य प्रदेश है। इसका रंग हल्का लाल, सफेद, लाल, हल्का जामुनी होता है। इसकी चमड़ी हल्की और ढीली, माथा उभरा हुआ, शरीर भारी, सींग तीरछे, कान चौड़े और सिर लंबा होता है। एक ब्यांत में यह नस्ल औसतन 600-954 किलो दूध देती है और दूध की वसा 4·9 प्रतिशत होती है।

अंगोल (आंध्रप्रदेश)—अंगोल प्रजाति आंध्रप्रदेश के अंगोल क्षेत्र में पायी जाती है। इस जाति के बैल भारी बदन के और ताकतवर होते हैं। इनका शरीर लम्बा, किन्तु गर्दन छोटी होती है। यह प्रजाति सूखा चारा खाकर भी जीवन निर्वाह कर सकती है। इस नस्ल के ऊपर ब्राजील काम कर रही है।

पोंवर (उत्तरप्रदेश)—इस नस्ल के गोवंश उत्तरप्रदेश के रुहेलखण्ड में पाये जाते हैं। इनके सींगों की लम्बाई 12 से 18 इंच तक होती है। इनकी पूँछ लम्बी होती है। इनके शरीर का रंग काला और सफेद होता है। यह गाय कम दूध देती है।

पुन्गानुर (आंध्रप्रदेश)—पुन्गानुर का मूल स्थान आंध्रप्रदेश का चितूर जिला है। इस नस्ल के पशु छोटे आकार के होते हैं, इनका शरीर सफेद रंग और खाल हल्के भूरे रंग का होता है। इनके सींग छोटे और मुड़े हुए होते हैं। इस नस्ल की मादा का औसतन भार 115 किलो और नर का औसतन भार 225 किलो होता है। यह एक ब्यांत में औसतन 194-1100 किलो दूध देती है।

राठी (राजस्थान)—भारतीय राठी गाय की नस्ल ज्यादा दूध देने के लिए जानी जाती है। यह गाय राजस्थान के गंगानगर, बीकानेर और जैसलमेर इलाकों में पाई जाती है। यह गाय प्रतिदन 6-8 लीटर दूध देती है।

रेड कंधारी (महाराष्ट्र)—रेड कंधारी महाराष्ट्र के नंदेड़, परभानी, अहमद नगर, बीड और लतूर जिले में पाई जाती है। इनका रंग हल्का लाल या भूरे रंग का होता है। इसके सींग टेढ़े, माथा चौड़ा, कान लंबे, होते हैं। इस नस्ल के नर का औसतन कद 1138 से.मी. और

मादा का औसतन कद 128 से.मी. होता है। यह नस्ल एक ब्यांत में औसतन 598 किलो दूध देती है।

लाल सिंधी प्रजाति (पंजाब, हरियाणा, कर्नाटक, तमिलनाडु) –लाल रंग की इस गाय को अधिक दुग्ध उत्पादन के लिए जाना जाता है। लाल रंग होने के कारण इनका नाम लाल सिंधी गाय पड़ गया। यह गाय पहले सिर्फ सिंध इलाके में पाई जाती थीं। लेकिन अब यह गाय पंजाब, हरियाणा, कर्नाटक, तमिलनाडु, केरल और ओडिशा में भी पायी जाती है। इनकी संख्या भारत में काफी कम है। साहिवाल गायों की तरह लाल सिंधी गाय भी सालाना 2000 से 3000 लीटर तक दूध देती हैं।

साहीवाल (पंजाब और राजस्थान)– साहीवाल भारत की सर्वश्रेष्ठ प्रजाति है। यह गाय मुख्य रूप से हरियाणा, उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश में पाई जाती है। यह गाय सालाना 2000 से 3000 लीटर तक दूध देती है जिसकी वजह से ये दुग्ध व्यवसायी इन्हें काफी पसंद करते हैं। यह गाय एक बार माँ बनने पर करीब 10 महीने तक दूध देती है। अच्छी देखभाल करने पर ये कहीं भी रह सकती हैं।

सीरी (सिक्किम और भूटान)–इस नस्ल के गोवंश दार्जिलिंग के पर्वतीय प्रदेश, सिक्किम एवं भूटान में पाये जाते हैं। इनका मूल स्थान भूटान है। ये प्रायः काले और सफेद अथवा लाल और सफेद रंग के होते हैं। सीरी जाति के पशु देखने में भारी होते हैं।

गंगातीरी (उत्तर प्रदेश और बिहार)– गंगातीरी नस्ल उत्तर प्रदेश और बिहार में पायी जाती है। यह मध्यम आकार की होती है। यह प्रति ब्यांत में औसतन 900-1200 लीटर दूध देती है। इसके दूध में 4·1-5·2 प्रतिशत वसा की मात्रा होती है।

थारपारकर (राजस्थान)–यह गाय राजस्थान में जोधपुर और जैसलमेर में मुख्य रूप से पाई जाती है। थारपारकर गाय का उत्पत्ति स्थल 'मालाणी' (बाड़मेर) है। इस नस्ल की गाय भारत की सर्वश्रेष्ठ दुधारू गायों में गिनी जाती है। राजस्थान के स्थानीय भागों में इसे 'मालाणी नस्ल' के नाम से जाना जाता है। थारपारकर गौवंश के साथ प्राचीन भारतीय परम्परा के मिथक भी जुड़े हुए हैं।

उम्ब्लाचेरी (तमिलनाडु)–तमिलनाडू के थिरुवारूर और नागापटीनम जिले में यह नस्ल पाई जाती है। इनका माथा चौड़ा होता है। इस नस्ल के नर का औसतन कद 135 से.मी. और मादा का औसतन कद 105 से.मी. होता है। इस नस्ल की गाय एक ब्यांत में औसतन 495 किलो दूध देती है, जिसकी वसा 4·9 प्रतिशत तक होती है।

वेचूर (केरल)–वेचूर प्रजाति के गोवंश पर रोगों का कम से कम प्रभाव पड़ता है। इस जाति के गोवंश कद में छोटे होते हैं। इस नस्ल की गायों के दूध में सर्वाधिक औषधीय गुण होते हैं। इस जाति के गोवंश को बकरी से भी आधे खर्च में पाला जा सकता है।

मोतू (उड़ीसा, छत्तीसगढ़ और आंध्रप्रदेश)–उड़ीसा, छत्तीसगढ़ और आंध्रप्रदेश में यह नस्ल पाई जाती है। इनका रंग भूरा, स्लेटी और सफेद होता है। इनके शरीर का आकार छोटा, सींग सीधे, पूँछ काली और खुर काले रंग के होते हैं। यह नसल एक ब्यांत में औसतन 100-140 किलो दूध देती है और दूध की वसा 4·8-5·3 प्रतिशत होती है।

घुमुसरी (उड़ीसा)–घुमुसरी का मूल स्थान उड़ीसा है। इनका रंग सफेद या भूरे रंग का होता हैं। इनके सींग मध्यम आकार के होते हैं जो ऊपर और अंदर की तरफ मुड़े हुए होते हैं। इसके पहले ब्यांत में गाय की उम्र 42 महीने होनी चाहिए और इसका एक ब्यांत 13 महीने का होता है। यह एक ब्यांत में औसतन 450-650 किलो दूध पैदा करती है, जिसकी वसा 4·8-4·9 प्रतिशत तक होती है।

बिन्झार्पुरी (उड़ीसा)–यह नस्ल उड़ीसा के भद्रक और केन्द्रापड़ा जिले में पाई जाती है। इनका रंग सफेद होता है, पर यह काले, भूरे या स्लेटी रंग में भी मिल सकती हैं। इस नस्ल के सींग काले और मध्यम आकार के होते हैं, जो ऊपर की तरफ मुड़े होते हैं। यह एक ब्यांत में लगभग 915-1350 किलो दूध देती है। इसके दूध में वसा 4·3-4·4 प्रतिशत होती है।

खरिअर (उड़ीसा)–खरिअर उड़ीसा के नुआपड़ा जिले की नस्ल है। यह छोटे आकार की होती है। इसके सींग सीधे, कमर और चेहरे का कुछ हिस्सा गहरे काले रंग का होता है। इस नस्ल की गाय एक ब्यांत में औसतन 450 किलो दूध देती है और दूध की वसा 4-5 प्रतिशत होती है।

कोसली (छत्तीसगढ़)–कोसली नस्ल की गायें भारत में छत्तीसगढ़ राज्य सहित उड़ीसा और मध्यप्रदेश के कुछ भागों में भी पाई जाती हैं। इनका आकार छोटा होता हैं। एक मादा का वजन 160-200 कि.ग्रा. और नर का वजन 200-300 कि.ग्रा. तक होता है। कोसली नस्ल की गायों के सींग छोटे आकार के होते हैं। ये ठंड, गर्मी, बारिश सब बर्दाश्त कर लेती है। कम खाकर भी दूध देती है। इसका दूध कम होता है मगर अत्यधिक पौष्टिक होता है।

बद्री (उत्तराखंड)–बद्री गाय केवल पहाड़ी जिलों में पाई जाती है और पहले इसे 'पहाड़ी' गाय के रूप में जाना जाता था। इनका रंग भूरा, लाल, सफ़ेद होता है। इनके कान छोटे से मध्यम आकार की लम्बाई के होते हैं और इनकी गर्दन छोटी एवं पतली होती है। बद्री गायों का प्रतिदिन औसत दुग्ध उत्पादन लगभग 1·12 किग्रा है, लेकिन कुछ गायें 6·9 किग्रा तक दूध का उत्पादन करती हैं। इनका दुग्धकाल 275 दिनों का होता है।

इन सब के अलावा जम्मू और कश्मीर की लदाखी गाय, असम की लखीमी, महाराष्ट्र और गोवा की कोंकण कपिला, हरियाणा और चण्डीगढ़ की बिलाही, कर्नाटक की मल्नाद गिद्दा, तमिलनाडू की पुल्लिकुलम भी रजिस्टर्ड है।

भारतीय गौवंशीय नस्लें

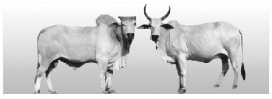
मालवी (इंदौर, देवास, उज्जैन, मध्यप्रदेश)

मेवाती (अलवर व भरतपुर-राजस्थान)

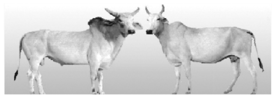
नागोरी (नागौर- राजस्थान)

निमाड़ी (खंडवा व खरगोन-मध्यप्रदेश)

ओंगोल (नेल्लोर व गुंटुर-आंध्रप्रदेश)

पोंवार (पीलीभीत- उत्तरप्रदेश)

पुंगानुर (चित्तुर-आंध्रप्रदेश)

राठी (बीकानेर और श्रीगंगानगर-राजस्थान)

लाल कंधारी (नादेड़- महाराष्ट्र)

लाल सिंघी (शासकीय व्यवस्था से)

साहीवाल (फिरोजपुर-पंजाब, श्री गंगानगर-राजस्थान)

सीरी (दार्जलिंग-पश्चिम बंगाल और सिक्किम)

थारपारकर (कच्छ का रण, बाड़मेर और जैसलमेर-राजस्थान)

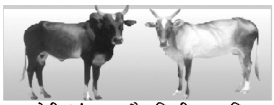
उम्बलाचेरी (तंजावूर और दिन्डीगुल-तमिलनाडू)

वेच्चूर (छोटी, कोट्ठायम-केरल)

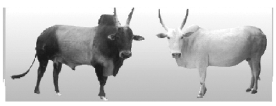
अमृतमहल (हासन और चिकमंगलूर-कर्नाटक)

बचौर (सीतामढ़ी-बिहार)

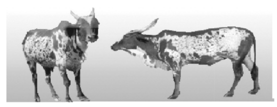
बारगुर (पेरियार-तमिलनाडु)

डांगी (नासिक, अहमदनगर-महाराष्ट्र)

देवनी (लातुर, परभणी और नांदेड़-महाराष्ट्र)

गवलाऊ (वर्धा, नागपुर-विदर्भ)

गीर (जुनागढ़, भावनगर और अमरेली-गुजरात)

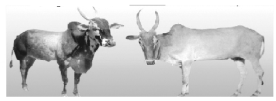
हल्लीकर (मैसूर और मण्ड्या-कर्नाटक)

हरियाणा (रोहतक और हिसार-हरियाणा)

कांगायम (इरोड व डिंडीगुल-तमिलनाडू)

कांकरेज (कच्छ और मेहसाणा-गुजरात)

केन्काठा (छोटी, ललितपुर और बांदा-उत्तरप्रदेश)

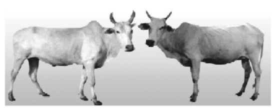
खेरीगढ़ (लखीमपुर-खेरी-उत्तरप्रदेश)

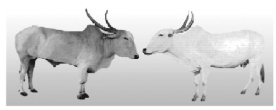
खिल्लारी (सातारा, सोलापुर, सांगली, महाराष्ट्र)

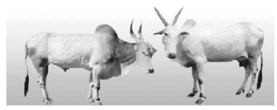
कृष्ण वैली (बेलगाँव-कर्नाटक, सांगली-महाराष्ट्र)

9. छत्तीसगढ़ की कोसली गाय

कोसली गाय के बारे में जरूरी बातें– कोसली एक देशी गाय की नस्ल है, जो सम्पूर्ण छत्तीसगढ़ में पाई जाती है। छत्तीसगढ़ का प्राचीन नाम कौशल था, इसलिए इस गाय का नाम कोसली पड़ा।

छत्तीसगढ़ की इस गाय को राष्ट्रीय पशु आनुवंशिकीय संसाधन ब्यूरो करनाल ने 36 वाँ गोवंश नस्ल के नाम से पंजीकृत किया है। इंडिया केटल 2600 कोसली 03036 और राज्य की पहली पंजीकृत नस्ल होने के बाद देश भर में कोसली नाम से प्रचलित हो गई है।

ये गाय छोटे कद-काठी की होती है। इसके मूत्र में यूरिया, खनिज लवण, एंजाइम और फसलों के लिए उपयोगी अन्य तत्वों की मात्रा भी पाई जाती है। खेतों में इसका छिड़काव कर कीट नियंत्रण किया जाता है। इस गाय का पालन छोटे और मध्यम वर्ग के किसानों के लिए काफी लाभकारी है। इसके दूध में मिठास ज्यादा होती है।

कोसली नस्ल की गाय का दूध– (NDDB National Dairy Development Board) के अनुसार, कोसली नस्ल की गाय एक ब्यान्त में अधिकतम 250 लीटर तक दूध देती है। इनके दूध में अधिकतम फैट की मात्रा 4·5 प्रतिशत पाई जाती है।

कामधेनु कृषि विश्व विद्यालय रायपुर द्वारा भी प्रमाणित किया गया है कि कोसली गाय के दूध में मिठास अधिक होती है, कोसली गाय के दूध से निर्मित उत्पादों के सेवन से शरीर में रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है। कोसली गाय के दूध से बने घी का सेवन करने से कब्ज, बलगम, जुकाम की समस्या दूर होती है। इसके दही में गुड बैक्टेरिया ज्यादा होते हैं,जो पाचन शक्ति बढ़ाने में मदद करते हैं, वहीं त्वचा संबंधी समस्याएँ भी काफी हद तक कम होती हैं।

कोसली गाय को आसानी से पाला जा सकता है, ये गाय इसलिए इतनी खास है क्योंकि ये पारिस्थितिक बदलावों के साथ ढलना जानती हैं। धूप, गर्मी, बारिश, ठण्ड से इन्हें ज्यादा परेशानी नहीं होती। ना ही इनका रख-रखाव हाइब्रिड गायों की तरह मँहगा है। बड़ी सरलता से कहीं भी आसानी से इन्हें पाला जा सकता है। मानवीय भावनाओं के प्रति इनकी समझ भी अन्य गायों की अपेक्षा अच्छी होती हैं।

आवास प्रबंधन और रख रखाव– कोसली नस्ल के गौवंश का रखरखाव व्यापक प्रबंधन प्रणाली के तहत किया जाता है, ताकि इन्हें

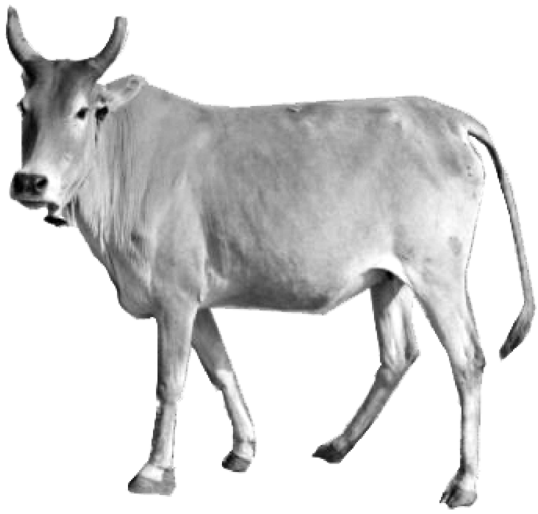

ठंड, बारिश और तूफान से बचाया जा सके, इनको दिन में चरने दिया जाता है और रात में बाँध दिया जाता है। इन्हें समूहों में या अकेले खिलाया जाता है, आमतौर पर इन्हें चारे को चरने के लिए छोड़ दिया जाता है। इसके अलावा, किसानों द्वारा स्थानीय रूप से उगाया जाने वाला चारा भी उपलब्ध कराया जाता है दूध देने वाले और गर्भवती गायों को अतिरिक्त पोषण के लिए पोषक युक्त पदार्थ भी खिलाया जाता है। छत्तीसगढ़ की इकलौती रजिस्टर्ड गाय है कोसली गाय।

कोसली गाय क्यों है इतनी विशेष ?

छत्तीसगढ़ के जो किसान जैविक पद्धति के पक्षधर हैं और अपने खेतों में रासायनिक खाद, उर्वरकों और कीटनाशकों का इस्तेमाल नहीं करते हैं। इसी दिशा में उन्होंने नवाचार करते हुए लगातार कई सालों तक अपने खेतों में रासायनिक उर्वरक की जगह अलग-अलग गायों के गोबर और गौमूत्र का छिड़काव नियमित रूप से किया। इस एक्सपेरिमेंट में उन्होंने पाया कि जिस साल उन्होंने अपने खेत और बगीचे में कोसली गाय के गौमूत्र का छिड़काव किया उस साल उत्पादन में बढ़ोत्तरी हुई।

उच्च गुणवत्ता– कोसली गाय के गौमूत्र छिड़काव से फसलों, सब्जियों की गुणवत्ता में फर्क साफ नजर आता है। सब्जियों का आकार बड़ा होता है। स्वाद भी रासायनिक खाद से उपजी सब्जियों से बेहतर होता है। वहीं धान और गेहूँ की बालियाँ अपेक्षाकृत बड़ी और मजबूत होती हैं। इंदिरा गाँधी कृषि विश्व विद्यालय रायपुर के वैज्ञानिक भी इस एक्सपेरिमेंट से सहमति रखते हैं। वैज्ञानिकों की टीम ने किसानों के इस दावे को सही माना है।

कोसली गाय की विशेषताएँ–

1. दो-तिहाई चौपायों के कोट का रंग हल्का लाल पाया जाता है, जबकि एक तिहाई का रंग सफेद-भूरा होता है।

2. सिर चौड़ा होता है, जबकि माथा सपाट और सीधा होता है।

3. कूबड़ छोटे से मध्यम आकार का होता है।

4. पैर सीधे, छोटे और मजबूत और काले रंग के होते हैं।

5. सींग ठूंठदार होते हैं, सीधे उभरते हैं, फिर पोल से बाहर, ऊपर और अंदर की ओर मुड़े होते हैं।

6. थन छोटा और कटोरे के आकार का होता है।

7. थूथन, पलकें और पूछ स्विच काले रंग के होते हैं।

8. बैलों की ऊँचाई औसतन 121 से.मी. और गायों की ऊँचाई 103 सेमी होती है।

9. बैलों की शरीर की लंबाई औसतन 126 से.मी. और गायों की 102 से.मी. होती है।

10. बैलों के शरीर का वजन औसतन 250-300 किलों ग्राम और गायों का वजन 150-200 किलों ग्राम होता है।

11. गाय एक ब्यांत में 200-250 लीटर तक दूध देती है।

12. दूध में अधिकतम फैट की मात्रा 4.5 प्रतिशत पाया जाता है।

13. यह छोटे आकार की लेकिन मजबूत नस्ल है।

●●

10. भारतीय एवं विदेशी नस्ल की गायों में अंतर

इतिहासकारों के अनुसार डिलदार भारतीय जैबू नस्ल साण्ड का प्रादुर्भाव भारत में हुआ। धीरे-धीरे यह साण्ड एशिया के व यूरोप के अन्य देशों व मिश्र तक पहुँच गया था। इन सभी क्षेत्रों की संस्कृति में साण्ड का विशेष महत्व रहा है। साण्ड निर्भीकता, साहस, ओज व प्रजनन शक्ति में सामर्थ्य का प्रतीक रहा है। संसार भर के सभी देश-देशान्तरों में दूध के लिए ही गाय पाली जाती है। जबकि भारत में गौ-सेवा दूध के साथ-साथ भावनात्मक भी है। भारत में गायें मनुष्य सहचरी हैं। जबकि अन्य देशों की गायों का इतिहास यह है कि वे बहुत समय तक जंगलों में हिंसक पशु के रूप में घूमने के बाद मनुष्यों द्वारा घरों में पाली गई। भारतीय गायों का विशिष्ट लक्षण है पीठ पर ककुद और गल कंबल। प्राणीत्व विदों के अनुसार ककुद युक्त गाय जेबू श्रेणी के किसी-किसी भाग में पायी जाती है। इसके अतिरिक्त और कहीं ऐसी गायें नहीं हैं। पाश्चात्य देशों के दूध देने वाले इन पशुओं को गाय न कहकर 'गवय' कह सकते है क्योंकि इनकी आकृति बहुत कुछ गाय से मिलती है। इन गायों का पूर्वज ''यूरास'' नामक जंगली और हिंसक पशु है। जर्मन में इसे यूरच कहा गया है यह पशु पूर्व में सिंह, बाघ, गैण्डा और भालू की तरह जंगलों में घूमता था। जूलियस सीजर ने इसका उल्लेख किया है। यह पशु, सात फीट से अधिक ऊँचा होता था व इसके सींग तीन फुट तक लम्बे होते थे। अब भी इंग्लैण्ड के किसी-किसी रक्षित बाग की जंगली गायें इसी आकृति के काले बच्चे उत्पन्न करती है। इस यूरास पशु को लोग जंगलों से लाकर पालने लगे। तथा धीरे-धीरे यह दूध देने वाले पशु के रूप में परिणत हो गया। भू-गर्भ खनन से इंग्लैण्ड के वारहिल न्यूस्टेड आदि रोमन स्टेशनों से ऐसी गायों के कंकाल दिखाई दिये हैं। इन सब बातों से पता चलता है कि विलायती गाय जंगली हिंसक एवं मनुष्यों के भीषण शत्रु रूप पशु से उत्पन्न होकर केवल मनुष्यों के यत्न और चेष्टा से वर्तमान पालतू और दूध देने वाली बन गयी है।

विवरण	देशी गाय	विदेशी गाय
विलक्षण गाय का चित्र	देशी गाय के ककूद, गलकम्बल, सींग 3 विशिष्ट लक्षण है।	तीनों लक्षण नहीं होते हैं।
गोबर	देशी गाय का गोबर बंधा हुआ छल्लेदार एवं चिपचिपा झिल्ली लिये होता है।	इसका गोबर पतला होता है।

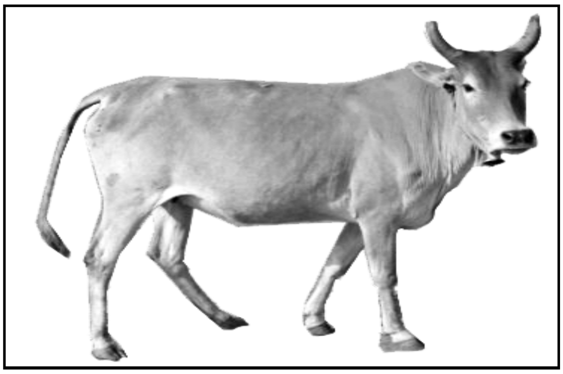

देशी गाय

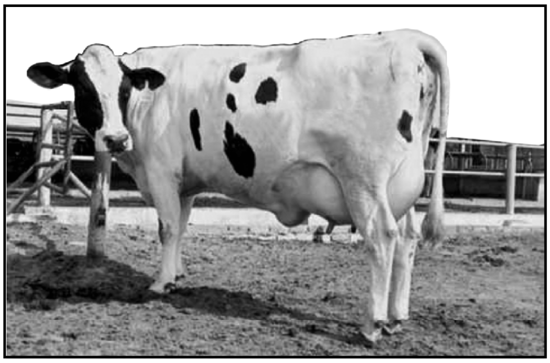

विदेशी गाय

गोबर के गुण	देशी गाय के गोबर से चर्म रोग निवारण की अद्भुत क्षमता होती है।	इसके गोबर से चर्म रोग बढ़ते है।
गौमूत्र	देशी गाय का गौमूत्र अमृत तुल्य सर्व रोग निवारक, सर्व विष शोषक, गंगा समान एक दिव्य तरल पदार्थ है।	इसके मूत्र में यह गुण नहीं होता है।
स्वर्णांश	देशी गाय के ककूद में सूर्य केतु नाम की नाड़ी होती है जो सूर्य की किरणों के साथ दूध, गोबर, गौमूत्र को स्वर्ण युक्त बना देती है।	ककूद (थूहा) नहीं होता अतः स्वर्ण का प्रश्न ही नहीं होता।
दूध	देशी गाय का दूध पीला होता है। गुणों की खान है अमृत तुल्य है। इसे A-2 नाम दिया गया है।	इसका दूध सफेद होता है। रोगों को जन्म देने वाला होता है क्योंकि इसमें हुक वार्म होते हैं अतः जहर तुल्य है। इसे A-1 नाम दिया गया है।
दही	सुपाच्य व अनेको रोगों का नाश करता है।	इसमें वे गुण नहीं।
तक्र (छाछ)	दही से भी ज्यादा लाभप्रद पेट के अनेक रोगों की दवा है।	इसमें भी वह क्षमता नहीं

घी	देशी गाय का घी सुगंधयुक्त, पीला सोने के समान रंगवाला, जमने के बाद भी नरम होता है। हमारे शरीर के तापमान पर पिघल जाता है।	इसका घी सुगंधहीन, सफेदसा होता है। अपेक्षाकृत कड़ा होता है।
सुपाच्यता	गाय का दूध, दही, घी सुपाच्य होता है। नवजात शिशु से लेकर 100 वर्ष के बुजुर्ग व्यक्ति भी इसे आसानी से पचा सकते है।	इसका दूध, दही, घी रोगयुक्त गुणहीन होने के कारण सुपाच्य नहीं है।
नस्यक्रिया	देशी गाय के शुद्ध घृत की नस्य क्रिया से सभी रोग नष्ट हो जाते है।	नुकसानदायी हो सकती है।
पौष्टिकता	देशी गाय के दूध, दही, घी में अद्‌भुत पौष्टिकता होती है।	इसके दूध में उतनी नहीं होती है।
पूर्णता	देशी गाय का दूध एक सम्पूर्ण आहार है। इसमें कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन, खनिज आदि सभी आवश्यक तत्व है।	देखने में एक जैसा होते हुए भी गुण हीन है।
रोग प्रतिरोधक क्षमता	देशी गाय जल्द बीमार नहीं होती। बीमार गाय जल्द स्वस्थ हो जाती है।	जल्द रोगी होती है, जल्द मर जाती है।
आहार	कम खाती है।	ज्यादा खाती है।
बछड़ा-बछड़ी	देशी गाय का बछड़ा जन्म लेने के साथ खड़ा हो जाता है।	विदेशी गाय का बछड़ा इतनी जल्दी अपने पाव पर खड़ा नहीं होता न ही इतना चपल होता है।
रूपा	देशी गोवंश लक्ष्मी रूप है। सभी देवी-देवताओं का वास है। प्रसन्न होने पर सब कुछ दे सकती है। आँखों में करूणा व प्यार है।	देखने में सुन्दर नहीं कुरूप है।

रख-रखाव	नहीं के बराबर कुछ नहीं चाहिए,	बहुत अधिक एसी एवं कूलर चाहिए।
धूप सहनशीलता	सूर्य रूपी है अतः 8/10 घण्टे धूप में सुखपूर्वक रह सकती है। कड़ी से कड़ी धूप में सुखपूर्वक रह सकती है।	जरा भी गर्मी पड़ने पर हाँफने लगती है। ज्यादा गर्मी पड़ने पर मर भी सकती है।
वर्तमान स्थिति	संख्या तेजी से घट रही है। कृत्रिम गर्भाधान के प्रचलन से नस्ल बिगड़ रही है।	अधिक लालच में शहर के ग्वाले यहाँ तक अनेक गोशाला वाले भी इस गाय जैसे पशु की संख्या बढ़ा रहे हैं।
रोग	प्रतिकारण शक्ति, पशु चिकित्सा व टीकाकरण पर सीमित खर्च के कारण गंभीर बीमार नहीं होती। मृत्यु संख्या कम और बछड़े बढ़ कर उत्कृष्ट बैल बनते हैं।	पशु चिकित्सा व टीकाकरण पर खर्च अधिक और रोग के कारण मृत्यु संख्या ज्यादा जबकि बछड़ों का खेती के लिये उपयोग नहीं होता है।
प्रजनन क्षमता	प्रजनन से 12 से 15 बार तक क्षमता।	5-6 बार तक
दूध क्षमता	अच्छे नन्दी जिसकी माँ अधिक दूध वाली रही हो से बीजदान करवाने, अच्छे खान-पान से इसकी भी कई नस्ले-गिर, कांकरेज, राठी, थार-पारकर, हरियाणा, साहीवाल, मालवी 15 से 20 लीटर दूध प्रति दिन दे सकती है।	दूध क्षमता अच्छी लेकिन दूध स्वास्थ्यवर्धक नहीं।

●●

11. A1 और A2 दूध–रासायनिक संरचना, स्वास्थ्य पर प्रभाव और वैश्विक शोध

दूध मानव जीवन के लिए संपूर्ण आहार माना जाता है। इसमें प्रोटीन, वसा, विटामिन और खनिज सभी आवश्यक तत्व मौजूद होते हैं। किन्तु आधुनिक वैज्ञानिक शोधों ने यह स्पष्ट किया है कि दूध का प्रकार भी उतना ही महत्वपूर्ण है जितना उसका पोषण इसी संदर्भ में A1 और A2 दूध की अवधारणा सामने आई है। यह अंतर मुख्यतः दूध में पाए जाने वाले प्रोटीन बीटा-कैसीन (Beta-Casein) के प्रकार से निर्धारित होता है।

A1 और A2 बीटा-कैसीन में केवल एक अमीनो अम्ल का अंतर होता है किंतु यही छोटा-सा अंतर दूध के पाचन और मानव स्वास्थ्य पर गहरा प्रभाव डालता है। A1 बीटा-कैसीन पचने पर बीटा-कैसोमॉर्फिन-7 (BCM-7) नामक पेप्टाइड उत्पन्न करता है। यह तत्व आंतों और तंत्रिका-तंत्र पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकता है। दूसरी ओर, A2 बीटा-कैसीन पचने पर यह हानिकारक तत्व उत्पन्न नहीं करता और पाचन सरल एवं सुरक्षित रहता है। यही कारण है कि आज विश्व स्तर पर A2 दूध को स्वास्थ्य के लिए अधिक लाभकारी माना जा रहा है।

भारतीय नस्ल की अधिकांश गायें स्वाभाविक रूप से A2 दूध देती हैं। इस दूध में ऐसे प्रोटीन और तत्व पाए जाते हैं जो न केवल ऊर्जा प्रदान करते हैं बल्कि शरीर की रोग-प्रतिरोधक क्षमता को भी मजबूत करते हैं। दूसरी ओर, विदेशी नस्लों जैसे होल्स्टीन-फ्रिज़ियन या जर्सी से प्राप्त दूध प्रायः A1 श्रेणी का होता है जो आधुनिक शोधों के अनुसार कई रोगों के साथ जुड़ा हुआ माना जाता है।

वैज्ञानिक अध्ययनों ने संकेत दिया है कि A1 दूध का अधिक सेवन हृदय रोग, मधुमेह, पार्किंसन और ऑटिज़्म जैसे रोगों से जुड़ा हो सकता है। यह दावा अभी शोध-अध्ययन की प्रक्रिया में है, किन्तु विभिन्न प्रयोग-शालाओं और चिकित्सा-संस्थानों के परिणाम इस दिशा में गंभीर प्रश्न उठाते हैं। इसके विपरीत, A2 दूध का सेवन पाचन तंत्र को स्वस्थ बनाए रखने, एलर्जी की संभावना घटाने और बच्चों में विकास को संतुलित करने में सहायक पाया गया है।

भारत के लिए यह विषय और भी प्रासंगिक है। यहाँ की देशी नस्लें जैसे–गिर, साहीवाल, कोसली, थारपारकर मुख्य रूप से A2 दूध

देने वाली नस्लें हैं। यदि इन नस्लों का संरक्षण और संवर्धन किया जाए तो भारत न केवल अपने नागरिकों को अधिक स्वास्थ्यवर्धक दूध उपलब्ध करा सकता है, बल्कि वैश्विक बाजार में भी A2 दूध का प्रमुख आपूर्तिकर्ता बन सकता है। यह अवसर भारत की दुग्ध-अर्थव्यवस्था को नई ऊँचाई पर ले जाने वाला साबित हो सकता है।

आज विश्व के कई देश A2 दूध पर गहन शोध कर रहे हैं। ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैण्ड में A2 दूध का व्यवसायिक उत्पादन और विपणन तेजी से बढ़ा है। अमेरिका और यूरोप में भी उपभोक्ता A2 दूध को प्राथमिकता देने लगे हैं। यह प्रवृत्ति भारत के लिए चुनौती और अवसर दोनों है। चुनौती इसलिए कि यदि भारत ने अपनी देशी नस्लों की उपेक्षा जारी रखी, तो यह बाजार विदेशी कंपनियों के हाथ चला जाएगा और अवसर इसलिए कि यदि हम अपनी परंपरागत नस्लों को वैज्ञानिक संरक्षण देकर A2 दूध को संगठित रूप से बाजार में ला सकें तो भारत इस क्षेत्र में विश्व में अग्रणी बन सकता है।

A1 और A2 दूध का अंतर केवल वैज्ञानिक या तकनीकी प्राप्त नहीं है, बल्कि यह मानव स्वास्थ्य और समाज की जीवन शैली से गहराई से जुड़ा हुआ है। भारतीय नस्ल की गायों का A2 दूध न केवल अधिक पचने योग्य है, बल्कि यह हमारी सांस्कृतिक धरोहर और भविष्य की आर्थिक शक्ति भी है। इसलिए आवश्यक है कि हम A2 दूध को बढ़ावा दें। A1 दूध की चुनौतियों पर गंभीरता से ध्यान दें और इस क्षेत्र में अनुसंधान तथा नीतिगत समर्थन को प्राथमिकता दें।

●●

12. "The Devil in the Milk"

डॉ. कीथ उडफोर्ड Dr. Keith Woodford

न्यूजीलैंड के प्राणीशास्त्र के वैज्ञानिक डॉ. कीथ उडफोर्ड ने एक किताब लिखा है जिसका नाम है "The Devil in the Milk" उसमें विविध वैज्ञानिक शोध करके उन्होंने अनेक प्रमाण देकर समझाया है। भारतीय नस्ल की गाय का दूध ही पीना चाहिए, विदेशी नस्ल की गाय का दूध नहीं पीना चाहिए क्योंकि उसमें राक्षस रहता है जो मनुष्य को मार देता है। वे BCM7 (Beta caso morphine) को ही राक्षस मानते और कहते हैं, यह अफीम जैसा एक नशीला तथा जहरीला हानिकारक तत्व है।

उन्होंने गायों की दूध का वैज्ञानिक विश्लेषण करके साबित किया कि जर्सी, होलस्टीन फ्रीजियन गाय का दूध A-1 होता है और भारतीय गायों का दूध A-2 होता है। A-1 दूध में राक्षस है और A-2 दूध में देवता होता है। A-1 दूध में BCM7 विषैला पदार्थ है जो बहुत ही हानिकारक है। सर्वप्रथम तो यह बुद्धि को कुंद कर देता है। BCM7 पचता नहीं और खून में जाकर अनेक प्रकार की जटिल समस्या पैदा कर देता है जिससे लीवर, किडनी, हृदय, पेट, बुद्धि, फेफड़ा, आदि सभी अंगों में बीमारियों को पैदा कर देता है। जिससे मनुष्य में विविध प्रकार के रोग उत्पन्न होते हैं। A-1 दूध विदेशी प्रजाति के गाय में ही होता है। इसके ठीक उल्टा भारतीय गाय के दूध में अनेक दैवीय गुण होते हैं जिससे बीमार व्यक्ति भी स्वस्थ हो जाता है। Dr. Keith Woodford की स्पष्ट मान्यता है और बाद में विश्व के अनेक विश्वविद्यालयों में अनेक शोध प्रबंध अनुसंधान किया गया और सभी में पाया गया की Dr. Keith Woodford ने ठीक ही कहा है। एक तरफभारतीय गाय में अनेक प्रकार के दुर्लभ औषधीय गुण पाये जाते हैं तो दूसरी तरफ विदेशी नस्ल की गायों में हानिकारक तथा विनाशकारी गुण हैं। इसलिए भारतीय गायों की पूजा होती है क्योंकि भारतीय गायें जीवन रक्षक हैं।

●●

13. ''गाय और भैंस के दूध में तुलनात्मक अंतर''

हमारी प्रतिदिन बहुत-सी ऐसी क्रियाएँ हैं, जिनसे राष्ट्र की बड़ी हानि होती है पर हम उन कुक्रियाओं के अनिष्ट कारक फल को जानने की तनिक भी चेष्टा नहीं करते। यही बात भैंस–पालन के संबंध में है। लोग नहीं जानते कि इससे भारतवर्ष का कितना और कैसे अपकार हो रहा है। महात्मा गाँधी जी ने इस भंयकर क्षति की ओर लोगों का ध्यान तो आकृष्ट किया। परंतु वे इस आंदोलन को राजनैतिक उथल–पुथल के सिलसिले में विकसित नहीं कर सके।

पशु–विशेषज्ञ ई. जे. ब्रूएन ने एक बार अपने एक वक्तव्य में भैंस से होने वाली हानि की ओर जनता का ध्यान आकर्षित किया था– 'भैंस का दूध लोग इसलिए अधिक पसंद करते हैं कि उसमें अधिक चिकनाई है। पर भैंस के दूध के प्रति यह अधिक रूचि इस देश के गौ–वंश की वृद्धि पर अपना पूरा प्रभाव डाल रही है'। वस्तुतः जितना नुकसान गौ–वंश तथा कृषि का भैंस ने किया है, कदाचित् ही उतना और किसी ने किया हो।

भैंस पालन किसी भी देश में नहीं होता ओर न उसका दूध ही कहीं के लोग व्यवहार करते हैं। दक्षिणी चीन, फिलीपाइन द्वीप–पुन्ज तथा भारतवर्ष ही ऐसे देश हैं, जहाँ भैंस भी पाली जाती है। प्राचीन भारत में भैंस नहीं थी। वेदों में भैंस–पालन का उल्लेख नहीं है। वेदों ने गाय की बड़ी महिमा गायी है। उसको 'अध्न्या' कहा है! गायों की उत्पत्ति के विषय में वेदों में सुंदर वर्णन है ! सृष्टि निर्माण में सर्वप्रथम गाय उत्पन्न हुई। इसलिये वेद इसको 'अग्रजा' कहते हैं। गाय के पश्चात् मनुष्य आये। गायों के 'म्हाँ' शब्द के सहारे मनुष्य बोल सके। अतः वेदों की टिप्पणी में श्री सायणाचार्य ने लिखा है कि मनुष्य को गाय से बोली मिली। सबसे पहले ऋग्वेद प्रकट हुआ। उसमें 'गौ में माता' कहा गया है, जिसका अर्थ हुआ–'गौ हमारी माता है'। गाय दुहनेवाली को वेदों में 'दुहिता' कहा है, जो हम लोगों की प्यारी पुत्री के लिये पर्यायवाचक शब्द है।

वेदों के समान कुरान, बाइबिल, बौद्ध–पिटक, जैन–ग्रंथ सिक्खों के 'गुरू–ग्रंथ साहिब', जिंदाअवेस्ता आदि में भी भैंस के लिये कोई स्थान नहीं है।

भैंस उत्पत्ति के विषय में विचित्र दन्त–कथाएँ हैं। कहते हैं कि अत्यंत प्राचीन काल में 'नन्दिनी' नामक गाय के लिये एक बार वशिष्ठजी और विश्वामित्र जी झगड़ पड़े। विश्वामित्र जी हार गये और उन्होंने रंज में आकर घोर तपस्या की। फिर तपोबल से दूसरी सृष्टि की रचना की। तब 'गाय' से सामना करने के लिये उन्होंने भैंस का निर्माण किया। तभी से भैंस भारत में आयी और शनैः–शनैः उसका विस्तार हुआ। अब तो वह भारत के कोने–कोने में छा गयी है और गाँव–गाँव से गायों को हटा रही है। बहुत–से गाँव तो गायों से एकदम खाली हो गये हैं और वहाँ भैंस आ गयी हैं।

गाय और भैंस के दूध में अंतर

गाय	भैंस
1. गाय के दूध में संपूर्ण पोषक तत्व पाये जाते हैं।	1. भैंस के दूध के संपूर्ण पोषक तत्व उपलब्ध नहीं है।
2. गाय के दूध में रहने वाले प्रोटीन सुगमता से पच जाने वाले होते हैं।	2. भैंस के दूध के प्रोटीन सुगमता से नहीं पचते।
3. गाय का दूध हल्का होता है।	3. भैंस का दूध गाढ़ा होता है।
4. प्रोटीन को पचाने वाली चिकनाई गाय के दूध में पर्याप्त मात्रा में होती है।	4. भैंस के दूध में यह नहीं पाई जाती।
5. बच्चों तथा बीमारों के लिए विशेष रूप से प्रौढ़ों के लिए साधारण रूप से गाय का दूध लाभदायक है। सेरीब्रोसाइड तत्व पाया जाता है।	5. भैंस के दूध की चिकनाई एक विशेष मात्रा में होने और विशेष प्रकार की होने के कारण उतनी परिपूर्ण नहीं होती। दूध पाचन में भारी होता है।
6. गाय के दूध में ब्यूटिरियन अधिक मात्रा में उपस्थित रहता है।	6. भैंस के दूध में नहीं पाया जाता।
7. गाय के दूध में विटामिन, ए, बी, और डी अधिक मात्रा में पाये जाते हैं।	7. भैंस के दूध में यह कम पाया जाता है।
8. गाय के कच्चे दूध में ऑक्साइड तथा रिडक्टेस आदि पाचक रसों की प्रचुरता रहती है।	8. भैंस के दूध में नहीं पाया जाता है।
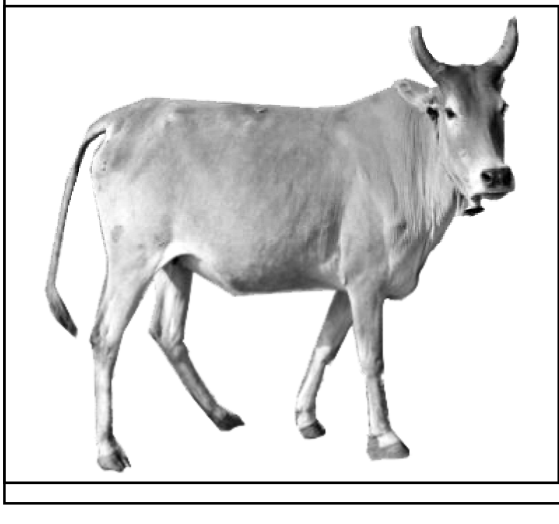	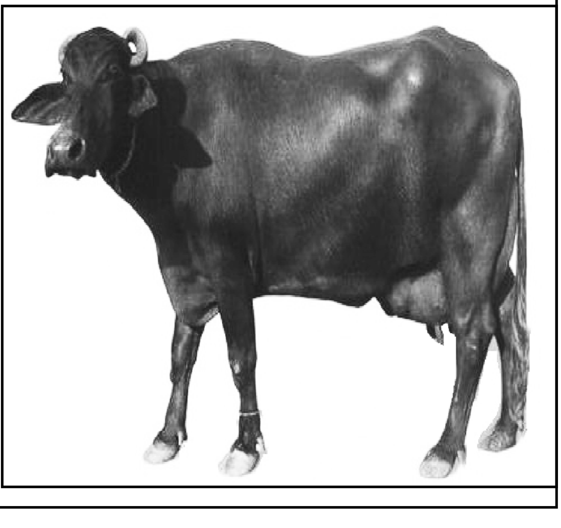

9. गाय का दूध टौक्सिन्स तथा टोमेन्स नामक विषैले पदार्थों को शरीर से दूर करता है।	9. भैंस के दूध में यह क्षमता नहीं होती है।
10. गाय का दूध मनुष्य की शक्ति, ग्रंथि संस्थान तथा रंग का संचालन करता है।	10. भैंस के दूध में यह गुण नहीं होता है।
11. गाय का दूध क्षय एवं कुष्ठ रोगों को दूर करने वाला होता है।	11. भैंस के दूध से कुष्ठ तथा क्षय रोग दूर नहीं होता है।
12. गाय का दूध में क्षार अधिक घुलने वाला और अधिक पाचक होता है।	12. भैंस का दूध कम पाचक होता है। अपच करता है।
13. दूध के अच्छे कीटाणु गाय के दूध में अधिक स्वतंत्रता से बढ़ते हैं।	13. दूध के अच्छे कीटाणु भैंस के दूध में उपस्थित नहीं रहते हैं।
14. गाय के दूध में Strontion तत्व है जो अणु विकिरण का प्रतिरोधक है।	14. भैंस के दूध में यह तत्व नहीं पाया जाता।
15. एसीडीटी, अल्सर, दाह व शरीर में अधिक गरमी आदि में गाय का दूध उत्तम है।	15. भैंस के दूध से यह लाभ नहीं होता है।
16. जलोदर के रोगी को पानी पीना मना होता है उसके लिए गाय का दूध लाभकारी होता है।	16. भैंस का दूध जलोदर के रोगी के लिए लाभकारी नहीं होता है।
17. गाय के दूध में CLA (Conjuated Lineoic Acid) है जो रोग नाशक शक्ति उत्पन्न करता है।	17. भैंस के दूध में यह तत्व नहीं मिलता।
18. **ALA Alfalioneoic Acid Omega-3** गाय के दूध में मिलता है जो रोग प्रतिरोधक क्षमता से भरपूर होता है।	18. भैंस के दूध में यह तत्व नहीं पाया जाता।
19. गाय के दूध में विटामिन 'डी' पाया जाता है और बी12 भी पाया जाता है।	19. भैंस के दूध में नहीं पाया जाता है।

20. गाय के दूध में ट्रांस फेटी एसिड कम मात्रा में होता है।	20. भैंस के दूध में ट्रांस फेटी एसिड का प्रतिशत गाय के दूध से पाँच गुना अधिक होता है। यह ट्रांस फेटी एसिड एल.डी.एल. कोलेस्ट्रॉल को बढ़ाता है और एच.डी.एल. कोलेस्ट्रॉल को कम करता है।
21. गाय का दूध हृदय को स्वस्थ रखता है।	21. भैंस के दूध से हृदय रोग का खतरा बढ़ जाता है।
22. गाय के दूध में पानी की मात्रा अधिक होती है इसलिए यह शरीर को हाइड्रेड रखता है।	22. भैंस का दूध गाढ़ा होता है।
23. भारतीय गाय के दूध में ओमेगा-6 होता है जो कैंसर नियंत्रण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।	23. भैंस के दूध में यह अनुपस्थित होता है।
24. गाय के दूध के सेवन से अवांछित वजन बढ़ने का खतरा नहीं होता है।	24. भैंस के दूध के अधिक सेवन से अवांछित वजन बढ़ता है। मोटापा होता है।
25. देशी गाय के दूध के सेवन से मधुमेह रोग का खतरा नहीं होता है।	25. भैंस के दूध के सेवन से मधुमेह की रोकथाम के लिए लाभदायक नहीं है।
26. गाय के दूध के सेवन से त्वचा से संबंधी रोग ठीक होते हैं।	26. कुछ लोगों को भैंस के दूध से एलर्जी होती है, त्वचा को नुकसान पहुँच सकता है।
27. गाय का दूध कब्ज, बवासीर के रोगियों के लिए लाभदायक होता है।	27. भैंस का दूध कुछ लोगों को पचाने में दिक्कत होती है जिसमें कब्ज और बवासीर के लक्षण बढ़ सकते हैं।

14. गाय से प्राप्त पंचगव्य का अध्ययन

1. गोदुग्ध

देशी गाय का दूध पीने से सतोगुण की वृद्धि होती है। मानव शरीर के अन्दर विद्यमान सभी तत्व एवं धातु पुष्ट होते हैं। फलस्वरूप शरीर के अन्दर चुस्ती, स्फूर्ति, तन्दरुस्ती बनी रहती है। चेहरे पर कांति एवं तेज उभरता है। मस्तिष्क के अन्दर ज्ञान ग्रंथियों की वृद्धि होती है। बुद्धि का विकास होता है। मनुष्य दीर्घ आयु को प्राप्त करता है।

गौदुग्ध बलकारक, लघु, शीत, अमृत के समान अग्नि दीपक एवं विशेष शामक होता है।

प्रातःकाल पिया हुआ दूध वृष्य वृहण तथा अग्निदीपक होता है। दोपहर में पिया हुआ दूध बलवर्धक कफनाशक व पित्तनाशक होता है।

रात्रि में पिया हुआ दूध बालक के शरीर को बढ़ाता है, क्षय का नाश करता है और वृद्धों के शरीर में तेज उत्पन्न करता है। कालीगाय का दूध वातनाशक एवं अधिक गुणवान होता है। पीली गाय का दूध वात तथा पित्त शमक होता है। श्वेत गाय का दूध कफनाशक होता है। लाल एवं चितकबरी गाय का दूध वातनाशक होता है।

गौ दुग्ध में 6 प्रकार के विटामिन पाये जाते हैं–

विटामिन ए–चेहरे की त्वचा आँख, दिमाग को सक्रिय बनाये रखता है।

विटामिन बी- उत्साह, स्फूर्ति, ताजगी, आनंद जीवन शक्ति बनाए रखता है।

विटामिन सी- पाचन शक्ति और नेत्र की ज्योति बढ़ाता है।

विटामिन डी- हड्डियों को मजबूत करता है। जिससे भूख और वजन दोनों नियंत्रित होता है।

विटामिन ई- चेहरे की कांति बढ़ाता है। और शक्ति प्रदान करता है।

विटामिन के - त्वचा को सुरक्षित रखकर चर्मरोगों से बचाता है।

केरोटिन - गाय के दूध में स्ट्रांग टी.एन. रसायन मौजूद रहता है। जो परमाणु विकिरण प्रदूषण और असहनीय तापमान में मानव शरीर को सुरक्षा कवच प्रदान करता है।

रोग प्रतिरोधक क्षमता एवं हृदय की सक्रियता और संवेदनशीलता बढ़ता है। भारतीय गाय के दूध में ओमेगा-6 फैटी एसिड होता है, जिसकी कैंसर-नियंत्रण में महत्वपूर्ण भूमिका है।

चरक, सुश्रुत, वाग्भट्ट, भाव प्रकाश इत्यादि आयुर्वेद ग्रन्थों में गोदुग्ध के गुणों का वर्णन है।

महाभारत में यक्ष- युधिष्ठिर संवाद में यक्ष प्रश्न पूछता है।

''किं अमृतम् ?'' अमृत क्या है ? तो धर्मराज उत्तर देते हैं - ''गवामृतम्''। **गो दुग्ध ही अमृत है।** अन्य खाद्य पदार्थों के साथ तुलना करने पर गाय का दूध वस्तुतः अमृत ही सिद्ध होता है।

महर्षिचरक ने गौमाता के दूध को जीवन शक्तियों में सर्वश्रेष्ठ रसायन कहा है।

गौ का दूध पुष्टिकारक होता है गौ दुग्ध को इसी कारण रसायन कहा गया है।

गौ दुग्ध से शारीरिक और मानसिक विकास जितना होता है उतना विकास अन्य किसी प्राणी के दुग्ध से या किसी अन्य पदार्थों के सेवन से नहीं हो सकता है।गो दुग्ध तत्काल वीर्य उत्पन्न करने वाला है। गोदुग्ध से बुद्धि और मेधा शक्ति की वृद्धि होती है। दूसरे किसी भी प्राणी के दूध में यह शक्ति यह दिव्य गुण नहीं है।

चीनी यात्री फाह्यान और ह्वेनसांग ने अपने संस्मरणों में लिखा है कि भारत में पानी माँगने पर दूध दिया जाता है। जब इस देश में लोग गोमाता की सेवा करते थे, तब देश खुशहाल था और यहाँ दूध दही की नदियाँ बहती थी। दूर-दूर तक चिकित्सक नहीं हुआ करते थे।

''विश्व में गौ दुग्ध के समान पौष्टिक आहार नहीं'' शुद्ध देशी गाय के 50 किलोग्राम शुद्ध दूध में 1 किलोग्राम स्वर्ण तत्व (सोना) की मात्रा होती है।

एक क्यूबिक सेंटीमीटर अथवा 35 बूँद दूध में 5 से 10 लाख छाछ में 5 से 10 करोड़ ऐसे अणु रहते हैं जिनका काम रोगाणुओं को भगाना है।

गाय के दूध में एक अद्भुत औषधीय गुण है।इसकी छाछ किसी भी तरीके के नशे (भांग, तम्बाकू, स्मोक) से होने वाले प्रभाव को कम करती है तथा नियमित सेवन से नशे की इच्छा धीरे-धीरे कम हो जाती है।

गाय का दूध दस्त को बाँधने वाला चिकना, भारी, रक्त-पित्त को शमन करने वाला, शीतल स्वाद और परिणाम में मधुर जीवन बढ़ाने वाला, वात-पित्त का नष्ट करने वाला कहा गया है।

प्रयोगों से सिद्ध किया गया है कि गौ दुग्ध से तपेदिक का इलाज किया जा सकता है।

दूध के सेवन का फल "भाव प्रकाश" में बताया गया है। दोपहर के पहले दूध वीर्यवर्द्धक, दोपहर को बल कारक व कफ व कफ का नाश करने वाला मंदाग्नि को नष्ट करने वाला होता है तथा रात्रि में सेवन करने से बहुत से रोगों का हरण करने वाला होता है। चरक संहिता में गाय के दूध के 10 गुणों का वर्णन किया गया है।

स्वादु शीतं मृदु स्निग्धं बहलं श्लक्षणी पछिलय
गुरू मदं प्रसन्न च गव्यं दश गुण पय।

कश्यप संहिता में खाद्य विज्ञान का वर्णन है जिसके अनुसार मुर्छा अथवा किसी पुराने

रोग की स्थिति में वैद्य दूध को सर्वश्रेष्ठ औषध स्वीकार करते हैं। विज्ञान के प्रयोगों ने सिद्ध कर दिया है कि गौ दुग्ध के समस्त तत्व माँ के दूध के तत्वों के ठीक समान है तथा माँ के दूध के अभाव में अमृत रूप गौ दुग्ध का सेवन किया जा सकता है। इसमें कार्बोहाइड्रेट, फैट, क्षार तथा विटामिन होता है।

विशेषज्ञों का कहना है कि पीले रंग का कैरोटीन नामक द्रव्य केवल गाय के दूध में है। कैरोटीन की कमी से मनुष्यों को मुँह, फेफड़ों, मूत्राशय की झिल्ली में और अन्य प्रकार से कैंसर हो जाते हैं। कैरोटीन शरीर में जाकर विटामिन "ए" तैयार करता है।

सुश्रुत संहिता में दुग्ध को सभी प्राणियों का आहार बताया गया है। चरक संहिता में गो-दुग्ध को जीवनी-शक्तियों में सर्वश्रेष्ठ रसायन कहा गया है।

गौ दुग्ध जीवन के लिये उपयोगी, जरा व्याधिनाशक, बुद्धिवर्धक, बलवर्धक, तथा विभिन्न रोगों को दूर करने वाला है।

गाय के दूध में विटामिन डी पाया जाता है। गाय का दुग्ध वात-नाशक तथा अधिक गुणवान, पीली-लाल गौ का दुग्ध वात तथा पित्त नाशक, गुणवान होता है।

गाय के दूध में ब्यूटियिन व अन्य कोमल तत्व होते हैं। अतः यह सरलता से पच जाता है।

गाय का दूध गर्म करने पर भी उसमें पोषक तत्व विद्यमान रहते हैं परंतु भैंस का दूध गर्म करने पर पोषक तत्व नष्ट हो जाते है।

2. दही एवं छाछ

गौमाता के दूध से निर्मित दही सबसे श्रेष्ठ गुणों वाला रुचि और भूख बढ़ाने वाला पुष्टिकारक तथा वायुनाशक है। रुसी जीव वैज्ञानिक एली मर्चनी क्राफ्र ने दही पर अनेक प्रयोग किये हैं। दही में मानव शरीर के लिए लाभकारी अनेक विलक्षण गुण पाये हैं। दही अम्ल से उत्पन्न सूक्ष्म जीवाणु जो मानव आंतों में हानिकारक विषाणुओं की उत्पत्ति को रोकता है। भूख को बढ़ाता है पाचन शक्ति को बढ़ाता है। हृदय के लिए हानिकारक कोलेस्ट्रॉल को नियंत्रित करता है। गौमाता का दही विश्व में सर्वोत्तम है।

दही को मथकर मक्खन निकाला जाता है। पौष्टिक मट्ठा कहलाता है। इसमें विद्यमान जीवाणु के कारण शरीर में रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाती है।

लोग दीर्घायु रहते हैं। बुरा शक्कर के साथ सेवन उत्तम पाचक सिद्ध होता है। नियमित उपयोग से आँखों की ज्योति दाँतों की मजबूती बढ़ती है।

अरुचिकर, पोलियो, मंदाग्नि, उल्टी, वात, रक्तचाप, वायुगोला, अतिसार, प्रमेह, कोढ़, पेट की गड़बड़ी, मोटापा, मूत्ररोग प्यास इत्यादि में भी अत्यधिक गुणकारी है। आयुर्वेद शास्त्र के अनुसार रात्रि में शयन के पूर्व दुग्ध, प्रातः उठकर जल और भोजन के बाद मट्ठा पीयें तो जीवन में वैद्य चिकित्सक की आवश्यकता नहीं हो सकती है।

3. गोघृत

गाय का घृत सृष्टि मे सर्वोत्तम पदार्थ है। गौघृत का वर्णन वेदों में ''आयुवैघृतम्'' के रूप में किया गया है। औषधियों की महाऔषधि के रूप में प्राचीन चिकित्सक इस पर गर्व करते थे।

गौघृत में 11 अम्ल, 12 धातुएँ, 2 लेक्टोज होती है। जिससे एसीटिलीन गैस का भी निर्माण होता है। यह एसीटिलीन गैस प्रखर उष्णता की ऊर्जा है। जो दूषित वायु को अपनी ओर खींचकर पूर्ण शुद्ध करती है।

गौघृत अग्नि में जाने से फार्मेलिन गैस उत्पन्न होकर वायुमंडल में फैलकर वातावरण को रोगाणु एवं प्रदूषण मुक्त करती है।

गौघृत के जलने से उत्पन्न गैस चक्र और मानव मस्तिष्क को संतुलित करने का कार्य करती है। इसलिए यज्ञ करने से वर्षा होती है। वर्षा से सजीव सृष्टि के लिए शुद्ध सात्विक अन्न, जल एवं पुष्टिकारक वातावरण का निर्माण होता है। वेदशास्त्र के अनुसार गौघृत सेवन करने से वाक् सामर्थ्य वाणी में तेज आता है। और सात्विक गुणों का विकास होता है।

पाराशर गृह सूत्र में कहा गया है कि जब शिशु का जन्म होता है। तब शिशु में मेधा जनन हेतु मधु घृत में स्वर्ण को घिसकर अथवा केवल गोघृत में ही स्वर्ण घिसकर नवजात शिशु को चटाया जाता है।

4. गोबर

स्कंद पुराण में कहा गया है कि–

"लक्ष्मीश्च गोमये नित्यं पवित्रा सर्व मंगला।
गोमया लेपनं तस्मात् कर्तव्यं पाण्डनन्दन।।"

अर्थात् गोबर में लक्ष्मी का निवास रहता है अतः उसके द्वारा भूमि को लीपने से लक्ष्मी स्वयं आ जाती है।

गाय अपने दूध, दही, घी, मक्खन आदि से बनने वाली उत्तम एवं श्रेष्ठ भोज्य पदार्थों के रूप में मानव शक्ति, ऊर्जा तथा जीवन शक्ति प्रदान करती है। आर्थिक एवं व्यावहारिक दृष्टि से इसके पश्चात् गोबर, गो मूत्र का भी स्थान है। वृद्धता, अथवा रोग के कारण गाय यदि दूध और बछड़े देने योग्य न रहे तो भी वह जब तब जीवित रहेगी खाद (गोबर) तो देती रहेगी।

एक गाय के गोबर से साल भर में 800 किलो नत्रजन, 860 किलो सुपर फॉस्फेट 1050 किलो पोटाश तथा 17600 किलो अन्य द्रव्य मिल सकते हैं।

गोबर में ऐसी क्षमता है कि यदि कूड़े–कचरे के ढेर पर गोबर का घोल बनाकर डाला जाये तो वह कूड़ा–कचरा तीन चार माह में उपयोगी खाद बन जाता है। गोवर्धन केंद्र यवतमाल में एक किलोग्राम गोबर से तीस किलो उपयोगी खाद इसी प्रकार बनाकर इसका सफल प्रयोग किया है। भारत सरकार की गठित एक समिति ने कानपुर, नागपुर, वर्धा, भोपाल, इन्दौर, पाण्डिचेरी, बम्बई व मदास में अध्ययन करने

के बाद यह निष्कर्ष निकाला कि रासायनिक उर्वरकों की बजाय जैविक खाद के प्रयोग से खेती में कम लागत, व फसल निरोगी व अच्छी हुई है।

श्री नारायण देवराय पढ़री ने त्वचा के रोगों में औषधी का कार्य करने वाली साबुन की टिकिया गोबर से बनाई है तथा गोबर से धूप बत्ती बनाई है। गोबर से एक प्लास्टर तैयार किया है जो दीवारों व छत पर लगाने से ताप और शीत का प्रभाव कम हो जाता है। यदि बिजली चमक कर गोबर पर गिरती है तो उसका दूषित प्रभाव वहीं खत्म हो जाता है।

विषधर साँप, बिच्छु या अन्य जीव के काटने पर रोगी को गोबर पिलाने तथा शरीर पर गोबर का लेप करने से विष का असर खत्म हो जाता है।

गोबर की राख का मंजन करने पर पायरिया, मसूड़ों में खून गिरना तथा दाँतों के अन्य रोग ठीक हो जाते हैं।

गोबर खाद से लाभ–

रासायनिक खाद की बजाय गोबर खाद से खेती करने से निम्न लाभ मिलते हैं–

(1) भूमि का प्राकृतिक रूप बना रहता है।

(2) भूमि के सूक्ष्म जीवाणु बढ़ते हैं।

(3) सिंचाई के लिए पानी कम लगाना पड़ता है।

(4) खेत एवं गाँव के कूड़े-कचरे का भी उपयोग होता है।

(5) किसानों और बैलों को अधिक काम मिलता है।

(6) पर्यावरण में सुधार होता है, खाद्यान्न पौष्टिक एवं सुस्वाद होता है।

(7) कीटनाशकों के जहर का अंश हमारे शरीर पर नहीं होता।

(8) ग्रामीणों को रोजगार मिलता है।

(9) अनुपयोगी गौ वंश को आवारा छोड़ने की प्रवृत्ति बंद होने से उनके कत्लखाने में जाने की स्थिति पर रोक लगती है।

(10) गाँव का धन व संसाधन गाँव में ही रहता है।

(11) विदेशी मुद्रा की बचत होती है।

(12) देश सम्पन्नता की ओर बढ़ता है।

5 गोमूत्र

चरक संहिता में गोमूत्र की उपयोगिता के बारे में कहा गया है। प्रयोगशाला परीक्षणों में देशी गाय के गौ-मूत्र में 24 रसायन तत्व पाये गये हैं।

आयुर्वेद सिद्धांतानुसार गोमूत्र से अर्क आदि अनेक औषधियाँ तैयार की जाती हैं। विज्ञान अब गौ मूत्र के गुणों को समझने लगा है जबकि हमारे देशवासी हजारों वर्षों से इसका प्रयोग करते आ रहे हैं। गौ मूत्र के रासायनिक अवयव (1) अमोनिया मूलक (2) अमोनिया गैस (3) यूरिया (4) यूरिक अम्ल (5) कॉपर (6) पोटैशियम (7) मैंगनीज (8) कैल्सियम (9) आयरन (10) सोडियम (11) फॉस्फेट यौगिक (12) कार्बोनिक अम्ल (13) विटामिन 'ए' (14) हिम्यूरिक अम्ल (15) स्वर्णक्षार आदि हैं।

गौ मूत्र के प्रयोग से ह्रदय रोग दूर होता है तथा मूत्र खुलकर आता है।

गौ मूत्र रक्त में रहने वाले दूषित कीटाणुओं को नष्ट कर देता है।

श्री राम वनवास के समय भरत 14 वर्ष तक गौ मूत्र का पान करते थे जिससे वे स्वस्थ रहकर आध्यात्मिक उन्नति करते रहे।

"गौमूत्र यावक श्रुत्वाभ्रातंर वलकलाम्बरम्"

गौ का मूत्र कटु, तीक्ष्ण, उष्ण, खारा, तिक्र, कषाय, लघु अग्निदीपक, बुद्धिवर्धक पित्तकारक तथा वात कफ नाशक है। गौ मूत्र सेवन से कुष्ठा आदि व अन्य रोग मिट जाते है।

गौ मूत्र में पोटेशियम, कैल्सियम, मैग्नेशियम क्लोराइड, यूरिया, फॉस्फेट अमोनिया, क्रिएटिनिन आदि विभिन्न पोषक क्षार विद्यमान रहते हैं।

गौ मूत्र का सेवन पान करके, मालिश द्वारा, पट्टी रखकर, एनिमा तथा गर्म सेक द्वारा किया जाता है। इसके सेवन काल के दौरान मिर्च, मसाले, गरिष्ठ भोजन, तम्बाकू तथा मादक पदार्थों से परहेज रखना आवश्यक है।

भारतीय नस्ल की गाय के मूत्र में वैज्ञानिकों ने 95% जल, 2·5% यूरिया या प्रोटीन, 2·5% खनिज, विटामिन, विविध एन्जाइम्स का मिश्रण पाया जाना सिद्ध किया।

गौ मूत्र द्वारा निम्न रोगों का इलाज आयुर्वेद के अनुसार किया जा सकता है-

(1) यकृत के रोग	(2) कब्जी
(3) बवासीर	(4) जलोदर (पेट में पानी भरना)
(5) उदर में वायु विकार	(6) मोटापा
(7) चर्मरोग (कोढ़, खाज आदि)	(8) पुराना जुकाम
(9) शोध	(10) पेट के कीड़े
(11) जोड़ों मे दर्द	(12) ह्रदय रोग
(13) कफ वृद्धि	(14) नासूर
(15) हिस्टरिया	(16) स्त्रियों के रोग
(17) क्षय रोग	(18) गुप्त रोग
(19) बच्चों का सूखा रोग	(20) जीर्ण ज्वर
(21) दस्त रोग	(22) आँख-कान की तकलीफ
(23) दन्तरोग	(24) एक्जिमा।

गौ मूत्र से कामधेनु वटी बनाकर कई रोगों पर सफलता पूर्वक इलाज किया गया है।

फाइलेरिया से पीड़ित लोगों ने चालीस दिन तक लगातार गौ मूत्र पीकर फाइलेरिया से मुक्ति पाई है।

गो मूत्र अर्क : एक प्राकृतिक औषधि

वैज्ञानिकों ने अब सिद्ध कर दिया है कि गोमूत्र के अर्क (डिस्ट्रीलेट) का सेवन करने से कैंसर जैसी महाघातक बीमारी की दवाइयों और एंटीबायोटिक दवाइयों की क्षमता कई

गुना बढ़ जाती है अब वैज्ञानिकों का मानना है कि गौ मूत्र के अर्क से जो औषधीय फार्मूलेशन तैयार होगा, इसमें कैंसर, जीवाणु जनित एवं अन्य रोगों की बेहतर दवाएँ तैयार करने का काम शुरू किया जा सकता है। एंटीबायोटिक दवाइयों का जो भाग शरीर उपयोग नहीं कर पाता था, गौ मूत्र अर्क का इन दवाइयों के साथ प्रयोग करने से वह भाग भी शरीर के उपयोग में आने लगता है, इससे एंटिबायोटिक्स दवा की मात्रा कम लेने पर भी वह अधिक लाभ करती है। गौ मूत्र को गंगाजल के समान पवित्र मानते हैं, गंगाजल जिस प्रकार लम्बे समय तक दूषित नहीं होता।उसी तरह गौमूत्र दूषित नहीं होता।

विश्व तो गौमूत्र का महत्व अमेरिका से पेटेण्ट मिलने के बाद ही जान सका है, पर आयुर्वेद के ग्रंथ गौमूत्र की उपयोगिता एवं महत्व से भरे पड़े है।

गौमूत्र के अर्क का इस्तेमाल कर साइड इफेक्ट से पूरी तरह बचाव संभव है एंटीबायोटिक दवाएँ काफी मँहगी आती है। हमारा शरीर एंटीबायोटिक्स दवाओं का पूरा-पूरा इस्तेमाल नहीं कर पाता है। इस प्रकार लगभग 25 करोड़ डोज (खुराक) बेकार हो जाती है। गौमूत्र के अर्क से इस क्षति को रोका भी जा सकता है।

गौमूत्र अर्क निश्चित ही शरीर में रोग प्रतिरोध क्षमता बढ़ाते हैं।

आधुनिक रसायन शास्त्र के अनुसार गौमूत्र के रासायनिक तत्वों का रोगों पर प्रभाव विवरण

1. नाइट्रोजन– मूत्रक, वृक्क का प्राकृतिक उत्तेजक, रक्त विषमयता को निकालता है।

2. गंधक (सल्फर)–बड़ी आँत की पुरःसरण क्रिया को बल मिलता है। रक्त शोधक है।

3. अमोनिया– यह शरीर धातुओं और रक्त संगठन को स्थिर करता है।

4. अमोनिया गैस– फेफड़ों व श्वसन अंगों को संक्रमण से बचाता है।

5. ताँबा (कॉपर)– अनुचित मेद (चर्बी) को बनने से रोकता है। शरीर की जीवाणुओं से रक्षा करता है।

6. आयरन– रक्त में उचित लाल कणों का निर्माण बनाये रखता है। कार्य शक्ति स्थिर रखता है।

7. यूरिया– मूत्र उत्सर्ग पर प्रभाव करता है। कीटाणुनाशक है।

8. यूरिक एसिड– हृदय शोथ नाशक, मूत्रल होने से विषशोधक है।

9. फॉस्फेट– मूत्रवाही संस्थान से सिकता कण (पथरी कण) निकालने में सहायक है।

10. सोडियम– रक्त शोधक, अम्लता नाशक है।

11. पोटेशियम–आमवात नाशक क्षुधा कारक है। मांसपेशी दौर्बल्य, आलस्य मिटाता है।

12. मैंगनीज–कीटाणुनाशक, कीटाणु बनने से रोकना, गैंगरीन, सड़ांध से बचाता है।

13. कार्बोलिक एसिड– कीटाणु नाशक, कीटाणु बनने से रोकना, गैंगरीन, सड़ांध से बचाता है।

14. कैल्सियम– रक्त शोधक, अस्थि पोषक, जन्तुध्न, रक्त, स्कन्द है।

15. लवण (नमक)– दूषित व्रण, नाड़ी व्रण, मधुमेह जन्य संयास, विषमयता, अम्लरक्तता नाशक, जन्तुधन।

16. विटामिन ए, बी, सी, डी, ई– विटामिन बी, जीवनीय तत्व, उत्साहस्फूर्ति बनाये रखना, घबराहट, प्यास से बचाता है। अस्थि पोषक प्रजनन शक्ति दाता है।

17. अन्य मिनरल्स–रोग प्रतिरोधक शक्ति को बढ़ाता है।

18. दुग्ध शर्करा–तृप्ति रहती है। मुख शोष, हृदय को ताकत देता है, स्वस्थ करता है। प्यास, घबराहट को मिटाता है।

19. एन्जाइम– पाचक रस बनाते हैं। रोग प्रतिरोधक शक्ति (आरोग्य कारक तत्व) बढ़ाते हैं।

20. जल– जीवनदाता है, रक्त को तरल बनाए रखता है तापक्रम को स्थिर रखता है।

21. हिप्पुरिक एसिड– मूत्र के द्वारा विषों को बाहर निकालता है। जन्तुघ्न है।

22. क्रियाटिनिन– आठ मास की गर्भवती गाय के गौमूत्र में हारमोन्स ही होते हैं। जो स्वास्थ्यवर्धक है।

23. स्वर्ण क्षार जन्तुघ्न– रोग निरोधक शक्ति बढ़ाता है।

गौ मूत्र में गुण अधिक होते हैं। अतः चिकित्सा में गौमूत्र का ही प्रयोग करना चाहिए।

(1) गौमूत्र में किसी भी प्रकार के कीटाणु नष्ट करने की चमत्कारी शक्ति है। सभी कीटाणुजन्य व्याधियाँ नष्ट होती हैं।

(2) गौमूत्र दोषों (त्रिदोष) को समान बनाता है। अतएव रोग नष्ट हो जाते हैं।

(3) गौमूत्र शरीर में यकृत (लिवर) को सही कर स्वच्छ खून बनाकर किसी भी रोग का विरोध करने की शक्ति प्रदान करता है।

(4) गौमूत्र में सभी तत्व ऐसे हैं, जो हमारे शरीर के आरोग्यदायक तत्वों की कमी की पूर्ति करते हैं।

(5) गौमूत्र में कई खनिज, खासकर ताम्र होता है, जिसकी पूर्ति से शरीर के खनिज तत्व पूर्ण हो जाते हैं। स्वर्ण क्षर भी होने से रोगों से बचने की यह शक्ति देता है।

(6) मानसिक रोग से स्नायु तंत्र (नर्वस सिस्टम) को आघात होता है। गौमूत्र को मेध्य ओर हृद्य कहा गया है। यानी मस्तिष्क एवं हृदय को शक्ति प्रदान करता है। अतएव मानसिक कारणों से होने वाले आघात से हृदय की रक्षा करता है और इन अंगों को होने वाले रोगों से बचाता है।

(7) किसी भी प्रकार की औषधियों की

मात्रा का अतिप्रयोग हो जाने से जो तत्व शरीर में रहकर किसी प्रकार से उपद्रव पैदा करते हैं उनको गौमूत्र अपनी विषनाशक शक्ति से नष्ट कर रोगी को निरोग करता है।

(8) विद्युत तरंगें हमारे शरीर को स्वस्थ रखती है। ये वातावरण में विद्यमान हैं सूक्ष्मातिसूक्ष्म रूप से तरंगे हमारे शरीर में गौमूत्र से प्राप्त ताम्र के रहने से ताम्र के अपने विद्युतीय आकर्षक गुण के कारण शरीर से आकर्षित होकर स्वास्थ्य प्रदान करती हैं।

(9) गौमूत्र रसायन है। यह बुढ़ापा रोकता है। व्याधियों को नष्ट करता है।

(10) आहार में जो पोषक तत्व कम प्राप्त होते हैं उनकी पूर्ति गौमूत्र में विद्यमान तत्वों से होकर स्वास्थ्य लाभ होता है।

(11) आत्मा के विरूद्ध कर्म करने से हृदय और मस्तिष्क संकुचित होता है, जिससे शरीर में क्रिया-कलापों पर प्रभाव पड़कर रोग हो जाते हैं। गौमूत्र सात्विक बुद्धि प्रदान कर, सही कार्य कराकर इस तरह के रोगों से बचाता है।

(12) शास्त्रों में पूर्व कर्मज व्याधियों भी कही गयी है जो हमें भुगतनी पड़ती है। गौमूत्र में गंगा ने निवास किया है। गंगा पाप नाशिनी है, अतएव गौमूत्र पान से पूर्व जन्म के पाप क्षय इस प्रकार के रोग नष्ट हो जाते हैं।

(13) शास्त्रों के अनुसार भूतों के शरीर प्रवेश के कारण होने वाले रोगों पर गौमूत्र इसलिए प्रभाव करता है कि भूतों के अधिपति भगवान शंकर हैं। शंकर के शीश पर गंगा है। गौमूत्र में गंगा है, अतएव गौसूत्र पान से भूतगण अपने अधिपति के मस्तक पर गंगा के दर्शन कर, शांत हो जाते हैं और इस शरीर को नहीं सताते हैं। इस तरह भूताभिष्यंगता रोग नहीं होता है।

(14) जो रोगी वंश परंपरा से रोगी हो, रोग के पहले ही गौमूत्र कुछ समय पान करने से रोगी के शरीर में इतनी विरोधी शक्ति हो जाती है कि रोग नष्ट हो जाते हैं।

(15) विषों के द्वारा रोग होने के कारणों पर गौमूत्र विषनाशक होने के चमत्कार के कारण ही रोग नाश करता है। बड़ी-बड़ी विषैली औषधियाँ गौमूत्र से शुद्ध होती हैं। गौमूत्र, मानव शरीर की रोग प्रतिरोधनी शक्ति को बढ़ाकर, रोगों को नाश करने की क्षमता देता है। Immunity Power देता है। निर्विष होते हुए यह विषनाशक है। Anti-Toxic है।

गौमूत्र मानक—गाय की अस्वस्थ परिस्थिति, ऋतुओं के बदलाव भी गो मूत्र में भिन्नता उत्पन्न करती है। वर्तमान में WHO, AYUSH, (GOI), FDF आदि के निर्देशानुसार भी मानकीकरण आवश्यक है।

●●

15. ''पंचगव्य का महत्व''

यज्ञ अनुष्ठान से पूर्व प्रत्येक यजमान को देहशुद्धि के लिए पंचगव्य प्राशन का विधान है।

पंचगव्य में गाय से प्राप्त पाँच पदार्थ होते हैं–गाय का दूध, दही, घी, गोमूत्र एवं गोबर।

जगद्‌गुरु शंकराचार्य स्वामी भारती तीर्थ जी के अनुसार शास्त्र पापों के उपशमन के लिए पंचगव्य पान का विधान बताते हैं। जगद्‌गुरु शंकराचार्य स्वामी स्वरूपान्द जी के कथानुसार भूमि पूजन के योग्य तब मानी जाती है जब वह गोबर से लीपी गई हो।

आयुर्वेदिक दृष्टि से शरीर शोधन में उदर के विकारों को दूर करने के लिए पंचगव्य प्राशन का प्रयोग निरापद है।

आण्विक दुष्परिणामों को अवरूद्ध करने की शक्ति गाय के गोबर में होती है।

अग्नि और गौगव्य का समन्वय एवं गौमाता के सम्मान को ही यज्ञ कर्म कहा गया है।गाय के पीछे के भाग से प्राप्त पंचगव्य यज्ञ हवि कहलाता है।जो अग्निदेव का मुख्य भोजन है।

(1) यज्ञ के लिए स्थान शुद्धि–गाय के गोबर और गोमूत्र से। (2) यज्ञ अग्नि प्रज्वलन गाय के उपलों से।(3) आत्मशुद्धि–पंचगव्य से।(4) यज्ञ आहुति–गौ-घृत से इन्हीं विशेषताओं के कारण गौ माता अपने द्वारा यज्ञकर्म को सृष्टि सृजन शक्ति के रूप में धारण करती है।इसलिए वेद में गाय को यज्ञ धेनु कहा गया है।

यज्ञ आहुति में गाय का घी, गौदुग्ध एवं इससे निर्मित पदार्थ डालने से विश्व ब्रह्माण्ड में सतोगुण शक्ति अर्थात् सृजन शक्ति का निर्माण होता है। जिसे कल्याणकारी शक्ति कहा गया है?

गौ माता से प्राप्त द्रव्य दूध छाछ मट्‌ठा मनुष्य का उत्तम भोजन है।गाय का गोबर और गौ मूत्र धरती माता का उत्तम भोजन है।गौ घृत अग्निदेव का उत्तम भोजन है।

''गौमाता और यज्ञ के द्वारा सृष्टि की रक्षा''

गौघृत वेद मंत्र उच्चारण के साथ जब अग्नि में डाला जाता है तो उससे उत्पन्न सात्विक यज्ञ ऊर्जा- मंत्र ध्वनि कम्पन के द्वारा विश्व ब्रह्माण्ड में विशेष रूप से प्रसारित होता है, जिसके प्रभाव से वायुमंडल में ''ओजोन'' परत का निर्माण होता है। अंतरिक्ष एवं भूमण्डल पर सभी ग्रह नक्षत्रों का प्रभाव संतुलित होता है। सूर्य की प्रथम किरण जो सृष्टि को प्राण ऊर्जा और पोषण देती है उसमें बल एवं शक्ति प्राप्त होती है।

''यज्ञ से पृथ्वी पर जल वर्षा''

गौमाता के स्तन में चारों समुद्रों का वास है, आकाशगंगा, पृथ्वीगंगा, पातालगंगा इन तीनों गंगा का स्रोत्र गाय के स्तन से प्राप्त क्षीरसागर अर्थात् दूध की धारा है।गौ दूग्ध से प्राप्त घृत जब यज्ञ अग्नि में डाला जाता है तो, उसमें उत्पन्न यज्ञ ऊर्जा विश्व ब्रह्माण्ड में प्रसारित होकर उपयुक्त तीनों गंगा को सागर के रूप में शक्ति एवं बल प्रदान करता है।

अर्थात् पृथ्वी पर जल वर्षा का पर्याय बनता है। इसलिए वेद में कहा गया है गाय के थन में चारों समुद्रों का वास है।गौघृत से यज्ञ करने पर यज्ञ से उत्पन्न ऊर्जा अंतरिक्ष में हाइड्रोजन और ऑक्सीजन गैस को संतुलित करती है।

पंचतत्व और पंचगव्य–मानव शरीर का निर्माण पंचतत्व से हुआ है। अर्थात् अग्नि, जल, वायु, आकाश, पृथ्वी। यह पंचतत्व असंतुलित होने से मानव शरीर के अन्दर अनेक रोग उत्पन्न हो जाते हैं।

मानव शरीर को पूर्णतः स्वस्थ रखने के लिए शरीर के अन्दर पाँचों तत्वों को संतुलित बनाये रखना अनिवार्य होता है। जिसके लिए पंचगव्य का पान किया जाता है।

गाय का ताजा दूध, दही, घी, गोबर, रस और गोमूत्र के मिश्रण को पंचगव्य कहा जाता है। जिसके पान करने से मानव शरीर के अन्दर पंचतत्व की शक्ति संतुलित होती है। सात्विक शक्तियों की अभिवृद्धि होती हैं। पंचगव्य पान से व्यक्ति स्वच्छ स्वस्थ और पवित्र जीवन जीता है। शरीर के अंदर पंचतत्व शक्ति असंतुलित होने पर अनेक रोग उत्पन्न होते हैं जिसे संतुलित करने के लिए पंचगव्य का पान किया जाता है।

गौदूग्ध के प्रभाव से–मानव शरीर के अंदर जल तत्व, गौ दही के प्रभाव से वायु तत्व, गौघृत के प्रभाव से अग्नितत्व, गौमय रस के प्रभाव से पृथ्वी तत्व, गौमूत्रके प्रभाव से आकाश तत्व संतुलित हो जाता है। तथा मानव शरीर के अंदर विद्यमान सातों धातु रस, रक्त, मांस, मज्ञा, मेघ, अस्थी, और वीर्य पुष्ट होता है। जिससे शरीर के अन्दर पंचकोष शक्ति का जागरण हो जाता है।

पंचकोष जागरण–

1. अन्नमय कोष जागरण से भूख प्यास और पाचन शक्ति बढ़ती है।

2. प्राणमय कोष के जागरण से आयु बल की वृद्धि होती है।

3. ज्ञानमय कोष के जागरण से भावनात्मक एवं काल्पनिक शक्ति का विकास होता है।

4. मनोमय कोष जागरण से भावनात्मक एवं काल्पनिक शक्ति का विकास होता है।

5. आनंदमय कोष जागरण से रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है।

पंचगव्य का महत्व- पंचगव्य का विशेष महत्व गौमाता के नाम से ही स्पष्ट होता है। गाय शब्द में दो वर्ण है। 'ग' और 'य'। 'गह' शब्द का अर्थ है - गंगा, और 'य' शब्द का अर्थ है यमुना। गौमाता के गौमूत्र में हिमालय की पुत्री माता गंगा ने वास किया है। और गोबर के रस में सूर्य भगवान की पुत्री एवं यमराज की बहन माता यमुना ने वास किया है। इन दोनों के सुप्रभाव से ही पंचगव्य का पान याजक को आत्मशुद्धि प्रदान करता है।

गौमाता का दूध, दही, घृत सेवन करने से मानव जीवन में प्रमुख रूप से तीन प्रकार की शक्तियाँ प्राप्त होती हैं।

आत्मबल- संघर्ष करने की क्षमता
ज्ञान बल- समझदारी
प्राणबल- निरोग जीवन।

●●

16. विभिन्न पंचगव्य उत्पाद और उनका महत्व

1. तक्रासव

ईश्वर ने गौ माता को मनुष्यों के कल्याण के लिए सृजित किया है। वैज्ञानिक परिपेक्ष्य में कहा जाय तो गौमाता अपने आप मे चलता फिरता अस्पताल है, जिससे प्राप्त पंचगव्य से मनुष्य की सम्पूर्ण चिकित्सा होती है। एक ओर जहाँ गौमाता का दूध अमृत है, तो उससे प्राप्त घी मस्तिष्क सम्बन्धी अनेक रोगों की कारगर औषधि है। गौमाता के दूध को दही बनाकर उसे मथकर उससे मक्खन निकालते हैं और मक्खन निकालने के बाद जो तरल द्रव्य बच जाता है उसे तक्र या मट्ठा या छाछ अथवा मही कहा जाता है। इसी तक्र से तक्रासव बनाया जाता है, जो पेट संबंधी समस्त रोगों की अचूक औषधि है।

आज ज्यादातर आबादी पेट की विभिन्न बीमारियों से ग्रस्त है। सुबह पेट ठीक से साफ न होना,बार बार शौच जाना,शौचालय में बहुत देर बैठे रहना,कब्ज,एसिडिटी,गैस,अजीर्ण, जैसी बीमारी घर-घर होने लग गयी है और यदि पेट खराब रहता है तो शरीर को अन्य गंभीर बीमारियाँ होने की संभावना बढ़ जाती है। लंबे समय तक पेट खराब रहने से आगे पाइल्स, भगर, फिस्टुला, आंत का कैंसर जैसी गंभीर बीमारी हो रही है।

पेट की समस्त व्याधियों का शमन करता है तक्रासव, यहाँ तक की जिन्हें बवासीर, फिशर, फिस्टुला जैसी गंभीर बीमारियाँ हैं उसका भी यह रामबाण इलाज है क्योंकि इन सभी बीमारियों का संबंध पेट से ही है। ये आंत के अंदर की संपूर्ण सफाई, घावों की मरम्मत सहित आंत को आंतरिक रूप से पुष्ट करता है ताकि पाचन प्रक्रिया सुचारू रूप से चल सके।

हमारी संस्था द्वारा प्रशिक्षित गौशालाओं में नियमित रूप से तक्रासव का निर्माण किया जा रहा है

इसे नियमित रूप से प्रतिदिन 20 से 30 ml समान मात्रा में पानी मे मिलाकर भोजन के तत्काल बाद दोनों समय लेवे।प्रथम सप्ताह से ही परिणाम दिखना प्रारंभ हो जाता है। तीन माह तक नियमित लेवें पर्याप्त सुधार न आने पर 15 दिन छोड़कर पुनः 3 माह तक ले सकते हैं। विस्तृत जानकारी के लिए आप पंचगव्य चिकित्सक/आयुर्वेद चिकित्सक से भी संपर्क कर सकते हैं।

अगर आप पेट संबंधी इस प्रकार की किसी भी समस्या से पीड़ित हैं तो आयुर्वेद के अनुसार आपके लिए तक्रासव सर्वश्रेष्ठ विकल्प है।

2. गौमय दंत मंजन Black Tooth Powder

क्या आपने कभी विचार किया है कि हमारे पूर्वज 100+ वर्ष जीवित रहते थे। ज्यादातर अंत तक स्वस्थ रहते थे। उनके दाँत भी अंत

तक लगभग सही रहते थे। मगर जब से ये टूथपेस्ट नाम की बीमारी आयी है आप देखेंगे डेंटिस्टों की बाढ़ आ गयी है। हर व्यक्ति दांत और मसूड़ों की बीमारी से ग्रस्त है। 60-65 की उम्र आते आते पूरे दांत झड जाते हैं।

कारण हम अपने पुराने परंपरागत दंतमंजन को छोड़कर केमिकल वाले टूथपेस्ट पर निर्भर हो गए हैं। ध्यान रहे आप जो भी टूथपेस्ट करते हैं (कंपनी जो भी हो) सभी मे फ्लोराइड, ट्राईक्लोसन और सोडियम लॉरिल सल्फेट (SLS) नाम का हानिकारक केमिकल होता है जो हमारे स्वास्थ्य के लिए अत्यंत घातक है। चाहे नमक वाला टूथपेस्ट हो या सांसों की ताजगी वाला या फिर वेद की शक्ति वाला आयुर्वेदिक टूथपेस्ट ही क्यों न हो सभी में ये केमिकल मिला होता है। इन केमिकल से न केवल दांत और मसूड़े कमजोर हो रहे हैं बल्कि हड्डियाँ भी कमजोर हो रही हैं। जोड़ों का दर्द, कमर और गर्दन की हड्डियों का दर्द आज सामान्य बीमारी बन गयी है। एसिडिटी की बीमारी के बढ़ने का कारण ये केमिकल वाला टूथपेस्ट ही है। औरतों में सामान्य प्रसव न होने की समस्या और बांझपन का बड़ा कारण यही केमिकल वाला टूथपेस्ट है। इसके नियमित उपयोग से होने वाले नुकसान की संपूर्ण जानकारी आप योग्य आयुर्वेदिक चिकित्सक से प्राप्त कर सकते हैं।

हमारे पूर्वज लाखों वर्षों से राख, नमक और सरसों तेल से दाँत साफ करते आ रहे हैं। नीम और बबूल की दातून आज भी लोकप्रिय है। मसूड़े स्वस्थ तो दाँत स्वस्थ और दोनों स्वस्थ तो शरीर भी स्वस्थ रहता है। केमिकल के दुष्परिणाम समाज के सामने आने के बाद अब ये टूथपेस्ट कंपनियाँ भी अपने पेस्ट में नमक, चारकोल, नीम, बबूल आदि होने का दावा कर रही है।

आयुर्वेद परंपरा में राख, नमक के साथ कुछ औषधियाँ मिला देने से न केवल मसूड़ों की सभी बीमारियाँ ठीक हो जाती हैं बल्कि होने की संभावना भी समाप्त हो जाती है।

हमारी संस्था के मार्गदर्शन में प्रदेश की विभिन्न गौशालाओं द्वारा निर्मित गोमय दंतमंजन में गोमय भस्म, सेंधा नमक, काला नमक, लौंग का तेल, सरसों का तेल, भीमसेनी कर्पूर, अजवाइन सत, पुदीना का सत मिला हुआ है।

इसके नियमित उपयोग से न केवल मसूड़े मजबूत होते हैं बल्कि दाँतों के दाग मिटते हैं, मसूड़ों का दर्द ठीक होता है, पायरिया, सांसों की बदबू, दाँतों से खून आना जैसी बीमारियों से स्थायी रूप से मुक्ति मिलती है।

अपनी लाखों वर्ष पुरानी परंपरा की ओर लौटे, केमिकल वाले टूथपेस्ट से अपने परिवार की रक्षा करें।

3. गोबर से बने गोमय पॉट
Anti Radiation Multipurpose Pot

इसके निर्माण में 80% गोबर एवं 20% मिट्टी का उपयोग होता है।

इस गमले को सामान्य गमले जैसा उपयोग करने के स्थान पर इसे एंटी रेडिएशन के रूप में उपयोग किया जाता है।

गोबर में एन्टी रेडिएशन प्रॉपर्टी होती है जो हानिकारक विकिरणों को अवशोषित कर लेती है। पुराने समय में सामान्यतः हमारे घरों में दीवार, आंगन इत्यादि गोबर से लिपे जाते थे। इसके प्रभाव से वातावरण में व्याप्त समस्त हानिकारक बैक्टीरिया, वायरस सहित हानिकारक रेडिएशन को अवशोषित कर उन विकिरणों से हमारी रक्षा किया करते थे। परंतु वर्तमान समय में हमारे घर मार्बल एवं टाइल्स वाले हो चुके हैं जिनमें विकिरण को अवशोषित करने की क्षमता नहीं है। ऐसे समय मे हमारा शरीर इन हानिकारक विकिरणों के प्रभाव से रोगग्रस्त हो रहा है। वर्तमान समय मे मोबाइल, टीवी, एसी, पंखा, इलेक्ट्रिक वायरिंग इत्यादि के रेडिएशन भी हमारे शरीर को गंभीर क्षति पहुचा रहे हैं।

इन परिस्थितियों में गोबर गमला का ड्राइंग रूम, लिविंग रूम, बैडरूम एवं किचन में उपयोग हमें हानिकारक रेडिएशन से बचाता है।

हम गमले में कोई सजावटी आर्टिफिशियल पौधा अथवा घर के अंदर लगाए जाने वाला पौधा अथवा पैन स्टैंड, मोबाइल स्टैंड के रूप में इसका उपयोग कर सकते हैं।

आपका कमरा विकिरण मुक्त होगा,शरीर स्वस्थ होगा। घर मे पॉजिटिव एनर्जी में वृध्दि होगी,वास्तु दोष समाप्त होगा।

4. गौमय धूपबत्ती

हिंदू धर्म में नियमित हवन, यज्ञ, अग्निहोत्र आदि कर्मकांड करने का विशेष विधान है। इसके पीछे जो विज्ञान है वो है यज्ञ से उत्पन्न धुआँ और इसमें आहुति के रूप में डाली जाने वाली विभिन्न वनौषधियाँ एवं पंचगव्य। यज्ञ करने से फार्मिक एसिड, फार्मेलडिहाइड, वाष्प (H_2O) पानी, ऑक्सीजन, प्यूरिविक एसिड, ग्लयोक्सल सहित विभिन्न कार्बनिक यौगिक बनते हैं जो न केवल वातावरण के हानिकारक वायरस, बैक्टीरिया, फंगस का शमन करते हैं अपितु संपूर्ण क्षेत्र का शुद्धिकरण भी करते हैं। आज इस पर विभिन्न शोध किए जा चुके हैं और आयुर्वेद में यज्ञोपैथी एक प्रामाणिक चिकित्सा पद्धति है जिसके माध्यम से विभिन्न बीमारियों की चिकित्सा भी की जा रही है।

हिन्दू धर्म में "धूपम दीपम समर्पयामि" कहा जाता है, अर्थात गोबर के कंडे में विभिन्न वनौषधियों से निर्मित धूप एवम गाय के घी का दीपक जलाने का ही विधान है।

परन्तु आधुनिकता के चलते इसका स्थान आजकल बांस के काड़ी की बनी अगरबत्ती एवम केमिकल वाली धूपबत्ती ने ले लिया है इसलिए इसके विषय को समझना आवश्यक है।

अगरबत्ती और केमिकल वाली धूपबत्ती के जलने से से कार्बन मोनोऑक्साइड (CO), बेंजीन, फॉर्मल्डिहाइड, टोल्यूनि, जाइलीन, सल्फर डाइऑक्साइड (SO2), और नाइट्रोजन

ऑक्साइड (NOx) जैसी हानिकारक गैस उत्पन्न होती है साथ ही छोटे कण (PM2.5) भी उत्पन्न होते हैं जो अत्यंत खतरनाक हो सकते हैं और अस्थमा व कैंसर का जोखिम बढ़ाते हैं। बांस के जलने से लेड (Lead) व अन्य धातुएँ निकलकर वायु प्रदूषण और स्वास्थ्य समस्याएँ (जैसे लिवर/न्यूरो) पैदा करती हैं। इस प्रकार इनके जलने से न सिर्फ वातावरण प्रदूषित होता है अपितु मनुष्य में दमा, एलर्जी, निमोनिया, डिप्रेशन, बांझपन हृदय रोग, लिवर के रोग, मानसिक बीमारी सहित कैंसर जैसे घातक बीमारियाँ भी हो सकती हैं। अतः इसके उपयोग से बचना चाहिए।

वहीं दूसरी ओर गोबर से बनी धूपबत्ती का निर्माण देशी गाय के शुद्ध गोबर, गाय का घी,आम की लकड़ी, जैविक चावल, जौ, तिल,चंदन पाउडर सहित नागरमोथा, जटामांसी, सुगंधबाला, सुगंध कोकिला, बावची, ब्राम्ही, खस, हाउबेर, ज्योतिषमाशी, कर्पूर काचरी, गुग्गुल, राल, कपूर इत्यादि जड़ी-बूटियां मिलाकर सात्विक पद्यति से किया जाता है।

प्रतिदिन एक धूपबत्ती घर मे जलाने से पूर्ण यज्ञ हो जाता है। इसके धुएँ के प्रभाव से घर के सभी बैक्टीरिया, वायरस, फंगस सहित समस्त नकारात्मक शक्तियों का नाश होता है घर मे वास्तु दोष समाप्त होता है ऑक्सीजन स्तर में वृद्धि होती है श्वास संबंधी बीमारियों में लाभ होता है इसका धुआँ पूरे शरीर को अंदर से सेनेटाइज कर संक्रमण मुक्त करता है। विभिन्न जड़ीबूटियों से युक्त धुआँ शरीर के अंदर जाकर (इनहेलर पद्यति) विभिन्न बीमारियों को ठीक करने में सहयोग करता है।

ज्यादा खुशबू के चक्कर मे स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ न करें। बाजार की केमिकल वाली अगरबत्ती एवम धूपबत्ती से बचें। सिर्फ गोबर से बनी धूपबत्ती ही जलाएँ, अपने और अपने परिवार को बचाएँ।

5. पंचगव्य नस्य घृत

गौमाता के दूध से दही फिर दही से बिलौना करके मक्खन और फिर मक्खन को तपा कर उत्तम विधि द्वारा बनाया गया घृत मस्तिष्क संबंधित अनेक रोगों की अचूक दवा है। मनुष्य के तंत्रिका तंत्र की नसों की सफाई की यदि क्षमता किसी औषधि में है तो वो गौघृत ही है। पंचगव्य नस्य घृत को बनाने की विशेष विधि इसे सामान्य घृत से पृथक करती है। इसके प्रतिदिन उपयोग से कफ सम्बन्धी सभी रोगों सहित मस्तिष्क संबंधी समस्त विकारों यथा आधा सीसी दर्द, माइग्रेन ,लकवा, ब्रेन हेमरेज, डिप्रेशन, पागलपन, कोमा, अनिद्रा, खर्राटे, चिड़चिड़ापन, एलर्जी, साइनोसाइटिस, बाल का झड़ना, असमय पकना, झुर्री, आंख, नाक, कान के रोग आदि पर उपयोग करने पर उत्तम परिणाम मिल रहे हैं। नस्य घृत देशी नस्ल की गोमाता जो

प्रतिदिन जंगल मे 8 से 10 km चरने जाती है और प्राकृतिक रूप से अपनी इच्छानुसार जड़ी बूटी खाकर आती है, कम से कम 10 घंटे सूर्य का प्रकाश लेती है उससे प्राप्त दूध से विशेष विधि द्वारा पुष्य नक्षत्र के दिन ही बनाया जाता है। डेयरी की गाय या बंधी हुई गाय के घी का उपयोग नस्य के लिए वर्जित है।

नस्य घृत के नियमित प्रयोग से होने वाले लाभ

1. एलर्जी समाप्त होती है।
2. लकवा (पक्षाघात) में राहत मिलती है।
3. कान की नस बंद होने से सुनाई देना बंद या कम हो जाता है, उसमें सुधार होता है।
4. आँख की नस सुख जाने से जो दृष्टि समाप्त या कम हो जाती है, उसे ठीक करता है।
5. डिप्रेशन आदि में बहुत उपयोगी है। मस्तिष्क को सदैव तरोताजा रहता है।
6. लंबे समय से जो मरीज कोमा में हैं उन पर प्रयोग करने से मरीज कोमा से जल्दी बाहर आता है।
7. याददाश्त बढ़ती है।
8. अनिद्रा से मुक्ति मिलती है और नींद अच्छी आती है ।
9. बाल झड़ना कम होता है और लम्बे प्रयोग से नये बाल भी उगने लगते हैं।
10. पुराना से पुराना सिरदर्द मिटता है, माइग्रेन (आधा सीसी दर्द) पूर्ण रूप से ठीक होता है।
11. हमेशा रहने वाली सर्दी दूर होती है। सभी प्रकार से कफ ठीक होता है।
12. सुखी खाँसी और कफजन्य खाँसी ठीक करने में उपयोगी है।
13. मिर्गी के रोगी के लिए अत्यंत लाभप्रद होता है।
14. खर्राटे उपयोग के दूसरे दिन से ही बंद हो जाते हैं।
15. चिड़चिड़ापन दूर होता है।
16. आँखो की रोशनी बढ़ता है चश्मे के नंबर भी धीरे धीरे कम होते है।
17. नासिका में सुखापन दूर होता है।
18. पढाई करने वाले छात्रों व मानसिक श्रम करने वालों के लिए अति उपयोगी।

इस प्रकार 100 से अधिक प्रकार की बीमारियों में लाभ होता है।

नस्य का प्रयोग कैसे करे

प्रतिदिन रात्रि सोते समय उपयोग करना चाहिए। नस्य घृत की काँच की बोतल को एक गर्मपानी के पात्र मे गर्दन तक डुबाकर कुछ मिनट तक रहने दे जिससे घृत अच्छे से पिघल जाएगा और गुनगुना भी हो जायेगा याद रखिए घृत को सीधे अग्नि पर कभी गर्म ना करे। अब गुनगुने घृत को बिना तकिया लगाएँ लेटकर कर दोनो नासिका मे चार-चार बूँद डालकर 15-20 मिनिट तक उसी अवस्था में लेटे रहे। गहरी सांस ना खींचे अन्यथा वह मुंह में आ जाएगा, उसे धीरे धीरे नासिका के माध्यम से मस्तिष्क में उतरने देना चाहिए। फिर सुविधानुसार करवट लेकर सो सकते हैं।

6. गौमय भस्म

आज के समय में शुद्ध पीने का पानी मिलना भी एक बड़ी समस्या हो गई है। अशुद्ध पानी पीने के कारण हम लगातार पेट की विभिन्न बीमारियों से ग्रसित हो रहे हैं क्योंकि मनुष्य को होने वाली ज्यादातर पेट संबंधी बीमारी का मुख्य कारण पीने का पानी ही है और हम सब जानते ही हैं कि पेट स्वस्थ नहीं होने पर सैकड़ों प्रकार की बीमारियों के लिए हमारा शरीर ग्राहय हो जाता है।

घरों में सरकारी नल से आने वाला पानी क्लोरीन नामक केमिकल से उपचारित होता है। यह पानी को कीटाणुरहित करने के लिए एक निर्धारित मात्रा में वाटर ट्रीटमेंट प्लांट द्वारा उपयोग किया जाता है। क्लोरीन की अधिक मात्रा शरीर के लिए अत्यंत हानिकारक है। क्लोरीन युक्त पानी के साइड इफेक्ट्स में त्वचा और आँखों में जलन, रूखापन, बालों का खराब होना, सांस संबंधी समस्याएँ (अस्थमा बढ़ना), पाचन संबंधी दिक्कतें (दस्त), और लंबे समय तक ज्यादा मात्रा में सेवन से कैंसर (मलाशय, मूत्राशय) का जोखिम बढ़ना शामिल है। इसके उप-उत्पाद (DBPs) अत्यंत हानिकारक हो सकते हैं।

वहीं दूसरी ओर बाजार में मिलने वाला बोतल बंद पानी स्टेट्स सिंबल बन गया है। लोग सादा पानी छोड़कर बोतल बंद पानी की ओर आकर्षित हो रहे हैं जबकि ये एसिडिक प्रवृत्ति का होता है। अगर आप लिटमस पेपर से उसका पीएच चेक करते हैं तो वह 6 के आसपास बताता है। आप अनुभव करेंगे कि जब भी आप इस बोतल बंद पानी का उपयोग करते हैं , आपके एसीडिटी का स्तर बढ़ जाता है। हम भारत के लोग रोज ताजा पानी पीने वाले विदेशियों के चक्कर में पड़कर चार से छह महीने पुराना बोतल बंद पानी पीकर अपने को बुद्धिजीवी साबित करने में लगे हुए हैं। पुराने सड़े हुए पानी के साथ-साथ प्लास्टिक के माइक्रो पार्टिकल शरीर में जाकर शरीर को रोगग्रस्त कर रहे हैं।

वहीं आजकल घरों में जो RO या वाटर प्यूरीफायर का उपयोग सामान्य होता जा रहा हैं, यह भी पानी से घुलनशील लवण एवं आवश्यक मिनरल्स को अलग कर देता है। ये हमारे शरीर के लिए अति आवश्यक तत्व होते हैं। आप अनुभव करते होंगे जो व्यक्ति नियमित RO का पानी पी रहा है वो स्वाभाविक रूप से एसीडिटी, गैस, अपच सहित पेट संबंधी विभिन्न बीमारियों से परेशान हो रहा है। इन सब कारणों से हमारा शरीर धीरे-धीरे एसिडीक होता जा रहा है जिससे गंभीर बिमारियों का खतरा उत्पन्न हो गया है।

ऐसी विषम परिस्थितियों में प्रश्न ये उठता है कि आखिर हमें करना क्या चाहिये। विज्ञान कहता है कि जब भी किसी वस्तु को प्रक्रिया (प्रोसेस) से गुजारा जाता है तो उसमें हानि होती है लेकिन गौ विज्ञान इसके विपरीत है। वायुमण्डल में प्राणवायु ऑक्सीजन की अधिकतम मात्रा 21% है, लेकिन यह मात्रा

भारत के किसी गाँव में 18% या 19% से ज्यादा नहीं है और शहरों में तो 11% या 12% तक ही है। भारतीय गाय के ताजा गोबर में प्राणवायु ऑक्सीजन की मात्रा 21% होती है। जब इस गोबर को सुखा कर कण्डा बनाया जाता है तो इसमें ऑक्सीजन की मात्रा बढ़कर 27% हो जाती है। इस कण्डे को जलाकर भस्म बना देने पर प्राणवायु 46·6% हो जाती है। इस प्रकार हम देखते हैं कि प्रोसेस करने से ऑक्सीजन की मात्रा घटने के स्थान पर बढ़ रही है, यही गोविज्ञान है।

विधिपूर्वक निर्मित इस गोमय भस्म को सामान्य पानी में डालने से वह न केवल पानी के pH को संतुलित करता है अपितु पानी में घुलनशील ऑक्सीजन की मात्रा को 46·6% तक बढ़ा देता है। साथ ही पानी में ऐसे पोषक तत्व जो प्रदूषण, रासायनिक प्रक्रिया अथवा वाटर प्यूरीफायर या अन्य कारणों से हमें नहीं मिल पाते उनकी मात्रा को भी पानी में उपलब्ध करा देता है।

गोमय भस्म में 46·6% ऑक्सीजन तो होता ही है, साथ ही उसमें 21 प्रकार के ऐसे ज्ञात तत्व है जो मानव शरीर के लिए अति आवश्यक होते हैं। अन्य खाद्य पदार्थों से ऐसे पोषक तत्व हमें प्राप्त नहीं हो पाते।

ऐसे व्यक्ति जिन्हें दमा या श्वास संबंधी समस्या है उनके लिए यह संजीवनी औषधि के रूप में कार्य करती है।

प्राचीन समय में मंदिरों में और साधु - संत संभवतः इन्हीं गुणों के कारण इसे प्रसाद रूप में भी देते थे।

10 लीटर पीने के पानी में 2 ग्राम गौमय भस्म डालना चाहिए। पात्र चाहे मिट्टी का घड़ा हो, ताँबा/स्टील/पीतल का बर्तन हो, अथवा RO या वाटर प्यूरीफायर सिस्टम लगा है, उसमें प्रति 10 लीटर पानी पर 2 ग्राम गोमय भस्म डालना चाहिए। डालने के 20 मिनट बाद भस्म पात्र के तलहटी में बैठ जाता है। ऊपर का जल हम दिन भर उपयोग कर सकते हैं। अंत में जो नीचे बची हुई राख है उसे पौधों में डाल देना चाहिए। इस प्रक्रिया को प्रतिदिन करना चाहिए। मात्र इतना करने से न सिर्फ पानी की सारी अशुद्धि दूर हो जाएगी बल्कि आपको मिलेगा इतने सारे पोषक तत्व–

तत्व रूप / ELEMENT -FORM

1. ऑक्सीजन O = 46.6%
2. सिलिकॉन SI = 30·12%
3. कैल्सियम Ca = 7·71 %
4. मैग्नीशियम Mg = 2·63%
5. पोटैशियम K = 2·61%
6. क्लोरीन Cl = 2·43 %
7. एल्युमिनियम Al = 2·11%
8. फॉस्फोरस P = 1·71%
9. लोहा Fe =1·46%
10. सल्फर S = 1·46%
11. सोडियम Na = 1%
12. टाइटेनियम Ti = 0·19%
13. मैंगनीज Mn = 0·13%
14. बेरियम Ba = 0·6%
15. जस्ता Zn =0·03 %
16. स्ट्रान्शियम Sr = 0·02%
17. लेड Pb =10·2 %
18. ताँबा Cu = 80 PPM

19. वेनेडियम V=72 PPM

20. ब्रोमीन Br = 50 PPM

21. जरकोनियम Zr 38 PPM

आक्साइड रूप :

1. सिलिकान डाइऑक्साइड ङ्क SIO_2 = 64·44%
2. कैल्सियम ऑक्साइड- CaO =10·79 %
3. मैग्नीशियम ऑक्साइड- MgO = 4·37 %
4. एल्युमिनियम ऑक्साइड-Al_2O_3 = 3·99%
5. फॉस्फोरस पेंटाक्साइड - P_4O_{10} = 3·93%
6. पोटैशियम ऑक्साइड - K_2O = 3·14%
7. सल्फर ऑक्साइड- SO_2 = 2·79%
8. क्लोरीन- CL= 2·43%
9. आयरन ऑक्साइड- Fe_2O_3 = 20·9%
10. सोडियम ऑक्साइड- Na_2O = 1·35%
11. टाइटेनियम ऑक्साइड - TiO_2 = 0·32%
12. मैंगनीज ऑक्साइड- MnO = 0·17%
13. बेरियम ऑक्साइड- BaO = 0·07%
14. जिंक ऑक्साइड- ZnO = 0·03%
15. स्ट्रान्शियम ऑक्साइड-SrO = 0·03%
16. लेड ऑक्साइड- PbO = 0·02%
17. वैनेडियम ऑक्साइड- V_2O_5 = 0·01 %
18. कॉपर ऑक्साइड- CuO = 0·01%
19. जिरकोनियम डाईऑक्साइड-ZrO2 = 52 PPM
20. ब्रोमीन Br = 50PPM-
21. रुबिडियम ऑक्साइड- Rb_2O = 32PPM

जब गोबर से बनायी गयी भस्म इतनी उपयोगी है तो गाय कितनी उपयोगी होगी यह आप सोच सकते हैं।

7. गौझरण अर्क

आयुर्वेद के अनुसार देशी गाय का 'गौमूत्र' एक संजीवनी है। गौमूत्र अमृत के समान है जो दीर्घ जीवन प्रदान करता है, पुनर्जीवन देता है, रोगों को दूर रखता है, रोग प्रतिकारक शक्ति एवं शरीर की मांसपेशियों को मजबूत करता है।

आयुर्वेद के अनुसार यह शरीर में तीनों दोषों का संतुलन भी बनाता है और कीटनाशक की तरह काम करता है।

गोमूत्र एक तरह का रासायनिक संगठक है। इसके मुख्य तत्व जल, यूरिया, सोडियम, पोटैशियम, क्लोराइड, अम्ल, क्षार व लवण होते हैं। देशी गाय के गौ मूत्र में यूरिया, यूरिक एसिड, खनिज, उरोकिनेज, एपीथिलम विकास तत्व, समूह प्रेरित तत्व, हॉर्मोन विकास, इरीथ्रोप्रोटिन, गोनैडोट्रोपिन, काल्लीकरीन, ट्रिप्सिन निरोधक, अलानटोइन, कर्क रोग विरोधी तत्व, नाइट्रोजन, सल्फर, अमोनिया, ताँबा, लोहा, फॉस्फेट, सोडियम, पोटैशियम मैंगनीज, कार्बोलिक अम्ल, कैल्सियम, नमक, विटामिन A से E लैक्टोस शुगर, एंजाइम्स, पानी, हिप्पुरिक अम्ल, क्रिएटिनीन, स्वर्णक्षार तत्व प्रमुख रूप से पाए जाते हैं, जो रोग प्रतिरोधक हैं।

संसाधित किया हुआ गोमूत्र अधिक प्रभावकारी; प्रतिजैविक, रोगाणु रोधक (antiseptic), ज्वरनाशी (antipyretic), कवकरोधी (antifungal) और प्रतिजीवाणु (antibacterial) बन जाता है।

यह एक जैविक टॉनिक के समान है। यह शरीर-प्रणाली में औषधि के समान काम करता है।

यह अन्य औषधियों के साथ, उनके प्रभाव को बढ़ाने के लिए भी ग्रहण किया जा सकता है।

गोमूत्र कैंसर के उपचार के लिए भी एक बहुत अच्छी औषधि है। यह शरीर में 'सेल डिवीज़न इन्हिबिटरी एक्टिविटी' को बढ़ाता है और कैंसर के मरीज़ों के लिए बहुत लाभदायक है।

आयुर्वेद ग्रंथों के अनुसार यह आयुर्वेदिक औषधि गुर्दे, श्वसन और हृदय संबंधी रोग, संक्रामक रोग (infections) और संधिशोथ (Arthritis), इत्यादि कई व्याधियों से मुक्ति दिलाता है।

ब्रिटेन के डॉ. काफोड हैमिल्टन के अनुसार - गौमूत्र के उपयोग से हृदय रोग दूर होता है तथा पेशाब खुलकर होता है कुछ दिन तक गौमूत्र सेवन से धमनियों में रक्त का दबाव स्वाभाविक होने लगता है, गौमूत्र सेवन से भूख बढ़ती है , यह पुराने चर्म रोग की उत्तम औषधि है। ब्रिटेन के ही चिकित्सक डॉक्टर सिमर्स कहते हैं कि गौमूत्र रक्त में बहने वाले दूषित कीटाणुओं का नाश करता है ।आयुर्वेद के अनुसार, गोमूत्र कुष्ठ रोग, बुखार, पेप्टिक अल्सर, यकृत रोग, किडनी विकार, अस्थमा, कुछ एलर्जी, सोरायसिस, एनीमिया और यहाँ तक कि कैंसर का इलाज कर सकता है।

वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) ने बताया है कि उसकी घटक प्रयोगशाला, केंद्रीय औषधीय एवं सुगंध पौधा संस्थान (सीआईएमएपी), लखनऊ ने गो-विज्ञान अनुसंधान केंद्र, नागपुर के सहयोग से किए गए एक अध्ययन में गोमूत्र आसवन (जिसे आमतौर पर गोझरण अर्क के रूप में जाना जाता है) का संक्रमण-रोधी और कैंसर-रोधी कारकों सहित जैवसक्रिय अणुओं की क्रियाशीलता बढ़ाने और उपलब्धता को सुगम बनाने के लिए एक नवीन उपयोग पाया है। गोमूत्र आसवन में एक कैंसर-रोधी प्राकृतिक कारक 'टैक्सोल' (पैक्लिटैक्सेल) के जैव-संवर्द्धन का गुण पाया गया है, जो यव वृक्ष (टैक्सस प्रजाति) द्वारा सूक्ष्म मात्रा में निर्मित होता है। गोमूत्र आसवन, बैक्टीरिया पर विभिन्न एंटीबायोटिक दवाओं की मारक क्षमता को बढ़ाने के अलावा, स्तन कैंसर कोशिका रेखा एमसीएफ-7 के विरुद्ध पैक्लिटैक्सेल की कोशिका विभाजन निरोधक क्षमता को भी बढ़ा सकता है। इसके अलावा, गोमूत्र आसवन से तैयार एक सफेद क्रिस्टलीय अवक्षेप ने भी गोमूत्र आसवन के समान क्रियाशीलता दिखाई। इस शोध निष्कर्ष पर अमेरिकी पेटेंट भी प्राप्त कर लिया गया है।

8. देशी गाय का घी

देसी गाय के दूध को गर्म कर पहले उसे दही बनाया जाता है। फिर इसे मथनी से मथकर मक्खन निकाला जाता है जिसे मंद अग्नि में धीरे धीरे पकाकर घी का निर्माण किया जाता है। यही घी निर्माण की प्राचीन एवं मान्य प्रक्रिया है।

आज कल बाजार में क्रीम सेपरेटर मशीन के माध्यम से दूध का क्रीम अलग कर लिया जाता है और दूध को पैकेजिंग कर टोंड मिल्क

के नाम से बेच दिया जाता है। प्राप्त क्रीम को प्रोसेस कर बटर आइल का निर्माण किया जाता है और इसी बटर आइल को पैक करके देशी घी के नाम से 600 से 1000 रु प्रति किलो के भाव से बेचा जा रहा है। अधिकांश कंपनियाँ यही बटर आइल शुद्ध घी बोलकर बेच रही है। कुछ फर्जी संस्थाएँ शुद्ध बिलौना घी बोलकर 900 से 1800 रु में यही घी बेच रही है जबकि शुद्ध घी बनाने में 32 से 35 लीटर दूध लगता है। आप सिर्फ दूध के बाजार मूल्य का विचार कर शुद्ध घी के मूल्य की कल्पना कर सकते हैं। वही दूसरी ओर घरों में गृहणियाँ मलाई एकत्र कर उसे तपाकर सीधे बटर आइल का निर्माण कर रही है। ये दोनों एक ही है और मनुष्य के लिए अत्यंत हानिकारक है। बीपी, शुगर, हार्ट अटैक, कोलेस्ट्रॉल जैसी बीमारी के जनक यही तथाकथित बटर आइल है जिसे हम सब घी के नाम से उपयोग कर रहे हैं। हमें इससे बचना चाहिए।

वैदिक बिनौला पद्धति से बने घी में मौजूद ब्यूट्रिक एसिड पाचन तंत्र को मजबूत बनाता है, एसीडिटी और कब्ज से राहत देता है, तथा आँतों के स्वास्थ्य में सुधार करता है। यह शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है और शरीर से विषाक्त पदार्थों को बाहर निकालने (detoxification) में मदद करता है। इसके नियमित सेवन से आँखों की रोशनी बढ़ती है और कमजोर आँखों के विकार दूर होते हैं। यह स्मरण शक्ति (memory) बढ़ाने में सहायक है और बच्चों के लिए भी बहुत पौष्टिक होता है।

प्राकृतिक मॉइस्चराइजर के रूप में यह त्वचा को मुलायम बनाता है, झुर्रियों को कम करता है और रूखी त्वचा की समस्याओं को दूर करता है। यह बालों के विकास में भी मदद कर सकता है। यह शरीर को अंदर से गर्म रखता है, ऊर्जा देता है और शारीरिक कमजोरी को दूर करता है, जिससे स्टैमिना बढ़ता है। माइग्रेन के दर्द में घी की दो बूँदें नाक में डालने से आराम मिलता है। यह शरीर की सूजन कम करने में भी मददगार है।

यह खराब कोलेस्ट्रॉल को कम कर अच्छे कोलेस्ट्रॉल को बढ़ाने में मदद करता है और हृदय को बल देता है।

इसके विषहरण गुण लीवर को साफ करते हैं और शरीर से अपशिष्ट पदार्थों को बाहर निकालते हैं।

हमारी संस्था द्वारा जुड़ी गौशाला सिर्फ बिनौला पद्धति से ही घी तैयार करते हैं। आप कभी भी गौशाला भ्रमण कर घी निर्माण की प्रक्रिया का अवलोकन कर सकते हैं।

9. गौघृत बाम

गाय का घी अनेक प्रकार के दर्द की प्रभावी दवा है विशेषकर जोड़ों का दर्द, घुटने का दर्द,कमर का दर्द आदि। गाय का घी जोड़ों में पहुँचकर वहाँ प्राकृतिक रूप से लुब्रिकेंट की मात्रा को बढ़ा देता है जिससे जोड़ों में घर्षण से होने वाला दर्द स्वाभाविक रूप से ठीक हो जाता

है। वहीं इसमें कुछ औषधियाँ मिला देने से यह सर्वश्रेष्ठ दर्द निवारक बाम बन जाता है।

गौघृत बाम को गाय के शुद्ध घी में भीमसेनी कपूर, अजवाइन सत, पुदीना सत, लौंग तेल, तुलसी तेल, नीलगिरी तेल सहित कुछ विशेष जड़ी बूटी मिलाकर तैयार किया जाता है। यह सिरदर्द, घुटने का दर्द,कमर दर्द, कंधे का दर्द, जोड़ों का दर्द, दाँत का दर्द, मांसपेशियों का दर्द, मोच सहित सर्दी, जुकाम, नाक बंद की अचूक औषधि है। जो भी इन समस्याओं से पीड़ित है उन्हें एक बार इसका प्रयोग अवश्य करना चाहिए चमत्कारिक परिणाम मिलता है।

10. अमृतधारा

अमृतधारा दुनिया को आयुर्वेद का अनुपम उपहार है। ये दादी नानी के जमाने वाली सबसे प्रामाणिक घरेलू औषधि है जो लगभग सभी ने बताशे में दो बूँद डालकर खाई होगी। इसका हर घर में होना बहुत लाभकारी है। दर्जनों रोगों में यह एक दवा काम आती है।

इसे हमेशा अपने पास रखना चाहिए ये न सिर्फ अपने परिवार के लिए अपितु सहकर्मी, सहपाठी, सहयात्री सहित पड़ोसियों के भी काम आती है।

इसका निर्माण भीमसेनी कपूर, अजवाइन सत एवं पुदीना सत को मिलाकर किया जाता है। प्राप्त द्रव्य को होम्योपैथी वाली शुगर बाल में डालकर इसे शुगर बाल के रूप में आकार देकर पैकिंग कर दिया जाता है।

ये औषधि पेट एवं पाचन संबंधी समस्त विकारों यथा पेट दर्द, अपच, दस्त, फूड पॉइजनिंग, हैजा, गैस की प्रभावी औषधि है। साथ ही लू लगना, भूख न लगना, कमजोरी, चक्कर आना, उल्टी लगना, जी मिचलाना, गाड़ी के सफर में उबकाई आना, मुख से दुर्गंध आना जैसी अनेक समस्याओं की एक मात्र दवा है। बड़ों को एक बार में चार दाना है छोटे बच्चों को दो दाना देना पर्याप्त है। दिन में अधिकतम चार से पाँच बार उपयोग कर सकते हैं।

हमारी संस्था द्वारा सम्पूर्ण मानकों का ध्यान रखते हुए इसका निर्माण किया जाता है।

11. गौनाइल

बाजार में मिलने वाला फिनाइल (जो असल में फिनोल या क्रीओसोट से बनता है) मुख्य रूप से फिनोल (Phenol) और क्रीओसोट ऑयल (Creosote Oil) का मिश्रण होता है, जिसमें कार्बोलिक एसिड, क्रीओसोल जैसे अन्य रोगाणुनाशक रसायन होते हैं, और यह पानी व साबुन के साथ मिलकर एक इमल्शन बनाता है, जो फर्श की सफाई और कीटाणुशोधन के काम आता है। ये उच्च एसीडिक प्रवृत्ति का रसायन होता है। जहाँ जहाँ इसका उपयोग होता है वहाँ का वातावरण भी एसीडिक प्रवृत्ति का हो जाता है। जब इसका उपयोग हम अपने घर के फर्श में फ्लोर क्लीनर के रूप में करते हैं तो इसके हानिकारक रसायन के सूक्ष्म कण कमरे के

वातावरण में फैल कर साँसों के माध्यम से शरीर में प्रवेश करते हैं और विभिन्न घातक बीमारियों को उत्पन्न करते हैं। हमारे फर्श में उठने बैठने से यही रसायन हमारे हाथों में भी लगता है। यदि घर में छोटा बच्चा है जो घुटने चलता हो तो उसके हाथों में भी ये रसायन लगता है और वो हाथों से मुँह के माध्यम से पेट में जाता है। सोचिए सफाई के नाम पर रासायनिक फिनायल उपयोग कर हम खतरनाक जीवन शैली अपना कर अनजाने में अपने पूरे परिवार को संकट में डाल रहे हैं।

भारत में हजारों वर्षों से फर्श को कीटाणु-रहित करने के लिए फ्लोर क्लीनर का उपयोग किया जाता रहा है। पहले फर्श कच्चे होते थे, मिट्टी के बने होते थे तक उसके ऊपर नियमित अंतराल में गोबर, गोमूत्र की लिपाई की जाती थी। गोबर गोमूत्र में प्राकृतिक रूप से जीवाणुरोधी, विषाणुरोधी एवं फंगसरोधी गुणधर्म होते हैं जो घर को सभी दृष्टि से disinfect करते रहे हैं। विज्ञान के विभिन्न अनुसंधानों ने भी इसे प्रमाणित कर दिया है। आज भी ग्रामीण क्षेत्रों के घरों में एवं समस्त धार्मिक कार्यक्रमों में इसका नियमित उपयोग जारी है। इसका उपयोग किसी धार्मिक कारण से नहीं अपितु स्थान को Disinfect (कीटाणु-रहित) करने के लिए ही किया जाता है।

आधुनिक जीवन शैली में हमारे घर एवं प्रतिष्ठान पक्के बन गए हैं। फ्लोर टाइल्स एवं मार्बल वाले हो गए हैं ऐसे में गोबर गोमूत्र की लिपाई व्यावहारिक नहीं है। तब इसका विकल्प गौनाइल के रूप में सामने आया है जिसका निर्माण आधुनिकता को ध्यान में रखकर हुआ है मगर परिणाम हमें गोबर गोमूत्र के समान ही प्राप्त होंगे।

पंचगव्य गौनाइल फ़्लोर क्लीनर पवित्र गोमूत्र से बना एक कीटाणुनाशक है जो पूरे क्षेत्र को Disinfect करता है। यह उच्च गुणवत्ता वाला सफाई समाधान गोमूत्र, नीम, करंज, बनतुलसा, लेमनग्रास, नीलगिरी तेल, पाइन तेल, नमक, फिटकरी और अन्य जड़ी-बूटियों के अर्क के मिश्रण से तैयार किया जाता है। ये शक्तिशाली तत्व फर्श की गंदगी, मैल और दाग-धब्बों को खत्म करने के लिए प्रभावी ढंग से काम करते हैं, जिससे फर्श साफ और चमकदार दिखता है। साथ ही फार्श को जीवाणु, विषाणु, बैक्टीरिया से मुक्त करता है।

आपको अपने घर, कार्यालय, स्कूल, अस्पताल या अन्य व्यावसायिक स्थान के लिए सफाई सेवाओं की आवश्यकता हो, तो स्वस्थ और स्वच्छ वातावरण प्राप्त करने के लिए पंचगव्य गौनाइल फ़्लोर क्लीनर आदर्श विकल्प है। इसका गैर-विषाक्त और पर्यावरण-अनुकूल फॉर्मूला यह सुनिश्चित करता है कि यह उपयोग के लिए पूर्णतः सुरक्षित है और कोई हानिकारक अवशेष नहीं छोड़ता है।

12. गौमय डिशवाश (बर्तन मांजने का पाउडर)

भारत में आदि काल से बर्तन माँजने के लिए गोबर की राख का उपयोग होता आ रहा

है। परन्तु आधुनिकता के प्रभाव एवं पश्चिम के आकर्षण के करना हम अपना मूल छोड़ कर उनका अंधानुकरण कर रहे हैं।

आज घर-घर में बर्तन की सफाई के लिए डिटर्जेंट अथवा रसायनयुक्त डिशवाश का उपयोग किया जा रहा है। आप देखते होंगे बर्तन को डिटर्जेंट से कितना भी साफ क्यों न करें जब भी पानी डालेंगे झाग आएगा अर्थात आप कितना भी धो क्यों न लें डिटर्जेंट का अंश रह ही जाता है। आप जब उस बर्तन में भोजन करते हैं तो यही डिटर्जेंट/रसायन भोजन के साथ आपके शरीर में प्रवेश कर जाता है। बाजार के रासायनिक डिश सोप में मौजूद सर्फेक्टेंट (Surfactants) त्वचा में सूखापन, जलन और एलर्जी पैदा कर सकते हैं, खासकर संवेदनशील त्वचा वालों को। कृत्रिम सुगंध (Artificial Fragrances) और रसायनों के वाष्प से सांस लेने में तकलीफ, अस्थमा या अन्य श्वसन संबंधी समस्याएँ हो सकती हैं। यदि बर्तनों पर साबुन के अवशेष रह जाते हैं और भोजन के साथ शरीर में चले जाते हैं, तो यह पेट में जलन, मतली, उल्टी या दस्त का कारण बन सकता है। कुछ रसायनों (जैसे ट्राइक्लोसन) से हॉर्मोनल संतुलन बिगड़ सकता है और थायराइड हॉर्मोन के चयापचय (metabolism) पर असर पड़ सकता है। कुछ सिंथेटिक रसायन और डिशवॉशर टैबलेट के तत्व, लंबे समय तक संपर्क में रहने पर कैंसर का कारण बन सकते हैं।

डिश सोप में फॉस्फेट जैसे रसायन होते हैं, जो पानी में मिलकर शैवाल (algae) को तेजी से बढ़ाते हैं (यूट्रोफिक्रेशन), जिससे पानी में ऑक्सीजन कम हो जाती है और जलीय जीव-जंतुओं को नुकसान होता है। रसायन पानी के माध्यम से खाद्य श्रृंखला में प्रवेश कर सकते हैं और जलीय पौधों और जानवरों को भी नुकसान पहुँचा सकते हैं। पीने का जल प्रदूषित होता है।

कहते हैं समय लौट कर वापस आता है। अब कंडे की राख का डिश वाश मजबूरी नहीं बल्कि जरूरी हो गया है। गौमय डिशवॉश के निर्माण में गाय के कंडे की राख, सोडा ऐश, डोलोमाइट पाउडर, गोमूत्र, रीठा पाउडर, नींबू के छिलके का पाउडर का उपयोग किया जाता है। संपूर्ण प्राकृतिक तत्वों से बना यह पर्यावरण-अनुकूल और रसायन-मुक्त बर्तन धोने का उत्पाद है, जो प्राकृतिक सफाई गुणों के कारण बर्तनों को चमकदार और कीटाणु रहित तो करता ही है, साथ ही यह हाथों के लिए भी कोमल होता है।

गाय के गोबर में प्राकृतिक ऑक्सीजन और जीवाणुरोधी गुण होते हैं, जो बर्तनों को अच्छी तरह साफ करते हैं। यह 100% बायोडिग्रेडेबल होता है और सभी के लिए पूर्णतः सुरक्षित होता है।

हमारी संस्था से संबद्ध विभिन्न गौशालाओं द्वारा इसका निर्माण किया जाता है।

●●

17. शाक वाटिका (Kitchen Garden) का निर्माण

एक रिपोर्ट के अनुसार, 2050 तक 6 अरब से अधिक लोग शहरी क्षेत्रों में निवास करेंगे, जो वर्तमान जनसंख्या 3·5 अरब से लगभग दोगुना है। विश्व की 55% जनसंख्या पहले से ही शहरी क्षेत्रों में रहती है, जहाँ उत्पादित 80% खाद्यान्न का उपभोग शहरी क्षेत्रों में ही किया जाएगा।

भारत में, एक रिपोर्ट बताती है कि वर्ष 2030 तक देश की 40·76% आबादी शहरी क्षेत्रों में रहेगी। ग्रामीण उत्पादन प्रणाली शहरी बाजारों में फलों और सब्जियों की बढ़ती माँग पर बोझ डालेगी। लेकिन एक उपाय है जो तेजी से बढ़ते शहरीकरण, खाद्यान की कमी और जलवायु परिवर्तन से एक साथ निपट सकता है 'शाक वाटिका'।

शाक वाटिका शहरी इलाकों में और उसके आसपास खाद्य पदार्थों की खेती और प्रसंस्करण है। शाक वाटिका में पशुपालन, जलीय कृषि, मधुमक्खी पालन और बागवानी भी शामिल है। अनिवार्य रूप से, यह शहर की सेटिंग में उगाई जाने वाली एक पारंपरिक फसल है। शहरीकरण और अधिक लोगों की अपनी खेती वहीं करने की इच्छा के साथ, शाक वाटिका एक लोकप्रिय और प्रभावी विकल्प बन गई है—पारंपरिक धारणा से हटकर कि फसल उत्पादन केवल ग्रामीण क्षेत्रों में ही किया जा सकता है। विकासशील क्षेत्र में शहरी आबादी की तेज वृद्धि खाद्य आपूर्ति प्रणालियों पर भारी माँग डाल रही है, जिससे संकट के दौरान खाद्य की कमी हो रही है। शाक वाटिका इस संकट को हल करने में मदद कर सकती है। इस कांक्रीट के जंगल में उपलब्ध न्यूनतम भूमि का उपयोग बागवानी के लिए किया जा सकेगा। इस समस्या से निजात पाने का एक उपाय छत पर शाक वाटिका निर्माण करना और उसे बढ़ावा देना है।

इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आपकी छत कितनी बड़ी या छोटी है, सही योजना और थोड़े से प्रयासों से आप अपनी छत को बगीचे में बदल सकते हैं। यह एक मिथक है कि छत पर बगीचा बनाने में बहुत खर्च आता है। अपनी छत को नया रूप देने के कई तरीके हैं, यह सब इस बात पर निर्भर करता है कि आप कितना समय और पैसा निवेश करना चाहते हैं।

अपने बगीचे से हर दिन घर पर उगाई गई ताजा सब्जियों और फलों की आपूर्ति से बेहतर क्या हो सकता है। जैविक सब्जियाँ और फल खाद्य बाजारों से खरीदे जाने वाले फलों और सब्जियों से ज्यादा पौष्टिक होते हैं और आपके स्वास्थ्य के लिए बहुत अच्छे होते हैं।

हम बाजारों और किराने की दुकानों से जो खाद्य पदार्थ खरीदते हैं, वे आमतौर पर रासायनिक खादों की मदद से उगाए जाते हैं। यह रसायन आपके भोजन प्रणाली में रिस जाता है और अंततः स्वास्थ्य के लिए खतरा बन सकता है। अपना भोजन खुद उगाने से आपको रोजाना खाने वाले भोजन की अच्छी गुणवत्ता सुनिश्चित करने में मदद मिलेगी।

अपने स्थान को श्रेष्ठ बनाएँ

छत पर शाक वाटिका बनाने से आपके घर को ठंडा रखने में मदद मिलती है, यह उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के लिए बहुत बढ़िया है। आपकी छत पर उगने वाले सभी पौधे एक सूक्ष्म वातावरण बनाएँगे और जगह का तापमान कम करेंगे। इसलिए जब आप घर में उगाए गए भोजन का आंनद लेते हैं तो आप ए.सी. के बड़े बिलों से भी बचत करते हैं।

आपके कार्बन पदचिह्न को कम करता है

अपने घर पर बगीचा बनाकर आप पर्यावरण की मदद करेंगे और अपने कार्बन पदचिह्न को कम करेंगे। आपके द्वारा उगाए जाने वाले पौधे वायु की गुणवत्ता में सुधार करेंगे।

प्रकृति से जुड़े रहें

अपना छत पर बगीचा होने से आप हमेशा प्रकृति के करीब रह सकते हैं। जैसा कि कहते हैं, ''प्रकृति मनुष्य की सबसे अच्छी दोस्त है''। यह आपको दुनिया के सभी तनाव और अराजकता से अलग रखता है। अपना खुद का छत पर बगीचा होने का मतलब है हर समय अपने शांतिपूर्ण कोने तक पहुँच पाना।

आपको स्वस्थ रहने में मदद करता है

बागवानी हमेशा एक बेहतरीन व्यायाम है, अपने बगीचे को बनाए रखने में आप जितने प्रयास करेंगे, आपको स्वस्थ और सक्रिय रहने में उतनी ही मदद मिलेगी। अपने पौधों की देखभाल करना, उन्हें पानी देना और अन्य गतिविधियाँ आपको शारीरिक रूप से सक्रिय रखेंगी और आपकी रोजमर्रा की उबाऊ व्यायाम दिनचर्या से दूर रखेंगी।

छत पर शाक वाटिका निर्माण करने के लिए, इन बातों का ध्यान रखें–छत पर पर्याप्त धूप आनी चाहिए, छत मजबूत होनी चाहिए ताकि वजन सहन कर सकें। छत पर जल निकासी का उचित प्रबंध होना चाहिए। पौधों को उनकी जरूरत के अनुसार धूप दें। पौधों को पानी दें मिट्टी को नम रखें लेकिन गीली न होने दें। पौधों को नियमित रूप से गोबर खाद दें, बढ़ते हुए पौधों को आकार देने और स्वस्थ रखने के लिए नियमित रूप से छँटाई करें। खाद व कीड़े-मकोड़ों से बचाव की तैयारी करें। वॉटरप्रूफ फ्लोर तैयार करें, ईंट से बेस बनाएँ। छत पर बागवानी करने के लिए, इन बातों का ध्यान रखें कि छत पर बागवानी करने के लिए, आपको वॉटरप्रूफिंग, उपकरण, कंटेनर, बीज आदि के लिए निवेश करना होगा। विभिन्न प्रकार के कंटेनरों का उपयोग किया जा सकता है, जैसे कि गमले, ग्रो बैग, आदि। गमलों में मृदा नारियल का गूच एवं कम्पोस्ट का मिश्रण जरूरत के अनुसार भर लेते हैं।

छत पर शाक वाटिका की मूल बातें

एक बार जब आप अपने छत पर बगीचा बनाने के बारे में अपना मन बना लेते हैं, तो आपको एक सूची बनानी होगी और शुरूवात करने में मदद के लिए निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना होगा।

स्केच/लेआउट तैयार करें—इससे पहले कि आप अपने बागवानी कौशल का उपयोग करना शुरू करें, अपने छत के बगीचे का एक मोटा स्केच बनाएँ। योजना बनाएँ कि आप अपने साग-सब्जियाँ को कैसे लगाएँगे। क्या आप उन्हें कंटेनरों, उभरी हुई क्यारियों में लगाएँगे, या अपनी छत पर खड़ी जगह का उपयोग करेंगे। आप अपने बगीचे के बीच में बैठकर प्रकृति का आनंद लेने के लिए एक बैठक व्यवस्था भी बना सकते हैं। यहाँ बताया गया है कि आप अपने स्थान का अधिकतम उपयोग कैसे कर सकते हैं।

छत पर बागवानी के लिए आवश्यक उपकरण या औजार—जब आप अपने छत पर बगीचा पर काम करना शुरू करेंगे तो ये बागवानी उपकरण आपके काम आएँगे। आप बागवानी उपकरणों की इस सूची का पालन कर सकते हैं और खुद को और अपने बटुए को बागवानी की दुकान पर जाने से बच सकते हैं। ये पाँच उपकरण आपको एक मजबूत शुरूआत करने में मदद करेंगे। जैसे- करणी, नली पाइप या पानी का डिब्बा, बेलचा, बागवानी रेक, छँटाई कैंची।

मिट्टी की तैयारी

स्वस्थ मिट्टी से स्वस्थ पौधे पैदा होते हैं। उचित पोषण और कंडीशनिंग वाली मिट्टी ही उचित पौधे उगाने की कुंजी है। मिट्टी को गोबर खाद के साथ मिलाकर अपना पॉटिंग मिश्रण तैयार करें। आपके टेरेस गार्डन के लिए आदर्श मिट्टी न तो बहुत सघन होनी चाहिए और न ही बहुत हल्की। मिट्टी की बनावट संतुलित होनी चाहिए, मिट्टी में नमी बनाए रखने वाली भुरभुरी मिट्टी पौधों के लिए अच्छी होती है।

अपनी मिट्टी को समय-समय पर गोबर खाद दें। बारिश के साथ आपके छत के बगीचे की मिट्टी से महत्वपूर्ण पोषक तत्व बह सकते हैं।

इसलिए, अच्छी उपज के लिए उन्हें खाद देना आवश्यक है। रासायनिक खादों का उपयोग करने से बचें क्योंकि यह न केवल आपके सिस्टम में रिस जाएगा बल्कि यह आपकी मिट्टी में अच्छे बैक्टीरिया और सूक्ष्म जीवों को भी नुकसान पहुँचाएगा। अपनी मिट्टी को स्वस्थ रखने के लिए, आप इसे समय-समय पर खाद देते रह सकते हैं। इससे आपकी हरी सब्जियाँ स्वस्थ रहेंगी।

छत पर गार्डन के लिए भारी गमलों का प्रयोग न करें— वैसे तो इस गार्डनिंग के लिए बरसात का मौसम सबसे अच्छा माना जाता है, लेकिन किसी विशेषज्ञ की सलाह से इसमें मौसम के अनुरूप पौधे लगाएँ इसके अलावा छत पर गार्डन के लिए मिट्टी के भारी गमलों से बचें इससे खर्च कम होगा और आपकी छत पर भार ज्यादा नहीं पड़ेगा।

हैंगिंग गमले

छत पर बगीचे के लिए हैगिंग गमलों का इस्तेमाल करना अच्छा रहता है इससे न सिर्फ छत ज्यादा हरा-भरा लगता है, बल्कि लटकते हुए फूलों वाले गमले गार्डन को सुंदर बना देते हैं।

छत की तैयारी कैसे करे

छत को पर्याप्त वाटर फ्रूफिंग करें ताकि किसी प्रकार का रिसाव नीचे न हो ।

गमले, ग्रो बैग, प्लास्टिक के पुराने डिब्बे आदि का उपयोग कर सकते हैं

प्लास्टिक शीट बिछाकर सीधे छत में मिट्टी की क्यारी भी बना सकते हैं।

हम अपनी सुविधानुसार योजना कर सकते हैं।

मिट्टी की तैयारी–

25% अच्छी भुरभुरी/काली मिट्टी

50% गोबर खाद

25% नारियल का गुच

इस प्रकार का मिश्रण तैयार कर प्रत्येक गमले में भर देवे

पौधों/बीजों का चयन–

सामान्यतः शाक वाटिका में निम्न प्रकार से पौधे लगाना चाहिए–

1. मौसम के अनुकूल सब्जियाँ
2. औषधीय पौधे
3. फलों के पौधे
4. फूलों के पौधे

1. मौसम के अनुसार प्रत्येक मौसम में अलग अलग प्रकार की सब्जियाँ लगानी चाहिए तथापि हम यहाँ पाँच प्रकार की सब्जियों की जानकारी प्रदान कर रहे हैं इसके अनुसार ही अपनी कार्ययोजना बनानी चाहिए–

1. मिट्टी के नीचे उगने वाली सब्जियाँ (कंद मूल सब्जियाँ)
2. मिट्टी के ऊपर उगने वाली तना युक्त सब्जियाँ
3. लता (नार)वाली सब्जियाँ
4. पत्तेदार सब्जियाँ (भाजी प्रकार)
5. अन्य सब्जियाँ

1. मिट्टी के नीचे उगने वाली सब्जियाँ (कंद मूल सब्जियाँ)–

1. गाजर, 2. मूली, 3. आलू, 4. प्याज, 5. लहसुन, 6. जिमी कांदा, 7. शकर कंद, 9. अदरक, 10. हल्दी आदि आदि।

2 मिट्टी के ऊपर उगने वाली तना युक्त सब्जियां–

1. भिंडी, 2. भाटा , 3. टमाटर, 4. हरी मिर्च, 5. मूनगा, 6. जरी , 7. मीठा नीम।

3. लता (नार) वाली सब्जियाँ–

1. लौकी, 2. कद्दू (कुम्हड़ा), 3. करेला, 4. कुंदरु, 5. खेकसी, 6. बरबट्टी, 7. सेमी, 8. मटर, 9. रखिया, 10. तोरई, 11. खीरा, 12. ककड़ी आदि आदि।

4. पत्तेदार सब्जियां (भाजी प्रकार)–

1. पालक, 2. चेंज, 3. मेथी, 4. धनिया, 5. करमत्ता, 6. चौलाई, 7. पुदीना आदि आदि।

5. अन्य प्रकार की सब्जियाँ–

1. फूल गोभी, 2. पत्ता गोभी, 3.गांठ गोभी, 4. जंगल में उगने वाली भिन्न-भिन्न प्रकार की देशी सब्जियाँ आदि।

2. औषधीय पौधे– हमारे स्वास्थ्य के लिए कुछ आवश्यक औषधीय पौधे सदैव घर पर रहना चाहिए। समय-समय पर इनकी आवश्यकता पड़ती रहती है।

1. तुलसी, 2. गिलोय, 3. पत्थरचट्टा, 4. एलोवेरा (गवारपाठा), 5. अदरक, 6. पुदीना, 7. मीठा नीम, 8. हल्दी, 9. कालीमिर्च।

3. फलदार पौधे– आजकल भिन्न-भिन्न प्रकार के फलों के ग्राफ्टेड पौधे मिलते हैं जो कम जगह एवं कम ऊँचाई में अच्छा उत्पादन देते हैं। ऐसे फलों का हम अपने छत में अच्छा उत्पादन कर सकते हैं। कुछ उदाहरण हैं जैसे कि–1. अमरूद (जाम), 2. पपीता, 3. केला, 4. संतरा, 5. तरबूज, 6. खरबूज, 7. चीकू, 8. अनार, 9. अंगूर।

फूलों के पौधे–फूलों के पौधे भी अत्यंत आवश्यक है। यह पौधों के परागण के लिए जरुरी होते हैं। हम छत पर गुलाब, गेंदा, चंपा, चमेली, मोगरा, जस्मीन, रजनीगंधा, केवड़ा, रात रानी, हरसिंगार सहित विभिन्न प्रकार के खुशबू वाले पौधे लगा सकते हैं। जब इनमें फूल खिलते हैं तब ये भौरों एवम कीट पतंगों को आकर्षित करते हैं और उसके माध्यम से परागण होता है जिससे फसलों का उत्पादन अच्छा होता है। साथ ही फूलों की खुशबू से मन प्रसन्न एवं शांत रहता है। इसलिए इस प्रकार की शाख वाटिका में फूलों के पौधों का भी पर्याप्त स्थान होना चाहिए।

समय-समय पर पौधों को पोषण देने की आवश्यकता होती है। इस हेतु गोबर खाद के साथ-साथ जीवामृत श्रेष्ठ विकल्प है।

हम दो प्रकार से जीवामृत का निर्माण कर सकते हैं

जीवामृत प्रकार 1

घर में निकलने वाले फल/सब्जी के छिलके, रात को बचा हुआ अनाज सभी को सुबह मिक्सी में पीस ले फिर प्लास्टिक की किसी एक बोतल में उसे भरकर 48 घंटे तक सड़ने दे। उसके पश्चात उसमें दुगना पानी मिला ले प्रतिदिन प्रत्येक पौधों को औसतन 250ml से 300ml जड़ में डालें। पौधों को जल के साथ-साथ पौष्टिक उर्वरक भी मिलता रहेगा।

जीवामृत प्रकार 2

100 ग्राम दही में एक पका हुआ केले को मसल कर मिला दें। उसमें 50 ग्राम गुड़ को भी कूट कर मिला दे। अब इसे मिट्टी या स्टील के पात्र में 72 घंटे सड़ने दें। उसके बाद उसमें चार गुना ताजा पानी मिला लें और गमले में पौधों की जड़ के पास प्रत्येक सप्ताह 200 से 250ml घोल डालें। इससे पौधों को पर्याप्त पोषण मिलेगा।

कीट नियंत्रक का निर्माण–पौधों को कीटों से बचाना भी आवश्यक होता है। बाजार में मिलने वाले घातक कीटनाशकों से बचना चाहिए। आइए हम देसी विधि से जैविक कीट नियंत्रक तैयार करें।

इसे भी हम आसानी से घर में बना सकते हैं। 1 लीटर मठा जिसे हम मही भी कहते हैं अथवा मठा ना हो तो 1 लीटर गोमूत्र, इसमें 10 ग्राम हरी मिर्च को पीसकर डालें फिर लहसुन की एक काली को भी पीसकर डालें। ताजा नीम पत्ता 50 ग्राम को अच्छे से पीसकर सभी सामग्री को अच्छे से स्टील अथवा मिट्टी के बर्तन में 72 घंटे तक सड़ने दे। पश्चात बने हुए द्रव्य को छान कर उसमें 10 गुना पानी मिला कर इसे बोतल में भरकर रख लेवे। प्रत्येक सप्ताह पौधे में इसका छिड़काव करें। किसी भी प्रकार का कीड़ा इत्यादि नहीं लगेगा। यह कीट नियंत्रक हमारे लिए सुरक्षित है और पौधों के लिए पौष्टिक भी ।

●●

18. गाय और स्वास्थ्य-औषधीय उपयोग

भारतीय परंपरा में गाय को केवल पोषण और कृषि का आधार नहीं माना गया, बल्कि स्वास्थ्य और औषधीय उपचार का भी प्रमुख स्रोत माना गया है। आयुर्वेद में गो-उत्पादों का वर्णन विस्तृत रूप से मिलता है। दूध, दही, घी, गोबर और गोमूत्र–इन पाँच तत्वों को मिलाकर बनने वाले पंचगव्य को 'संपूर्ण स्वास्थ्यवर्धक औषधि' कहा गया है। ऋग्वेद और अथर्ववेद से लेकर चरक संहिता और सुश्रुत संहिता तक, सभी ग्रंथों में गो-आधारित औषधियों का उल्लेख मिलता है।

आधुनिक वैज्ञानिक शोध भी इस परंपरा की पुष्टि करते हैं। उदाहरण के लिए, A2 प्रकार के भारतीय नस्ल की गायों के दूध में **बीटा-केसिन प्रोटीन** पाया जाता है, जो पाचन के लिए लाभकारी और हृदय रोगों से सुरक्षा देने वाला माना जाता है। गोमूत्र में रोग-प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने वाले एंजाइम और तत्व पाए जाते हैं। गोबर में प्राकृतिक एंटी-बैक्टीरियल गुण होते हैं, जो पर्यावरण शुद्धि और औषधि निर्माण में उपयोगी हैं। इस प्रकार गाय भारतीय चिकित्सा प्रणाली और आधुनिक स्वास्थ्य विज्ञान दोनों में समान रूप से महत्वपूर्ण है।

औषधीय उपयोग–गाय से प्राप्त विभिन्न उत्पादों के औषधीय लाभ इस प्रकार समझे जा सकते हैं।

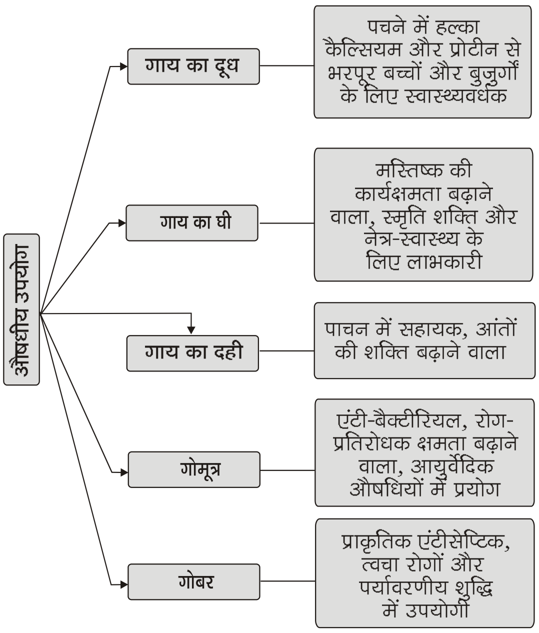

आयुर्वेद में पंचगव्य चिकित्सा का एक पूरा उपचार-तंत्र है, जिसमें इन पाँचों का उपयोग कैंसर, मधुमेह, उच्च रक्तचाप और त्वचा रोगों जैसी बीमारियों के उपचार में किया जाता है।

गाय और स्वास्थ्य के संबंध में आज केवल आयुर्वेदिक ग्रंथ ही प्रमाण नहीं देते, बल्कि आधुनिक आँकड़े और वैज्ञानिक अध्ययन भी इसकी पुष्टि कर रहे हैं। वर्ष 2024 में भारत में गो-आधारित औषधियों और उत्पादों का बाजार मूल्य लगभग ₹ 3,200 करोड़ आँका

गया है और इसमें हर साल औसतन 17% की वृद्धि दर्ज की जा रही है। यह स्पष्ट करता है कि आयुर्वेदिक और प्राकृतिक चिकित्सा पद्धतियों की ओर समाज का रुझान लगातार बढ़ रहा है और लोग स्वास्थ्य के लिए पारंपरिक, सुरक्षित विकल्प तलाश रहे हैं।

इसी प्रकार, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् (ICAR) द्वारा वर्ष 2022 में किए गए एक अध्ययन में यह पाया गया कि गोमूत्र आधारित औषधियों के परीक्षणों में 62% नमूनों में कैंसर-रोधी प्रभाव और लगभग 71% प्रतिभागियों में रोग-प्रतिरोधक क्षमता में उल्लेखनीय सुधार देखा गया। यह निष्कर्ष दर्शाता है कि गोमूत्र केवल आस्था का विषय नहीं है, बल्कि आधुनिक प्रयोगशालाओं में भी इसके औषधीय गुण प्रमाणित हो रहे हैं।

ग्रामीण स्तर पर भी गो-आधारित औषधियों की स्वीकार्यता बनी हुई है। एक सर्वेक्षण के अनुसार, भारत के प्रत्येक 100 ग्रामीण परिवारों में से लगभग 38 परिवार नियमित रूप से पंचगव्य औषधियों का उपयोग करते हैं, जबकि शेष 62 परिवार केवल रासायनिक दवाओं पर निर्भर रहते हैं। इसका अर्थ यह है कि आधुनिक चिकित्सा प्रणाली के विस्तार के बावजूद ग्रामीण समाज में गो-आधारित उपचारों पर विश्वास कायम है और इन्हें स्वास्थ्य का एक सुरक्षित विकल्प माना जा रहा है।

इन आँकड़ों से यह स्पष्ट है कि गाय और स्वास्थ्य का संबंध केवल ऐतिहासिक और धार्मिक संदर्भ तक सीमित नहीं है, बल्कि वर्तमान और भविष्य दोनों के लिए महत्वपूर्ण है। यदि इन पर और वैज्ञानिक शोध किए जाएँ और औद्योगिक स्तर पर इनका प्रसार हो, तो गो-आधारित औषधियाँ वैश्विक स्वास्थ्य प्रणाली में एक महत्वपूर्ण योगदान दे सकती हैं।

सांख्यिकीय विश्लेषण और तुलनात्मक चित्रण

गो-आधारित कृषि और स्वास्थ्य संबंधी दावों को केवल परंपरागत अनुभवों से नहीं, बल्कि ठोस आँकड़ों और तुलनात्मक अध्ययन से भी समझा जा सकता है। जब हम लागत, मिट्टी की उर्वरता, फसल की गुणवत्ता, कार्बन उत्सर्जन, जल-खपत और रोजगार सृजन जैसे पहलुओं का सांख्यिकीय विश्लेषण करते हैं, तो यह स्पष्ट हो जाता है कि गो-आधारित पद्धति आधुनिक रासायनिक कृषि और औषधीय प्रणालियों की तुलना में अधिक टिकाऊ और लाभकारी है। ग्राफ और तालिकाएँ इस तथ्य को और अधिक स्पष्ट करती हैं, क्योंकि वे आँकड़ों को दृष्टिगत (Visual) रूप में प्रस्तुत कर पाठक के लिए

समझने में सरल और प्रभावशाली बना देती हैं। इसी खण्ड में प्रस्तुत चित्रण विद्यार्थियों और शोधार्थियों को न केवल विषय का गहन अध्ययन करने में मदद करेगा, बल्कि उन्हें गो-आधारित जीवन पद्धति की वैज्ञानिकता और व्यावहारिकता को भी अनुभव करने का अवसर देगा।

गो-आधारित औषधियों का बाजार विस्तार (2015-2025 अनुमानित ₹ करोड़ में)

यह आँकड़ा स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि पिछले एक दशक में गो-आधारित औषधियों और उत्पादों का बाजार लगातार तेजी से बढ़ रहा है। 2015 में इसका मूल्य केवल 850 करोड़ था, जो 2023 तक बढ़कर 29,00 करोड़ हो गया है। 2025 तक इसके 3,800 करोड़ तक पहुँचने का अनुमान है। यानी 10 वर्षों में लगभग चार गुना वृद्धि यह वृद्धि आयुर्वेद और प्राकृतिक चिकित्सा की बढ़ती लोकप्रियता और गो-आधारित उत्पादों पर बढ़ते विश्वास को दर्शाती है।

वर्ष	बाजार मूल्य (₹ करोड़)
2015	850
2017	1,200
2019	1,750
2021	2,450
2023	2,900
2025	3,800 (अनुमानित)

बाजार मूल्य (₹ करोड़)

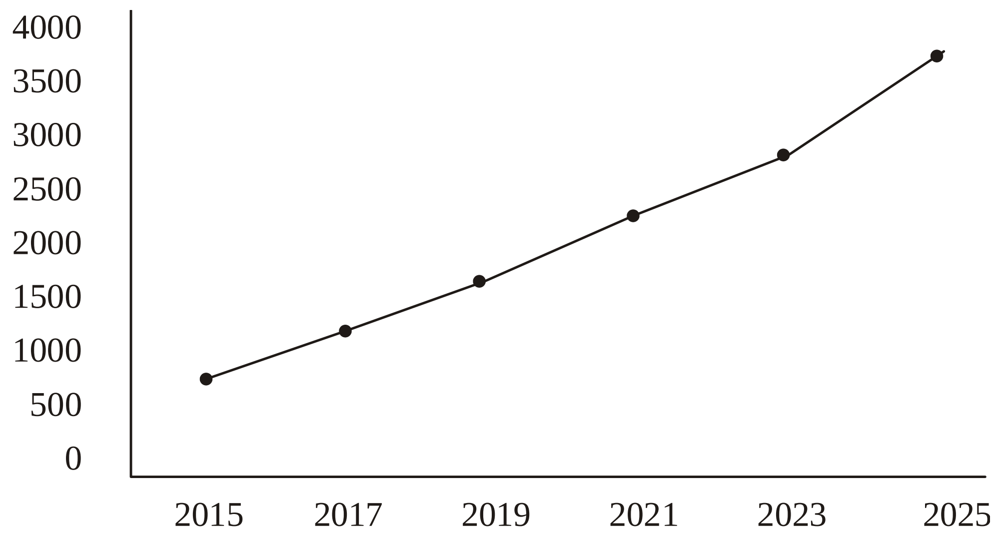

रोग-प्रतिरोधक क्षमता सुधार
(पंचगव्य औषधि उपयोगकर्ता बनाम गैर-उपयोगकर्ता, %)

यह आँकड़ा दर्शाता है कि पंचगव्य आधारित औषधियों का नियमित उपयोग करने वाले लोगों में रोग-प्रतिरोधक क्षमता औसतन 74% तक पाई गई, जबकि गैर-उपयोगकर्ताओं में यह केवल 49% रही। यह तुलना स्पष्ट करती है कि पंचगव्य न केवल रोगों से लड़ने की क्षमता बढ़ाता है, बल्कि शरीर को लंबे समय तक स्वस्थ्य बनाए रखने में भी सहायक है। यह वैज्ञानिक और व्यावहारिक दोनों दृष्टियों से इसकी उपयोगिता को प्रमाणित करता है।

श्रेणी	रोग-प्रतिरोधक क्षमता (%)
पंचगव्य औषधि उपयोगकर्ता	74%
गैर-उपयोगकर्ता	49%

रोग-प्रतिरोधक क्षमता (%)

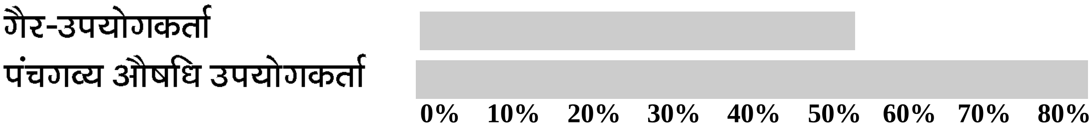

भारतीय नस्ल की गाय के दूध में पाया जाने वाला A2 प्रोटीन हृदय और पाचन स्वास्थ्य के लिए विशेष रूप से लाभकारी है।

गाय भारतीय समाज में केवल आस्था का विषय नहीं, बल्कि स्वास्थ्य और चिकित्सा का आधार भी है। दूध से लेकर गोमूत्र और पंचगव्य तक, हर उत्पाद मानव जीवन के लिए उपयोगी सिद्ध हुआ है। सांख्यिकीय आँकड़े यह प्रमाणित करते हैं कि आयुर्वेदिक और आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण दोनों ही गो-आधारित चिकित्सा की उपयोगिता को मान्यता दे रहे हैं। भविष्य में यदि इन पर और शोध किया जाए और औद्योगिक स्तर पर इनका विकास हो, तो यह न केवल भारत, बल्कि वैश्विक स्वास्थ्य व्यवस्था के लिए भी वरदान साबित हो सकता है।

●●

19. पंचगव्य मनुष्य चिकित्सा

आयुर्वेद अत्यंत प्राचीन शास्त्र है। यह अर्थववेद में विस्तार से वर्णित है। आयुर्वेद के उत्थान के लिए गौ रक्षण अति आवश्यक है इससे पीड़ित रोगियों के रोग का निवारण होगा ताकि जनता स्वास्थ्य लाभ करेगी।

गाय के दूध, दही, घी, गोबर और गौमूत्र का एक निश्चित अनुपात में मिश्रण पंचगव्य कहलाता है। प्रयोगशाला में किये गये परीक्षणों के अनुसार देशी गाय के गोमूत्र में 24 रसायन और गोबर में 16 खनिज तत्व होते हैं। इन तत्वों के कारण गौ-मूत्र व गोबर से विविध प्रकार की औषधियाँ बनती है और सौ से भी अधिक रोगों पर उनका अनुकूल प्रभाव पड़ा है। पंचगव्य में विशेष कर गोमूत्र में रोग निरोधक, रोग प्रतिरोधक एवं रोगोपचार की अद्‌भुत क्षमता है।

आयुर्वेद में पंचगव्य के विषद गुणों का वर्णन है। उसमें कहा गया है कि पंचगव्य परम पवित्र रसायन है, पथ्य है, हृदय को आनंद देने वाला, बल, बुद्धि प्रदान करने वाला है। रक्त के समस्त विकारों को दूर करने वाला, कफ, वात तथा पित्त जन्य तीनों दोषों, हृदय रोगों व तीक्षण विष के प्रभाव को दूर करने वाला है। पंचगव्य आयुर्वेद चिकित्सा के माध्यम से अनुभवी आयुर्वेद विशेषज्ञ, वैद्यों व चिकित्सकों के निर्देशन में हजारों रोगियों की चिकित्सा की जा रही है। गुर्दा, मधुमेह, रक्तचाप, उदररोग, एसिडीटी, मेदवृद्धि, रक्त विकास, सफेद दाग, श्वास, दमा, अस्थमा, बवासीर, दंतरोग, स्त्रीरोग, एक्जिमा, दाद, खाज, खुजली, नाक व कान की तकलीफ आदि बीमारियों का इलाज किया जा रहा है।

गायत्री मंत्र द्वारा गौमूत्र को, गौदुग्ध को, दधिकाणी मंत्र द्वारा गौदधि को, शुक्रमसि तथा ज्योतिरसी मंत्रों द्वारा गौघृत को तथा देवरस त्वा मंत्र द्वारा कुशोदक को अभिमंत्रित करके पंचगव्य में मिलाना चाहिए। इससे सात्विकता व प्रभावशीलता बढ़ जाती है। दो बातें विशेष ध्यान देने योग्य निम्नवत्‌ है–

1. उपरोक्त देशी नस्ल की स्वस्थ गाय के होने चाहिए।

2. गोबर को ज्यों का त्यों मिश्रण में नहीं डालना चाहिए, बल्कि इसका रस प्रयोग में लाना चाहिए। (ताजे गोबर को सूती कपड़े में डालकर उसे निचोड़ने से गोबर का रस प्राप्त होता है।)

अनेक रोगों के काम आता है गोबर

गोबर चर्म रोगों में विशेष उपयोगी है। यह शरीर की दुर्गन्ध को दूर करता है। शरीर की कांति बढ़ाता है। सुश्रुत चिकित्सा अध्याय 5/18 में अपतानक रोग (धनुषवात टिटनेस) के रोग का उपचार गोबर से बताया है। सुश्रुत

चिकित्सा अध्याय 16/22 में श्लैष्मिक विधि की चिकित्सा गोबर से करने का उल्लेख है। इसी ग्रंथ में मूषिक विषहर योग भी दिया है। उदरशूल, रक्तपित्त, हिक्का रोग, कृमि रोग आदि में भी चिकित्सकों ने अनुभूत योग बनाकर रोगियों को लाभान्वित किया है।

(1) गौ दुग्ध से उपचार

(2) गौ दही से उपचार

(3) गौ तक्र (छाछ) से उपचार

(4) गौ घृत से उपचार

(5) गौमूत्र से उपचार

(6) गोबर से उपचार।

गोबर का चिकित्सा में उपयोग

(1) गाय के गोबर को सारे शरीर पर मलकर धूप में बैठने से खाज, खुजली आदि त्वचा रोग मिट जाते हैं।

(2) गोबर रोगों के कीटाणु और गंधों को दूर करता है।

(3) गोबर को उबालकर लेप करने से गठिया दूर हो जाता है।

(4) मृत गर्भ को बाहर निकालने के लिए गोबर का रस 7 तोला गाय के दूध में पिलाना चाहिए।

(5) गुदा भ्रंश के लिए गोबर गरम करके सेक करना चाहिए।

(6) पसीना बंद करने के लिए सुखाये हुए गोबर और नमक रखने के पुराने मिट्टी के बर्तन इन दोनों के चूर्ण को शरीर पर लेप करना चाहिए।

(7) शीतला के फूट निकले छालों पर गाय के गोबर को सुखाकर, जलाकर राख को कपड़े से छानकर उससे भर दें।

(8) पेट में छोटे-छोट कृमि हुए तो गोबर की सफेद राख, दो तोला लेकर 10 तोला पानी में मिलाकर पानी कपड़े से छान लें। तीन दिन सवेरे-शाम पिलायें।

(9) गोबर को जलाकर जब उसका धुआँ निकल जाये तब उसे पानी से बुझा लें, पीछे चूर्ण करके कपड़े से छानकर मंजन बनाये। प्रतिदिन इस मंजन से दाँत साफ करने पर दाँत की दुर्गन्ध, जंतु और मसूड़े के दर्द ठीक हो जाते हैं।

(10) पश्चिम के चिकित्सक गाय के सूखे गोबर के पाउडर से धुम्रपान करवा कर दमें का रोग दूर करते हैं।

(11) शुद्ध पानी में गोबर घोलकर छानकर पीने से हैजा से बचाव होता है।

(12) आग से जल जाने पर ताजे गोबर का बार-बार लेप करते रहे और ठण्डे पानी से धोते रहे।

(13) सर्प दंश, विषधर सांप, बिच्छु या अन्य जीव के काटने पर रोगों को गोबर पिलाने तथा शरीर पर लेप करने से विष नष्ट हो जाता है।

(14) गाय के ताजे गोबर की गन्ध से बुखार व मलेरिया के कीटाणु नष्ट हो जाते हैं।

गोबर से चिकित्सा

(1) सब प्रकार के त्वचा रोग में—गाय के गोबर का लेप करके थोड़ी देर धूप में बैठें एक महिना करें लाभ होगा।

(2) साँप, पागल कुत्ता काटने पर जहर खाने पर—200 ग्राम गोबर + 400 ग्राम पानी घोलकर 20 ग्राम हल्दी मिलाकर तुरन्त पिलाना, गोबर जहर को सोखकर उल्टी के माध्यम से बाहर निकाल देगा-लाभ होगा।

(3) जलने पर—आग से, बिजली से, साइलेंसर से जलने पर गोबर का घोल बनाकर उसमें मोटा कपड़ा भिगोकर ऊपर नीचे ओढ़ा दें, थोड़ा-थोड़ा गोबर रस डालते जायें गोबर रस छानकर पिलाते जायें बहुत शीघ्र लाभ होगा।

(4) कमर दर्द, स्लिप डिस्क में—4–5 क्रमांक के छल्ले खिसकने पर गोबर में गोमूत्र मिलाकर लेपकर घंटे भर लेट जायें बाद में धो लें। कम-से-कम 15 दिन करें अवश्य लाभ होगा।

(5) गर्भवती बहनें सुखमय प्रसव—प्रसव होने से सात दिन पहले से 50 ग्राम गोबर का रस (देशी स्वस्थ गाय) 5 तुलसी के पत्ते पीसकर मिलाकर पीने से बिना शल्य क्रिया के आराम से प्रसव होगा। अनुभूत प्रयोग है। देशी गाय के गोबर से शरीर लचीला हो जाता है।

नोट—(1) गोबर उसी गाय का उत्तम है जो निरोगी हो तथा जिसका आहार उत्तम हो। जैसा कि शास्त्रों में कहा गया है—

''अग्रमग्रं चरन्तीनामोषधीनां वने वने।
तासा वृSाभपत्नी नांम पवित्रं काय शोधनम्
तन्मे रोगांश्चगे शोकान्शच नुद गोमय।।''

(2) आयुर्वेद चिकित्सक की सलाह लेकर उपरोक्त उपचार करें।

गौ मूत्र द्वारा चिकित्सा

भारतीय गाय में अनेक प्रकार को दुर्लभ औषधीय गुण पाये जाते। डाक्टर **कीथ वूडफोर्ड** की स्पष्ट मान्यता है कि भारतीय नस्ल की गाय का दूध ही लाभकारी होता है। क्योंकि यह A-1 दूध में B CM 7 विषैला पदार्थ होता है जो बहुत ही हानिकारक होता है। भारतीय गाय का दूध जीवन रक्षक है।

(1) प्रतिदिन गौ मूत्रासव 10 से 15 मिली पानी के साथ सेवन करने से कफ व खाँसी दूर होती है।

(2) गो मूत्र में लोहे की भस्म (चूर्ण) गलाकर दूध के साथ सेवन करने से पीलिया रोग दूर हो जाता है।

(3) गो मूत्र से बने मेदोहर अर्क में थोड़ी शक्कर मिलाकर दिन में दो बार पीने से सुस्ती दूर होती है।

(4) कब्जी दूर करने के लिए गौमूत्र को कपड़े से छानकर उसके साथ त्रिफला चूर्ण लेने चाहिए।

(5) पेशाब के रुक जाने पर वर्षा के जल में 2 तोला गो मूत्र मिलाकर पिलाये।

(6) मलेरिया में गौमूत्र में सेंधा नमक मिलाकर पिलायें।

(7) सफेद दाग होने पर बावची के बीज को गौमूत्र में घिसकर शाम को दाग पर लगाए। सुबह गौ मूत्र से धोएँ।

(8) चमड़ी के रोग में काली जीरी को गौमूत्र में पीसकर शरीर पर लगाये।

(9) गौमूत्र से बाल धोने से बालों में निखार आता है।

(10) गर्भवती को प्रतिदिन वगैर मुँह धोये खाली पेट 30 ग्राम गौमूत्र को आठ तह वाले सूती कपड़े में छानकर पिलायें स्वस्थ संतान पैदा होगी।

(11) कान बहने पर गरम गौ मूत्र से कान धोये।

(12) केन्सर व एड्स में गौ मूत्र संजीवनी की तरह काम करता है।

(13) गौ मूत्र के साथ पुराना गुड़ और हल्दी चूर्ण पौने से 'हाथी-पाव', दाद और कोढ़ आदि नष्ट हो जाते हैं।

(14) गौ मूत्र के साथ एरंड तेल का पान एक माह तक करने से संधि पीड़ा और वातव्याधि नष्ट होती है।

(15) बच्चे को सूखा रोग हो जाये तो गौ मूत्र में केसर मिलाकर कम-से-कम एक महिने तक पिलायें। यह औषधि दिन में दो बार आयु अनुसार दी जाये।

(16) गौ मुत्र में पुरुषों तथा गर्भवती स्त्रियों के गुप्त रोगों का निवारण करने की शक्ति है।

(17) मिर्गी, हिस्टीरिया तथा पागलपन में गौ मूत्र को अधिक उपयोगी माना गया है।

(18) जिगर व प्लीहा के बढ़ने से उदर रोग हो गया हो तो पुनर्नवा के काढ़े में आधा गो मूत्र मिलाकर पिलाये।

गोमूत्र से अन्य रोगों की चिकित्सा

(1) कैंसर (कर्क रोग) में– 20 ग्राम गोमूत्र अर्क 40 ग्राम पानी मिलाकर 20–25 तुलसी की पत्तियाँ पीसकर सुबह-शाम खाली पेट लगातार 3 महीने लेने से कैंसर (कर्क रोग) ठीक होता है। भोजन में देशी गाय का दूध लें।

(2) मधुमेह रोग में– 20 ग्राम गोमूत्र अर्क में 40 ग्राम पानी मिलाकर 6–7 बिल्व पत्र के पत्ते पीसकर मिलाकर सुबह शाम खाली पेट लें। भोजन के बाद एक ग्राम तुलसी का चूर्ण पानी के साथ लें।

(3) दमा, अस्थमा, स्वांस रोग में– 20 ग्राम गोमूत्र अर्क, 40 ग्राम पानी, 10 ग्राम अडूसे का रस के साथ सुबह शाम लें। तेल का प्रयोग कम करें लाभ होगा।

(4) हृदय रोग में– 20 ग्राम गोमूत्र अर्क, 40 ग्राम पानी आधा चम्मच अर्जुन की छाल के चूर्ण के साथ लें।

(5) गुर्दे की बीमारी में– 20 ग्राम गोमूत्र अर्क, 40 ग्राम पानी, 10 ग्राम गिलोय के रस के साथ लें।

(6) एक्जिमा होने पर–गोमूत्र में अजवायन पीसकर लेप करें लाभ होगा।

(7) गठिया रोग में–20 ग्राम गोमूत्र 40 ग्राम पानी सुबह-शाम पीना, गोमूत्र को हल्का गर्म करके सेंक करना लाभ होगा।

(8) कान–बछिया का गोमूत्र 100 ग्राम उसमें 10 ग्राम अजवायन डालकर उबालना, धुँआ देने पर उतारकर ठंडाकर छानना, शीशी में भरना, दो-दो बूँद सुबह-शाम कान में डालना इससे कान का दुखना, मवाद आना ठीक होगा।

(9) दाँत–सात दिन गोमूत्र के कुल्ले करने पर दाँत का दर्द ठीक हो जाता है। गोमय भस्म से बना गोमय दंत मंजन बहुत ही लाभकारी है।

नोट–(1) वैज्ञानिक दृष्टि से गो मूत्र में फॉस्फेट, पोटाश, लवण, नाइट्रोजन यूरिया, यूरिक ऐसिड तथा कारबोलिक ऐसिड होने से उसकी स्वच्छता व पवित्रता बढ़ जाती है।

(2) गौ मूत्र का सेवन व विधि आयुर्वेद चिकित्सक की सलाह के अनुसार ही करें।

गौ दुग्ध द्वारा चिकित्सा

(1) गाय के दूध में सौंठ मिलाकर सिर पर लेप करें। सिरदर्द दूर हो जायेगा।

(2) हिचकी आने पर औटाया हुआ दूध पिलायें।

(3) गर्म दूध में मिश्री व कालीमिर्च चूर्ण मिलाकर पिलाये कफ दूर हो जायेगा।

(4) छाती तथा हृदय रोग में दुध में शुद्ध मिला के तेल की 10 बूँद डालकर पिलायें।

(5) आँखों में जलन हो तो गाय के दूध में रुई भिगोकर उसके ऊपर फिटकरी का चूर्ण डालकर उसे आँख के ऊपर रखें।

(6) गन्धक के विष पर दूध में घी डालकर पिलायें।

(7) अन्न के साथ काँच का चूर्ण पेट में चला गया है तो ऊपर से दूध पिलायें।

(8) प्रसव से पीड़ित महिला को गाय का दूध गर्म करके उसमें गाय का घी मिलाकर पिलाने से प्रसव आसानी से हो जाता है।

(9) प्रथम बार की ब्यात का प्रथम बार निकले दूध को सेवन किया जाये तो पेट की समस्त बीमारियाँ दूर हो जाती है।

(10) मधुमेह में दूध में घी अथवा गुड़ मिलाकर पिलाएँ।

(11) दस्त लगने पर दूध के साथ खजूर खाने को दें।

(12) पहली ब्यात की गाय का प्रथम दिन का खीस में धनिया भिगोकर सुखा लिया जाये और उसका सेवन प्रतिदिन एक चम्मच किया जाये तो दमा का रोग जड़ से चला जाता है।

(13) गाय के दूध को नाक से पीने पर सिर दर्द मिट जाता है। याददाश्त बढ़ती है।

(14) जीर्ण ज्वर में दूध व उसमें गाय का घी, सोंठ, सुहारा और काली मिर्च डालकर उबालकर पिलाना चाहिए।

(15) गाय के दूध की मालिश में शरीर में कांति व स्फूर्ति आती है।

गौ-घृत से उपचार

(1) बालकों की छाती में कफ जमा हो गया तो गाय का पुराना घी छाती पर लगाकर मालिश करें।

(2) धतूरा के विष पर गाय का घी खूब पिलायें।

(3) नाक से खून गिरने पर गाय का घी नाक में डाले।

(4) शराब का नशा उतारने के लिए दो तोला घी ओर दो तोला शक्कर मिलाकर देवें।

(5) सर्प के विष पर पहले 250 ग्राम या 500 ग्राम घी मिलाये तथा 15 मिनट पश्चात् थोड़ा गर्म पाली पिलाये इससे उल्टी, दस्त होकर विष शमन हो जाता है। जरूरत समझें तो दुबारा भी पिलायें।

(6) हिचकी आने पर गाय का घी पिलावें।

(7) हाथ-पैर में जलन होने पर गाय के घी से चुपड़े।

(8) घी की सिर में मालिश करने से स्मरण शक्ति बढ़ती है।

(9) घाव पर घी में हल्दी पकाकर उसका रुई को फोया घाव पर लगाने से घाव भर जाता है।

(10) मक्खन से निकाला हुआ घी तृप्ति कारक होता है।

(11) गरमी के ऊपर गाय के घी में सीप का भस्म डालकर उसे खरल करके लेप करें।

(12) तृष्ण रोग पर घी और दूध मिलाकर पिलावें।

(13) एक वर्ष का पुराना घी मूर्च्छा, उन्माद, कर्णशूल योनि दोष इत्यादि रोगों में विशेष हितकारी है।

त्रिदोष से मुक्ति—वात, पित्त और कफ को सम रखने से किसी भी प्रकार की कोई बीमारी नहीं होती है। त्रिदोष को सम संतुलन में रखने के लिए गाय का घी दिन में 3 बार सुबह, दोपहर, रात में शयन काल में तीन-तीन बूँद नाक में डालने से त्रिदोष निकल जाता है तथा मानव अपने आपको स्वस्थ रख सकता है।

रतौंधी से छुट्टी—पीले रंग का कैरोटीन नामक द्रव्य केवल गाय के घी में है। कैरोटीन तत्व की कमी से ही मनुष्यों के मुँह, फेफड़ों, मूत्राशयों की झिल्ली में अन्य रंगों का कैंसर हो जाता है। कैरोटीन तत्व शरीर में पहुँचकर विटामिन-A तैयार करता है। यह त्वचा और आँखों के लिए आवश्यक है, इससे 'रतौंधी' रोग दूर होता है।

गौ-मक्खन से उपचार

(1) गाय का मक्खन, मिश्री, मधु और सोने का वर्क मिलाकर खाने से क्षय का नाश करता है।

(2) आँख में जलन होने से मक्खन आँखों के ऊपर चुपड़ देवें।

(3) शरीर में मन्द ज्वर हो तो मक्खन और मिश्री खिलावें।

(4) गाय का मक्खन और मिश्री घोलकर उसमें जीरे का चूर्ण डाले व छोटी गोली बनाकर खिलायें जिससे छोटी माता के कारण लड़कों के ज्वर को ठीककर देता है।

(5) कान में बहुत जलन होने पर गाय का मक्खन थोड़ा गरम करके कान में डाले।

(6) केर के विष पर गाय का मक्खन थोड़ा उष्ण करके खिलावें।

(7) रक्तातिसार होने पर मक्खन से मधु और मिश्री डालकर खिलावें।

हृदय रोग का अचूक निदान—धमनियाँ अवरूद्ध हो जाने पर मनुष्य को बाय-पास सर्जरी करवानी पड़ती है। ऐसे बीमारी के समय में—

1. साबुत उड़द काले छिलके का	10 ग्राम
2. गुग्गल	10 ग्राम
3. अरंडी का तेल	10 ग्राम
4. गाय का ताजा मक्खन	10 ग्राम।

इस तरह चार उक्त घटकों में उड़द को रात में भिगोकर सुबह गुग्गल के साथ पीस कर चटनी बनायें तत्पश्चात् उसमें अरंडी का तेल मिलाकर ताजा मक्खन मिलायें। इससे एक प्रकार का मलहम तैयार हो जायेगा यह लेप हृदय पर नियमित स्नान के बाद लगावें। यह प्रयोग 1 महीने तक चालू रखने से सब तरह की धमनियों का अवरोध निकल जाता है।

गाय की तक्र छाछ से उपचार

(1) छाछ कफ, वात व पित का नाश करती है।

(2) पेट में वायु हो तो पीपल और नमक डालकर, मीठी छाछ पीने से वायु का नाश होता है।

(3) जलन होने पर गाय की छाछ में कपड़ा भिगोकर उससे रोगी के शरीर से स्पर्श करते रहने से जलन कम हो जाती है।

गौ दही से उपचार

(1) अनाज के साथ काँच का चूर्ण पेट में चले जाने से गाय का दही पिलाये।

(2) कनेर के विष पर गाय का दही शक्कर डालकर पिलायें।

आज के युग में प्रदूषित आहार-विहार व जलवायु के कारण कई जटिल रोगों से मनुष्य ग्रस्त हो रहा है। तरह-तरह की चिकित्सा पद्धतियों की शरण में जाकर इलाज करवाता है फिर भी निराशा मिलती है। इस युग की आधुनिक चिकित्सा भी बहुत महँगी होती जा रही है।

कई स्थानों पर पंचगव्य चिकित्सा पद्धति पर ध्यान दिया जा रहा है और ये संस्थाएँ मानव सेवार्थ चिकित्सा सेवा कर ही है। जो गाय पर आधारित पंचगव्य (गो दुग्ध, दही, घृत, गो मय रस, गो मूत्र) द्वारा औषधियों को निर्माण एवं शुद्ध आयुर्वेदिक औषधियों के मिश्रण से प्रशिक्षित एवं अनुभवी वैद्यों द्वारा

करवाकर चिकित्सा कर रहे हैं। इस पद्धति से बहुत रोगियों के रोग ठीक होने में सफलता मिली है। इन स्थानों पर अनुभवी वैद्यों द्वारा रोगी को देखकर चिकित्सा की जाती है। अतः इससे मानव सेवा के साथ-साथ गो सेवा भी हो रही है। गाय से प्राप्त पंचगव्य मानव को दीर्घायु करने के साथ ही उनके समस्त रोगों का नाशक भी है।

अन्य उपयोगी चिकित्सा

टॉन्सिल–होने पर केले के छिलके का नरम वाला हिस्सा अन्दर रखकर रात को गले पर बाँध देना। सुबह हटा देना इससे टॉन्सिल से आराम मिलेगा।

खाँसी, जुकाम, सर्दी–

(1) अजवायन कूटकर तवे पर गर्म कर रूमाल में बाँध कर हल्के-हल्के सूँघना, इससे छींके आना, नाक से पानी गिरना कुछ ही समय में बंद हो जायेगा।

(2) पानी को अच्छी तरह एक भगोनी में उबालकर उसमें एक मुठ्ठी बाजरा या विक्स थोड़ा डालकर ऊपर के कपड़े उतारकर चद्दर ओढ़कर भाप लेने से फेफड़ों में जमा सब कफ निकल जायेगा, रात में सोते समय करना बहुत उपयोगी है।

(3) आधी चम्मच हल्दी व जरा सा नमक की फक्की लेकर ऊपर से गुनगुना पानी पीने से, नमक कफ को गला देगा, हल्दी-कफ को फाड़ देगी कफ बाहर निकल जायेगा।

(4) एक चम्मच अदरक का रस, थोड़ा नींबू का रस व एक चम्मच शहद मिलाकर लेने से सर्दी जुकाम में काफी लाभ होगा।

गला–नमक डालकर पानी गुन गुनाकर गरारे करने से लाभ होता है।

दाँत–दाँत दर्द में फुलाई हुई फिटकरी के पानी से कुल्ला करने से मसूड़ों के बीच फँसा दूषित अन्न निकल जाता है, मसूड़ों के बीच की जगह सिकुड़ जाती है, लाभ होता है।

पेट दर्द–अपच, अजीर्ण (फुड पॉयजनिंग) दूषित भोजन करने से हुई परेशानी के लिए अमृत धारा की एक-एक बूँद लेने से निश्चित लाभ होता है। उल्टी दस्त में भी लाभ होता है।

उल्टी होने पर–दो लौंग घीसकर थोड़ा पानी मिलाकर गर्म कर उसमें जरा सा नमक मिलाकर पिलाने से शीघ्र ही उल्टी होना बंद हो जाता है, पेट में जो गैस बनी है उसको लौंग सोख लेती है।

पेट में आफरा होने पर–जरा सा हींग घोलकर नाभी में भर दें, उसके बाहर भी लगा दें। आराम हो जायेगा। थोड़ी-सी अजवायन व काला नमक थोड़ा-सा मिलाकर फक्की लेने से भी आराम मिलता है।

कब्ज–पेट में कब्ज होने पर गोमूत्र हरडे चूर्ण रात को सोते समय एक चम्मच चूर्ण दूध या पानी से लेने पर निश्चित लाभ होता है। ज्यादा-कब्ज रहने पर एक चम्मच त्रिफला चूर्ण एक गिलास पानी में भिगो दें, सुबह उसे

उबालकर एक कप कर लें उसे थोड़ा ठंडाकर पी लें, सुबह-सुबह दो-तीन दस्त लगेंगे कुछ दिन में बीमारी में बहुत लाभ होगा। नित्य प्रातः चार गिलास पानी ताँबे के जग में भर कर रखा हुआ नित्य लेने से बहुत लाभ होगा।

अम्ल पित्त–आधी कच्ची आधी पक्की सौंफ मिश्री के साथ नित्य भोजन के बाद लेने से बहुत लाभ होता है। दूध की लस्सी मिश्री मिलाकर लेने से लाभ होता है। धनिये की पंजीरी, धनिया पीसा हुआ, घी, मिश्री का चूर्ण लेना बहुत लाभकारी है। मावे से बनी चीजें, ओटाया हुआ दूध, अधिक चाय, काफी बहुत हानिकारक हैं।

एक गिलास देशी गाय के दूध में दो चम्मच देशी गाय का घी सुबह रात नित्य लेने पर अम्ल पित्त, अल्सर का रोग मिट जाता है।

पानी अधिक से अधिक पीना चाहिये, कुंजल क्रिया सप्ताह में एक बार या दो बार करना लाभकारी है।

पीलिया–फुलाई हुई फिटकरी का चूर्ण, जरा सी मात्रा नित्य लेने से बहुत लाभ होता है। चूना मूँग के बराबर केले में रखकर खिलाने से सात दिन में लाभ होता है। नित्य प्रातः एक पान का पत्ता जरा सा चूना, कत्था व 4 बूँद आकड़े की दूध की डालकर सूर्योदय ये पहले पाँच दिन लेने से पीलिया में निश्चित लाभ होता है।

मलेरिया-वायरल में ढाई नीम के ताजा पत्ते व दो कालीमिर्च पीसकर थोड़ा पानी मिलाकर लेने से तुरन्त लाभ होता है। बुखार होने पर सादा नमक (आयोडीन युक्त नहीं) को तवे पर सेक कर लाल कर लें, उसे शीशी में भर लें, बुखार आने से पूर्व आधा छोटा चम्मच नमक एक गिलास पानी में घोलकर पिला दें इकातरा बुखार हमेशा के लिये चला जायेगा।

पेट में कीड़े होने पर–एक आकड़े का पीला हुआ पत्ता 250 ग्राम पानी में उबालकर ठंडा कर छानकर पीने पर दो-तीन बार में सब कीड़े निकल जाते हैं। अजवायन कूटकर गुड़ में मिलाकर गोली बनाकर बच्चों को पानी से निगलवा दें, कीड़े गुड़ खाने आयेंगे अजवायन खाकर मर जायेंगे।

साइटिका में– (1) पारिजात, हर श्रृंगार के एक तोला पत्ते 250 ग्राम पानी में मिलाकर उबालें एक कप रहने पर पीसी हुई–मिश्री मिलाकर सुबह शाम एक महिना लेने से यह रोग ठीक हो सकता है।

(2) आकड़े का दूध हाथ पैर की बीसों अंगुलियों के नाखून में अन्दर लगातार तीन दिन रात को लगायें, हाथ में कपड़ा बाँध दें ताकि आँख में न लगे कुछ समय में साइटिका रोग में लाभ होगा।

संग्रहणी– 12 हर श्रृंगार-पारिजात के पत्ते, 6 काली मिर्च पीसकर दही में मिलाकर 15 दिन नित्य सुबह शाम लेने से लाभ होता है।

हृदय की नलिकाओं में अवरोध—250 ग्राम देशी गाय का गोबर, 250 ग्राम गोमूत्र को मिट्टी के पात्र में मंदी आँच में डेढ़ घंटा उबालना बाद में उतारकर सहने लायक गर्म रहे तब सीने पर रात को लेप करना, भोजन 6 बजे कर लेना। 8 बजे लेप कर 2 घंटे रखना बाद में लेप पोंछ कर वहाँ देशी गाय का घी चुपड़ देना। एक से दो महीने में अवरोध हट जायेंगे।

शरीर में कहीं पर भी गाँठ होने पर— उपरोक्त लेप तैयार करके लगाना, 2 घंटे रखना, बाद में लेप हटाकर अरंडी (केस्ट्रॉयल) का तेल चुपड़ना एक से दो महिने करना। गाँठ समाप्त हो जायेगी।

घुटने के दर्द में—100 ग्राम सरसों के तेल में, दस लहसुन की कली, छीलकर काटकर उबालना, लहसुन काला पड़ने पर उतारकर ठंडा करके छानना, फिर 50 ग्राम ग्वारपाठे का रस व 1/2 चम्मच (3 ग्राम) घर में कूटी हुई हल्दी मिलाना 24 घंटे रखना, बाद में 5–5 बूँद दिन में दो बार घुटने पर लगाना, मालिश नहीं करना, कम-से-कम एक महीने करना लाभ होगा।

गठिया वात जोड़ों का दर्द—100 ग्राम हल्दी का चूर्ण 100 ग्राम सोंठ, 100 ग्राम मेथी अलग-अलग कूटकर, छानकर मिलाना, 1/2 चम्मच (3 ग्राम) दिन में दो बार दूध के साथ लेना। लाभ होगा।

सब प्रकार के संधि वात में—100 ग्राम रासना की पत्ती का चूर्ण, 100 ग्राम पुनर्नवा चूर्ण, 100 ग्राम सोंठ का चूर्ण सबको कूट कर पीसकर छानना, 1/2 चम्मच (3 ग्राम) सुबह-शाम शहद से लेना। अवश्य लाभ होगा।

बुखार होने पर—1 चम्मच (5 ग्राम) धनिया का चूर्ण दो लौंग कूटकर एक गिलास पानी में उबालना। आधा रहने पर, गुनगुना, गुड़ डालकर पीकर सो जाना थोड़ी देर में बुखार उतर जायेगा।

खाँसी, सर्दी, जुकाम में—11 काली मिर्च कूटकर, 1 ग्राम हल्दी का चूर्ण मिलाकर एक गिलास पानी में उबालना, आधा रहने पर, गुनगुना, गुड़ डालकर दिन में दो बार, तीन दिन पीना अवश्य लाभ होगा।

चिकनगुनिया, डेंगू, स्वाईन फ्लू बुखार में—एक ग्राम काली मिर्च, एक ग्राम हल्दी चूर्ण, एक ग्राम सोंठ का चूर्ण, तुलसी के पाँच पत्ते, गिलोय (अमृता) का एक 6 इंच का टुकड़ा कूटकर एक गिलास पानी में उबालना, आधा गिलास रहने पर गुनगुना, मिश्री डालकर पीना, दिन में तीन बार तीन दिन पीना। डेंगू में पपीते या मरवा के पत्ते का रस 10–10 ग्राम दिन में दो बार पीना प्लेटलेट्स रेट ठीक होगा। बाद में कोई कष्ट नहीं रहेगा।

●●

20. भारत का गौरवशाली इतिहास

आज से लगभग 2305 ई. पू. चंद्रगुप्त के शासन काल में मैगस्थनीज नाम के यूनानी राजदूत ने भारत के शहरों-गाँवों का अध्ययन करते हुए चार खण्डों में इंडिका नाम की किताब लिखी। इस पुस्तक में भारत के वैभव पर अनेक आश्चर्य प्रकट किया है। 399-414 ई. में फाह्यान तथा 627-643 ई. में ह्वेनसांग; भारत-बौद्ध संबंधित 657 पुस्तकों का लेखक नामक दो चीनी बौद्ध भिक्षुक भारत में आए। इन दोनों यात्रियों ने भारत भ्रमण के पश्चात् अलग-अलग किताबें लिखीं। इंडस नामक किताब में चीन के बौद्ध यात्री फाह्यान ने आश्चर्य व्यक्त करते हुए लिखा कि भारत के घरों में ताले नहीं लगते। भारत में स्वास्थ्य सुदृढ़ता इतनी अधिक थी कि यहाँ अस्पताल की आवश्यकता ही नहीं थीं। सभी प्रकार के झगड़ों के मामलों का निपटारा या तो गाँव के सरपंच करते थे या फिर राजा के दरबार में। इंडिका और इंडस में भारत की समृद्धि का विस्तृत वर्णन किया है।

मोहम्मद गजनी के सेना के साथ 1018-1030 ई. में अल-बरूनी, अबू रेहान मुहम्मद, इब्न-ए-अहमद, जासूस पत्रकार को भी लाया था। उसने भी भारत के बारे में एक अत्यंत प्रसिद्ध किताब लिखा- किताब-उल-हिन्द या तारीख-उल-हिन्द। कुल 114 किताबों के लेखक उसमें भी भारत की समृद्धि का अनेक वर्णन है। भाषा, गणित, ज्योतिष, विज्ञान, शिल्प, व्यापार, विशाल भव्य मंदिर, आयुर्विज्ञान, वेद-शास्त्र संस्कृतिक पाण्डुलिपि जैसे अनेक विषयों पर व्यापक जानकारी दिया है।

मार्को पोलो (1254-1324)

भारत पिछले 2500 सालों से आजादी तक समृद्ध था, यहाँ के लोग सुखी, समृद्ध एवं स्वस्थ होकर सुखमय व शांतिप्रिय जीवन व्यतीत करते थे।

भारत का गाँव सामान्यतः स्वावलंबी था, बहुत कम ही किसी वस्तु या किसी अन्य काम के लिए दूसरों पर निर्भर था, अंततः आजादी के बाद भी गाँव आत्मनिर्भर थे। शिक्षा, आरोग्य, न्याय, सामाजिक सुरक्षा, शांति, समृद्धि, आनंद से गाँव परिपूर्ण थे। इस समृद्धि का मूल आधार गाँव, कृषि और कुटीर उद्योग ही था।

वर्तमान भारत की दयनीय परिस्थिति

पिछले 50-60 सालों में भारत ने जो जीवन-शैली अपनाई वह भारत की अपनी नहीं। जिन पश्चिमी देशों के जीवन शैली को अपनाकर हम गौरव अनुभव कर रहे हैं, वह शैली उनके अपने ही देश में प्रश्न चिन्ह पर खड़ी है। आज जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण के साथ-साथ भोजन भी प्रदूषित है। जिन दवाओं का प्रयोग कीड़ों को मारने में किया जाता है, वही दवाएँ मानव के पेट में जाकर बीमारी पैदा कर रही हैं, Genitically Modified

Food से अनेक विकृतियाँ मानव में फेल रही हैं। आज यहाँ हर व्यक्ति व उसका जीवन-शैली स्वयं प्रश्न चिन्ह पर खड़े हैं। समुद्र आधारित शहर, शहर आश्रित उद्योग, उद्योग आधारित जीवन-शैली के कारण ही ये समस्याएँ आई हैं।

आज के भारत में कोई भी पूर्ण स्वस्थ नहीं है, आर्थिक स्थिति बहुत ही विषम है। देश के तीस करोड़ लोग गरीबी रेखा के नीचे जीवन-यापन कर रहे हैं, लगभग 35 प्रतिशत लोग आज भी भारत में अशिक्षित हैं, 25 करोड़ लोगों को दो वक्त भरपेट भोजन नहीं मिल पाता, करोड़ों लोगों के पास अपना घर नहीं है। जीवन की मौलिक आवश्यकता- 1. रोटी, 2. कपड़ा, 3. मकान, 4. शिक्षा, 5. स्वास्थ्य, 6. मनोरंजन, 7. न्याय, 8. सुरक्षा, और 9. सम्मान से करोड़ों भारतीय वंचित हैं या फिर उसे आवश्यकता से कम उपलब्ध है। आखिर ये सब क्यों हुआ ? क्या इसका भारतीय जीवन-शैली से कोई संबंध है ?

भारत का गौ-ग्राम-कृषि जीवन-शैली

भारत में आज भी 50 करोड़ लोग समृद्ध हैं तथा 30-35 करोड़ लोग अच्छा जीवन जी रहे हैं। भारत में आज भी संपत्ति की बचत अधिक होती है जिसका आधार भारतीय जीवन शैली है। भारत के लोगों का आज दुखी होने का कारण पाश्चात्य संस्कृति का अनुसरण है, जब तक हम भारतीय जीवन शैली में थे तब तक सुखी थे। भारतीय जीवन शैली जल, जमीन, जंगल, जीव एवं जन पर आधारित है। चाणक्य-कौटिल्य ने अपने अर्थशास्त्र में गाँव को बसाने की पद्धति का उल्लेख करते हुए कहा है कि एक गाँव कम-से-कम 10 परिवार व अधिकतम 50 परिवारों को लेकर निश्चित जमीन पर ही बसना चाहिए। गाँव के एक तिहाई भाग में जल होना चाहिए। यदि गाँव में नदी न हो तो महिलाओं, पुरुषों एवं पशुओं हेतु दो से अधिक अलग-अलग तालाब होने चाहिए। गाँव में अनेक जीव समूह विशेषतः गाय होने आवश्यक हैं जिसके लिए गाँव के एक तिहाई हिस्से में जंगल होने चाहिए। चाणक्य के समय में बेचने की वस्तु दूध, दही के बजाय केवल गाय का घी होता था जो टैक्स के रूप में भी लोगों से वसूला जाता था। इस देश की सुख-समृद्धि का आधार भारतीय जीवन-शैली व गाय है, और भारतीय जीवन-शैली की जड़ गाँव में खेत से जुड़ी है ।

ग्राम विकास के मूल आधार

एक गाय से साधारणतः 8-10 किलो गोबर प्राप्त होता है, यदि दो गाय हैं तो सामान्यतः 20-22 किलो गोबर प्राप्त होता है, जो कि एक परिवार के दिन भर के भोजन बनाने के लिए पर्याप्त ईंधन गोबर गैस से होता है। एक गाय के गोबर और कृषि कचड़े से प्रति वर्ष लगभग दो टन जैविक खाद बनाई जा सकती है। गाय के गौमूत्र से विविध प्रकार के कीट नियंत्रक बनते हैं, कामधेनु अर्क मानव के सेवन हेतु उत्तम होता है। गाय का गोबर मिट्टी में रहने वाले जीवाणु के लिए सर्वश्रेष्ठ भोजन है, इससे मिट्टी के जीवाणुओं में

संख्यात्मक व गुणात्मक वृद्धि होती है। इस वृद्धि के कारण हवा व पानी से मिट्टी के जीवाणु नाइट्रोजन, फॉस्फोरस, पोटाश तथा अनेक खनिज पदार्थ पेड़-पौधों की जड़ों को उपलब्ध कराते हैं, जिससे पेड़-पौधों में पत्ती डालियाँ अधिक लगती हैं। घने पेड़ में रस-गंध अधिक होने के कारण अनेक कीट पतंगें-कीड़े-मकोड़े आकर्षित होकर आते हैं। इन कीट पतंगों को खाने के लिए अनेक प्रकार के पक्षी फिर इनको खाने के लिए बड़े पक्षी आते हैं। वनस्पति अधिक होने के कारण वनस्पति को खाने वाले जीव जंतु की संख्या बढ़ती है जैसे हिरण, खरगोश आदि। शाकाहारी जीवों की संख्या ज्यादा होने के कारण उन जानवरों को खाने के लिए मांसाहारी जानवरों का विकास हो जाता है, इस प्रकार एक पूरे जीव समूह का चक्र बनता है और इस जीव समूह चक्र के कारण मनुष्य जीवन सुखमय, शांतितमय तथा समृद्ध होता है। वनस्पति जीव जंतु के कारण पर्यावरण संतुलन बना रहता है, जिससे समय पर वर्षा प्रचुर मात्रा में होती है और सबको जल प्राप्त होता है। मिट्टी के जीवाणुओं को, पेड़-पौधों को, उनमें पलने वाले जीव-पक्षियों को जंगल में रहने वाले शाकाहारी, मांसाहारी जीवों तथा मानव को भी पीने व दैनिक उपयोग के लिए आवश्यक जल प्राप्त होता रहता है। मनुष्य को अगर शाश्वत जीवन जीना है, तो उसे प्रकृति के साथ तालमेल बनाकर ही चलना होगा। प्रकृति को ही आधार बनाकर मनुष्य अपने मौलिक आवश्यकताओं की पूर्ति कर अपना जीवन शाश्वत, सनातन, तथा समृद्ध बना सकता है। प्रकृति यानि जल, जमीन, जंगल, तथा जीव आदि । इन चार के माध्यम से ही हजारों वर्षों तक मनुष्य सुखी, सम्पन्न तथा शांतिमय जीवन यापन कर सकता है। यानि गाँव पूर्णतः स्वावलम्बी बने और गाँव का हर व्यक्ति स्वावलम्बी बने, उत्पादक बने, कोई भी दूसरे पर आश्रित न हो। मजदूर की कमी या आवश्यकता ही नहीं होगी। गो आधारित कृषि और गो ग्राम उद्योग जीवन शैली के कारण ही भारत हमेशा समृद्ध बना रह सकता है। अगर इसी तरह हम गो-ग्राम आधारित जीवन शैली का उपयोग करते रहेंगे तो हमारा जीवन समृद्ध व खुशहाल रहेगा।

इसी जीवन दर्शन के आधार पर गाँव में रहने वाले साधारण ग्रामीण अपने सामान्य ज्ञान और परिश्रम से सुख-सम्पन्नता प्राप्त कर सकता है, उसके पास दो गाय-बैल हो, कम से कम एक एकड़ जमीन हो, तथा पाँच-सात लोगों का एक परिवार प्रतिदिन पाँच-सात घंटे परिश्रम करे तो गोबर गैस, जैविक खाद, कीट नियंत्रक, फलदार वृक्ष, बाँस, धान, गेहूँ, तिलहन, दलहन, सब्जी, फल-फूल दूध-दही घी प्राप्त कर सकता हैं। कुटीर उद्योग से अनेक उत्पाद बनाएँ। बस उसे थोड़ा प्रशिक्षण लेना होगा और वे अपने से सभी काम स्वयं कर सकते हैं।

●●

21. रामराज्य का मूल आधार गौ और कृषि

भारत वास्तव में गाँव, परिवार, गाय, कृषि, गृह-उद्योगों का एक समरस धर्म के आधार पर पुरुषार्थ करने वाला देश है। कौटिल्य अपने अर्थशास्त्र में बताते हैं मनुष्य की परमशक्ति है उसकी विवेक बुद्धि।

श्रीमद् वाल्मिकी रामायण के युद्धकाण्ड के 128 वें सर्ग में श्री लवकुश बताते हैं की रामराज्य कैसे था।

94 से लेकर 120 तक के श्लोकों में रामराज्य का वर्णन है। श्री लवकुश जी कहते हैं, श्री राम के शासनकाल में कभी भी विधवा-विलाप नहीं सुना गया। किसी को कभी भी किसी प्रकार का रोग नहीं हुआ और सर्प आदि किसी जीव का कभी भय नहीं हुआ। प्रत्येक व्यक्ति धर्मपरायण था, बुढ़ों को कभी भी बालकों का दाह संस्कार नहीं करना पड़ा, कहीं कोई चोरी, लूट, हिंसा, अनर्थकारी नहीं था। प्रत्येक नागरिक अपनी पूरी आयु अर्थात् 100 साल जीवन जी कर ही मृत्यु को प्राप्त करता था।

श्री राम के राज्य में वृक्षों की जड़ें मजबूत रहती थीं, वृक्ष सदा फलों से लदे रहते थे। मेघ भी प्रजा की इच्छा और आवश्यकता के अनुसार ही वर्षा करते थे। वायु सदा शीतल, सुगंधित और मंद गति से ही चलती थी। चारों वर्ण के लोग लोभ, क्रोध रहित अत्यंत पुरुषार्थ से अपने आश्रमों के नियमों का मर्यादा से पालन करते थे। मनुष्य, पशु, पक्षी, पेड़-पौधे, हवा, वर्षा सभी अपनी-अपनी सीमा में मर्यादित आचरण से संतुलन बनाए रखे थे।

भारतीय शास्त्र में छः दर्शन हैं, जिसमें पहला सांख्य, दूसरा योग, तीसरा न्याय, चौथा वैशेषिक, पाँचवाँ मीमांसा तथा छठवाँ वेदांत या उत्तर मीमांसा है। सांख्य दर्शन का पहला सूत्र त्रिविध दुःख के निवार्थ पर है। दर्शन सूत्र कहता है मनुष्य को तीन प्रकार के दुखों का सामना करना पड़ता है अगर वह अत्यंत पुरुषार्थ (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) करे तो इन त्रिविध दुखों से निवार्थ हो सकता है।

त्रिविध दुःख क्या है। पहला आदि-भौतिक, दूसरा आदि-आध्यात्मिक तथा तीसरा आदि-दैविक। आदि-भौतिक का तात्पर्य है स्वयं की गलती या कर्म से होने वाला दुःख, दूसरों के द्वारा प्राप्त कष्ट जैसे-साँप काटना, रेलगाड़ी दुर्घटना आदि तथा तीसरा प्रकार है दैवीय-प्रकोप जैसे-महामारी, अकाल, भूकंप, ज्वालामुखी फुटना, सुनामी इसलिए प्रत्येक मंत्र होने के बाद तीन बार 'शांति शांति शांति' कहा जाता है ताकि तीनों दुःख शांत हो जाएँ। यदि मनुष्य प्रकृति के नियमों का उल्लंघन नहीं करे और सृष्टि का संरक्षक बने तो प्रकृति का भी प्रकोप नहीं होता है। और श्रीराम के राज्य में हुआ। इन तीनों प्रकार के ताप-कष्ट से सभी जड़ चेतन मुक्त थे, राज्य में चारों ओर शांति-ही-शांति थी। श्रीराम के शासन काल में चूँकि मनुष्य मर्यादा में रहे धर्मानुसार आचरण करते थे, प्रकृति का पोषक बने, सृष्टि का संरक्षक बने तो बाकि सभी जड़-चेतन ईश्वर प्रदत्त शक्ति के अनुसार ही चलते रहें। इसी बात को गोस्वामी तुलसीदास जी ने

अपने श्रीरामचरितमानस में लिखा है कि देहिक, दैविक और भौतिक ताप कभी भी श्रीराम के राज्य में आ नहीं पाया।''

" दैहिक दैविक भौतिक तापा,
राम राज्य कबहु न आपा''

इसके मूल कारण में जाएँ तो पायेंगे राजा भरत के तपस्वी जीवन और उनकी गाय नंदी तथा कृषि अनुसंधान। जब श्रीराम 14 वर्षों का वनवास समाप्त करके वापस अयोध्या आए तो तपस्वी श्री भरत जी ने श्रद्धापूर्वक श्रीराम से कहा–

पादुके ते तु रामस्य गृहीत्वा भरतः स्वयम्।
चरणांभ्यां नरेन्द्रस्य योजयामास धर्मवित्
।।54।।

अब्रवीच्च तदा रामं भरतः स कृतान्जलि।
एतत् ते सकलं राज्यं न्यासं निर्यातितं मया
।।55।।

अद्य जन्म कृतार्थं मे संवृत्तश्च मनोरथः।
यत् त्वां पश्यामि राजानमयोध्यां पुनरागतम्
।।56।।

तदुन्तर धर्मज्ञ भरत ने स्वयं ही श्रीराम की वे चरणपादुकाएँ लेकर उन महाराज के चरणों में पहना दी और हाथ जोड़कर उस समय उनसे कहा प्रभु मेरे पास धरोहर के रूप में रखा हुआ आपका यह सारा राज्य आज मैंने आपके श्रीचरणों में लौटा दिया।आज मेरा जन्म सफल हो गया। मेरा मनोरथ पूरा हुआ, जो अयोध्या नरेश श्रीराम को पुनः अयोध्या में लौटा हुआ देख रहा हूँ। फिर तपस्वी भरत जी ने कहा–

अवेक्षतां भवान् कोशं कोष्ठागारं गृहं बलम्।
भवतस्तेजसा सर्वं कृतं दशगुणं मया
।।57।।

आप राज्य का खजाना, कोठार, घर, और सेना सब देख लें। आपके प्रताप से ये सारी वस्तुएँ पहले से दस गुनी हो गयी हैं।

वास्तव में यह अत्यंत आश्चर्य का विषय है कि 14 वर्षों में ही ऐसा क्या हो गया या क्या कर दिया कि एक ओर घर और सेना दस गुना बढ़ गयी यानि खर्चा दस गुना बढ़ गया फिर भी कोष और कोठार अर्थात् खलियान जिसमें अनाज, फसलों को सुरक्षित रखा जाता है वह भी दस गुना बढ़ गया। तो क्या राजा भरत ने कर अत्यधिक बढ़ा दिए, बिल्कुल नहीं बल्कि तपस्वी भरत ने अपने पिता के समय के कर को छः गुना कम कर दिए थे ताकि किसी को भी कर चुकाने में कोई कष्ट न हो। तब तो और भी आश्चर्य, एक ओर खर्चा दस गुना बढ़ा और दूसरी ओर कर प्रणाली में कमी करके छः गुना कम कर दिए फिर भी आमदनी दस गुना।जब श्री राम ने इसका रहस्य जानना चाहा तो श्री भरत जी ने श्रद्धापूर्वक श्री पादुका को ही उसका श्रेय दिया। तमिलनाडु के आचार्य देशिंगन ने अपने पादुकासहस्रम् में इसका रहस्य बताया है उनके पुस्तक पादुकासहस्रम् में भरत जी श्रीराम पादुका को प्रतिदिन अभिषेक (स्नान) पूजा अर्चना करते थे।वे तालाब, कुएँ, नदियों, नहरों से जल लाकर पादुका का जलाभिषेक करते, अनेक स्थानों की मिट्टी लाकर पादुका को अर्पित करते थे।श्री भरत अनेक वनस्पतियों, अनेक प्रकार के पत्तों, विविध प्रकार के फूलों, बहुविद फलों, पंचगव्यों गोबर, गोमूत्र, दूध, दही, घी, मधु, फलों के रस तथा यज्ञ हवन से नियमित पूजा अर्चना करते थे। इन सभी

मिट्टी, गोबर, गोमूत्र, दूध, दही, घी फल-फूल को खेतों में छोड़ा जाता था, जिससे खेतों में वर्षभर फसल होते रहते थे। अब फसल बहुतायत में होने लगा तो कर्मचारियों की नियुक्ति करनी पड़ी। इतना ज्यादा उत्पादन बढ़ गया कि अनेक नवनिर्मित भवनों के बाद भी रखने की समस्या होने लगी तो तपस्वी भरत जी ने लगान ही छः गुना कम कर दिया। जैसा अन्न वैसा मन प्रजा अत्यंत प्रसन्न। उत्तम नंदी से उत्तम गाय और गाय के पंचगव्य से खेती की उर्वरता और फसल उत्पादन में वृद्धि से धर्मपरायण राजा अत्यंत पुरुषार्थ, प्रजा विवेक बुद्धि के कारण कानून का पालन करते इससे राजा-प्रजा दोनों प्रसन्न। चारों ओर समृद्धि से सुख फिर धर्म अनुसार शासन से शांति। लेकिन राजा भरत ने नंदी गाँव में रहकर गौ-संवर्धन, कृषि विकास के कार्य में ही अपने को क्यों लगाया ?

इसके मूल को समझने का प्रयत्न करें।

जब राम वनवास प्रस्थान कर रहे थे तो उन्होंने अपने सभी मित्र, बंधु, अधिकारी तथा कर्मचारियों को बुलाकर अपनी सम्पत्ति को दान किया और 14 वर्षों के लिए सभी को वेतन भी अग्रिम भुकतान कर दिया ताकि जब श्रीराम, माता सीता और भाई लक्ष्मण लौटे तब तक उनके घर, सम्पत्ति, खेत, गौशालाओं की रक्षा और देखभाल हो सके। उसी समय त्रिजट नामक ब्राह्मण, जो धर्मपरायण विद्वान पर भिक्षा माँगने में संकोच करता और जंगल से कंद-मूल-फल खाकर ही परिवार और बच्चों का पालन करता था, श्रीराम से एक गौ-दान की प्रार्थना की। बुढ़े को लाठी टेककर चलते ब्राह्मण को देख विनोद से श्रीराम ने कहा विप्रवर आप अपनी इस लाठी को फेंककर जितनी दूरी तक की गाय चाहिए ले सकते हैं। अत्यंत उत्साह से वह विप्र ने बड़ी तेजी से घुमाकर अपनी लाठी फेंकी जो सरयू तट के उस पार हजारों गायों के झुण्ड में एक हृष्टपुष्ठ सांड़ के पास जा कर गिरा। तत्काल ही श्रीराम ने उस लाठी तक के सभी गाय बैलों को मँगाकर उस ब्राह्मण देवता को दान कर दिया। उस ब्राह्मण ने श्री राम को गाय ही धर्म के मार्ग पर चलने में सहायक होने का आशीर्वाद दिया। श्री राम को गायें बहुत प्रिय थीं इसकी देखभाल और रक्षा के लिए ही उन्होंने 14 वर्षों का वेतन अग्रिम दिया था। राम का कहना था गाय रहेगी तो सारी सृष्टि रहेगी और धर्मविवेक और सद्आचरण रहेगा। श्री भरत जी इसी मंत्र को लेकर सारा जीवन गाय, ग्राम, कृषि के अनुसंधान में लगाकर रामराज्य की नींव डाली। भरत जी अयोध्या के भोग विलास में नहीं रहे बल्कि नंदी ग्राम में पूरा 14 वर्ष तपस्वी की तरह गौ, नंदी तथा खेती ग्रामीण जीवन जिया। श्रीराम के इसी प्रिय कार्य को श्री भरत जी ने नंदीग्राम में सुचारु रूप से किया।

अगर भारत में फिर से रामराज्य को लाना है तो गौ-ग्राम-कृषि-उद्योग को पुनर्जीवित करना होगा। लोग सात्विक अन्न खाएँ और विवेकशीलता से पुरुषार्थ कर ओम् शांति शांति शांति के अर्थ को चरितार्थ किया जा सकता है।

●●

22. गौ आधारित कृषि और जैविक खाद्यान्न

जैविक खेती और जैविक खद्यान्न

मनुष्य अगर स्वस्थ समृद्ध और आनंदमय जीवन चाहता है तो उसे जैविक खाद्यान्न का ही उपयोग करना होगा नहीं तो अनेक रोगों से पीड़ित होकर कष्टमय जिंदगी बिताना पड़ेगा। क्योंकि वर्तमान में खेती जहरीली होती जा रही है। पहले ये खेत के जीवाणुओं का खात्मा कर रही है फिर चारा खाने वाले जानवर, पक्षियाँ, कीट-पतंगें सब मर रहे हैं और आते-आते अब मनुष्यों की बारी है।

खेती का इतिहास

भारत में खेती का इतिहास दस हजार वर्षों से भी पुराना है। गेहूँ, चावल, मक्का, फल, सब्जियों का प्राकृतिक तरीके से खेती का विकास भारत में हुआ था। चीन, मध्य एशिया, फिर यूरोप देशों में भी अनेक प्राकृतिक तरीकों से और भी कई प्रजातियाँ बनाई गई। सौ वर्षों के पूर्व तक भी पूरे विश्व में प्राकृतिक तरीके से ही खेती होता आया था। एक हजार वर्ष पूर्व वैद्य सुरपाल के वृक्षायुर्वेद में विविध प्रकार के जैविक खाद तथा जैविक कीट नियंत्रक बनाने के बहुत से तरीकों के बारे में वर्णन मिलता है जैसे-कुनप्प, मछली के छिलके, हड्डी, मधु, घी से बना खाद। विविध प्रकार के कीट नियंत्रक जो पेड़-पौधों के पत्तों, जड़ों के रसों तथा गोमूत्र से बना कीट नियंत्रकों का भी प्राचीन काल में प्रयोग होता था।

यूरोप में औद्योगिक क्रांति के बाद थोड़ा तथा दूसरे विश्व युद्ध के बाद और तेजी से कृषि का भी औद्योगिकीकरण हुआ। 1943 में हरितक्रांति के नाम पर पूरे विश्व में कृषि का सत्यानाश प्रारंभ हुआ। इंग्लैण्ड और यूरोप में तेजी से बढ़ती औद्योगिक क्रांति से खेती अछूता न रहा। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद पूरे विश्व में खेती में रसायनिक खाद, जहरीले कीटनाशक, अत्यधिक जल सिंचाई और जटिल कृषि यंत्रों का प्रयोग तेजी से बढ़ने लगा। वैज्ञानिक जो युद्ध में अस्त्र-शस्त्र बनाने में लगे थे वे उन प्रयोगों को खेती और बागवानी में लगा दिया जिससे कृषि का औद्योगिकीकरण होने लगा। कृत्रिम रसायनिक खाद, कृत्रिम जहरीले कीटनाशक, खेती के लिए अनेक बड़ी-बड़ी मशीनें, कृत्रिम आनुवंशिक परिवर्तित अनाज GMF (Genetically modified foods) के बीज बनने लगें।

हरित क्रांति

1961 में भारत में अकाल पड़ा था तब कृषि मंत्री के सलाहाकार डॉ.एम.एस. स्वामीनाथन ने मैक्सिको के नॉरमन बोरलॉग (Norman Borlaug) को भारत बुलाया और फोर्ड फॉउण्डेशन के सहयोग से 1963 में गेहूँ के बीज तथा 1968 में IR-8 नामक चावल के बीज भारत में लाकर हरितक्रांति का सूत्रपात किया। नॉरमन बोरलॉग (Norman

Borlaug) ने मैक्सिको में 1943 तक व्यापक शोध और अनुसंधान करके प्रति हेक्टर अनाज उत्पादन में अत्यधिक वृद्धि किया था। उसी आधार पर भारत में भी संकरित बीज, रसायनिक खाद, जहरीले कीटनाशक, और जटिल कृषि यंत्रों का प्रयोग प्रारंभ हुआ।

पंजाब को इसके लिए पहले चुना गया। पहले तो वहाँ प्रति हेक्टर कृषि उपज बढ़ा। फिर उपज घटने और खाद, पानी, कीटनाशक की मात्रा बढ़ने लगी जिससे किसानों को न केवल घाटा होने लगा बल्कि अनेक गम्भीर बीमारी भी फैलने लगी।

कीटनाशक पर जैसे-जैसे कृत्रिम बीज का प्रयोग बढ़ने लगा सिंचाई के लिए जल की मात्रा भी बढ़ाने पड़े। पानी के कारण कीट-पतंग बढ़े तो कीटनाशक छिड़कने की आवश्यकता हुई। अनेक प्रकार की फसल के लिए कई प्रकार के कीटनाशक बनने लगें। यूरोप में 2008 में 1100 प्रकार, और अमेरीका में 1600 प्रकार के तथा भारत में भी एक हजार से ज्यादा प्रकार के कीटनाशक का प्रयोग हो रहा है। प्रति वर्ष और भी जहरीले कीटनाशक बन रहे हैं। अमेरीका में 2006-2007 के एक वर्ष में 5·2 बिलियन पौण्ड कीटनाशक का प्रयोग कृषि-बागवानी में किया।

दुष्परिणाम

राशेल कार्सन (Rachel Carson)

अमेरिका की मछली और समुद्री जैव वैज्ञानिक श्रीमती राशेल कार्सन (Rachel Carson) ने एक किताब Silent Spring नाम से लिखी। वह पहली किताब है जो कीटनाशक को विश्व में चर्चा में केन्द्र में ला दिया था। रासायनिक कीटनाशक अत्यधिक पैमाने पर जमीन को जहरीला बना रहा है।

डॉ. राशेल कार्सन ने खेतों में DDT के छिड़काव से होने वाले भयंकर हानियों का इस पुस्तक में वर्णन किया है किस प्रकार से जहरीले कीटनाशकों के कारण मछली खाने वाले पक्षियाँ मर रहे हैं और वर्षा से बहकर जो पानी समुद्र में जाता है उससे कैसे मछलियाँ मर रही हैं इस पर व्यापक शोध करके पुस्तक प्रकाशित किया। इससे पूरे अमेरिका में हंगामा मच गया। लोग सड़कों पर उतर आए। लोगों के भयंकर विद्रोह के कारण तत्कालिन राष्ट्रपति जॉन कैन्डी ने एक जाँच समिति बैठाई जो अपने रिपार्ट में श्रीमती कार्सन को सच साबित किया। पर अमेरिका में कृत्रिम रसायन कीटनाशक बनाने वाली कम्पनियों का लाबी इतना सशक्त है कि राष्ट्रपति ने DDT का केवल कृषि प्रयोग पर ही प्रतिबंध लगाया। यह किताब 1963 में प्रकाशित हुआ और 56 वर्षीय श्रीमति डॉ. राशेल कार्सन की 1964 में मृत्यु हो गयी और आज भी भारत में DDT का धड़ल्लें से खेती-बागवानी में प्रयोग हो रहा है बल्कि उससे कई गुना ज्यादा खतरनाक कीटनाशक भारत में खूब प्रयोग किए जा रहे हैं।

लगातार कीटनाशक प्रयोग के कारण फसल में उस अंश (Pesticide residue) की मात्रा बढ़ती जा रही है, जिससे न केवल कीट, पतंग और पक्षी मर रहे हैं बल्कि मनुष्य में भी अनेक प्रकार की बीमारी से मृत्यु हो रही है। लगभग 98 प्रतिशत छिड़काव किए कीटनाशक लक्ष्य से भटककर हवा, पानी, और मिट्टी में घुल जाते हैं इससे तीनों में जहर की मात्रा बढ़ती जा रही हैं, जो पर्यावरण में व्यापक नुकसान कर रहा है। जमीन के अंदर पानी दूषित होकर पीने लायक नहीं रहा। मिट्टी में पौधों को पोषक तत्व देने वाले जीवाणु तथा केंचुएँ मर रहे हैं। पंजाब में Post Graduate Institute of Medical Education and Research (PGIMER) की टीम ने अनेक गाँव में शोध अध्ययन करके पाया कि रासायनिक खाद और जहरीले कीटनाशक का सीधा प्रभाव मानव शरीर पर कैंसर के रोग को लाया है। झरीवाला, कोहरवाला, पक्का, भीमावली, खारा गाँवों में कैंसर के रोगी इसी कारण हैं। इंग्लैण्ड के एक्सटर विशविद्यालय के डॉ. रेयेश टिराड़ो (Dr. Reyes Tirado, University of Exeter) ने मुक्तसर, भटिंडा, तथा लुधियाना जिले के 50 गाँवों में व्यापक शोध अध्ययन किया जिसमें रसायनिक जहर की मात्रा पानी, मिट्टी में अत्यधिक पाया जो विश्व स्वास्थ संगठन के मापदण्डों से बहुत ज्यादा था। लंदन के ही UCLA school of Public Health Research ने पाया की इन रसायनिक खाद, कीटनाशकों के कारण पंर्किन्सनस नाम की बीमारी लोगों में तेजी से बढ़ रही है।

आनुवंशिक परिवर्तित अनाज (Genetically Modified Foods)

आनुवंशिक परिवर्तन से बीज तैयार करके 1990 में और भी एक भयानक खतरा मानव जाति पर डाला गया है। नए प्रकार के आनुवंशिक बीज से उत्पादन तो बढ़ता है पर अधिक नाइट्रोजन की खपत होती है जिससे सिंचाई ज्यादा करना पड़ता, ज्यादा प्रभावी कीटनाशक छिड़काव और परिणाम विभिन्न प्रकार के रोग का पैदा होना। इस प्रकार के अनाज, फल, सब्जियों में पोषक तत्व 25 प्रतिशत तक कम होते जा रहे हैं और तकनीकी बहुत जटिल होने के कारण भारतीय किसान अक्सर गलत परिमाण में उर्वरक या कीटनाशक का प्रयोग करता है जिससे फसल को नुकसान हो जाता है। यानि किसान को बीज, खाद, सिंचाई व्यवस्था, ट्रैक्टर, तकनीक आदि सभी के लिए बाजार पर निर्भर होना पड़ रहा है। सही उत्पादन नहीं होने से भारी नुकसान हो ही जाता है और परिणाम आत्महत्या पर समाप्त होता है। पिछले बीस वर्षों में आन्ध्र, कर्नाटक, महाराष्ट्र तथा तमिलनाडू में लाखों किसानों ने आत्महत्या किये हैं और पंजाब में लोग कैंसर से मर रहे हैं।

जैविक खेती

मिट्टी में अनेक प्रकार के जीवाणु पहले से ही मौजूद हैं जो हवा, पानी से नाइट्रोजन, फॉस्फोरस, पोटाश, तथा कई खनिज जैसे आवश्यक पोषक तत्व बनाकर पेड़-पौधों को उपलब्ध कराते हैं। इन जीवाणुओं को मिट्टी में रहने वाले तीन प्रकार के केंचुएँ अपने गति और पाचन के कुशल प्रबंधन से और उर्वरकता प्रदान कर देते हैं। गाय का गोबर इन केंचुओं तथा मिट्टी के जीवाणुओं को अधिक पौष्टिक और क्षमता प्रदान करता है और जब पौधे बढ़ते हैं पत्तियाँ, फुल, फल की संख्या, रस-गंध भी बढ़ जाते हैं जिसके कारण पेड़-पौधों में कीट-पतंग का प्रकोप आ जाता है। लेकिन इससे डरने या घबराने की जरूरत नहीं बल्कि इन्हें नियंत्रित करने की जरूरत है। गोमूत्र और अनेक प्रकार के औषधीय पत्तियों जैसे-नीम, बेल, तुलसी, करंज, धतुरा, मदार, सीताफल, लहसुन, मिर्च आदि के द्वारा भी कीट नियंत्रक बनाया जाता है और यह बहुत प्रभावकारी भी है। अगर इन कीटनियंत्रकों का अंश ज्यादा देर बचता नही हैं अगर मानव शरीर में जाता भी है तो हानि नहीं होती है कारण सभी पदार्थ जैविक हैं जैसे—नीम करंज या गोमूत्र का अंश। जैविक खेती में सिंचाई के लिए पानी कम लगता है, मिट्टी के जीवाणु मरते नहीं बल्कि जैविक खाद के कारण और पुष्ट हो जाते हैं। फसल में लगने वाले कीट पतंग को पौधों के ही रस से नियंत्रित करने से जीव समूह की हानि नहीं होती है और फसल भी सुरक्षित रहता है।

●●

23. जैविक व रासायनिक खाद का तुलनात्मक अध्ययन

जैविक खाद	रासायनिक खाद
1. जैविक, खासकर गोबर से बनी की खाद/ उर्वरक में लगभग सभी पोषक तत्व होते हैं। (16 पोषक तत्व)	1. रसायनिक उर्वरकों में प्रत्येक पोषक तत्व के लिए अलग-अलग उर्वरक डालना पड़ता है जैसे नाइट्रोजन के लिये यूरिया, फास्फेट के लिए डी ए सी, पोटेशियम के लिए मोरेटोपोटाश।
2. जैविक उर्वरकों के उपयोग वाली भूमि में पानी की तुलनात्मक रूप से कम जरूरत पड़ती है।	2. रायायनिक उर्वरकों से उपज लेने के लिए अधिक पानी जमीन में देना पड़ता है।
3. अगले वर्ष भी उतनी ही अच्छी फसल के लिए जैविक उर्वरकों की उतनी ही मात्रा चाहिये। कुछ कम मात्रा चाहिये। कुछ कम मात्रा में भी काम चल जाता है।	3. फसल उत्पादन की मात्रा की निरंतरता के लिए रासायनिक उर्वरकों की मात्रा प्रतिवर्ष बढ़ाना आवश्यक है।
4. जैविक खाद उर्वरक के निरंतर उपयोग के बाद यदि किसी कारण अगले 2 वर्षों तक नहीं डाल पाये तो पहिले वर्ष 70-75 प्रतिशत व दूसरे वर्ष 50 प्रतिशत फसल होगी।	4. प्रथम वर्ष में न देने पर 10-20 प्रतिशत फसल मुश्किल से होगी व दूसरे वर्ष बिल्कुल फसल नहीं होगी।
5. जैविक खाद से मिट्टी के सूक्ष्माणु सक्रिय रहते हैं। मिट्टी की उत्पादकता इन्हीं पर निर्भर करती है। ये मिट्टी को भूरभूरी बनाये रखते हैं अतः उसमें वायु का संचार निरंतर बना रहता है। एक मुठ्ठी मिट्टी में लाखों सूक्ष्माणु होते हैं।	5. रासायनिक उर्वरकों से मिट्टी के सूक्ष्माणु नष्ट हो जाते हैं। इसके निरंतर उपयोग से जमीन पूर्णतः बंजर व अनुपजाऊ हो जाती है।
6. जैविक खाद के प्रयोग से उत्पादित उपज की गुणवत्ता तो होगी ही, वह स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव भी नहीं डालेगी।	6. रासायनिक खाद से उत्पादित फसल में गुणवत्ता का अभाव व कई प्रकार के शारीरिक विकार व रोग हो सकते हैं।
7. अपनी गुणवत्ता के कारण जैविक खाद से उत्पादित फसल का बाजार भाव भी ऊँचा होगा।	7. उपज का बाजार में भाव कम हो जाता है।
8. दुनिया के विकसित देशों में जैविक खाद का अधिक उपयोग होने लगा है।	8. दुनिया के सभी देशों में हतोत्साहित किया जा रहा है।
9. जैविक खाद प्राकृतिक स्रोतों जैसे पौधे और पशु पदार्थ से प्राप्त होते हैं और रासायनिक रूप में संश्लेषित होते हैं।	9. रासायनिक खाद को कृत्रिम रूप में निर्मित किया जाता है।
10. जैविक उर्वरक अधिक टिकाऊ और पर्यावरण के अनुकूल माना जाता है।	10. रासायनिक उर्वरक पर्यावरण के अनुकूल नहीं होते प्रतिफूल प्रभाव छोड़ते हैं।

इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय के प्रोफेसर की रिसर्च में खुलासा

आप रोजाना खा रहे 0.65 म्यू ग्राम केमिकल

फलों को पकाने और सेल्फ लाइफ बढ़ाने प्रतिबंध के बाद भी डीडीटी इथरेल और जिब्रलिक जैसे केमिकल का इस्तेमाल जारी

0.6086 | 0.6568

0.2221 | 0.5837

0.3469

30 से अधिक पेस्टिसाइड

भारत में प्रतिबंधित कीटनाशकों की पूरी सूची-नवीनतम जानकारी

भारत सरकार ने कीटनाशकों के उपयोग को लेकर कई अहम कदम उठाए हैं, जिसमें कुछ कीटनाशकों पर पूरी तरह प्रतिबंध, कुछ पर आंशिक प्रतिबंध और कुछ को केवल निर्यात के लिए उपयोग करने की अनुमति दी गई है। यह सूची 31 मार्च 2024 को कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय के अंतर्गत आने वाले पौधे संरक्षण, संगरोध और भंडारण निदेशालय द्वारा जारी की गई है। यह कदम कृषि के क्षेत्र में सुरक्षा और स्थिरता को बढ़ाने के लिए उठाया गया है।

1. अलाक्लोर
2. एल्डिकार्ब
3. एल्ड्रिन
4. बेंजीन हेक्साक्लोराइड
5. बेनोमाइल
6. कैल्शियम साइनाइड
7. कार्बारिल
8. क्लोर्बेन्जिलेट
9. क्लोर्डेन
10. क्लोरोफेन्विनफोस
11. कॉपर एसेटोआर्सेनाइट
12. डायाजिनोन
13. डिब्रोमोक्लोरोप्रोपेन
14. डायक्लोरोवोस
15. डाइकोफोल
16. डिनोकैप
17. एंडोसल्फान (कोर्ट आदेश के तहत प्रतिबंधित)
18. एंड्रिन
19. इथाइल मर्करी क्लोराइड
20. इथाइल पैराथियॉन
21. इथिलीन डिब्रोमाइड
22. फेनारिमोल
23. फेन्थिओन
24. हेप्टाक्लोर
25. लिंडेन
26. लिन्यूरॉन
27. मैलेइक हाइड्रजाइड
28. मेनाजोन
29. मेथोनिल
30. मिथॉक्सी एथाइल मर्करी क्लोराइड
31. मिथालइ पैराथियॉन
32. मेटॉक्सुरॉन
33. नाइट्रोफेन
34. पैराक्वाट डाईमेथाइल सल्फेट
35. पेटाक्लोरो नाइट्रोबेंजीन
36. पेंटाक्लोरोफेनॉल
37. फेनाइल मर्करी एसीटेट
38. फॉरेट
39. फॉस्फामिडोन

40. सोडियम साइनाइड (कीटनाशक उद्देश्यों के लिए प्रतिबंधित)

41. सोडियम मीथेन आर्सेनेट

42. टेट्राडिफोन

43. थियोमेटोन

44. टॉक्साफेन

45. ट्रायजोफॉस

46. ट्राइडेमोर्फ

47. ट्राइक्लोरोएसिटिक एसिड

48. ट्राइक्लोर्फोन।

केवल निर्यात के लिए निर्माण की अनुमति इन कीटनाशकों का उपयोग भारत में प्रतिबंधित है लेकिन इनका निर्माण निर्यात उद्देश्यों के लिए जारी है।

1. कैप्टाफोल 80 प्रतिशत पाउडर

2. डायक्लोरोवोस

3. निकोटिन सल्फेट

4. फॉरेट

5. ट्रायजोफॉस

पंजीकरण नकारा गया, इन कीटनाशकों को पंजीकरण से मना कर दिया है, जिससे इनका भारत में उपयोग नहीं किया जा सकता।

1. 2,4,5-T

2. अमोनियम सल्फमेट

3. अजिनफॉस एथिल

4. अजिनफॉस मिथाइल

5. बिनापाक्रिल

6. कैल्शियम आर्सेनेट

7. कार्बोफेनोथियोन

8. चिनोमेथियोन

9. डाइक्लोरोफॉस

10. ईपीएन

11. फेंटिन एसीटेट

12. फेंटिन हाइड्रॉक्साइड

13. लीड आर्सेनेट

14. लेप्टोफॉस

15. मेफोस्फोलन

16. मेविनफॉस

17. थियोडेमेटोन

18. वामिडोथियोन

उपयोग के लिए प्रतिबंधित कीटनाशक ये कीटनाशक विशेष परिस्थितियों में ही उपयोग की अनुमति रखते हैं ताकि इनका स्वास्थ्य और पर्यावरण पर कम से कम नकारात्मक प्रभाव हो।

1. एलुमिनियम फॉस्फाइड– केवल सरकार द्वारा अनुमोदित ऑपरेटरों द्वारा उपयोग।

2. कैप्टाफोल– पत्तियों पर छिड़काव के लिए प्रतिबंधित, लेकिन बीज उपचार के लिए अनुमोदित।

3. कार्बोफ्यूरन– कुछ विशिष्ट संरचनाओं में ही उपयोग की अनुमति।

4. क्लोरपाइरीफॉस– बेर, साइट्रस और तम्बाकू पर उपयोग के लिए प्रतिबंधित।

5. साइपरमेथ्रिन– केवल पेशेवर पेस्ट कंटोल ऑपरेटरों द्वारा उपयोग।

6. डी.डी.टी.– केवल सार्वजनिक स्वास्थ्य कार्यक्रमों में उपयोग की अनुमति।

7. मलाथियॉन– फसलें जैसे कि ज्वार, मटर, सोयाबिन आदि पर उपयोग के लिए प्रतिबंधित।

8. मिथाइल ब्रोमाइड– सरकार द्वारा अनुमोदित ऑपरेटरों द्वारा उपयोग।

9. मोनोक्रोटोफॉस– सब्जियों पर उपयोग के लिए प्रतिबंधित।

10. ट्राइफ्लुरालिन– केवल गेहूँ की खेती के लिए उपयोग की अनुमति।

ऐसे कीटनाशक भी शामिल हैं जिनका निर्माण और निर्यात तो जारी है, लेकिन देश के अंदर उनका उपयोग प्रतिबंधित है। भारत सरकार लगातार कीटनाशकों की निगरानी और नियंत्रण कर रही है ताकि किसानों और उपभोक्ताओं दोनों की सुरक्षा मिल सकें।

●●

24. कृषि रसायनों का विष और गिरते भूजल के लिए गौ आधारित कृषि-एक अमृत

भारत में हरित क्रांति ने जहाँ खाद्यान्न उत्पादन में वृद्धि की, वहीं इसके अनियंत्रित इस्तेमाल ने हमारे जल और मिट्टी को गंभीर रूप से प्रदूषित कर दिया है। कृषि रसायन, जैसे कि यूरिया और कीटनाशक, आज हमारे भूजल को धीरे-धीरे जहरीला बना रहे हैं, जिससे हमारे स्वास्थ्य और पर्यावरण पर गहरा असर पड़ रहा है। इसका मुकाबला करने के लिए, गौ-आधारित जैविक कृषि एक स्थायी और प्रभावी समाधान के रूप में उभर रही है।

कृषि रसायनों के दुष्प्रभाव–

1. भूजल का संदूषण : किसान अक्सर फसलों के लिए आवश्यकता से अधिक रासायनिक उर्वरक और कीटनाशकों का उपयोग करते हैं। वर्षा के पानी के साथ ये रसायन बहकर नदियों और झीलों में चले जाते हैं, और धीरे-धीरे जमीन में रिसकर भूजल को दूषित कर देते हैं।

2. नाइट्रेट का बढ़ता स्तर : रासायनिक उर्वरकों से निकला नाइट्रेट भूजल में मिलकर इसे पीने के लिए अनुपयुक्त बना देता है। राजस्थान, पंजाब और हरियाणा जैसे राज्यों में, जहाँ कृषि के लिए भूजल का अत्यधिक दोहन होता है, नाइट्रेट का स्तर काफी बढ़ गया है।

3. हानिकारक तत्व : कीटनाशकों में मौजूद रसायन शरीर में जमा होकर कैंसर, प्रजनन संबंधी समस्याएँ और अन्य गंभीर बीमारियों का कारण बन सकते हैं। इन रसायनों का एक बार भूजल में मिल जाने के बाद इन्हें हटाना बेहद मुश्किल और खर्चीला होता है।

4. मिट्टी की उर्वरता में कमी : रासायनिक उर्वरकों का लगातार उपयोग मिट्टी में मौजूद सूक्ष्मजीवों को नष्ट कर देता है, जिससे मिट्टी की प्राकृतिक उर्वरता कम हो जाती है और अंततः वह बंजर हो जाती है।

भारत में राज्यवार रासायनिक कीटनाशक उपयोग (2021-22 से 2023-24)

राज्य/ संघ-शासितप्रदेश	2021-22 (मीट्रिक टन)	2022-23 (मीट्रिक टन)	2023-24 (मीट्रिक टन)
Andhra Pradesh	1,759.26	2,200.01	1,827.94
Bihar	850.00	1,020.00	995.00
Chhattisgarh	1,740.00	1,775.00	1,781.00
Goa	32.40	34.39	34.81
Gujarat	1,869.00	1,747.00	1,835.00

Haryana	4,066.00	4,066.00	4,064.00
Himachal Pradesh	278.99	470.35	277.32
Jharkhand	450.00	507.00	455.00
Karnataka	2,224.00	1,875.00	1,830.00
Kerala	531.72	539.86	528.92
Madhya Pradesh	654.00	598.00	599.00
Maharashtra	13,175.00	6,814.00	8,718.00
Odisha (Orissa)	1,239.93	1,347.55	1,143.88
Punjab	5,376.00	5,130.00	5,257.00
Rajasthan	2,104.00	1,865.00	1,898.00
Tamil Nadu	1,851.00	1,922.00	1,970.00
Telangana	4,920.00	4,920.00	4,920.00
Uttar Pradesh	11,688.00	11,824.00	11,828.00
Uttarakhand	213.24	199.84	78.73
West Bengal	3,630.02	3,761.64	4,081.18
अरुणाचलप्रदेश	1.40	2.55	2.55
Assam	474.18	543.05	472.00
Manipur	NR	27.18	21.69
Meghalaya	NR	13.63	NR
Mizoram	28.64	35.80	93.77
Nagaland	40.97	NR	26.17
Sikkim	Organic (स्वाभाविक)	Organic	Organic
अन्य (Tripura आदि)	NR या कम उपलब्ध	NR या कम उपलब्ध	NR या कम उपलब्ध
भारत (Grand Total)	**59,197·75**	**53,630.19**	**55,193.15**

स्रोत–भारत सरकार, कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय द्वारा संसद (राज्यसभा) में 26 जुलाई 2024 को प्रस्तुत उत्तर-प्रस्ताव (Unstarred Question No. 489, Annexture-I)

गौ-आधारित जैविक कृषि

गौ-आधारित जैविक कृषि इन सभी समस्याओं का समाधान प्रदान करती है। यह एक ऐसी खेती पद्धति है जो रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों का उपयोग करने के बजाय देशी गाय के गोबर, मूत्र और अन्य प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग करती है।

1. प्राकृतिक पुनर्भरण : जैविक खेती में उपयोग होने वाले जैविक पदार्थ मिट्टी को बेहतर बनाते हैं, जिससे उसकी जल धारण क्षमता बढ़ती है। यह वर्षा जल को अधिक कुशलता से अवशोषित करने में मदद करता है, जिससे भूजल का प्राकृतिक रूप से पुनर्भरण होता है।

2. भूजल की सुरक्षा : चूँकि इस पद्धति में कोई भी हानिकारक रसायन उपयोग नहीं होता, इसलिए भूजल संदूषण का कोई खतरा नहीं होता। गौ-आधारित खाद जैसे जीवामृत, बीजामृत आदि मिट्टी और जल को शुद्ध रखते हैं।

3. मिट्टी का स्वास्थ्य : देशी गाय के गोबर में असंख्य लाभकारी बैक्टीरिया होते हैं जो मिट्टी की जैविक गतिविधि को बढ़ाते हैं। यह मिट्टी की संरचना में सुधार करता है, उसे उपजाऊ बनाता है और लंबे समय तक कृषि उत्पादन को बनाए रखता है।

4. पारिस्थितिक संतुलन : जैविक खेती से जैव विविधता को बढ़ावा मिलता है। यह लाभकारी कीटों और सूक्ष्मजीवों को पनपने का अवसर देता है, जिससे एक स्वस्थ पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण होता है।

गौ-आधारित जैविक खेती के लाभ :

1. कम लागत : गौ-आधारित जैविक खेती में रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों की तुलना में कम लागत आती है।

2. उच्च गुणवत्ता : गौ-आधारित जैविक खेती से उत्पादित फसलें उच्च गुणवत्ता वाली होती हैं और इनमें पोषक तत्वों की मात्रा अधिक होती है।

3. पर्यावरण अनुकूल : गौ-आधारित जैविक खेती पर्यावरण अनुकूल है और यह मिट्टी की उर्वरता को बढ़ावा देती है।

4. गोबर और गोमूत्र का संग्रहण : गाय के गोबर और गोमूत्र का संग्रहण करना और इसे जैविक खाद और कीटनाशक बनाने के लिए उपयोग करना।

5. जैविक खाद और कीटनाशक का निर्माण : गोबर और गोमूत्र से जैविक खाद और कीटनाशक तैयार करना और इसका उपयोग खेती में करना। फसल चक्र-फसल चक्र अपनाना और मिट्टी की उर्वरता को बनाए रखना।

6. जैविक खेती के लिए प्रशिक्षण : किसानों को जैविक खेती के लिए प्रशिक्षण देना और उन्हें इसके लाभों के बारे में जागरूक करना।

इस प्रकार, गौ-आधारित जैविक कृषि केवल भूजल की सुरक्षा ही नहीं करती, बल्कि यह एक स्वस्थ और टिकाऊ कृषि प्रणाली का मार्ग भी प्रशस्त करती है।

भारत के राज्यों का भूजल स्तर (2022)

अत्यधिक दोहन : कृषि सिंचाई के लिए भूजल का अत्यधिक दोहन करना एक प्रमुख कारण है। भारत में लगभग 6% सिंचाई भूजल से होती है, जिससे जल स्तर में तेजी से गिरावट आ रही है।

जलवायु परिवर्तन : बदलते मौसम पैटर्न और बढ़ते तापमान के कारण भूजल पुनर्भरण कम हो रहा है, जिससे जल स्तर में गिरावट आ रही है। इससे सूखे और बाढ़ जैसी घटनाएँ अधिक आम हो रही हैं।

अनियमित वर्षाः वर्षा की अनियमितता और लंबे समय तक सूखा पड़ने से भूजल पुनर्भरण कम हो जाता है, जिससे कई क्षेत्रों में जल स्तर में गिरावट आती है।

केंद्रीय भूजल बोर्ड (CGWB) द्वारा जारी भूजल संसाधनों के गतिशील मूल्यांकन 2022 के अनुसार, भारत में भूजल दोहन की स्थिति निम्नलिखित तालिका में दी गई है। भूजल दोहन का प्रतिशत यह दर्शाता है कि कुल उपलब्ध भूजल का कितना हिस्सा वार्षिक रूप से निकाला जा रहा है। 100% से अधिक का स्तर अत्यधिक दोहन को दर्शाता है।

क्र. सं.	राज्य/केन्द्र शासित प्रदेश	भ-ूजल दोहन वर्ष 2022 (%)
1.	आंध्रप्रदेश	35·84
2.	अरुणाचलप्रदेश	0·44
3.	असम	13·91
4.	बिहार	48·06
5.	छत्तीसगढ़	42·45
6.	दिल्ली	102·13
7.	गोवा	23·36
8.	गुजरात	72·82
9.	हरियाणा	134·14
10.	हिमाचल प्रदेश	37·56
11.	जम्मू-कश्मीर	30·68
12.	झारखण्ड	31·35
13.	कर्नाटक	69·93
14.	केरल	53·79
15.	मध्यप्रदेश	51·52
16.	महाराष्ट्र	41·52
17.	मणिपुर	5·25
18.	मेघालय	1·83
19.	मिजोरम	3·51
20.	नागालैण्ड	4·88
21.	ओडिशा	18·06
22.	पंजाब	166·36
23.	राजस्थान	150·22
24.	सिक्किम	0·90
25.	तमिलनाडू	71·55
26.	तेलंगाना	61·54
27.	त्रिपुरा	33·68
28.	उत्तरप्रदेश	59·98
29.	उत्तराखण्ड	43·15
30.	पश्चिम बंगाल	46·12
31.	अंडमान और निकोबार	7·91
32.	चंडीगढ़	100·99
33.	दादर और नागर हवेली और दमन और दीव	94·61
34.	लद्दाख	0·11
35.	लक्षद्वीप	10·60
36.	पुदुचेरी	129·80

स्रोत–केन्द्रीय भूजल बोर्ड, भूजल संसाधनों के गतिशील मूल्यांकन 2022 के आधार पर डेटा।

●●

25. जैविक खाद, जीवामृत, घन जीवामृत, अमृत जल, समाधि खाद एवं कीट नियंत्रक का निर्माण

मनुष्य ने हजारों वर्ष पूर्व कृषि संस्कृति अपनाई। कृषि शोधकर्ता ऋषभदेव कुशल कृषक थे। कृषि कार्य में सहायक बना वृषभ (बैल) तपस्वी गृत्समद ने कपास से रूई व रूई से सूत का धागा निकालना सिखाया। उपनिषद् रूपी गायों का दोहन करने वाले गोपाल कृष्ण ने हलधर (बलराम) की अगुआई में बिना कृषि गोपालन किए मौज मस्ती करने वाले शासकों का शासन पलटा। वराह मिहिर ने वृहद् संहिता में 4000 वर्ष पूर्व ही किस फसल के लिए कौन-सी खाद होनी चाहिये और वह खाद कैसे तैयार की जायेगी इसकी विधि बताई है। भारत में खेती का इतिहास 10 हजार वर्षों से भी पुराना है। गेहूँ, चांवल, मक्का, फल सब्जियों का जैविक तरीके से खेती का विकास भारत में हुआ। वैद्य सुरपाल ने एक हजार वर्ष पूर्व वृक्षा युर्वेद में विविध प्रकार के जैविक खाद का वर्णन किया है। और कीट नियंत्रकों का वर्णन किया है।

जैविक खाद खास कर जो गोबर से बनी होती है उसमें सभी पोषक तत्व होते है इन तत्वों को तीन वर्गों में बांटा जा सकता है–

प्रमुख घटक	माध्यमिक घटक	निम्न घटक
1. नाइट्रोजन	1. कैलशियम	1. जिंक
2. फास्फोरस	2. मैग्नीशियम	2. कॉपर
3. पोटेशियम	3. सल्फर	3. लोहा
		4. बोरोन
		5. क्लोराइड
		6. सिलिकान
		7. मालिनिडेनम

जैविक खाद का उपयोग वाली भूमि में पानी की कम जरूरत पड़ती है। जैविकखाद की प्रतिवर्ष उतनी ही मात्रा पर्याप्त होती है जितनी पहिले डाली गई यदि एक वर्ष नहीं भी डाली जाये तो भी 75 प्रतिशत फसल हो जाती है।

जैविक खाद मिट्टी को भुरभुरी बनाये रखते है जिससे उसमें वायु का संचार निरन्तर बना रहता है।

पिछले कुछ वर्षों से पूरे विश्व में जैविक खेती एक महत्वपूर्ण चर्चा का विषय बन गयी है। विशेष रूप से कई पश्चिमी देश रासायनिक विधि से खेती छोड़कर धीरे-धीरे जैविक खेती की ओर मुड़ते जा रहे हैं। मोटे तौर पर जहाँ रासायनिक खेती में यूरिया, अमोनिया, सल्फेट, एन.पी.के. इत्यादि रासायनिक खादों का तथा रासायनिक कीटनाशकों का प्रयोग होता है, जैविक खेती में गोबर की खाद, कम्पोस्ट तथा प्राकृतिक स्त्रोतों से प्राप्त कीटनाशक जैसे नीम इत्यादि का प्रयोग किया जाता है। इस प्रकार की जैविक खेती से प्राप्त

खाद्य पदार्थों को साधारणतः जैविक खाद्य पदार्थ अथवा आरगैनिक फूड कहा जाता है।

द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद पूरे विश्व में खेती में रासायनिक खाद, जहरीले कीटनाशक इत्यादि का प्रयोग तेजी से बढ़ा। 1943 में से हरित क्रांति के नाम पर पूरे विश्व में तेजी से कृषि का सत्यानाश प्रारंभ हुआ। जैविक खेती के माध्यम से ही मानवजाति को स्वस्थ समृद्ध और आनंदमय जीवन प्राप्त हो सकता है। मिट्टी में अनेक प्रकार के जीवाणु पहले से ही मौजूद हैं जो हवा पानी से नाइट्रोजन, फॉस्फोरस, पोटाश तथा कई खनिज जैसे आवश्यक पोषक तत्व बनाकर पेड़-पौधों को उपलब्ध कराते हैं। इन जीवाणुओं को मिट्टी में रहने वाले केंचुएँ अपने गति और पाचन कुशल प्रबंधन से और उर्वरकता प्रदान कर देते हैं। गाय का गोबर इन केचुओं तथा मिट्टी के जीवाणुओं को अधिक पौष्टिक और क्षमता प्रदान करता है और जब पौध बढ़ते हैं पत्तियाँ फूल, फल की संख्या रस-गंध भी बढ़ जाते हैं। जिसके कारण पेड़-पौधों में कीट-पतंग का प्रकोप आ जाता है। लेकिन इससे डरने या घबराने की जरुरत नहीं बल्कि इन्हें नियंत्रित करने की जरुत है। गौ मूत्र और अनके प्रकार के औषधीय पत्तियों जैसे–नीम बेल तुलसी करंज धतुरा मंदार, सीताफल लहसून मिर्च आदि के द्वारा भी कीट नियंत्रक बनाया जाता है। और यह बहुत प्रभावकारी भी है। इन कीट नियंत्रकों का अंश ज्यादा देर बचता नहीं है मानव शरीर में जाता भी है तो हानि नहीं होती है कारण सभी पदार्थ जैविक है। जैविक खेती में सिंचाई के लिए पानी कम लगता है। मिट्टी के जीवाणु जैविक है। जैविक खेती में सिंचाई के लिए पानी कम लगता है। मिट्टी के जीवाणु मरते नहीं बल्कि जैविक खाद के कारण और पुष्ट हो जाते हैं। फसल में लगने वाले कीट पतंग को पौधों के ही रस से नियंत्रित करने से जीव समूह की हानि नहीं होती है और फसल भी सुरक्षित रहती है। इस प्रकार पर्यावरण में हो रहे व्यापक नुकसान को बचाने और मनुष्यों में हो रही अनेक प्रकार की बीमारियों की रोकथाम में जैविक खेती एक कारगर प्रयत्न होगा। लगभग 100 देशों में जैविक खेती का विकास पिछले दो-तीन वर्षों में 20 से 50 प्रतिशत से अधिक बढ़ा है।

पचास वर्ष पूर्व जब रासायनिक खाद और कीटनाशकों को कोई नहीं जानता था तब तक, किसान जो खेती करते थे वह सैकड़ों वर्षों से चली आ रही परम्परागत खेती थी जिसमें न तो यूरिया की आवश्यकता होती थी और न ही जहरीले कीटनाशकों की। इन सैकड़ों वर्षों की पुरानी व्यवस्था को अवैज्ञानिक घोषित कर 1950 के दशक से 'अधिक अन्न उपजाओं' नामक कार्यक्रम शुरू हुआ और रसायनिक खाद जैसे यूरिया व सुपर फास्फेट के कारखाने लगे। किसानों को अनुदान पर ये उर्वरक उपलब्ध कराये जाने लगे।

विगत पचास वर्षों में उपज तो बढ़ी परन्तु पर्यावरण के दूषित हो जाने की कीमत पर कृत्रिम आनुवांशिक परिवर्तित अनाज (Genetically modified food, GMF) के बीज बनने लगे।

यदि ठीक पद्धति से जैविक खाद तैयार की जाये तो भारत के खाद की समस्या हल हो जायेगी। छत्तीसगढ़ के कुछ प्रतिशत किसान ग्रामीण कृषि पशुपालन और उनके उत्पाद तथा अपशिष्ट पदार्थ का उपयोग स्थानीय स्तर पर कृषि एवं उस पर आधारित कार्यों में कर रहे हैं। जैविक खेती के लिए गोबर का उपयोग वर्मी खाद बनाने तथा गौमूत्र का उपयोग कीटनाशक तथा जीवमृत बनाने में किया जा रहा है। वर्तमान में प्रचलित पद्धतियों में अनेक किसानों द्वारा गौमूत्र को पाँच प्रकार की पत्तियों जैसे—नीम, करंजी, पपीता, सीताफल और मदार के साथ उबालकर ठंडा किया जाता है और छिड़काव हेतु विक्रय किया जा रहा है।

छत्तीसगढ़ में जैविक खेती के माध्यम से तिल, अलसी, कोदो कुटकी की खेती वृहद स्तर पर की जाती है। कई औषधीय पौधों की फसलें ली जाती है। संभावनाएँ अपार हैं किन्तु मृदा सुधार की चुनौतियों का सामना कर रहे किसान को गौ आधारित खाद निर्माण के प्रशिक्षण की अत्यंत आवश्यकता है।

जैविक कृषि फसल—पशुपालन का संगठित स्वरूप कृषकों को वर्षभर आय उपलब्ध कराता है। गोबर जैविक फसल लेने के लिए संसाधन की उपलब्धता भी सुनिश्चित करता है।

रिसर्च इन्स्टीट्यूट ऑफ आर्गेनिक एग्रीकल्चर के एफ आई बी एल सर्वे 2022 की रिपोर्ट में इस ट्रेंड का खुलासा हुआ है कि भारत दुनिया के शीर्ष तीन ऐसे देशों में सम्मिलित है जहाँ जैविक कृषि क्षेत्र में सर्वाधिक विस्तार हुआ है। इनमें छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश, राजस्थान आदि ऐसे राज्य हैं जहाँ जैविक कृषि भूमि का विस्तार हो रहा है।

जैविक खाद

जैविक खाद बनाने के लिए मूलतः गोबर, कृषि कचरा जो पौधों के डंठल, केले के पत्ते-तने, गन्ने के भूसे, डंठल, पेड़ की पत्तियाँ, घरेलू-सब्जियों के छिलके, नारियल के भूसे-पत्ते, पशुओं के मल, मुर्गियों के बीट, सब्जी मण्डी के सड़े बचे सब्जियाँ आदि की आवश्यकता होती हैं इसके अलावा कोई भी सड़ने वाले कृषि पदार्थ खाद बन सकते हैं। पर इन सभी में गाय-बैल का गोबर सर्वोत्तम है। अपने देश में अनेक तरीके से जैविक खाद बनाये जाते हैं पर जो पद्धति हम सरलता से ग्रामीण परिवेश में सामान्य तरीके से बना सकें उन्हीं का यहाँ वर्णन किया गया है।

साधारण ग्रामीण किसान हेतु-ढेर पद्धति

सामग्री—1 टन कृषि कचरा (घास-फूँस-पत्ता आदि), 1 टन पुराना गोबर, 20 किलो ताजा गोबर, 100 लीटर पानी इत्यादि।

नोट–उपलब्धता के अनुसार पुराना गोबर कम या ज्यादा हो चलेगा, ताजा गोबर ज्यादा उपलब्ध हो तो ज्यादा घोल तैयार करके छिड़कना उचित रहेगा।

पूर्व तैयारी– (1) पहले पुराने सूखे गोबर को 20 या 30 लीटर पानी से अच्छी तरह गिला कर लें।

(2) 20 किलो ताजा गोबर को 60 लीटर पानी में अच्छी तरह मिलाकर घोल बना लें।

बनाने की विधि– (क) (1) किसी बड़े पेड़ के नीचे जमीन को साफ और समतल करके 7 फीट लम्बा, 1 फीट चौड़ा तथा 1 फीट गहरा नाला खोद लें। नाले के ऊपर पौधों के मोटे डंठल को आपस में सटा के आड़ा करके पूल की तरह रख दें ताकि दो टन भार सह सके।

(2) नाले के दोनों तरफ एक–एक फीट छोड़कर 5 गुना 5 फीट की परिधि में जमीन पर 2 लीटर गोबर घोल का छिड़काव कर लें।

(3) अब इस 5 फीट की परिधि के ऊपर आठ इंच मोटी कृषि कचरे का परत ठीक तरह से डालें।

(4) इस कचरे के ऊपर 8 लीटर गोबर घोल का चारों तरफ छिड़काव करें।

(5) अब यह एक फीट का एक परत बन गया है इस प्रकार एक के ऊपर एक कुल सात या आठ बार कृषि कचरे की आठ इंच परत, फिर आठ लीटर गोबर घोल का छिड़काव फिर 4 इंच का गीला पुराना गोबर की परत डालने की क्रिया को दोहराते जाएँ।

(6) आठ परत डालने पर ढेर दबकर 5 फीट की ऊँचाई तक हो जाएगा।

(7) इस पाँच फीट की ढेर को मिट्‌टी और गोबर के मिश्रण से जमीन से लेकर ऊपर तक अच्छी तरह लिपाई कर दें। चार या पाँच दिनों के बाद यह ढेर सूखकर जगह-जगह टूट सकता है। अतः फिर से एक बार गोबर से लिपाई कर लें। तीन या चार दिनों के अंतराल पर 10 लीटर पानी का संभव हो तो छिड़काव करते रहें। इससे नमी बनी रहेगी और सड़न प्रक्रिया ठीक तरह से होगी।

(ख) (1) अब फिर से 20 किलो ताजा गोबर और 60 लीटर पानी का घोल तैयार कर लें।

(2) 30 दिनों बाद इस ढेर को तोड़कर फावड़े से आपस में अच्छी तरह मिलाकर नाले के बगल में रख लें।

(3) 7 फीट लम्बे नाले को साफ करके ऊपर फिर से डंठल रखकर 5 फीट की परिधि में गोबर घोल को छिड़क लें।

(4) एक माह पुराने ढेर को एक-एक फीट की ऊँचाई में डालते जाएँ और प्रति परत 20 लीटर गोबर घोल का छिड़काव करते जाएँ।

(5) ढेर अब मात्र तीन फीट का हो जाएगा। गोबर और मिट्‌टी के मिश्रण से पूरे ढ़ेर की फिर से लिपाई कर लें। पूर्व की ही तरह इस माह भी तीन या चार दिनों के अंतराल पर 10 लीटर पानी का छिड़काव करते रहें।

(ग) (1) अब फिर से 20 किलो ताजा गोबर और 60 लीटर पानी का घोल तैयार कर लें।

(2) 30 दिनों बाद इस ढेर को फिर से तोड़कर फावड़े से पदार्थ को आपस में अच्छी तरह मिलाकर एक तरफ रख लें।

(3) नाले को साफ करके ऊपर फिर से डंठल रखकर 5 फीट की परिधि में गोबर घोल को छिड़क लें। दो माह पुराने पदार्थ को एक-एक फीट की ऊँचाई में डालते जाएँ और प्रति परत या तह, 20 लीटर गोबर घोल का छिड़काव करते जाएँ।

(4) ढेर अब मात्र दो या ढाई फीट का हो जाएगा। गोबर और मिट्टी के मिश्रण से पूरे ढेर की फिर से लिपाई कर लें। पूर्व की ही तरह इस माह भी ढेर पर तीन या चार दिनों के अंतराल पर 10 लीटर पानी का छिड़काव करते रहें।

(घ) (1) फिर से 30 दिनों बाद उपरोक्त (ग) प्रक्रिया को पूरी तरह दोहराना है। पर तीसरे बार गोबर घोल को 6-6 इंच के परत या तह में छिड़काव करना है। बाकी सभी प्रक्रिया पूर्वानुसार ही होगा।

(2) 90 दिनों बाद पूरा ढेर उत्तम खाद बन जायेगा। अब इसे अपने खेत में उपयोग कर सकते हैं।

नोट–यह खाद अपने खेत में उपयोग के लिए तो ठीक है चूँकि इसमें मिट्टी मिला है। अतः बिक्री हेतु उचित नहीं है।

जीवामृत

देशी गाय के दूध का एक किलो घी बनाने के लिए 30 से 35 लीटर दूध की आवश्यकता होती है। दूध से दही बनाकर अच्छी तरह मथा जाता है। पानी डालते रहने पर मक्खन प्राप्त होता है जिसको गर्म करके घी प्राप्त किया जाता है। जब दही को पानी डाल-डालकर मथा जाता है तो मक्खन निकाल लेने पर छाछ बच जाता है। इस छाछ को ही जीवामृत बनाकर खेतों में प्रयोग करने से मिट्टी के गुण बढ़ जाते हैं। सूक्ष्मजीवियों की संख्या तथा क्रियाशीलता काफी बढ़ जाती है। जिससे फसलों को अच्छा पौष्टिक आहार मिलता है जिससे अधिक फूल, फिर अधिक उत्तम फल मिलता है। इससे न केवल खेत, पेड़-पौधों का बल्कि मनुष्य का भी स्वास्थ्य उत्तम होता है। छाछ में अत्यधिक जीवाणु की मात्रा पहले ही होती है अतः गुड़ मिलाने से उसकी वृद्धि हो जायेगी।

सामग्री

1. मिट्टी का घड़ा– 20 लीटर क्षमता
2. घी बनाने के बाद का छाछ– 10 लीटर
3. खाने वाला गुड़ – 1/2 किलो।

बनाने की विधि

गुड़ को एक लीटर छाछ में पहले ठीक तरह से घोल लें, फिर इस घोल को घड़े में डालकर बाकी छाछ को भी मिला दें। अच्छी तरह मिला देने के बाद कपड़े को घड़े से बाँध

दें। सात दिनों तक इसको पकने के लिए छोड़ दें। आठवें दिन इसमें 100 लीटर पानी मिलाकर एक एकड़ खेती की मिट्टी में डालें। खेत की उर्वरता अत्यधिक बढ़ जाएगी। मिट्टी के जीवाणु तथा केंचुओं में संख्यात्मक तथा गुणात्मक वृद्धि होगी, जिससे फसलों को अत्यधिक लाभ मिलेगा।

घनजीवामृत

यह भी एक प्रकार का जैविक खाद ही है।

सामग्री

1. देशी गाय का ताजा गोबर – 100 किलो
2. देशी गाय का ताजा गोमूत्र – 5 किलो
3. चने का आटा (बेसन) – 1 किलो
4. खाने वाला गुड़ – 1 किलो
5. तालाब या बरगद पेड़ की जड़ या जंगल की मिट्टी – 1 किलो

बनाने की विधि

गोमूत्र में गुड़ तथा बेसन का अच्छी तरह घोल तैयार कर लें।

गाय के ताजे गोबर को किसी कमरे में एक प्लास्टिक की पन्नी में छः इंच मोटाई में फैला लें।

अब गोबर के ऊपर जंगल या तालाब या बरगद के पेड़ के नीचे की मिट्टी को ठीक तरह से छिड़क दें फिर इसके ऊपर बेसन-गुड़ के घोल को भी ठीक तरह से डालकर फावड़े से पूरे गोबर में मिला दें।

अच्छी तरह मिलाने के बाद बोरी से ढँककर दो दिनों के लिए छोड़ दें। दो दिनों के बाद इसका गोइठा या थापिया बनाकर छाँव में सुखा लें। ठीक तरह से सूखने के बाद इसका चूरा करके प्लास्टिक बोरी में भरकर रखें। खेत में हल चलाने के बाद एक एकड़ खेत के मिट्टी में छिड़काव करें। इससे मिट्टी की गुणवत्ता और उर्वरता दोनों बढ़ जाएगी। घनजीवामृत को छः माह तक संरक्षित रखकर प्रयोग किया जा सकता है।

अमृत जल

सामग्री–10 लीटर गौ मूत्र, 10 किलो ताजा गोबर, 500 ग्राम खाने वाला गुड़, 20 लीटर वाला मिट्टी का घड़ा।

(1) घड़े में 10 लीटर गौ मूत्र लें, 500 ग्राम गुड़ को उसमें अच्छी तरह मिला लें, 10 किलो गोबर को भी उसमें डालकर ठीक तरह से मिला दें।

(2) इसे अब 7 दिनों तक सड़ने दें।

(3) 7 दिनों बाद इस घोल में 100 लीटर साफ पानी मिलाकर खेत के मिट्टी में छिड़कें।

नोट–इससे मिट्टी की उर्वरकता बढ़ जाती है और पौधों पर इसका उत्तम प्रभाव पड़ता है।

रसायनिक खाद व कीटनाशक समाप्त हो तथा उसकी जगह पर गोबर, गोमूत्र आदि से बनी जैविक (सेन्द्रिय) खाद काम में आने लग जाये तो भारत के गावों के किसानों का

प्रतिवर्ष 48 हजार करोड़ रूपया बचेगा। करोड़ों लोगों को अपने ही गाँव में रोजगार मिलेगा। भूमि की उर्वरा शक्ति बची रहेगी। मानव जीवन सुरक्षित रहेगा। पर्यावरण शुद्ध रहेगा।

जैविक खाद (सेन्द्रिय खाद) बनाते समय निम्न बातों को ध्यान में रखें–

1. जहाँ पर खेत हो या गौशालाएँ हो वहीं पर खाद बनायें।

2. बारिश का पानी बह कर खाद वाले स्थान पर न आये।

3. यथा संभव खाद छायादार स्थान पर बनावें।

4. कचरे का छोटा-छोटा टुकड़ा करके काम में लें।

5. कचरा विविध प्रजाति का होगा तो खाद में विविध तत्व आयेंगे।

6. कंकड-टीन, रबड़ प्लास्टिक के टुकड़े अलग करें।

7. रवानुमा दाना, मिट्टी की सुगंध और सुनहरा सुहानी रंग खाद उक्ताम पकने के तीन लक्षण है।

8. अधपकी खाद को छान कर अलग करलें तो पुनः खाद बनाने में इस्तेमाल करें।

9. तैयार खाद को छाँव में रखे तथा नमी बनाये रखने के लिए थोड़ा पानी छिड़कते जायें।

भारत की पूरी खेती योग्य भूमि 60 करोड़ एकड़ है जिसके लिए 300 करोड़ टन खाद चाहिये। यदि प्रत्येक गाय से प्रतिवर्ष 30 टन खाद का निर्माण किया जा सके तो हमारे पास 10 करोड़ गायें कम से कम चाहिये परंतु दुर्भाग्य वश उतनी गायें है नहीं तथा प्रतिवर्ष घटती जा रही है।

जैव उर्वरकों की आवश्यकता निम्न कारणों से हुई है–

1. रासायनिक खादों के निरन्तर व अधिक उपयोग से भूमि की उर्वरा शक्ति नष्ट होती जा रही है।

2. खेती में ट्रैक्टरों आदि के मशीनीकरण के कारण गोवंश व गोबर की खाद की दिनो-दिन कमी होती जा रही है।

3. लवणयुक्त पानी की कमी के कारण लाभकारी जीवाणुओं की संख्या में कमी होती जा रही है।

4. रसायनिक खाद के उपयोग के कारण अनाज के जहरीपन बढ़ता जा रहा है।

5. रसायनिक खाद के कारण लोगों में कैंसर, अस्थमा व श्वास संबंधी बीमारियाँ बढ़ती जा रही है।

जैसे दूध से दही बनाने के लिए जीवाणुओं की आवश्यकता रहती है वैसे ही जमीन में पोषक तत्वों की उपलब्धता बढ़ाने के लिए सूक्ष्म जीवाणुओं (जैविक उर्वरकों) की आवश्यकता रहती है।

रसायनिक खादें अप्राकृतिक है तथा इनके प्रयोग की अधिकता से कई तरह की बीमारियाँ तथा दुष्परिणाम होने लगे है। जबकि जैव उर्वरक पूर्ण रूप से प्राकृतिक है। इनकी अधिक मात्रा का भी कोई नुकसान नहीं है। गाय का

गोबर मिट्टी में रहने वाले केंचुओं और जीवाणुओं को अधिक पौष्टिक और क्षमता प्रदान करता है। जैविक खाद की वजह से मिट्टी के जीवाणु और अधिक पुष्ट हो जाते हैं।

श्री वेणीशंकर एन वसु की पुस्तक ''डंग इज गोल्ड माईन'' में स्पष्ट किया है कि गोबर में हमें सस्ता और श्रेष्ठ जैविक खाद तथा इससे उत्पन्न पौष्टिक व स्वादिष्ट खाद्यान्न, सब्जियाँ और फल कम लागत पर मिल सकते हैं। प्रसिद्ध भू-रसायन विशेषज्ञ डॉ. एच एल कोड़ ने कहा भी है कि आधुनिक कृषि से रोग तथा कीटाणु बढ़ते हैं, क्योंकि उर्वरकों का इस्तेमाल बढ़ा है। वही परम्परागत कृषि से जमीन की उर्वरा शक्ति कायम रहती है। एक गाय के वार्षिक गोबर से लगभग 80 टन खाद तैयार होती है। जिसकी कीमत रसायनिक खाद के भावों के अनुसार लगभग रूपये 40000 होती है अर्थात एक गाय मात्र गोबर से प्रतिमाह रू. 3300 की आय कराती है। डॉ. बी. के. हांडा ने परीक्षण करके सिद्ध किया है कि रसायनिक उर्वरक के कारण भूमिगत जल धीरे-धीरे दुषित होता जा रहा है।

मुक्तसर भटिंडा तथा लुधियाना जिले के 50 गावों में व्यापक शोध अध्ययन किया गया जिसमें रासायनिक जहर की मात्रा पानी, मिट्टी में अत्यधिक पायी गई जो विश्व स्वास्थ्य संगठन के मापदण्डों से बहुत ज्यादा थी लंदन के ही UCLA स्कूल ऑफ पब्लिक हेल्थ रिसर्च ने पाया कि इन रासायनिक खाद कीटनाशकों के कारण पार्किन्सन नाम की बीमारी लोगों में तेजी से बढ़ रही है।

समाधि खाद

गाय हमें अपने जीवन काल में दूध, गोबर गोमूत्र और अनेक बछड़ा-बछड़ियाँ देती हैं। बैल को हल जोतने और माल ढोने के लिए उपयोग करते हैं। गाय का दूध प्रतिदिन हम पीते हैं और गोबर, गोमूत्र से खेती करके अनाज, सब्जी, फल-फूल खाते हैं। जब गाय दूध नहीं देती और बैल कार्य योग्य नहीं होता है तब भी उसके गोबर तथा मूत्र से अनेक लाभ खेतों की उर्वरकता के लिए लेते हैं। पग-पग पर वह हमसे, खेत से और वनस्पतियों से जीवन भर जुड़ी हुई रहती है। वह हमारे परिवार का एक अभिन्न सदस्य है। इसलिए अपने परिवार के सदस्य की तरह ही उसकी अंतिम क्रिया करना आवश्यक है। इससे भी मनुष्य, खेत और वनस्पतियों को ही लाभ होगा।

अतः जब बूढ़ी गाय या बैल स्वतः मृत हो जायें तो अपने ही खेत में समाधिस्थ कर दें। यह हमारे लिए अत्यंत पुण्यकर होगा, क्योंकि गाय को पृथ्वी का प्रतिरूप कहा गया है। गाय के पेट में वही सारे सूक्ष्मजीव हैं जो पृथ्वी की मिट्टी में हैं, अतः जब गाय को अपने खेत में समाधिस्थ करते हैं तो धरती की मिट्टी में वही सूक्ष्म जीवाणु पनप जाते हैं। समाधिस्थ गाय के खाद को वापस खेत में ही डालने से केंचुएँ और जीवाणु की गुणात्मक तथा

संख्यात्मक वृद्धि से भूमि की उर्वरकता में अत्यधिक वृद्धि होती है।

बनाने की विधि

स्वतः मृत गाय को चमड़े सहित समाधिस्थ करना चाहिए, आवश्यक हो तो मात्र सींग निकाल लें, जिससे सींग खाद बनाने में उपयोग हो सकेगा। देशभर में अलग-अलग प्रांतों में अलग-अलग आकार, प्रकार की गायें हैं। स्वतः मृत गाय के आकार, प्रकार के अनुसार अपने खेत में गड्ढे खुदवाएँ जैसे– गाय छोटी हो, 200 से 250 किलो की हो तो 5 गुना, 3 गुना, 3 गुना लम्बा-चौड़ा तथा गहरे गड्ढे बनवाएँ। यदि गाय मध्यम हो, 400 से 600 किलो की हो तो 7 गुना, 4 गुना, 4 गुना लम्बा-चौड़ा तथा गहरे गड्ढे बनवाएँ और यदि गाय बड़ी हो 700 से 990 किलो की हो तो 8 गुना, 5 गुना, 5 गुना लम्बा-चौड़ा तथा गहरे गड्ढे बनवाएँ। गाय यदि गौशाला की हों तो सामूहिक समाधिस्थ करना उपयुक्त होगा, इसके लिए गायों की संख्या के अनुसार ही लंबाई-चौड़ाई, गहराई करें।

यहाँ मध्यम गाय के लिए एक प्रयोग दिया जा रहा है–

खेत में 7 × 4 × 4 लम्बा-चौड़ा तथा गहरे गड्ढे बनाएँ। पहले गड्ढे में 6 इंच तक ताजा गोबर डालें फिर मृत गाय को उसके ऊपर सुला दें। 50 किलो समुद्री नमक गाय पर डालें और अंत में गाय के ऊपर गोबर डालकर ढँक दें। अंत में सारी मिट्टी डालकर समाधि बना दें। एक या डेढ़ वर्ष बाद वहाँ खोदकर खाद निकाल लें। इसमें हड्डियाँ, खुर, बाल आदि बचे होंगे इसे वापस गड्ढे में डालकर मिट्टी डाल दें।

यह उत्तम खाद होगा जिसमें फॉस्फोरस, पोटॉश, नाइट्रोजन आदि अनेक पौष्टिक तत्व खेत के पौधों, फसलों को सालभर प्राप्त होगा अगर खाद नहीं निकालना (श्रद्धा के कारण) है तो वहाँ कोई फलदार वृक्ष रोप दें इससे वह पेड़ जीवनभर भरपूर स्वादिष्ट फल देता रहेगा।

कीट नियंत्रक

सामग्री–(1) 20 लीटर वाला मिट्टी का घड़ा, (2) 10 लीटर गौ मूत्र, (3) 2 किलो नीम पत्ता, (4) 1 किलो बेल पत्ता, (5) 1 किलो धतुरा पत्ता, (6) 1 किलो आँक का पत्ता, (7) 250 ग्राम तुलसी पत्ता, (8) 50 ग्राम लहसुन, (9) 50 ग्राम हरी मिर्च।

बनाने की विधि–(1) घड़े में 10 लीटर गौमूत्र को लें, 2 किलो नीम पत्ते को कूटकर घड़े में डालें, बारी-बारी से बेल, आँक, धतुरे और तुलसी के पत्तों को कूटकर घड़े में अच्छी तरह मिला दें। अब 50 ग्राम हरी मिर्च और 50 ग्राम लहसुन को कूटकर मिला दें। इसे 7 दिनों तक सड़ने दें।

इसे दस गुणा पानी मिलाकर प्रत्येक 12 से 15 दिनों में छिड़काव करते रहें। किसी प्रकार का कीड़ा नहीं लगेगा।

●●

26. केचुआँ (किसानों का मित्र)

जैविक खेती का मूल आधार केंचुआ है। जिस खेत में जितना केंचुआ होगा उस भूमि की उर्वरकता उतनी ही ज्यादा होगी। वैज्ञानिकों का मत है कि एक घन मिट्टी में कम-से-कम 7 केंचुए होने ही चाहिए। केंचुओं के लगातार बिल बनाकर चलते रहने से जमीन भुरभुरी होकर हवा तथा पानी ग्रहण करती है। पौधों के लिए अपने मल से पोषण आहार तैयार करते हैं और सूक्ष्मजीवाणुओं का पोषण कर सक्रिय करते है। केंचुए भूमि के जैविक पदार्थों को पचाकर नयी मिट्टी बनाने का काम करते हैं।

केंचुआ की जानकारी

देशी केंचुए खेत में हमेशा पाये जाते है। खेतों में यदि रासायनिक उर्वरक का इस्तेमाल नहीं किया जाय तो केंचुओं की संख्या स्वतः ही बढ़ने लगेगी। ये केंचुएं स्वतः ही खाद बनाते रहते है। केंचुए की कुछ विशेष प्रजाति गोबर व अन्य कार्बनिक पदार्थों को खाकर खाद बना देती है।

केंचुओं की महत्ता व उपयोगिता

केंचुओं की उपयोगिता बहुत अधिक है। केंचुआ मानव जाति का विशेषतया किसान का मित्र है। इसे जमीन की आंत कहा जाता है क्योंकि यह भूमि को पलटने व उसे ऊर्वरा बनाने का कार्य करता है।

केंचुएं अपनी प्रजाति के अनुसार भूमि की ऊपरी सतह पर पड़े गल सड़ रहे कूड़ा करकट की तह से लेकर भूमि की विभिन्न सतहों में रहते है। एक विशेषज्ञ के अनुसार केंचुए 2 से 250 टन मिट्टी प्रति हैक्टेयर प्रतिवर्ष उलट देते है। इसके अनुसार लगभग 1 से 5 मिली मीटर मिट्टी की सतह प्रतिवर्ष नीचे से ऊपर आ जाती है।

केंचुओं का पाचन तंत्र बड़ा ही व्यवस्थित रहता है। उसके द्वारा खाया गया आर्गेनिक वेस्ट उसकी आंतों में पूरी तरह चक्की जैसी पिसाई की प्रक्रिया से गुजरता है। अब जबकि जैविक खेती पर अधिकाधिक जोर दिया जा रहा है केंचुओं का उपयोग आर्गेनिक वेस्ट को आर्गेनिक मेन्योर में बदलने बायो-लोजिकल टूल्स के रूप में किया जा सकता है।

केंचुए प्रतिवर्ष प्रति एकड़ अनेक टन कास्ट (मल) पैदा करते हैं। ये मिट्टी के बनावट, जल के बहाव को बदल देते हैं। छत्तीसगढ़ में भी व्यवसायिक रूप में वर्मी कम्पोस्टिंग का कार्य प्रारंभ हुआ है परन्तु जन सामान्य में जागरुकता की आवश्यकता है।

यदि वर्मी कम्पोस्टिंग टेक्नोलॉजी को जन सामान्य तक पहुँचाकर लोकप्रिय बनाया जाये तो इससे न केवल कृषि को स्वावलम्बी, टिकाऊ व कम खर्चीली बनाया जा सकता है, बल्कि व्यावसायिक स्वरूप देकर कितने ही बेरोजगारों को स्वरोजगार उपलब्ध कराया जा सकता है।

27. ट्रैक्टर : किसानों के लिए कर्ज और ज़हर दोनों

खेती में 'सुविधा' के नाम पर ट्रैक्टरों को इस तरह बढ़ावा दिया गया कि किसानों को दोहरा नुकसान हुआ–पहला, उन्हें कर्ज़ के जाल में फंसा दिया, और दूसरा, धीमे ज़हर (Tonic Exposure) के संपर्क में लाकर उनके स्वास्थ्य को बर्बाद कर दिया। इसके साथ ही ट्रैक्टरों ने बैलों को कृषि से बाहर कर दिया, जिससे मिट्टी की उर्वरता और पारिस्थितिकी तंत्र को गहरा नुकसान हुआ।

1. जानलेवा धुआं : एग्जॉस्ट पाइप का छुपा षड्यंत्र–क्या आपने कभी सोचा कि ट्रैक्टर का एग्जॉस्ट पाइप आगे की ओर ही क्यों रखा जाता है ?

● जब किसान ट्रैक्टर चलाता है, तो उसका पूरा शरीर डीजल के अधजले कणों, कार्बन मोनोऑक्साइड, नाइट्रोजन ऑक्साइड और अन्य जहरीली गैसों के सीधे संपर्क में रहता है।

● लंबे समय तक इस धुएँ में रहने से अस्थमा, ब्रोंकाइटिस, फेफड़ों की बीमारियाँ और कैंसर तक का खतरा बढ़ जाता है।

● यह एक धीमा ज़हर है, जिससे किसान अनजाने में हर दिन अपने शरीर को नुकसान पहुंचा रहे हैं।

2. ट्रैक्टर : कर्ज़ का दलदल–पहले बैल आधारित खेती में ना डीजल का खर्च था, ना लोन की चिंता, और ना ही महंगे मेंटेनेंस की ज़रूरत।

● ट्रैक्टरों को खरीदने के लिए किसान लोन लेते हैं, जिससे वे कर्ज़ के जाल में फंस जाते हैं।

● इसके बाद डीजल, मेंटेनेंस, इंजन ऑयल और रिपेयरिंग पर हर साल भारी खर्चा आता है।

● खराब मौसम या फ़सल बर्बाद होने की स्थिति में, किसान लोन चुकाने में असमर्थ हो जाता है, और आत्महत्या जैसे दुर्भाग्यपूर्ण कदम उठाने के लिए मजबूर होता है।

3. मिट्टी की बर्बादी : अनदेखी सच्चाई–ट्रैक्टर सिर्फ किसानों के लिए ही नहीं, बल्कि मिट्टी के लिए भी ज़हर साबित हो रहा है।

● लगातार ट्रैक्टर से जुताई करने पर मिट्टी की ऊपरी परत (Topsoil) तेजी से खराब होती है, जिससे उर्वरता घटती है।

● बैलों से जुताई करने में मिट्टी की संरचना बनी रहती थी, लेकिन ट्रैक्टर की तेज़ रफ़्तार और भारी वजन से ज़मीन की नमी खत्म हो जाती है, जिससे बंजर भूमि बढ़ती जा रही है।

● ट्रैक्टर की गहरी और तेज़ जुताई से मिट्टी के प्राकृतिक बैक्टीरिया और सूक्ष्म जीव नष्ट हो जाते हैं, जिससे जैविक संतुलन बिगड़ता है।

4. ट्रैक्टरों ने बैलों को कृषि से बाहर कर दिया– ट्रैक्टरों के बढ़ते उपयोग ने बैलों को पूरी तरह से कृषि से बेदखल कर दिया। पहले हर किसान के पास बैल होते थे, जो खेती में मदद करने के साथ-साथ गोबर खाद भी देते थे।

- ट्रैक्टर आने के बाद बैल अनुपयोगी माने जाने लगे, जिससे किसानों ने उन्हें पालना बंद कर दिया।
- नतीजा यह हुआ कि कई देशी बैल नस्लें विलुप्ति के कगार पर पहुँच गईं और हजारों बैल या तो बूचड़खानों में पहुँच गए या सड़कों पर छोड़ दिए गए।
- बैलों से जुताई करने पर मिट्टी की परतें सुरक्षित रहती थीं, लेकिन ट्रैक्टर ने इस संतुलन को खत्म कर दिया, जिससे जल संरक्षण और जैविक खेती पर बुरा असर पड़ा।
- ट्रैक्टर ने जैविक खाद को खत्म किया, रासायनिक उर्वरकों को बढ़ाया
- बैलों के गोबर से खेतों को मुफ्त में जैविक खाद मिलती थी, जिससे मिट्टी प्राकृतिक रूप से उपजाऊ बनी रहती थी।
- ट्रैक्टर के बढ़ते उपयोग के कारण बैल कम हुए, गोबर खाद की मात्रा घटी और किसानों को महंगे रासायनिक उर्वरकों पर निर्भर होना पड़ा।
- अधिक रासायनिक खादों के प्रयोग से मिट्टी की उर्वरता और जलधारण क्षमता नष्ट हो रही है, जिससे किसान की लागत बढ़ रही है और उनकी ज़मीनें बंजर हो रही हैं।

5. बैल आधारित खेती ही भविष्य है– ट्रैक्टर का बढ़ावा सिर्फ मशीनरी की ओर बढ़ने का संकेत नहीं था, बल्कि यह बैलों को कृषि से हटाने की एक सोची-समझी साजिश थी।

- इसका असर किसानों की आर्थिक स्थिति, मिट्टी की उर्वरता, जल संरक्षण और जैविक खादों की उपलब्धता पर पड़ा।
- बैल आधारित खेती सिर्फ अतीत की बात नहीं, बल्कि भविष्य के लिए भी जरूरी है।
- इसे पुनर्जीवित करना मिट्टी, पर्यावरण और किसानों के हित में है।

अब समय आ गया है कि हम ट्रैक्टर से वापस बैलों की ओर लौटें और एक स्वस्थ, टिकाऊ और कर्ज़-मुक्त कृषि व्यवस्था की ओर कदम बढ़ाएं।

●●

28. गौ-आधारित उद्योग और स्टार्टअप : नवाचार और उद्यमिता के अवसर

भारत की परंपरा में गाय को केवल धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टि से ही महत्वपूर्ण नहीं माना गया, बल्कि इसे जीवन-पद्धति और अर्थव्यवस्था की आधारशिला के रूप में भी ग्रामीण समाज में सदियों से गाय का संबंध केवल दूध तक सीमित नहीं रहा, बल्कि उससे जुड़ी अनेक गतिविधियाँ आजीविका और सामूहिक सहयोग का माध्यम रही हैं। किंतु आधुनिक वैश्विक अर्थव्यवस्था और स्टार्टअप कल्चर के युग में यह परंपरा एक नए रूप में पुनर्जीवित हो रही है।

आज दुनिया ऐसे उत्पादों और सेवाओं की तलाश कर रही है जो जैविक (organic), पर्यावरण-अनुकूल (eco-friendly), और स्वास्थ्यवर्धक (health-friendly) हो। इस दृष्टि से गाय से प्राप्त संसाधन–दूध, गोबर और गौमूत्र–असीम संभावनाएँ प्रदान करते हैं। यह न केवल पारंपरिक कृषि और स्वास्थ्य-पद्धति को मजबूत बनाते हैं, बल्कि आधुनिक बाज़ार में विकास और नवाचार का आधार भी बन सकते हैं।

पिछले एक दशक में भारत में अनेक युवा उद्यमियों और स्टार्टअप्स ने इस क्षेत्र को एक नए नजरिए से देखा है।

1. शहरी उपभोक्ताओं तक सीधे A2 दूध पहुँचाने वाले स्टार्टअप्स,

2. गोबर से जैविक खाद और ऊर्जा उत्पादन करने वाली इकाइयाँ,

3. गौमूत्र से हर्बल औषधियों और सफाई उत्पाद बनाने वाले उद्योग,

4. गोबर से बने कागज, पेंट और सजावटी वस्तुओं जैसे इको-फ्रेंडली उत्पाद

ये सभी उदाहरण दर्शाते हैं कि गौ-आधारित उद्योग अब केवल पारंपरिक रोजगार नहीं, बल्कि आधुनिक उद्यमिता और स्टार्टअप इकोसिस्टम का भी महत्त्वपूर्ण हिस्सा बन चुके हैं।

सरकार द्वारा स्टार्टअप इंडिया, मेक इज इंडिया, आत्मनिर्भर भारत और ग्रामीण उद्यमिता जैसे अभियानों ने इस दिशा को और गति दी है। इसके अतिरिक्त, वैश्विक स्तर पर 'सतत विकास' और 'ग्रीन इकॉनामी' पर बढ़ता फोकस भारतीय गो-आधारित उत्पादों को अंतर्राष्ट्रीय बाजार में अवसर प्रदान कर रहा है।

इस प्रकार गो-आधारित उद्योग और स्टार्टअप न केवल भारत की परंपरा और संस्कृति का पुनरुत्थान है, बल्कि वे भविष्य की सतत, आत्मनिर्भर और नवाचार-प्रधान अर्थव्यवस्था के भी प्रतीक हैं। यह अध्याय इन्हीं अवसरों, नवाचारों और चुनौतियों पर प्रकाश डालता है और विद्यार्थियों को यह

समझाने का प्रयास करता है कि गाय और गो-आधारित संसाधन कैसे स्टार्टअप और उद्यमिता की नई दिशा प्रदान कर सकते हैं।

1. दुग्ध और दुग्ध-उत्पाद आधारित उद्योग–भारत विश्व का सबसे बड़ा दुग्ध-उत्पादक देश है। इस क्षेत्र में अनेक स्टार्टअप और उद्योग कार्यरत हैं–

दुग्ध और दुग्ध-उत्पाद आधारित उद्योग

ऑर्गेनिक A2 दूध आपूर्ति	**दुग्ध-प्रसंस्करण इकाइयाँ**	**फार्म-टू-कंज्यूमर ब्रांड**
शहरी क्षेत्रों में सीधे खेत से घर तक A2 दूध पहुँचाने वाले स्टार्टअप तेजी से बढ़ रहे हैं।	दही, घी, पनीर, आइस्क्रीम, हेल्दी स्नैक बार और प्रोबायोटिक पेय जैसे उत्पादों की माँग बढ़ रही है।	किसान स्वयं मिलकर ब्रांड बनाकर उपभोक्ता तक उत्पाद पहुँचा रहे हैं, जिससे मध्यस्थता घटती है और लाभ बढ़ता है।

2. गोबर-आधारित उद्योग–गोबर अब केवल खाद तक सीमित नहीं रहा। इसके बहुआयामी प्रयोग उद्योग और स्टार्टअप को नई दिशा दे रहे हैं।

गोबर-आधारित उद्योग

जैविक खाद और कीटनाशक	**बायोगैस संयंत्र और ऊर्जा उत्पादन**	**गोबर-आधारित उत्पाद**	**गो-कागज (Cow Dung Paper)**
रासायनिक विकल्पों की तुलना में सुरक्षित और सस्ते	ग्रामीण परिवारों और उद्योगों के लिए स्वच्छ ऊर्जा का स्रोत	ईंट, पेंट, प्लाईवुड, मूर्तियाँ, अगरबत्ती, दीये और सजावटी वस्तुएँ	राजस्थान और उत्तराखंड जैसे यह राज्यों में स्टार्टअप पर्यावरण-अनुकूल उद्योग के रूप में लोकप्रिय हो रहा है

3. गोमूत्र-आधारित स्टार्टअप–आधुनिक शोधों ने गोमूत्र को औषधीय और औद्योगिक उपयोग के लिए उपयुक्त साबित किया है।

गोमूत्र-आधारित स्टार्टअप

- **आयुर्विदिक औषधियाँ** → कैंसर, मधुमेह, त्वचा रोग और प्रतिरक्षा शक्ति के लिए उत्पाद
- **सफाई उत्पाद** → फिनाइल, कीटाणुनाशक और डिटर्जेंट
- **कॉस्मेटिक्स और हेल्थकेयर** → साबुन, शैम्पू, फेस पैक और हर्बल टॉनिक

4. नवाचार और स्टार्टअप मॉडल–आज कई युवा उद्यमी और स्टार्टअप इस क्षेत्र में सफल प्रयोग कर रहे हैं–

नवाचार और स्टार्टअप मॉडल

- **इको-फ्रेंडली पैकेजिंग** → गोबर-आधारित पॉट्स और बायोडिग्रेडेबल पैक
- **ऑर्गेनिक फार्मिंग सप्लाई** → किसानों को सीधी सप्लाई चेन से जोड़ना
- **ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म** → गो-आधारित उत्पादों की ऑनलाइन बिक्री और ग्लोबल मार्केट तक पहुँचना
- **CSR और सामाजिक उद्यमिता** → कंपनियाँ गोशालाओं के साथ मिलकर सामुदायिक-आधारित उद्योग खड़ा कर रही है

गो-आधारित उद्योग और स्टार्टअप केवल परंपरा का पुनरुत्थान नहीं है, बल्कि नवभारत की आर्थिक और सामाजिक प्रगति के नए मॉडल हैं। ये उद्योग जहाँ एक ओर ग्रामीण युवाओं को रोजगार और उद्यमिता के अवसर देते हैं, वहीं दूसरी ओर पर्यावरण संरक्षण और वैश्विक सतत विकास में भी योगदान करते हैं। आने वाले वर्षों में यदि इस क्षेत्र को उचित प्रोत्साहन, वैज्ञानिक सहयोग और वैश्विक बाजार से जोड़ा जाए, तो यह न केवल भारत बल्कि पूरी दुनिया के लिए **सतत विकास और हरित अर्थव्यवस्था** का आदर्श बन सकता है।

●●

29. ग्लोबल वार्मिंग रोकने में गाय की भूमिका

ग्लोबल वार्मिंग शब्द का अर्थ है पृथ्वी की जलवायु प्रणाली का समय के साथ गर्म होना जो मानव गतिविधियों के कारण पूर्व-औद्योगिक समय से देखा जा रहा है।

ग्लोबल वार्मिंग शायद हमारे समय की सबसे गंभीर समस्याओं में से एक है और भविष्य में आने वाली पीढ़ियों के लिए भी। पर्यावरण वैज्ञानिक हमें बताते हैं कि अगर वैश्विक स्तर पर बढ़ते तापमान में हर साल सिर्फ 1°C की वृद्धि होती है, तो ग्रह पृथ्वी और उसके निवासी, जिसमें लोग, पौधे, जानवर और अन्य सभी जीवन रूप शामिल हैं। खत्म होने के गंभीर खतरे में होंगे। वर्तमान समय में, ग्लोबल वार्मिंग के प्रभाव हमारे चारों ओर दिखाई दे रहे हैं। इस स्थिति को देखते हुए हमें जल, जंगल, जमीन और जीव को बचाने के सार्थक उपाय करने होंगे। आज जल जहरीला हो रहा है। कारण हमने अपनी कृषि में अत्यधिक रासायनिक खाद कीट नाशक का प्रयोग किया है। नदीयों के जल में 60% प्रदूषण है। वह जल हमें पीने को मिलता है। अतः गोबर, गौमूत्र के द्वारा भूमि को शुद्धकर जल प्रदूषित होने से बचाया जा सकता है। जहाँ कुएँ सूख गए हैं उनमें अनेकबार गोबर, गौमूत्र डालने से वहाँ जल आ जाता है। बंजर होती भूमि को बचाने और पर्यावरण को सुरक्षित रखने हेतु गौ आधारित कृषि को बढ़ावा देना होगा। वह भी देशी गोवंश पर आधारित। जर्सी होलस्टन/गाय नहीं। उसका गोबर, गौमूत्र, दूध मनुष्य के लिए हानिकारक है।

पिछली कुछ शताब्दियों में, जब से मनुष्य ने शक्ति की खोज की है, सचमुच हमने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। कोयले की खदानों से आने वाली बिजली और इस बिजली से चलने वाली ट्रेनें, जीवाश्म ईंधन का उपयोग करके बनाए गए वाहन आदि सभी ग्लोबल वार्मिंग के योगदानकर्ता हैं।

औद्योगीकरण, वनों की कटाई, विनिर्माण या उत्पादन विधियाँ, बढ़ती जनसंख्या आदि।

जीवाश्म ईंधन ऊर्जा के गैर-नवीकरणीय स्रोतों जैसे–तेल, पेट्रोलियम, कोयला आदि को संदर्भित करता है जिन्हें बनने में लाखों साल लगे हैं और उनके उपयोग से पर्यावरण बहुत प्रदूषित होता है। पेड़ और पौधे कार्बन-डाइऑक्साइड लेते हैं और उसकी जगह ऑक्सीजन छोड़ते हैं यही कारण है कि वनों की कटाई अविश्वसनीय रूप से खतरनाक है और ग्लोबल वार्मिंग के लिए एक बड़ा कारण है।

ग्लोबल वार्मिंग के प्रभाव

ग्लोबल वार्मिंग के सबसे स्पष्ट प्रभावों में से एक यह है कि ग्रह दिन-प्रतिदिन गर्म होता जा रहा है जिसके परिणामस्वरूप गंभीर तापमान की स्थिति पैदा हो जाती है। जहाँ जैव विविधता वाले पारिस्थितिकी तंत्र पनप नहीं पाते या जीवित भी नहीं रह पाते और यहाँ तक कि मौसम की स्थिति की गंभीरता के कारण मानव आबादी भी खत्म हो सकती है।

प्राकृतिक आपदाओं का बढ़ता प्रचलन

पिछले कुछ दशकों में, हमने ग्लोबल वार्मिंग के प्रभावों के रूप में पहले की तुलना

में बहुत अधिक बवण्डर, तूफान, जंगल की आग आदि देखी है।

पिघलते ग्लेशियर और बढ़ता समुद्री स्तर

जैसे-जैसे ग्रह गर्म होता जा रहा है दुनिया भर में ग्लेशियर और बर्फ की परतें पिघलती जा रही है, जिससे समुद्र का स्तर बढ़ता जा रहा है। बढ़ते समुद्री स्तर का परिणाम पृथ्वी की भूमि की सतह पर जगह का कम होना है, जिससे कई द्वीप राष्ट्रों के पूरी तरह से डूब जाने का खतरा है। साथ ही ग्लोबल वार्मिंग के कई अन्य प्रभाव भी हैं।

जैव विविधता का नुकसान

ग्लोबल वार्मिंग के प्रभाव बर्फ पिघलने, जंगल की आग, बाढ़ आदि के रूप में जारी रहने के कारण इन प्रभावित क्षेत्रों के जैव विविधता वाले पारिस्थितिकी तंत्र नष्ट हो रहे हैं। ग्लोबल वार्मिंग के परिणामस्वरूप हम पहले ही वन्यजीवों और जैव विविधता की कई प्रजातियों को खो चुके हैं।

मनुष्य को यदि शाश्वत जीवन जीना है तो उसे प्रकृति के साथ तालमेल बनाकर ही चलना होगा। प्रकृति को ही आधार बनाकर मनुष्य को अपनी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति करनी होगी। प्रकृति अर्थात् जल, जमीन, जंगल तथा जीव इन चार के माध्यम से ही मनुष्य हजारों वर्षों तक सुखी सम्पन्न जीवन यापन कर सकता है।

अंतरिक्ष में सूर्य का तापमान बढ़ जाना, ओजोन परत में छिद्र होना, पृथ्वी का तापमान अधिक बढ़ना, हिमखण्ड पिघलना, समुद्र जल स्तर में वृद्धि होना, पृथ्वी पर भूकंप, ज्वालामुखी, सुनामी लहर जैसे प्रकृति प्रकोप प्रतिदिन बढ़ते जाना, पेड़-पौधों की कटाई से पर्यावरण संतुलन बिगड़ना, कृषि भूमि की उर्वरा शक्ति नष्ट होना, खाद्यान्न उत्पादन– अनाज, फल-फूल, साग-सब्जी आदि में कमी होना, गौ हत्या, जीव हत्या से रोग एवं पर्यावरण प्रदूषण बढ़ना, पृथ्वी पर अग्नि के बढ़ते तापमान को नियंत्रित करना आवश्यक है। यज्ञ विज्ञान के द्वारा उत्पन्न सात्विक ऊर्जा पृथ्वी में ग्लोबल वार्मिंग को रोकती है। अतः गौ घृत से हवन, बड़े परिमाण में बार-बार किया जाए तो कार्बन डाई-ऑक्साइड के खतरें से बचाया जा सकता है।

हम लाखों वर्षों से खेती करते आ रहे हैं। उसका आधार गोमाता ही थी। गोबर, गोमूत्र भूमि को उर्वरा व सुगंधित बनाता है। आज जंगल नष्ट हो रहे हैं। हमें 33% जंगल शुद्ध पर्यावरण के लिए चाहिए पर आज 7% बचे हैं। उन्हें भी नष्ट किया जा रहा है। आज गोवंश को जंगल में चरने नहीं जाने दिया जाता तर्क यह देते हैं कि गाय जंगल नष्ट करती है। जबकि गोवंश से जंगल को कोई नुकसान नहीं है। वास्तविकता यह है कि गाय खाती नहीं, चरती है। उसके करण अनेक प्रकार के बीज उसके पेट में जाते हैं वे गोबर में उपचारित होकर जब जंगल में गिरते हैं उससे नये पौधे उगते हैं। अतः गौमाता के कारण जंगल की वृद्धि होती है। अतः जंगल को बढ़ाने के लिए भी गौमाता का जंगल में घूमना जरुरी है।

ग्लोबल वार्मिंग के कुप्रभाव से बचने जल, जंगल, जमीन, जीव समूह, पर्यावरण,

मनुष्य, संस्कारों को बचाये रखने का आधार गौमाता है। अतः गौमाता का संरक्षण संवर्धन अत्यंत आवश्यक है। गाय का गोबर मिट्टी में रहने वाले जीवाणु के लिए सर्वश्रेष्ठ भोजन है इसमें मिट्टी के जीवाणुओं में संख्यात्मक व गुणात्मक वृद्धि होती है। इस वृद्धि के कारण हवा व पानी से मिट्टी के जीवाणु नाइट्रोजन, फास्फोरस, पोटाश तथा अनेक खनिज पदार्थ पेड़-पौधों की जड़ों को उपलब्ध कराते हैं जिससे पेड़-पौधों में पत्ती-डालियाँ अधिक जगती है। घने पेड़ में रस-गंध अधिक होने के कारण अनेक कीट पतंगे, कीड़े-मकोड़े आकर्षित होकर आते हैं। इन कीट पतंगों को खाने के लिए अनेक प्रकार के पक्षी फिर इनको खाने के लिए बड़े पक्षी आते हैं। वनस्पति अधिक होने के कारण वनस्पति को खाने वाले जीव-जंतु की संख्या बढ़ती है जैसे–हिरण, खरगोश आदि। शाकाहारी जीवों की संख्या ज्यादा होने से उन जानवरों को खाने के लिए माँसाहारी जानवरों का विकास हो जाता है। इस प्रकार एक पूरे जीव समूह का चक्र बनता है और इस जीव समूह चक्र के कारण मनुष्य जीवन सुखमय शांतिमय तथा समृद्ध होता है। वनस्पति जीव-जंतु के कारण पर्यावरण संतुलन बना रहता है जिससे समय पर वर्षा प्रचुर मात्रा में होती है और सबको जल प्राप्त होता है। मिट्टी के जीवाणुओं को, पेड़-पौधों को, उनमें पलने वाले जीव-पक्षियों को जंगल में रहने वाले शाकाहारी, मांसाहारी जीवों तथा मानव को पीने व दैनिक उपयोग के लिए आवश्यक जल प्राप्त होता रहता है। इस प्रकार सम्पूर्ण जीव समूह का पालन गोमाता करती है। हमारे यहाँ 84 लाख प्रजातियाँ मानी गई हैं, उनमें 20 लाख प्रजाति वनस्पति रूप में है। बाकी प्रजातियाँ चर हैं जो चलकर भोजन प्राप्त कर लेते हैं। पर्यावरण का उत्तम संरक्षण हमारी गोमाता करती है। वनस्पति को भोजन गाय अपने गोबर, गौमूत्र से देती है। सूर्य उनको प्रकाश देता है। धरती माता उन्हें गंध देती है। वायु देवता उनको श्वास लेने के लिए वायु देते हैं। इन्द्र देवता उनको वर्षा के द्वारा जल देते हैं। अतः हमारे यहाँ कहा है 'जीव जीवस्य जीवनम्'। अतः परिस्थितकीय पर्यावरणीय संतुलन बनाये रखने और ग्लोबल वार्मिंग के बढ़ते कुप्रभावों से बचने के लिए गौ संवर्धन अत्यंत आवश्यक है। 'पृथ्वी सूक्त' में विवरण मिलता है कि किस तरह यज्ञ पर्यावरण की रक्षा करते हैं। हमारी संस्कृति 'यज्ञमयी' संस्कृति है। गाय के 100 ग्राम घी से यज्ञ करने पर दस टन ऑक्सीजन निर्माण होती है। गौ घृत वेद मंत्र उच्चारण के साथ जब अग्नि में डाला जाता है तो उससे उत्पन्न सात्विक यज्ञ ऊर्जा मंत्र ध्वनि कम्पन के द्वारा विश्व ब्रह्माण में विशेष रूप से प्रसारित होती है जिसके प्रभाव से वायुमण्डल में 'ओजोन परत' का निर्माण होता है। अंतरिक्ष एवं भू-मण्डल पर सभी ग्रहों नक्षत्रों का तापमान, प्रभाव संतुलित होता है। सूर्य की प्रथम किरणें जो सृष्टि को प्राण ऊर्जा और पोषण देती है। उससे बल एवं शक्ति प्राप्त होती है। गौमाता यज्ञ ऊर्जा के माध्यम से प्राण शक्ति का सृजन करती है।

●●

30. भूजल स्तर गिरावट–कारण, इसे रोकने में गाय की भूमिका

भूजल गिरावट से जुड़ी कुछ खास बातें समझना अति आवश्यक है। जलवायु परिवर्तन से तापमान में वृद्धि और बारिश के पैटर्न में बदलाव होता है जिससे भूजल प्रणालियाँ सीधे प्रभावित होती हैं। भूजल स्तर में गिरावट के कई कारण हैं जैसे–कृषि के लिए भूजल की बढ़ती माँग, सिंचाई के लिए भूजल पंपिंग और प्रदूषण, भूजल स्तर में गिरावट से फसलों की पैदावार पर असर पड़ता है। वर्षा जल संचयन, जल उपचार प्रणालियों में निवेश, सिंचाई तकनीकों में सुधार, भूजल संसाधन दुनिया का सबसे मूल्यवान प्राकृतिक संसाधन हैं।

दोषपूर्ण सिंचाई प्रणाली व खेती में बढ़ते कृषि रसायनों के प्रयोग से भूजल की गुणवत्ता, भूमि के उपजाऊपन एवं फसल उत्पादों की गुणवत्ता में कमी और उत्पादकता में कमी जैसी समस्याएँ सामने आ रही हैं जिसका अंततः मानव स्वास्थ्य पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है।

जल संकट का प्रमुख कारण दुनिया की आबादी में वृद्धि, लोगों के जीवन स्तर में सुधार, खपत के बदलते पैटर्न पानी की बढ़ती वैश्विक माँग जैसे कुछ कारण हैं। जलवायु परिवर्तन जैसे–मौसम के बदलते पैटर्न, बड़े पैमाने पर पेड़ों की कटाई, प्रदूषण में वृद्धि, ग्रीनहाउस गैसें और पानी का बेकार इस्तेमान पानी की अपर्याप्त आपूर्ति का कारण बनता है।

भूजल रिक्तीकरण का सबसे अच्छा समाधान सतही जल की आपूर्ति बढ़ाने और भूजल की माँग को कम करने से भूजल की कमी को कम किया जा सकता है जिससे स्थिरता को बढ़ाया जा सकता है। भारत में घटते जलस्तर का मुख्य कारण देश में पानी के परम्परागत स्रोत कम वर्षा व बेतरतीब दोहन के चलते खत्म होते जा रहे हैं। भूजल की समस्या का समाधान फसल चक्र के निर्धारण से भूजल को संरक्षित किया जा सकता है। कम जल वाले क्षेत्रों में कम जल खपत वाली फसलें उगाई जानी चाहिए तथा जहाँ जल की अधिक खपत है। वहाँ अधिक जल खपत वाली फसलें उगाई जानी चाहिए। हर क्षेत्र में जल की उपलब्धता के अनुसार फसल उगाने की अनुमति दी जानी चाहिए।

जल संरक्षण के लिए क्या उपाय किए जा सकते हैं ? यह जाँच करना चाहिए कि आपके घर में पानी का रिसाव न हो। जितनी आवश्यकता हो उतने ही जल का उपयोग होना चाहिए। पानी के नलों को इस्तेमाल करने के बाद बंद करना चाहिए। मंजन करते

समय जल को बंद रखें तथा आवश्यकता होने पर ही खोलें। नहाने के लिए अधिक जल को व्यर्थ न करें। जल संकट को रोकने के लिए जल को सिंचाई के लिए उपयोग करना चाहिए। बाढ़ नियंत्रण तथा हाइड्रोलॉजिकल सर्वे और बाँध निर्माण करना चाहिए। भूमिगत जल क रिचार्जिंग तथा व्यय को रोकना चाहिए। अधिक जल तथा कम जल वाले स्थानों को स्थानांतरण करना चाहिए। मृदा अपरदन को रोकने के लिए बाह्य मृदा को बनाए रखना चाहिए।

भू-जल की कमी को रोकने के लिए वैकल्पिक तरीकों में पेड़ लगाने से अनगिनत लाभ होते हैं, जिसमें भू-जल की बहाली भी शामिल है। हमें अपने आस-पास जितना संभव हो सके उतने पेड़ लगाने चाहिए और अपने समाज में बगीचों के सावधानीपूर्वक रख-रखाव को भी प्रोत्साहित करना चाहिए। जागरुकता बदलाव की दिशा में पहला कदम है।

भारत विश्व स्तर पर भूजल का सबसे बड़ा उपयोगकर्ता है जो अकेले उससे ज्यादा पानी का दोहन करता है जितना अमेरिका और चीन मिलाकर करते हैं। आज भारत के अधिकांश लोगों के लिए भू-जल ही पानी का एकमात्र स्रोत है, जो खेती और घरेलू उपयोग के लिए भारी मात्रा में पानी उपलब्ध कराता है।

जलवायु परिवर्तन के कारण वर्षा का पैटर्न तेजी से अप्रत्याशित होते जाने से भू-जल और भी अधिक महत्वपूर्ण हो जाएगा।

भारत के लगभग दो तिहाई, 63% जिले भूजल स्तर गिरने से पहले ही खतरे में हैं। कई मामलों में, भू-जल दूषित हो रहा है। चिंताजनक बात यह है कि जिन जिलों में भू-जल स्तर 8 मीटर से नीचे चला गया है। वहाँ गरीबी दर 9-10% अधिक है जिससे छोटे किसान विशेष रूप से कमजोर हो गए हैं। यदि मौजूदा रुझान जारी रहता है तो भारत की कम-से-कम 25% कृषि जोखिम में होगी।

भारत का दो तिहाई हिस्सा सूखा जोखिम से ग्रस्त है। सूखा मुख्य रूप से वर्षा आधारित कृषि को प्रभावित करता है जो भारत के बोए गए क्षेत्र का लगभग 60% है।

''यज्ञ से पृथ्वी पर जल वर्षा का पर्याय''

गौमाता के स्तन में चारों समुद्र का वास है, आकाशगंगा, पृथ्वीगंगा, पातालगंगा इन तीनों गंगा का स्रोत गाय के स्तन से प्राप्त क्षीरसागर अर्थात् दूध की धारा है। गौ दुग्ध से प्राप्त घृत जब अग्नि में डाला जाता है तो उससे उत्पन्न यज्ञ ऊर्जा विश्व ब्रह्माण में प्रसारित होकर उपर्युक्त तीनों गंगा को सागर के रूप में शक्ति एवं बल प्रदान करता है। अर्थात् पृथ्वी पर जल वर्षा का पर्याय बनता है। इसलिए वेद में कहा गया है गाय के थन में चारों समुद्रों का वास है।

आज विज्ञान भी कहता है कि पानी का वैज्ञानिक फार्मुला H_2O है अर्थात् हाईड्रोजन गैस दो भाग और ऑक्सीजन गैस एक भाग, अंतरिक्ष में हाईड्रोजन और ऑक्सीजन गैस संतुलित मात्रा में होने से पृथ्वी पर जल वर्षा का योग बनाता है। इसलिए गौ घृत से यज्ञ करने पर यज्ञ से उत्पन्न ऊर्जा अंतरिक्ष में हाईड्रोजन और ऑक्सीजन गैस संतुलित करती है। एक चम्मच गाय का घी अग्नि में डालने से लगभग 50 किलो ऑक्सीजन उत्पन्न होता है। हमारे द्वादश ज्योतिर्लिंग वर्षा के आकर्षण के केन्द्र हैं, यहाँ क्रमशः विधि विधान से यज्ञ किया जाय तो सारे भारत में पर्याप्त वर्षा हो सकती है। इनमें आठ ज्योतिर्लिंग अरब सागर के मानसून को प्रभावित करते हैं। चार ज्योतिर्लिंग बंगाल की खाड़ी गंगा सागर की हवाओं को प्रभावित करते हैं।

●●

31. क्यों बन रहा है छत्तीसगढ़ कैंसर राज्य ?

छत्तीसगढ़ में पिछले चार वर्षों के दौरान कैंसर रोगियों की संख्या में 15 फीसदी से अधिक की वृद्धि हुई है। आईसीएमआर के नेशनल रजिस्ट्री प्रोग्राम के अनुसार वर्ष 2018 में छत्तीसगढ़ में कैंसर के 26443 मरीज दर्ज हुए थे जो कि वर्ष 2021 में बढ़कर 30981 हो गए हैं। इन चार वर्षों में 4538 मरीजों की वृद्धि हुई है। एनसीडीआईआर के अनुसार राज्य में कैंसर से हुई मौतों का आँकड़ा भी डराने वाला है। वर्ष 2021 में मौत का आँकड़ा 20071 पहुँच गया है जो कि गत वर्ष के मुकाबले 1083 अधिक है।

तेजी से कैंसर वाले टॉप टेन राज्यों में शामिल हुआ छत्तीसगढ़

नेशनल सेंटर फॉर डिजीज इंफॉर्मेटिक्स एंड रिसर्च की हाल ही जारी रिपोर्ट में कहा गया है कि कोरोना काल में कैंसर के मरीजों की संख्या में तेजी से वृद्धि हुई है। देश में इस समय 13·9 लाख मरीज हैं, जिनमें से 7·1 लाख महिला तथा 6·8 लाख पुरुष हैं। यदि यही रफ्तार जारी रही तो वर्ष 2025 तक देश में कैंसर मरीजों की संख्या बढ़कर 15·7 लाख तक पहुँच सकती है। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री द्वारा संसद में जारी आँकड़े के मुताबिक वर्ष 2020 में उत्तर प्रदेश में कैंसर का आँकड़ा 2 लाख को पार कर गया है जो कि देश में सर्वाधिक है इसके बाद महाराष्ट्र, पश्चिम बंगाल और बिहार का नम्बर है जिन राज्यों में कैंसर मरीजों की संख्या में तेजी से वृद्धि हो रही है छ.ग. उन राज्यों की टॉप टेन सूची में शामिल है।

आदिवासी इलाकों में बढ़ रहे मरीज

बस्तर-सरगुजा में कैंसर के मरीजों की संख्या लगातार बढ़ रही है पर इलाज की कोई बेहतर व्यवस्था मौजूद नहीं है। बस्तर संभाग के 7 जिलों में से मात्र जगदलपुर के मेकॉज और महारानी अस्पताल में ही एक-एक डॉक्टर पदस्थ हैं। शेष जिलों में कोई भी डॉक्टर नहीं है। बस्तर में पिछले एक वर्ष में 1988 मरीजों की स्क्रीनिंग की गई है। इनमें से 546 लोगों की कीमोथेरेपी शुरू की जा चुकी है। सरगुजा क्षेत्र में भी कमोबेश यही स्थिति है। सिर्फ बिलासपुर सिम्स में कैंसर मरीजों का इलाज हो पा रहा है। जगदलपुर के महारानी अस्पताल के कैंसर विशेषज्ञ डॉ. भंवर शर्मा कहते है कि बस्तर में जो कैंसर के मरीज आ रहे हैं उनमें 65 फीसदी महिलाएँ हैं। यहाँ तम्बाकू और शराब के ज्यादा प्रयोग के कारण पुरुषों व महिलाओं में मुँह का कैंसर अधिक पाया जा रहा है। इसके अलावा महिलाओं में ब्रेस्ट व गर्भाशय के भी काफी मरीज सामने आ रहे हैं।

कैंसर से हो रही मौत के संबंध में एनसीडीआईआर द्वारा देश भर के आँकड़े जारी किए गए हैं, उनके मुताबिक वर्ष 2018 में देश भर में कैंसर से 7,33,139 वर्ष 2019 में

751517 मौत तथा वर्ष 2020 में 770230 लोगों की मौत हुई है। राज्यवार आँकड़ों में छत्तीसगढ़ के आँकड़े भी काफी चौकाने वाले हैं। वर्ष 2014 में जहाँ राज्य में कैंसर से 14472 लोगों की मौत हुई 2015 में 15221, 2016 में 16030 मौतें हुई हैं वर्ष 2021 में मौत का आँकड़ा बढ़कर 20071 पहुँच गया है। इस प्रकार कैंसर से राज्य में प्रतिदिन औसतन 3 लोगों की मौत हो रही है।

कैंसर का इलाज कराने में कंगाल हो रहे लोग

छत्तीसगढ़ में कैंसर का इलाज सिर्फ रायपुर और बिलासपुर में ही संभव है बाकी जगहों पर इलाज की कोई व्यवस्था नहीं है। राज्य के दूरस्थ अंचल से जब लोग इलाज कराने राजधानी जाते हैं तो उन्हें काफी पैसे खर्च करने पड़ते हैं। सुकमा निवासी देवीसिंह के पिता दुकालू को मुँह का कैंसर है। वह रायपुर के अस्पताल में इलाज करवा रहा है। उसका आयुष्मान कार्ड नहीं है। अब तक 2 लाख से अधिक खर्च हो चुके हैं। अब पैसे खत्म हो गए हैं तो पिता के इलाज के लिए खेत गिरवी रखने पर मजबूर हो गया है। रीजनल कैंसर सेंटर रायपुर के प्रभारी ऑन्कोलॉजिस्ट डॉ. प्रदीप चंद्राकर कहते हैं कि जागरूकता के अभाव में समय पर डायग्नोसिस न हो पाने के कारण पचास फीसदी से अधिक मरीजों को तीसरे या चौथे चरण में कैंसर का पता चलता है लेकिन तब तक देर हो चुकी होती है। उन्होंने बताया कि यदि प्रारंभिक अवस्था में कैंसर का पता चल जाए तो इसका इलाज संभव है।

कई रिसर्च में यह साबित हो चुका है कि क्रूसीफेरस सब्जियों में कैंसर कोशिकाओं को मारने वाले कंपाउड होते हैं। इसलिए यदि अपने डाइट में आप कैबेज, फूलगोभी, केला, स्प्राउट, जैसी सब्जियों, जैविक भोज्यपदार्थ को शामिल करेंगे तो कैंसर होने का खतरा बहुत कम हो जाएगा।

कैंसर तब होता है जब कोशिकाएँ अनियंत्रित दर से बढ़ने और गुणा करने लगती हैं। संयुक्त राज्य अमेरिका में सबसे ज्यादा इलाज योग्य कैंसर थायरॉयड, स्तन, प्रोस्टेट, वृषण और त्वचा के कैंसर हैं। इन प्रकार के कैंसर को शुरुआती चरणों में निदान किए जाने पर सबसे ज्यादा इलाज योग्य माना जाता है।

छत्तीसगढ़ के डॉक्टर्स बता रहे हैं कि बच्चों में आनुवंशिक नहीं बल्कि लाइफ स्टाइल व केमिकल फूड के कारण कैंसर फेल रहा है। राज्य के डॉ. प्रदीप चंद्राकर के अनुसार राज्य में चार तरह के कैंसर देखने में आ रहे हैं, जिनका शुरू में इलाज संभव है।

राजधानी और छत्तीसगढ़ में पिछले दो-तीन साल में बच्चों में कैंसर के केस इसलिए बढ़े हैं क्योंकि माता-पिता पहचान नहीं पाते और इलाज देर से शुरू होता है। शून्य से 14 साल के बच्चों में यह बढ़ रहा है। लेकिन छत्तीसगढ़ के लोगों को परेशान होने की जरूरत नहीं है क्योंकि यहाँ इलाज से बच्चों

का कैंसर ठीक होने का अनुपात देश के अनुपात से दोगुना से ज्यादा है। हेल्थ रिपोर्ट के अनुसार देश में कैंसर पीड़ित बच्चों के ठीक होने के अनुपात 30-35 फीसदी ही हैं। जबकि राजधानी के इंदिरा गाँधी रीजनल कैंसर सेंटर में 60-70 प्रतिशत बच्चे ठीक हो रहे हैं। यह आँकड़े विकसित देशों के 80 प्रतिशत के करीब हैं। राजधानी रायपुर के कैंसर सेंटर में पिछले साल कैंसर पीड़ित 255 बच्चों को इलाज के लिए लाया गया।

इस सेंटर के डॉक्टरों ने इलाज के साथ-साथ पिछले 5 साल में कैंसर पीड़ित बच्चों को लेकर कई तरह के आँकड़ों को निकाले हैं। कैंसर सेंटर के डायरेक्टर डॉ. विवेक चौधरी के अनुसार इन आँकड़ों के आधार पर कहा जा सकता है कि बच्चों में कैंसर की वजह आनुवंशिक तो है ही, मौजूदा लाइफ स्टाइल और जंक फूड वगैरह ने 14-15 साल के बच्चों में यह बीमारी ज्यादा लगाई है।

पाँच साल के रिसर्च का सबसे चौंकाने वाला आँकड़ा यही है कि इलाज के लिए आने वाले अधिकतर पीड़ित बच्चों में जब कैंसर बढ़ जाता है, या तकलीफ बढ़ने लगती है, तब पैरेंट्स को पता चलता है और कैंसर का इलाज शुरू हो पाता है। कैंसर सेंटर आने वाले 90 फीसदी मामले ऐसे ही हैं। पिछले साल अंबेडकर अस्पताल परिसर में स्थित इस कैंसर सेंटर में जितने बच्चे आए, उनकी उम्र 13 दिन से 14-15 साल के बीच है। डॉ. चौधरी ने बताया कि इस सेंटर में बच्चों के कैंसर का सभी तरह के इलाज निःशुल्क है। इसलिए 70 फीसदी तक बच्चे पूरी तरह ठीक होकर जा रहे हैं। 65 से 70 फीसदी बच्चे पूरा इलाज कराकर ठीक हो रहे हैं।

बच्चों में चार तरह के कैंसर

सेंटर के डॉ. प्रदीप चंद्राकर के अनुसार यहाँ चार तरह के कैंसर देखने में आ रहे हैं, जिनका शुरू में इलाज संभव है। अधिकतर ल्यूकीमिया या ब्लड कैंसर के मामले हैं। बच्चों में कमजोरी, पीलापन, दर्द से रोना व ब्लड निकलना इसका लक्षण है। दूसरा ब्रेन ट्यूमर है। शरीर में झटके, सिर दर्द, उल्टी, बेहोशी और कमजोरी इसके लक्षण हैं। तीसरा सारकोमा है, जिसे हड्डी या मांसपेशी का कैंसर भी कहते हैं। इसका लक्षण सूजन तेजी से बढ़ना है। चौथा न्यूरोब्लास्टोमा या पेट का कैंसर है। नहलाते समय कहीं गठान महसूस हो, पेशाब में खून आए तो यह हो सकता है।

शोध में कैंसर का प्रमुख कारण रासायनिक खाद, कीटनाशक दवाएँ एवं जर्सी गाय का दूध है।

पंचगव्य उपचार कैंसर का प्रभावी उपचार है और देश भर में इसके अच्छे परिणाम मिल रहे हैं। आधुनिक रिसर्च में गोमूत्र, हल्दी एवं तुलसी में कैंसर कोशिकाओं से लड़ने की अद्भुत क्षमता की जानकारी मिली है। इसलिए कैंसर रोगी के लिए गोमूत्र पान सर्वश्रेष्ठ औषधि है। कोई भी चिकित्सा किसी योग्य आयुर्वेदाचार्य के मार्गदर्शन में ही लेना चाहिए।

जोधपुर, गुरुवार, 19 सितंबर, 2024 dainikbhaskar.com 16

तेलंगाना • आईसीएमआर और उस्मानिया यूनिवर्सिटी की शोध रिपोर्ट

किसानों के खून में 10 जानलेवा कीटनाशक, इनसे कैंसर हो रहा

मोहम्मद जमीर हसन | हैदराबाद

आईसीएमआर के राष्ट्रीय पोषण संस्थान और उस्मानिया यूनिवर्सिटी की रिसर्च में चौंकाने वाली जानकारी सामने आई हैं। रिसर्च के अनुसार, फसलों में कीटनाशक दवाओं का छिड़काव करने वाले तेलंगाना के किसान कैंसर और अन्य गंभीर बीमारियों की चपेट में आ रहे हैं। इन किसानों के खून और यूरिन के सैंपल में 10 जानलेवा कीटनाशक मिले हैं। इनमें डायलकाइल फॉस्फेट (डीएपी) मेटाबोलाइट्स का स्तर काफी अधिक पाया गया। इन किसानों में एसिटाइलकोलिनेस्टरेज एंजाइम का स्तर कम था, जो न्यूरोलॉजिकल क्षति का संकेत है।

यह स्टडी तेलंगाना के यदाद्री-भुवनगिरि, विकाराबाद और संगारेड्डी जिलों के 5-5 गांवों में 2021-23 के बीच की गई । इसमें करीब 500 किसानों के खून और यूरिन का परीक्षण किया गया।

कीटनाशकों से किसानों को घातक बीमारियां

फसलों पर इस्तेमाल किए जा रहे कीटनाशकों के कारण किसान सांस लेने में तकलीफ, अस्थमा, सीने में दर्द, तेज हार्ट बीट, उल्टी, धुंधला दिखाई देना और त्वचा-आंखों में जलन, चिड़चिड़ाहट, गुस्सा, सुन्नपन, मांसपेशियों में कमजोरी, अल्जाइमर और कैंसर जैसी गंभीर समस्याओं से जूझ रहे हैं। रिपोर्ट के अनुसार, किसान 28 अलग-अलग कीटनाशकों का छिड़काव या अन्य रूपों से इस्तेमाल करते हैं। इनमें 11 कीटनाशक ऐसे हैं, जिन्हें डब्ल्यूएचओ ने अत्यधिक घातक श्रेणी में रखा है।

कीटनाशकों का उपयोग करते समय सुरक्षा उपाय नहीं

शोधकर्ताओं के अनुसार, किसान कीटनाशकों का उपयोग करते समय सुरक्षा उपाय नहीं अपनाते हैं। इससे यह उनके शरीर के सीधे संपर्क में आते हैं। सांस और त्वचा के जरिए से शरीर में प्रवेश कर जाते हैं। कीटनाशकों को नंगे हाथों से मिलाने, अनुचित भंडारण और असुरक्षित निपटान से स्वास्थ्य जोखिम बढ़ जाता है। रिपोर्ट ने एकीकृत कीट प्रबंधन (आईपीएम) जैसी सुरक्षित और अधिक टिकाऊ कृषि प्रथाओं को अपनाने के संभावित लाभों को बताया गया है, जो कीटनाशकों के उपयोग और स्वास्थ्य जोखिमों को काफी हद तक कम करता है।

●●

32. ''गौसेवा हमारा कर्तव्य''

गौसेवा के प्रमुख आयाम– गौसेवा के निम्नलिखित प्रमुख आयाम होते हैं–

1. गौपालन– गौपालन गौमाताओं की देखभाल, आहार और ऊर्जा की जरूरतों को पूरा करने का कार्य है। इसमें गौमाताओं के देखभाल संबंधित आहार प्रदान करना और उनकी स्वस्थता की जाँच करना शामिल होता है।

2. गौशाला प्रबंधन– गौशाला प्रबंधन गौशालाओं की संचालन और देखभाल का कार्य होता है। यह गौमाताओं के ठिकानों, पोषण, स्वच्छता और सुरक्षा की जिम्मेदारी संभालता है।

3. गौसंगठन और जनसंचार– गौसंगठन और जनसंचार के माध्यम से गौसेवा के महत्व को लोगों तक पहुँचाया जाता है। इसके लिए अधिकारिक सभा, गौमाता के लिए यात्रा और समारोह और जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं।

4. गौवंश उपयोग– गौवंश उपयोग एक औषधीय प्रयोग का आयाम है जहाँ गौमाताओं से प्राप्त होने वाले उत्पादों का उपयोग आयुवेर्दिक चिकित्सा, औषधीय उत्पादों और औषधीय विज्ञान में किया जाता है।

गौसेवा की जरूरत– गौसेवा की आवश्यकता बहुत सारे कारणों से प्रामाणिक है। इसके महत्वपूर्ण कारणों में शामिल हैं–

1. धार्मिक आदर्श–धार्मिक और सांस्कृतिक आदर्शों के अनुसार, गौमाता की सेवा एक पवित्र कर्तव्य है। ऐसी मान्यता प्राप्त है कि गौमाता सभी देवी-देवताओं की निवासिनी हैं और उनकी सेवा से मनुष्य को आशीर्वाद मिलता है।

2. गौमाता की उपयोगिता–गौमाता की उपयोगिता विभिन्न रूपों में देखी जाती है। उनके दूध, गौमूत्र और गोबर का उपयोग खाद्य, आहारिक औषधीय, गृह निर्माण और गौसंगठन में होता है। इसके साथ ही, गौमाता की सेवा और देखभाल उनकी संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

3. गौमाता की संरक्षा–गौमाताओं की संख्या और प्रकार की विशेषता है और इसकी संरक्षा आवश्यक है। बढ़ती जनसंख्या, वनों का कटाव और उचित देखभाल की कमी के कारण गौमाताओं की संख्या में कमी हो रही है। इसलिए गौसेवा की आवश्यकता है ताकि गौमाताओं को संरक्षित रखा जा सके और उनकी नस्लें विकसित हो सकें।

गौसेवा की संभावनाएँ–गौसेवा के लिए भविष्य में कई संभावनाएँ हैं। यहाँ कुछ मुख्य संभावनाएँ हैं–

1. गौशाला और गौसंगठनों का विस्तार– गौशाला और गौसंगठनों के विस्तार की

संभावना है ताकि गौमाताओं की सेवा और संरक्षण बढ़ाया जा सके। इसके लिए और अधिक गौशालाएँ स्थापित की जा सकती हैं और गौसंगठनों की व्यापकता बढ़ाई जा सकती है।

2. गौसेवा केन्द्रों की स्थापना–गौसेवा केन्द्रों की स्थापना करने की संभावना है जहाँ गौमाताओं की सेवा, गोमय उत्पादन, आयुर्वेदिक चिकित्सा और गौसंगठन संबंधित गतिविधियाँ संचालित की जा सकें। ये केन्द्र लोगों को गौसेवा के महत्व को समझाने और गौमाताओं के संरक्षण के लिए जागरूकता बढ़ाने में मदद करेंगे।

3. गौसेवा विद्यालयों का उद्‌घाटन– गौसेवा विद्यालयों के उद्‌घाटन की संभावना है जहाँ गौमाताओं के संरक्षण, गौसेवा कार्यों और गौमाता संबंधित विषयों पर शिक्षा प्रदान की जाएगी। इससे नवाचारी और गौसेवा में रूचि रखने वाले युवाओं को तकनीकी ज्ञान और धार्मिक मूल्यों की संदेशाही दोनों मिलेगी।

गौसेवा का समर्थन करने के तरीके– गौसेवा का समर्थन करने के लिए यहाँ कुछ तरीके हैं–

1. गौमाताओं की सेवा करें–गौमाताओं की सेवा करना सबसे महत्वपूर्ण और सीधा तरीका है। आप अपने पास स्थानीय गौशाला में जाकर गौमाताओं की देखभाल कर सकते हैं। उनके लिए आहार प्रदान कर सकते हैं और उनकी स्वच्छता बनाए रख सकते हैं।

2. गौमाता के उत्पादों का उपयोग करें– गौमाताओं से प्राप्त होने वाले उत्पादों का उपयोग करें। आप उनके दूध, गौमूत्र और गोबर का उपयोग खाद्य, आहारिक, गृह निर्माण और आयुर्वेदिक चिकित्सा में कर सकते हैं। इससे आप उनके प्रयोग को समर्थन करेंगे और स्थानीय उत्पादों को बढ़ावा देंगे।

3. गौसेवा संगठनों का समर्थन करें– आप स्थानीय गौसेवा संगठनों का समर्थन कर सकते हैं जो गौसेवा कार्यों को संचालित कर रहे हैं। आप उनके सदस्य बन सकते हैं। उनके आयोजित कार्यक्रमों में हिस्सा ले सकते हैं और उनकी आपातकालीन आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए सहायता कर सकते हैं।

4. जागरूकता फैलाएँ– गौसेवा के महत्व को लोगों तक पहुँचाने के लिए जागरूकता फैलाएँ। आप सोशल मीडिया, ब्लॉग और मीडिया के माध्यम से गौसेवा के बारे में जानकारी और जागरूकता प्रदान कर सकते हैं। इससे लोगों को गौसेवा के महत्व का अधिकारिक और व्यापक ज्ञान होगा।

5. आर्थिक सहायता प्रदान करें– गौसेवा संगठनों को आर्थिक सहायता प्रदान करें। आप दान या धनराशि के माध्यम से गौसेवा के लिए आर्थिक सहायता प्रदान कर सकते

हैं। इससे संगठन गौमाताओं की देखभाल और संरक्षण के लिए आवश्यक संसाधनों को प्राप्त कर सकेंगे।

गौसेवा भारतीय संस्कृति और परम्पराओं का महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह धार्मिक, सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है। गौमाता की सेवा करना और गौसेवा को समर्थन करना हमारी जिम्मेदारी है और इससे हम समृद्धि, सामाजिक समरसता और पर्यावरण संरक्षण के लिए सहयोग करते हैं। इसलिए, आइये हम सब मिलकर गौसेवा को आगे बढ़ाते हैं और गौमाताओं की संरक्षा करते हैं।

गौसेवा एक प्रकार की सेवा है जिसमें गौमाता की सुरक्षा, देखभाल और पालन-पोषण किया जाता है। यह भारतीय संस्कृति में महत्वपूर्ण है और गौमाता को पवित्रता और सम्मान का प्रतीक माना जाता है।

●●

33. गौ सेवा /गौ रक्षा के लिए क्या किया जा सकता है

नगरीय क्षेत्रों में किये जाने वाले कार्य

● नगर के गोभक्तों, गोपालकों, संत समाज, जैविक उपभोक्ताओं, समाज प्रमुखों इत्यादि श्रेणी के गोभक्त समाज को जोड़कर नगर स्तर पर 21 सदस्यीय गो सेवा समिति का गठन करना।

● नगर के किसी एक गौशाला में सप्ताह में एक दिन श्रमदान, गो पूजन एवम गो आरती का कार्यक्रम।

● नगर के प्रत्येक घर मे सिर्फ देशी गाय का दूध पहुँचे इस हेतु जनजागरण अभियान चलाना।

● नगर में कोई गौमाता खुली न घूमे इस हेतु जन-जागरण अभियान।

● यथा संभव घरों में गो पालन हो, संभव न हो सके तो प्रत्येक परिवार अपने निकट की गौशाला से जुड़े।

● घरों में जैविक अन्न एवम सब्जियों का उपयोग हो।

● गौ कथा का आयोजन हो।

● घर-घर में पंचगव्य से बने उत्पाद का उपयोग हो।

● शहर में संचालित डेयरी में जर्सी, HF जैसी गायों के बजाय देसी गोवंश का पालन हो इस हेतु प्रयास।

● मुक्ति धाम में लकड़ी के स्थान पर छेनो (कण्डों) से अंतिम संस्कार हो। इससे पेड़ और गौ माता दोनों की रक्षा होगी।

● होली में छेनो (कण्डों) से होलिका दहन हो।

● सभी मंदिरों में देवताओं का अभिषेक, पूजन सिर्फ देशी गोमाता के दूध, दही एवम घी से ही हो एवम भोग में भी उसी का उपयोग हो जिससे मंदिर की आंतरिक शक्ति (ऊर्जा) का कभी क्षय न हो।

● मंदिरों में अगरबत्ती के स्थान पर गोबर से बनी धूपबत्ती का उपयोग हो जिससे मंदिर की शुद्धता एवम पवित्रता बनी रहे।

● नगर में टेरेस गार्डन (शाक वाटिका) का प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित हो।

● नगरवासी अपने परिवार जनों के जन्मदिन, सालगिरह जैसे विशेष दिनों में किसी गौशाला जाकर गौ माता को खिचड़ी का भोग लगाएँ, गौ परिक्रमा कर गौ पूजन अवश्य करें।

● नगर में घर-घर अग्निहोत्र हवन हो जिससे घर और आसपास के वातावरण का शुद्धिकरण हो, ऑक्सीजन स्तर बढ़े, प्रदूषण कम हो।

कुल मिलाकर नगर का प्रत्येक परिवार गोव्रति बने अर्थात प्रत्येक परिवार गाय से प्रत्यक्ष जुड़े। घर मे सिर्फ देशी गाय का दूध, दही घी का ही उपयोग हो। अनाज एवं सब्जियाँ जैविक हो। घरों में गो आधारित उत्पादों का उपयोग हो। इन प्रयासों से गाँव के गोपालकों को आमदनी होगी और गो वंश न तो सड़कों पर रहेगा और न ही कसाईयों के पास। इन्हीं सब प्रयासों से ही गो रक्षा हो पायेगी।

ग्राम स्तर पर किये जाने वाले कार्य

● गाँव के गोपालक, जैविक कृषक, वैद्य, पशु चिकित्सक, मानस मंडली, पुजारी, दुध उत्पादक कृषक, संत समाज, चरवाहा, युवा, मातृ शक्ति, इत्यादि श्रेणी के गोभक्तों को जोड़कर 21 सदस्यीय गोसेवा समिति का गठन जिसमे एक संयोजक एवम एक सह-संयोजक होगा।

● गाँव के गोठान में साप्ताहिक श्रमदान एवम गो पूजन, आरती।

● कृषकों को गो आधारित खेती का प्रशिक्षण एवम मार्गदर्शन।

● गोबर एवं गोमूत्र से उत्पाद निर्माण का प्रशिक्षण एवम उसकी मार्केटिंग में सहयोग।

● गाँव में समुचित दूध, दही एवम घी का उत्पादन हो एवम गोपालकों को उसका उचित मूल्य मिल सके।

● गाँव के गोठान एवम चारागाह अतिक्रमण मुक्त हो एवं व्यवस्थित हो।

● गौवंश की मृत्यु होने पर उसे समाधि हो और उससे समाधि खाद एवम सींग खाद का निर्माण हो।

● गाँव में होने वाले धार्मिक आयोजनों में गो महिमा का विशेष रूप से वर्णन हो।

● ग्राम/शहरी केंद्रों में शवदाह हेतु छेनो (कण्डों) का निर्माण हो जिससे पेड़ो की रक्षा हो एवम गोपालकों को गोबर का उचित मूल्य मिल सके।

● गोपालकों को गाय की प्राथमिक चिकित्सा का प्रशिक्षण हो।

● गाँव के वैद्य को पंचगव्य चिकित्सा का प्रशिक्षण हो।

● पैरा कुट्टी का उचित प्रबंधन हो। कोई पैरा में आग न लगाये इस हेतु जनजागरण।

● कृषकों को जैविक खाद, जैविक कीट नियंत्रक सहित विभिन्न प्रकार के खाद बनाने का प्रशिक्षण मिले।

अर्थात उपरोक्त प्रयासों से पूरा गाँव गौपालक बने। गाँव में दूध, दही, घी का प्रचुर उत्पादन हो, गो आधारित खेती हो और इन सब प्रयासों से गाँव का गोधन गाँव में ही रहे। न तो सड़क में घूमता रहे और न ही तस्करों के हाथ लगे।

क्या हमारे प्रयासों से हम अपने नगर/ग्राम में इस प्रकार की व्यवस्था का निर्माण कर सकते हैं ? यदि हम इतना की कर देते हैं तो गौरक्षा एवं गौसेवा दोनों हो जाएगी। गाय न तो सड़क में रहेगी और न ही कटने जाएगी। यही एकमात्र समाधान है। अपना शत-प्रतिशत प्रयास करें, ऐसा विनम्र आग्रह है।

●●

34. जानिये कैसे होगा पंच परिवर्तन से समाज परिवर्तन

1. सामाजिक समरसता

दुर्भाग्य से हमारे ही समाज के कुछ वर्गों को अस्पृश्यता का दंश झेलना पड़ रहा है, वे आज भी शिक्षा, सुविधाओं और सम्मान से वंचित हैं, यह सरासर अन्यायपूर्ण और अमानवीय है। इस अन्याय को दूर कर, सबको साथ लेकर आगे बढ़ने के प्रयास 'सामाजिक समरसता' के माध्यम से आरंभ हुए हैं। हमारा समरस हिन्दू समाज विभिन्न जातियों के नाम से जाना जाता रहा है, लेकिन इसके कारण कभी भी समाज में छुआछूत, भेदभाव नहीं रहा। संघर्ष काल में आयी इस विकृति का कुछ निहित स्वार्थी तत्व जातीय विद्वेष बढ़ाकर समाज को बाँटने का कार्य करते रहते हैं। इसलिए समाज से छुआछूत व भेदभाव दूर करने हेतु अपने मित्र-परिवार में सभी जाति-समुदाय के लोगों को शामिल करें व समय-समय पर पारिवारिक कार्यक्रमों में सभी को सम्मिलित करने का प्रयास करें। अपने घर या कार्यस्थल पर सहयोगी व सेवा देने वाले सभी से हमारा व्यवहार स्नेहिल हो तथा उन्हें किसी त्यौहार पर परिवार सहित सम्मानपूर्वक आमंत्रित करें तथा उनके घर पर भी आना-जाना प्रारंभ हो। सभी जाति एवं समुदाय के प्रमुख एक साथ बैठकर कुछ साझी समस्याओं और चुनौतियों पर विचार करने तथा उससे उबरने के लिए सामूहिक प्रयास करें, यह आवश्यक है।

2. पर्यावरण संरक्षण

सृष्टि हमारी, सभी प्राणियों की माँ है। परन्तु भौतिकतावादी जीवन के बढ़ते प्रभाव के कारण प्रकृति का शोषण ही होता रहा है। पश्चिम के विकास के मानकों (Paradigm) के आधार पर हुए विकास से केवल 500 वर्षों में ही सृष्टि का पर्यावरणीय संतुलन बिगड़ गया है। उस बिगड़े संतुलन को फिर से ठीक करने के प्रयास में जनसहभाग बढ़ाकर 'पर्यावरण' के बारे में जागृति और सक्रियता लाने की आवश्यकता है। अपने जीवन में न्यूनतम तीन बातें तो हम सभी कर ही सकते हैं। पानी बचाना, सिंगल यूज प्लास्टिक का प्रयोग नहीं करना और हरियाली के लिए पेड़ लगाना। इससे मनुष्यों में एक मानवीयता भी आएगी और पर्यावरण में सुधार भी होगा। इसके लिए जो सामूहिक उपक्रम चलते हैं उनमें भाग लेना चाहिए और अपने घर में भी यह करना चाहिए।

3. कुटुम्ब प्रबोधन

भारतीय संस्कृति और परम्परा में कुटुम्ब का विशेष महत्व है। भारतीय आध्यात्मिक दृष्टि से यह कुटुम्ब यानि 'मैं से हम की यात्रा' का पहला चरण है। अभी शहरीकरण और जीवन की आपाधापी बढ़ने के कारण कुटुम्ब छोटे हुए हैं, इसलिए परिवार के सब लोगों ने सप्ताह में एक बार साथ बैठना, निश्चित समय पर घर पर रहना, श्रद्धानुसार भजन करना, घर में बनाया हुआ भोजन करना और

उसके बाद 3-4 घण्टा गपशप करना। उसमें हम कौन है, हमारे पूर्वज कौन थे, हमारी कुलरीति क्या है, अपने घर की रीति क्या है, क्या भद्र है, क्या अभद्र है ? आज के समय में क्या-क्या आवश्यक है ? इसके आधार पर अपने घर में सबने सहमति बनाकर उतनी बातों को लागू करना।

4. स्व आधारित जीवन

किसी भी देश के विकास के लिए, उस देश के जो संसाधन हैं, उसके आधार पर विकास के मार्गों को प्रशस्त करना चाहिए। 'स्व आधारित जीवन' का तात्पर्य यह है कि आर्थिक एवं सांस्कृतिक सभी आयामों में हमें स्वयं के पैरों पर खड़ा होना चाहिए। स्वदेशी जीवन शैली प्रत्येक व्यक्ति, प्रत्येक परिवार के स्तर पर अपनानी होगी, तभी भारत आत्मनिर्भर बनेगा। अपनी मातृभाषा, स्वभूषा, संस्कृति और परम्पराओं पर स्वाभिमान रखकर उनको व्यवहार में लाना चाहिए।

5. नागरिक कर्त्तव्यबोध

हर परिस्थिति में संविधान, नियम, कानून और अनुशासन का पालन करके चलना। कोई भड़काऊ बात हो गई तो भी कानून हाथ में नहीं लेना। गैर-कानूनी आचरण नहीं करना। आज देश के लिए 24 घण्टा जीने की आवश्यकता है। छोटी-छोटी बातों में भी समाज का, देश का, सबका ध्यान रखना। स्वयं से शुरु होगा, मेरे घर से शुरु होगा तो समाज में आएगा, समाज में आएगा तो भारत में आएगा, तभी भारत सशक्त राष्ट्र बनेगा।

आह्वान

सम्पूर्ण समाज को संगठित कर देश के सामने आने वाली सभी समस्याओं और चुनौतियों का समाधान करना, समाज में स्थायी परिवर्तन लाने हेतु समाज की व्यवस्थाओं का युगानुकूल निर्माण करना, यह अगला चरण है। किन्तु अपना देश बहुत विशाल है और कोई एक संगठन इसमें स्थायी परिवर्तन नहीं ला सकते। इस हेतु सभी मतभेद भुलाकर, सभी को एक साथ आकर काम करना होगा। इसके लिए सज्जन शक्ति की सक्रियता और सहयोग आवश्यक है। अपनी पवित्र मातृभूमि को पुनः विश्व गुरु बनाने हेतु आज पुरुषार्थ करने का समय है।

आप सभी माता, बंधु-भगिनियों से अपेक्षा है कि इस जगन्नाथ के रथ को खींचने हेतु सभी के हाथ और शक्ति लगे तथा भारत माता के इस राष्ट्र कार्य में आप सभी अपनी रुचि व क्षमता के अनुसार सक्रिय भूमिका निभाएँ।

सामाजिक समरसता

पर्यावरण संरक्षण

कुटुम्ब प्रबोधन

स्व-भाव जागरण

नागरिक कर्तव्य

।। भारत माता की जय।।

आइये ! हम सभी मिलकर अपने भगीरथ प्रयास से भारत माता को परम् वैभव तक पहुँचाएँ।

35. गौवंश से ही होगा पंच परिवर्तन

1. गौमाता से ही स्वदेशी का सूत्रपात है

विदेशी रासायनिक यूरिया, DAP, पोटाश का बहिष्कार करें, देशी गाय के गोबर से खाद निर्माण कर गो आधारित कृषि प्रारंभ करें।

विदेशी रासायनिक कीटनाशक के जहर से धरती एवं स्वयं को बचाएँ गोमूत्र से कीटनियंत्रक का निर्माण करें।

गौशालाओं द्वारा उत्पादित उत्पादों का अधिकाधिक प्रयोग प्रारंभ करें।

विदेशी डीजल/पेट्रोल/LPG के बदले गोबर गैस, बैल ऊर्जा, सौर ऊर्जा का अधिकाधिक उपयोग करें।

पंचगव्य से गाय, गाय से किसान, किसान से गांव, गांव से होगा आत्मनिर्भर हमारा प्यार प्रदेश और भारत देश ध्यान रहे आत्महत्या करने वाले 90% किसान ट्रैक्टर का कर्ज न चुका पाने के कारण ही आत्महत्या करते हैं।

यू ही बैल कटने जाएंगे तो पोला तिहार कैसे मनाएंगे। पोला बैल पूजन का पर्व है ट्रैक्टर पूजन का नहीं।

2. गौमाता के बिना कुटुम्ब अधूरा है। कुटुम्ब जनों के निरोगी एवं सुरक्षित भविष्य हेतु।

गौपालन करिये, संभव न हो तो समीपस्थ गौशाला में गाय गोद लीजिए।

प्रतिदिन बच्चों से गौग्रास दिलवाएँ।

घर में सिर्फ देसी गौमाता के दूध, दही, घी का ही सेवन करें।

गौ आधारित कृषि (Organic Farming) से उत्पादित अनाज एवं सब्जियों का उपयोग करें, कुटुम्ब को जहरीले खाद एवं कीटनाशक से बचाएं।

घर की बाड़ी या छत पर शाक वाटिका (Kitchen Garden) का निर्माण करें, शुद्ध रसायन मुक्त सब्जियाँ एवं फल घर पर ही उगाएँ।

खेती के लिए पुनः बैल एवं उन्नत आधुनिक बैलगाड़ी का उपयोग प्रारंभ करें। कर्ज से बचें, डीजल बचाएँ, पर्यावरण बचाएँ।

दैनिक जीवन में अधिकाधिक पंचगव्य उत्पादों का उपयोग कर गौशालाओं को आत्मनिर्भर बनाएँ।

देसी खांड, गुड, सेंधा नमक का उपयोग करें, शक्कर, आयोडीन नमक से कुटुम्ब को बचाएं।

सिर्फ लकड़ी घाणी फिल्टर तेल का उपयोग करें, हानिकारक रिफाइंड तेल से बचें।

हर घर गोकुल, घर-घर गोकुल, गाँव में गोकुल धाम, तभे होही मोर छत्तीसगढ़ के उत्थान

3. गाय सामाजिक समरसता का मूल मंत्र है

गौमाता बगैर भेदभाव किए हर पंथ हर जाति के अपने बच्चों को समान रूप से उनका पालन-पोषण करती है।

हर पंथ और वर्ग समाज का व्यक्ति गौ पालन करता है।

अन्न सब्जी उत्पादन हर वर्ग समाज का किसान करता है।

कोई गौपालक और किसान की जाति नहीं होती बल्कि वो सभी पंथ, समाज, जाति के लोगों को दूध, दही, घी, अनाज, दालें और सब्जी उपलब्ध कराता है।

गौ के गोबर को उठाने वाला कभी छोटा या बड़ा नहीं कहलाता।

जिस गौमाता को चराने स्वयं भगवान इस धरती में आए आज उसका पालन पोषण करने वाला प्रत्येक व्यक्ति श्रेष्ठ होता है।

गौमाता ही ऊँच-नीच, अमीर गरीब, जाति भेद, पंथ भेद को मिटाने का कार्य करती आ रही है बस हमें समझने की आवश्यकता है।

गौपालक एवं अन्न उत्पादक किसान को उनकी उपज का यथोचित मूल्य प्रदान करे उन्हें अपने परिजन सदृश सम्मान करें। Family Farmer बनाएँ।

4. गाय है तो पर्यावरण है

गाय साक्षात् पृथ्वी माता का स्वरूप है। कहते हैं जब धरती माता कष्ट में होती है तब अपनी वेदना गौ माता का स्वरूप धारण करके परमेश्वर तक पहुँचाती है।

गौमाता का गोबर ही धरती का भोजन है

गौमाता जब जंगलों में चरती है तब उसके गोबर में उपलब्ध असंख्य बीजों से ही वनों का स्वाभाविक फैलाव होता है।

खेतों में जब गोबर खाद डलती है तभी अच्छी पैदावार होती है।

जब गाय का गोबर भूमि में गिरता है तब उसे खाने असंख्य केंचुए जो जमीन के 15 से 20 फीट नीचे रहते हैं वो ऊपर आते हैं फिर खाकर नीचे जाते हैं। इस प्रकार उनके लगातार ऊपर नीचे आने के कारण भूमि पोली होती है उसमें असंख्य दरारें बनती हैं जिससे बारिश का जल नीचे पृथ्वी में समाता है और धरती का भूमि जल स्तर ऊँचा रहता है।

जब भूमिजल स्तर अच्छा रहेगा तो वातावरण का तापमान कम रहेगा, गर्मी कम लगेगी।

बढ़ते ग्लोबल वार्मिंग एवं गिरते भूजल स्तर समस्या का एकमात्र समाधान गाय ही है।

यदि पर्यावरण को बचाना है तो हमें पहले गौवंश को बचाना होगा।

दाह संस्कार यदि लकड़ी के स्थान पर गोबर के कंडे से करते हैं तो हम एक पेड़ को कटने से बचाते हैं।

5. आइये अपने नागरिक कर्त्तव्यों का निर्वहन करें–

1. मठ मंदिरों की पवित्रता बनाएँ रखें।

सिर्फ देसी गौमाता के दूध, दही, घी से ही समस्त पूजन अभिषेक सम्पन्न करें।

2. पॉलीथिन में भरकर खाने की सामग्री कभी न फेंके, गौवंश इन्हें खाकर असमय काल कल्वित हो रहे हैं।

3. वृद्ध या अशक्त गौवंश की अंत तक सेवा करें किसी बैला कोचिया (कसाई) को नहीं बेचें।

4. पैरा गौमाता का चारा है।

न आग लगाएँ न ही लगाने दे।

5. घायल गोवंश की सेवा करें, गौ सेवक को सहयोग करें।

6. मृत गौवंश को समाधि दे, समाधि खाद का निर्माण करें।

7. चारागाह को अतिक्रमण मुक्त करने व्यापक अभियान करें।

पैरा में आग लगाना दंडनीय अपराध है

●●

अभियान गीत

स्वावलंबी स्वाभिमानी भाव जगाना है

स्वावलंबी स्वाभिमानी भाव जगाना है।
चलो गाँव की ओर हमें फिर वैभव लाना है ।। **धुन**।।
हर घर में गौ माँ की सेवा पशुधन का हो पालन,
दूध, दही, घी, मठा, लस्सी, हर घर में हो सेवन।
बने औषधि, पंचगव्य से, खाद और ईंधन गोबर से,
स्वच्छ रहेंगे स्वस्थ रहेंगे भाव जगाना है।
गौ पालन से खुशहाली हर घर में लाना है।
स्वावलंबी स्वाभिमानी भाव जगाना है..........।
चलो गाँव की ओर हमें फिर वैभव लाना है ।। 1।।
गाँव में होगी जैविक खेती जमीन के नीचे पानी,
अनाज, सब्जी, फूल और फल से सजेगी धरती सारी।
कोई न होगा भूखा-प्यासा पूरी होगी सबकी आशा,
स्नेह और सहकारिता का भाव जगाना है।
कृषि आधारित समृद्धि हमें गाँव में लाना है।
स्वावलंबी स्वाभिमानी भाव जगाना है..........।
चलो गाँव की ओर हमें फिर वैभव लाना है ।। 2।।
ग्रामोद्योग विस्तार से सबका निश्चित हो रोजगार,
जिये सादगी से सब रखें मन में उच्च विचार।
गाँव का हर बच्चा हो शिक्षित, हर युवा संस्कारित, निर्भीक।
भारतमाता की जय हो यह भाव जगाना है।
राम राज्य के सपने को साकार करना है।
स्वावलंबी स्वाभिमानी भाव जगाना है..........।
चलो गाँव की ओर हमें फिर वैभव लाना है ।। 3।।
ग्राम नगर वन के सब वासी भारत की संतान,
एक संस्कृति एक धर्म है पुरखे सब के समान।
ऊँच-नीच का भेद भुलाकर कंधे से कंधा मिलाकर,
समरसता का गीत गाकर कदम बढ़ाना है
इस हेतु तन, मन, धन और जीवन लगाना है।
स्वावलंबी स्वाभिमानी भाव जगाना है..........
चलो गाँव की ओर हमें फिर वैभव लाना है। ।। 4।।

गौमाता की आरती

ओम् जय जय गौमाता, मैया जय जय गौमाता
निशदिन तुमको ध्यावत, हरि विष्णु धाता।
ओम् जय जय...
मंथन समुद्र को कीन्हो, तब प्रगटी मैया,
ऋषिमंडल ने लीन्हो, कामधेनु गैया,
ओम् जय जय ... ।।**1**।।
कोटि तैंतीस देवता, रोम-रोम में बसे,
पंचगव्य जो लेता जन्मों के पाप नसे,
ओम् जय जय... ।।**2** ।।
सर्वौषधि भंडारी, तू ही है मैया,
घर भी कहे उसी को , जिस आँगन गैया,
ओम् जय जय... ।।**3**।।
संकट उनके हरती, पार वैतरणी करे,
तेरी पूँछ धरे जो, भवसागर से तरे,
ओम् जय जय... ।।**4** ।।
तेरे खुर की धूरी, माथे पे जो लगे,
तीर्थस्नान का फल हो, पद पद विजय मिले,
ओम् जय जय... ।।**5** ।।
कृष्ण बसे माँ तुझमें, तुमको जो ध्यावे,
मन इच्छा हो पूरी, मानव तन पावे,
ओम् जय जय... ।।**6** ।।
गौमाता की आरती, प्रीत से जो गावे,
कह गोपाल मैं सरन हूँ, महिमा नित पावे,
ओम् जय जय... ।।**7** ।।

●●

गौ विज्ञान परीक्षा 2024 का प्रश्न पत्र

सही विकल्प चुनिए–

1. गाय के मस्तक में किस वैदिक लोक का निवास माना गया है–
(a) पाताल लोक (b) ब्रह्मलोक
(c) स्वर्ग लोक (d) विष्णु लोक।

2. गाय के सींगों को किस प्राकृतिक ऊर्जा का स्त्रोत माना जाता है–
(a) भू-चुंबकीय ऊर्जा
(b) सौर ऊर्जा
(c) ब्रह्मांडीय ऊर्जा
(d) वायुमंडलीय ऊर्जा।

3. गाय के शरीर के किस अंग को 'तीर्थराज प्रयाग' के समान माना गया है–
(a) पैर (b) पूँछ
(c) नाभि (d) मस्तक।

4. गाय के गोमूत्र में कौन-सा प्रमुख खनिज 'रक्त शुद्धि' के लिए उपयोगी है–
(a) पोटैशियम (b) नाइट्रोजन
(c) सल्फर (d) मैग्नीशियम।

5. किस पुराण में वर्णित है कि गाय का दूध तपस्वियों का मुख्य आहार है–
(a) भविष्य पुराण (b) विष्णु पुराण
(c) ब्रह्मवैवर्त पुराण(d) देवी भागवत।

6. गाय के शरीर में 'गंगा' का वास विशेष रूप से किस भाग में माना गया है–
(a) पूँछ (b) नथुने
(c) पैर (d) गला।

7. गाय के शरीर के किस हिस्से को 'अन्नदाता' का प्रतीक कहा गया है–
(a) पूँछ (b) मस्तक
(c) नाभि (d) पैर।

8. गाय के गोबर का उपयोग किस वेद में चिकित्सा पद्धति के रूप में बताया गया है–
(a) ऋग्वेद (b) अथर्ववेद
(c) सामवेद (d) यजुर्वेद।

9. गाय के दूध को 'अमृत' क्यों कहा गया है–
(a) यह मानसिक शांति प्रदान करता है
(b) यह सभी दोषों को संतुलित करता है
(c) यह शरीर को रोगमुक्त करता है
(d) उपरोक्त सभी।

10. किस ऋषि ने गाय को 'यज्ञ की आत्मा' कहा था–
(a) वशिष्ठ (b) वाल्मीकि
(c) अंगिरा (d) जमदग्नि।

11. गाय के शरीर में 'वरुण देवता' का वास किस अंग में माना गया है–
(a) पूँछ (b) पैर
(c) मस्तक (d) नाभि।

12. गाय के गोबर में कौन सा रसायन वातावरण को शुद्ध करता है–
(a) अमोनिया (b) नाइट्रोजन
(c) फॉस्फेट (d) सल्फर।

13. गाय के दूध में 'लैक्टोज' की मात्रा किस आयु वर्ग के लिए सबसे अधिक उपयोगी है–

(a) शिशु (b) वृद्ध

(c) युवा (d) सभी।

14. गाय के पैर में कितने तीर्थों का वास माना गया है–

(a) 5 (b) 7

(c) 33 (d) सभी तीर्थ।

15. गाय के नथुने में कौन से देवता का वास माना जाता है–

(a) वायु देव (b) अग्नि देव

(c) वरुण देव (d) यम देव।

16. गाय के दूध में कौन-सा विटामिन मौजूद है जो हड्डियों को मजबूत बनाता है–

(a) विटामिन A (b) विटामिन B

(c) विटामिन D (d) विटामिन E.

17. गाय के गोमूत्र का उपयोग किस प्रकार की औषधि के निर्माण में सबसे अधिक किया जाता है–

(a) त्वचा रोग (b) पेट के रोग

(c) मानसिक शांति (d) उपरोक्त सभी।

18. गाय के पूँछ का उपयोग किस धार्मिक प्रक्रिया में किया जाता है–

(a) यज्ञ की परिक्रमा (b) पवित्रीकरण

(c) संकल्प विधि (d) आहूति।

19. गाय के दूध में कौन-सा प्रोटीन मांस-पेशियों को मजबूत करता है–

(a) कैसीन (b) वे प्रोटीन

(c) ग्लाइसिन (d) ट्रिप्टोफैन।

20. गाय को 'अघ्न्या' क्यों कहा गया है–

(a) उसे मारना निषिद्ध है

(b) वह यज्ञों की पूर्ति करती है

(c) वह जीवनदायिनी है

(d) उपरोक्त सभी।

21. गाय के मस्तक पर किस देवी का वास माना जाता है–

(a) सरस्वती (b) लक्ष्मी

(c) दुर्गा (d) पार्वती।

22. गाय के गोमूत्र में कौन-सा रसायन एंटीबायोटिक गुण प्रदान करता है–

(a) सल्फर (b) फॉस्फोरस

(c) पोटैशियम (d) नाइट्रोजन।

23. गाय के शरीर के किस हिस्से में 'चंद्रमा' का वास होता है–

(a) बायां नेत्र (b) पूँछ

(c) गला (d) पैर।

24. गाय के गोबर का सबसे प्राचीन उपयोग किस सभ्यता में हुआ–

(a) सिंधु घाटी सभ्यता

(b) वैदिक सभ्यता

(c) मौर्यकाल

(d) गुप्तकाल।

25. गाय के दूध को कौन-सा ग्रह प्रभावित करता है–

(a) चंद्रमा (b) सूर्य
(c) शुक्र (d) मंगल।

26. गाय की सेवा किस युग में सबसे अधिक पुण्यदायक मानी गई–

(a) सत्ययुग (b) त्रेतायुग
(c) द्वापरयुग (d) कलियुग।

27. किस ऋषि ने गाय को 'संस्कृति की जननी' कहा था–

(a) कश्यप (b) वशिष्ठ
(c) भारद्वाज (d) जमदग्नि।

28. गाय के दूध में मौजूद कौन-सा एंटी-ऑक्सीडेंट शरीर से विषैले पदार्थ हटाने में मदद करता है–

(a) ग्लूटाथियोन
(b) कैरोटीन
(c) विटामिन E
(d) फिलोनिलक यौगिक।

29. गाय के गोबर को किस यज्ञ के लिए पवित्र माना जाता है–

(a) राजसूय यज्ञ (b) सोमयज्ञ
(c) अग्निहोत्र यज्ञ (d) अश्वमेध यज्ञ।

30. गाय के शरीर के किस अंग को 'तीर्थराज' माना गया है–

(a) पूँछ (b) पैर
(c) मस्तक (d) नाभि।

31. गाय के शरीर में 'यम' का वास किस भाग में माना जाता है–

(a) पूँछ (b) पैर
(c) मस्तक (d) गला।

32. गाय के दूध का कौन-सा पोषक तत्व बच्चों के विकास के लिए अनिवार्य है–

(a) कैल्शियम (b) विटामिन D
(c) प्रोटीन (d) उपरोक्त सभी।

33. गाय के शरीर में 'अन्नदाता' का वास किस अंग में है–

(a) पैर (b) पूँछ
(c) मस्तक (d) गला।

34. गाय के गोमूत्र का कौन-सा गुण इसे शुद्धिकरण के लिए उपयुक्त बनाता है–

(a) एंटीबायोटिक (b) एंटीसेप्टिक
(c) जीवाणुनाशक (d) उपरोक्त सभी।

35. गाय के शरीर के किस हिस्से को 'शिव का वास' माना गया है–

(a) पूँछ (b) मस्तक
(c) गला (d) पैर।

36. किस पुराण में बताया गया है कि गाय के गोमूत्र का सेवन तप के बराबर है–

(a) ब्रह्मवैवर्त पुराण (b) भविष्य पुराण
(c) विष्णु पुराण (d) स्कंद पुराण।

37. गाय के दूध का सेवन किस प्रकार के दोष को संतुलित करता है–

(a) वात (b) पित्त
(c) कफ (d) सभी दोष।

38. गाय के गोबर का उपयोग जैविक खेती में क्यों महत्वपूर्ण है–

(a) यह भूमि की उर्वरता बढ़ाता है
(b) यह कीटाणुओं को समाप्त करता है
(c) यह मिट्टी को प्राकृतिक पोषण देता है
(d) उपरोक्त सभी।

39. गाय को 'धेनु' क्यों कहा जाता है–

(a) वह यज्ञों की पूर्ति करती है
(b) वह धन की जननी है
(c) वह जीवनदायिनी है
(d) उपरोक्त सभी।

40. गाय के शरीर में 'आकाश तत्व' का वास किस अंग में है–

(a) पूँछ (b) मस्तक
(c) पैर (d) नथुने।

41. गाय के शरीर के किस अंग में 'सूर्य' का वास माना गया है–

(a) दाहिना नेत्र (b) मस्तक
(c) पूँछ (d) गला।

42. गाय के गोबर का उपयोग सबसे पहले किस यज्ञ में किया गया था–

(a) सोमयज्ञ (b) अग्निहोत्र यज्ञ
(c) राजसूय यज्ञ (d) अश्वमेध यज्ञ।

43. गाय के शरीर में किस देवता का वास 'पूँछ' में बताया गया है–

(a) वरुण (b) यम
(c) कुबेर (d) अग्नि।

44. गाय के दूध को 'चंद्र तत्व' क्यों कहा गया है–

(a) यह शीतलता प्रदान करता है
(b) यह मानसिक शांति देता है
(c) यह स्वास्थ्य के लिए अमृत है
(d) उपरोक्त सभी।

45. गाय की सेवा को किस शास्त्र में सबसे अधिक पुण्यदायक माना गया है–

(a) ऋग्वेद (b) यजुर्वेद
(c) ब्रह्मवैवर्त पुराण (d) भविष्य पुराण।

46. गाय के नथुनों में कौन-सा वैदिक तत्व निवास करता है–

(a) जल तत्व (b) अग्नि तत्व
(c) वायु तत्व (d) आकाश तत्व।

47. गाय के शरीर के किस हिस्से को 'शिव शक्ति' का प्रतीक माना गया है–

(a) मस्तक (b) पूँछ
(c) गला (d) पैर।

48. गाय के दूध में कौन-सा अमीनो एसिड 'मानसिक तनाव' को कम करता है–

(a) ट्रिप्टोफैन (b) ग्लाइसिन
(c) सेरीन (d) आर्जिनिन।

49. गाय के गोमूत्र का कौन-सा तत्व इसे एंटीसेप्टिक बनाता है–

(a) नाइट्रोजन (b) फॉस्फोरस
(c) सल्फर (d) अमोनिया।

50. गाय के शरीर का कौन-सा अंग 'संपूर्ण ब्रह्मांड' का प्रतीक है–

(a) मस्तक (b) नाभि
(c) पैर (d) पूँछ।

51. गाय के शरीर के किस भाग को 'तीर्थराज' कहा गया है–

(a) पैर (b) नाभि
(c) पूँछ (d) मस्तक।

52. गाय के गोबर से कौन-सा प्राकृतिक उर्वरक बनाया जाता है–

(a) जैविक खाद
(b) नाइट्रोजन मिश्रित उर्वरक
(c) फॉस्फेट आधारित खाद
(d) अमोनिया युक्त खाद।

53. गाय के दूध में 'लैक्टोज' का मुख्य कार्य क्या है–

(a) पाचन को सुधारना
(b) शरीर को ऊर्जा प्रदान करना
(c) कैल्शियम अवशोषण में मदद करना
(d) उपरोक्त सभी।

54. गाय के शरीर में '33 करोड़ देवी-देवता' सबसे अधिक कहां माने गए हैं–

(a) नाभि (b) पूँछ
(c) पूरा शरीर (d) पैर।

55. गाय के गोबर का उपयोग किस प्रकार की कृषि प्रणाली में होता है–

(a) रासायनिक खेती (b) जैविक खेती
(c) मिश्रित खेती (d) आधुनिक खेती।

56. गाय के दूध में कौन-सा विटामिन 'मस्तिष्क विकास' में सहायक है–

(a) विटामिन A (b) विटामिन D
(c) विटामिन B12 (d) विटामिन C.

57. किस ऋषि ने गाय को 'वेदमाता' कहा था–

(a) महर्षि कश्यप (b) महर्षि वशिष्ठ
(c) महर्षि अंगिरा (d) महर्षि वाल्मीकि।

58. गाय के दूध को सबसे अधिक किस दोष को संतुलित करने के लिए उपयोग किया जाता है–

(a) वात (b) पित्त
(c) कफ (d) सभी दोष।

59. गाय के शरीर के किस हिस्से में 'आकाश तत्व' का वास माना गया है–

(a) मस्तक (b) पूँछ
(c) पैर (d) नथुने।

60. गाय के शरीर के किस अंग में 'अन्न-दाता' का वास है–

(a) नाभि (b) मस्तक
(c) पैर (d) पूँछ।

61. गाय के गोमूत्र का उपयोग सबसे अधिक किस प्रकार के रोगों में किया जाता है–

(a) त्वचा रोग
(b) पाचन तंत्र के रोग
(c) श्वसन रोग
(d) उपरोक्त सभी।

62. गाय के दूध का सेवन तपस्वियों के लिए क्यों उपयोगी माना गया है–

(a) यह ऊर्जा देता है

(b) यह ध्यान केन्द्रित करता है

(c) यह शरीर को शुद्ध करता है

(d) उपरोक्त सभी।

63. गाय के शरीर के किस हिस्से को 'पृथ्वी का प्रतीक' कहा गया है–

(a) पैर (b) पूँछ

(c) नाभि (d) मस्तक।

64. गाय के गोबर से कौन-सा धार्मिक उत्पाद बनाया जाता है–

(a) पंचगव्य (b) यज्ञ सामग्री

(c) शुद्धिकरण कंडे (d) उपरोक्त सभी।

65. गाय के गोमूत्र का उपयोग विशेष रूप से किस प्रकार के अनुष्ठान में किया जाता है–

(a) अग्निहोत्र

(b) पंचगव्य निर्माण

(c) विष्णु पूजा

(d) राजसूय यज्ञ।

66. गाय के शरीर में 'वायु तत्व' का वास किस भाग में है–

(a) नथुने (b) पूँछ

(c) गला (d) पैर।

67. गाय के गोबर का उपयोग जैविक ऊर्जा उत्पादन में क्यों किया जाता है–

(a) यह पर्यावरण को शुद्ध करता है

(b) यह नवीकरणीय ऊर्जा का स्त्रोत है

(c) यह प्रदूषण रहित है

(d) उपरोक्त सभी।

68. गाय के दूध में 'कैल्शियम' का मुख्य कार्य क्या है–

(a) हड्डियों को मजबूत बनाना

(b) रक्त को शुद्ध करना

(c) ऊतकों का निर्माण करना

(d) मानसिक शांति देना।

69. गाय के शरीर के किस हिस्से को 'जीवन-दायिनी शक्ति' का प्रतीक माना गया है–

(a) मस्तक (b) नाभि

(c) पैर (d) पूँछ।

70. गाय के दूध में कौन-सा पोषक तत्व मांसपेशियों को मजबूत करता है–

(a) कैसीन (b) लैक्टोज

(c) विटामिन D (d) प्रोटीन।

71. गाय के गोबर का उपयोग पवित्र अग्नि जलाने के लिए क्यों किया जाता है–

(a) यह वायुमंडल को शुद्ध करता है

(b) यह अशुद्धियों को दूर करता है

(c) यह लंबे समय तक जलता है

(d) उपरोक्त सभी।

72. गाय के गोमूत्र में कौन-सा तत्व कीटाणु शोधन में सहायक है–

(a) नाइट्रोजन (b) अमोनिया

(c) सल्फर (d) पोटैशियम।

73. गाय को 'विश्वमाता' क्यों कहा गया है–

(a) वह जीवनदायिनी है

(b) वह प्रकृति का पालन करती है

(c) वह धार्मिक शक्ति आधार है

(d) उपरोक्त सभी।

74. गाय के दूध को मानसिक शांति प्रदान करने वाला क्यों माना गया है–

(a) यह ट्रिप्टोफैन प्रदान करता है

(b) यह न्यूरोकेमिकल्स संतुलित करता है

(c) यह तनाव को कम करता है

(d) उपरोक्त सभी।

75. किस पुराण में उल्लेख है कि गाय के पूँछ के बालों का उपयोग 'यमदण्ड' से मुक्ति प्रदान करने वाले अनुष्ठान में किया जाता है, और इसका महत्व किस देवता से संबंधित है–

(a) भविष्य पुराण : वरुण देवता

(b) ब्रह्मवैवर्त पुराण : यमराज

(c) विष्णु पुराण : कुबेर

(d) स्कंद पुराण : अग्नि देवता।

उत्तरमाला

1. (b), 2. (c), 3. (c), 4. (d), 5. (b), 6. (a), 7. (c), 8. (b), 9. (d), 10. (a), 11. (a), 12. (a), 13. (a), 14. (c), 15. (a), 16. (c), 17. (d), 18. (b), 19. (a), 20. (d), 21. (b), 22. (a), 23. (a), 24. (a), 25. (a), 26. (a), 27. (b), 28. (a), 29. (c), 30. (c), 31. (a), 32. (d), 33. (c), 34. (d), 35. (c), 36. (d), 37. (d), 38. (d), 39. (d), 40. (d), 41. (a), 42. (b), 43. (a), 44. (d), 45. (b), 46. (c), 47. (c), 48. (a), 49. (d), 50. (b), 51. (d), 52. (a), 53. (d), 54. (c), 55. (b), 56. (c), 57. (b), 58. (d), 59. (d), 60. (b), 61. (d), 62. (d), 63. (a), 64. (d), 65. (b), 66. (a), 67. (d), 68. (a), 69. (b), 70. (a), 71. (d), 72. (b), 73. (d), 74. (d), 75. (b).

●●

छत्तीसगढ़ रजत महोत्सव 25 वर्षों का उत्सव वर्षों का संकल्प

छत्तीसगढ़ शासन

श्री नरेन्द्र मोदी
माननीय प्रधानमंत्री

सतत प्रगति पथ पर
छत्तीसगढ़

श्री विष्णु देव साय
माननीय मुख्यमंत्री

बस्तर में बदलाव की बयार
- बस्तर में नक्सलवाद पर निर्णायक प्रहारबस्तर में 24,000 करोड़ का निवेश विकास की नई उड़ान
- जांगला (बीजापुर) देश का पहला हेल्थ वेलनेस सेंटर, आयुष्मान भारत की सौगात
- नगरनार स्टील प्लांट राष्ट्र को समर्पित
- रावघाट जगदलपुर नई रेल लाइन परियोजना से विकास को नई रफ्तार
- 50,000 करोड़ की बोधघाट बहुउद्देशीय परियोजना बिजली, सिंचाई, रोजगार और पेयजल का मिलेगा लाभ

महिलाओं का सम्मान
- 70 लाख माताओं-बहनों को महतारी वंदन योजना का लाभ
- 36 लाख महिलाओं को उज्ज्वला गैस कनेक्शन
- आत्मनिर्भरता और स्वरोजगार के लिए सभी पंचायत में 'महतारी सदन' का निर्माण

बेहतर भविष्य की आधारशिला
- राजधानी रायपुर में एशिया की सबसे बड़ी मानव निर्मित जंगल सफारी
- भिलाई इस्पात संयंत्र का आधुनिकीकरण व आईआईटी भिलाई की आधारशिला
- 30 हजार मेगावाट विद्युत उत्पादन क्षमता का विकास
- 32 हजार मेगावाट क्षमता के बिजली घरों के लिए एमओयू

कृषक कल्याण
- छत्तीसगढ़ के किसानों को धान का सर्वाधिक दाम
- 20 माह में 1.25 लाख करोड़ सीधे किसानों के खाते में
- 26 लाख किसानों को पीएम किसान सम्मान निधि

आवास और सामाजिक सुरक्षा
- 26 लाख परिवारों को प्रधानमंत्री आवास
- 40 लाख से अधिक परिवारों को स्वच्छ पेयजल
- राज्य के शत्-प्रतिशत् गांवों का विद्युतीकरण
- खनिज क्षेत्रों में विकास हेतु डीएमएफ फंड की सौगात

सुगम आवागमन
- 47,000 करोड़ की रेल परियोजनाओं का क्रियान्वयन
- 32 रेल्वे स्टेशनों का वर्ल्ड क्लास उन्नयन
- 40 हजार करोड़ से अधिक लागत से राष्ट्रीय राजमार्गों का विकास
- रायपुर-विशापट्टनम एवं रायपुर-रांची-धनबाद एक्सप्रेस-वे
- जगदलपुर-रायपुर व अंबिकापुर-रायपुर हवाई सेवा प्रारंभ

जनजातीय सशक्तिकरण
- पीएम जनमन योजना 59 हजार परिवार लाभान्वित व 2,449 किमी सड़कें स्वीकृत
- धरती आबा ग्राम उत्कर्ष अभियान 6,691 ग्राम लाभान्वित

हमसे जुड़ने के लिए QR स्कैन करें

सुशासन से समृद्धि की ओर

Visit us : ChhattisgarhCMO DPRChhattisgarh www.dprcg.gov.in

छत्तीसगढ़ जनसंपर्क

संवाद 13451/1

आइये अपने और कुटुम्बजनों के निरोगी एवं सुरक्षित भविष्य के लिये संकल्प करें...

(1) घर में गौपालन करेंगे, संभव न होने पर किसी गौशाला में गाय गोद लेंगे।

(2) सदैव देशी गाय के दूध, दही, घी का सेवन करेंगे और दूसरों को भी प्रेरित करेंगे।

(3) बीमारी फैलाने वाले जर्सी, HF, भैंस को अपने से दूर करेंगे।

(4) वृद्ध, अशक्त, अनुपयोगी गौवंश को कसाई (कोचिया) को नहीं बेचेंगे।

(5) डेयरी संचालकों से देशी गौवंश पालन करने का आग्रह करेंगे।

(6) रात को सड़क पर न तो स्वयं गौवंश को छोड़ेंगे और न ही दूसरों को छोड़ने देंगे।

(7) अपने घर में अधिकाधिक पंचगव्य उत्पादों का उपयोग करेंगे।

(8) स्वयं गौ आधारित खेती करेंगे और दूसरों को भी करने के लिये प्रेरित करेंगे।

(9) घर में शाक वाटिका का निर्माण करेंगे।

(10) गायों के चारागाह (गोचर भूमि) में न तो स्वयं कब्जा करेंगे और न ही दूसरों को करने देंगे।

(11) गौवंश का भोजन (चारा) **पैरा** में न तो आग लगाएँगे और न ही दूसरों को लगाने देंगे।

(12) गौमाता के गोबर खाद एवं गौमूत्र से उत्पादित अनाज एवं सब्जी का ही उपयोग करेंगे। रासायनिक खाद एवं जहरीले पेस्टीसाइड से उत्पादित अनाज का बहिष्कार करेंगे।

ONLY ORGANIC FARMING से उत्पादित ORGANIC अनाज एवं सब्जियाँ।

Cow is our Family Doctor.

अतः गौमाता से जुड़िए, पूरे कुटुंब को बीमारी, व्यसन से बचाएँ एवं दवाइयों के अनावश्यक खर्च से बचें।